फूल और पतझड़

चीन के क्रन्तिकारी आंदोलन की गाथा

हिंदी अनुवाद: नूर नबी अब्बासी

नया सूरज

[चीन की क्रांतिकारी और जागरूक जनता के
आन्दोलन की लोमहर्षक गाथा]

अनुवादक

नूर नबी अब्बासी

१९५६

साहित्य प्रकाशन, दिल्ली

प्रकाशक
साहित्य प्रकाशन
मालीवाड़ा, नई सड़क, दिल्ली।

१९५६
मूल्य : छः रुपया आठ आना

मुद्रक
मनमोहन प्रिंटिंग प्रेस,
मालीवाड़ा, नई सड़क, दिल्ली।

लेखकों के विषय में

कुंग चुएह और यवाँ चिंग चीन के लेखकों की तरुण पीढ़ी के लेखक हैं जो उस देश के क्रांतिकारी संघर्ष में से उभर कर आये हैं। कुंग चुएह का जन्म सन् १९१७ में क्याँग्सू प्रान्त के सूचोव कस्बे में एक दरिद्र परिवार में हुआ था। पहले वह एक किताबों की दुकान पर नवसिखुआ रहा और बाद में कुछ समय तक फेरीवाला भी रहा था। तद्नन्तर वह पैमाइश सीखने के लिए एक स्कूल में दाखिल हुआ जहाँ उसने ग्रेजुएशन तक इसी विषय की शिक्षा प्राप्त की। जब १९३७ ई० में जापानी आक्रमणकारियों के विरुद्ध प्रतिकार-आन्दोलन प्रारम्भ हुआ तो वह शंघाई में अन्य बुद्धिजीवियों से जा मिला और पब्लिसिटी इत्यादि के कार्य में उसने उनका हाथ बटाया। अगले वर्ष वह येनान गया जहाँ कि चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति का कार्यालय था और वहाँ 'लुहसूँ' कला तथा साहित्य प्रतिष्ठान में भर्ती हो गया। उसके बाद देहात में स्थानीय सरकारों में काम करते हुए उसे जो समय मिला उसमें उसने अनेक कहानियाँ लिखीं।

यवाँ चिंग सन् १९१५ ई० में पीकिंग में पैदा हुई थी। पहले चीनी-फ्रांसीसी विश्वविद्यालय में और बाद में ललित कला राज्यीय विद्यालय में उसने शिक्षा पाई थी। १९३० में उसने पीकिंग में विद्यार्थियों और स्त्रियों के क्रांतिकारी आन्दोलन का संगठन किया था। तद्नन्तर उसने ताइनत्सीन और शंघाई में स्त्री फैक्टरी मजदूरों में काम किया। जब जापानी-आक्रमण के विरुद्ध युद्ध छिड़ा तो उसने उन्मुक्त प्रदेशों में रंगमंच सम्बन्धी कार्यक्रम संगठित किये।

कुंग चुएह के साथ उसका सहलेखन १९४५ में आरम्भ हुआ जब वे दोनों येनान में लेखक संघ के सदस्य थे। १९४७ में वे दोनों केन्द्रीय होपी

प्रांत के लेखक संघ में भेज दिये गये। यहीं 'नया सूरज' में चित्रित घटनाएं घटीं और यहीं उन्होंने उपन्यास पर कार्य प्रारम्भ किया। १६४६ में चीनी लोक-गणतन्त्र की स्थापना के बाद से वे संस्कृति-मंत्रालय के मोशन पिक्चर ब्यूरो में काम करते रहे और अब वे लेखन-कार्य में व्यस्त हैं।

अपनी वैयक्तिक कृतियों के अतिरिक्त उन्होंने 'नया सूरज' 'नया फूल' (एक मुक्त ऑपेरा) और 'हुवाई नदी का जीवन' की पट कथा में साथ-साथ काम किया है। तीसरी कृति का फिल्मीकरण भी हो रहा है।

आजकल वे उत्तर-पूर्वी चीन में चाँगचुँ की एक विशाल फैक्टरी में हैं जहाँ वे भविष्य की कृतियों के लिए सामग्री एकत्र कर रहे हैं।

भूमिका

मैंने 'नया सूरज' (Daughters & Sons) पढ़ा है। आद्यन्त उसमें मेरी दिलचस्पी क़ायम रही और जब तक मैं उसे आख़िर तक न पढ़ गया उसे छोड़ न सका।

यह वास्तव में एक सफल उपन्यास है……और मुझे विश्वास है कि यह पाठकों को पसन्द आयेगा।

उपन्यास के निश्चित पात्र व्यक्ति की दृष्टि से साधारण मर्द और औरतें हैं लेकिन सामूहिक रूप में वे वीर देशभक्त हैं। उनके साधारण मानवीय लक्षण हमें अपनी ओर आकर्षित करते हैं और उनकी वीरता हम में अपने लिए सराहना उत्पन्न करती है। कठिन से कठिन और विकट स्थिति में भी वे अपनी रसिकता व विनोद तथा अपना लड़ाकू आशावाद नहीं छोड़ते। कोई भी पाठक इस पुस्तक को पढ़कर इसके उत्साहवर्धक प्रभाव से नहीं बच सकता। इसमें यह स्पष्टतः दिखाई देता है कि जनता कितनी ही साधारण क्यों न हो, कितनी ही पिछड़ी हुई या यहाँ तक कि अपढ़ और निरक्षर ही क्यों न हो जहाँ तक उनमें प्रगति करने की दृढ़ भावना मौजूद है और उन्हें सही राजनीतिक रहनुमाई दी जाती है तो वे ही लोग अपने भाग्य-निर्माण में बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर सकते हैं।

चीनी लेखक चेयरमैन माओ त्से-तुंग के आभारी हैं कि उन्होंने १६४२ में येनान साहित्यिक सम्मेलन में जो सिद्धान्त हमारे सम्मुख प्रस्तुत किये थे वे एक उज्ज्वल मशाल के समान हमें सहायक सिद्ध हुए हैं। इसी की रोशनी में कई लेखकों ने कुछ बड़े अच्छे उपन्यास लिखे हैं। उन्हीं के साहित्यिक सिद्धान्तों का

अनुकरण करने में 'नया सूरज' के लेखक भी सफल हुए हैं। उनके पात्र बड़े पैने हैं और घटनाएँ आदि बड़े स्वाभाविक और सरल ढंग से वर्णित की गई हैं। जनता की भाषा का उनका प्रयोग भी निश्चित और परिचित है। मुझे आशा है कि उभय लेखक आगे बढ़ने का प्रयत्न करते रहेंगे और इससे भी बेहतर उपन्यासों की रचना करेंगे।

मुझे इस पुस्तक को पढ़ने के लिए प्रोत्साहन देने में हर्ष हो रहा है। मैं आशा करता हूँ कि यहाँ और दूसरे देशों में भी हमारे मित्र इसे शौक से पढ़ेंगे और सच तो यह है कि मुझे इसे एक बार फिर पढ़ने की इच्छा है।

पीकिंग,
१७-१२-५५

—को मो-जो

उपन्यास के पूर्व

'नया सूरज' में चीनी जनता के प्रतिकार-आन्दोलन की कहानी चित्रित की गई है जो उन्होंने आठ वर्ष तक (१६३७ से १६४५ तक) जापानी हमलावरों के खिलाफ मकबूज़ा इलाक़ों में किया था। जनता की भाषा में यह उपन्यास लिखा गया है और सच्ची घटनाओं पर आधारित है। इसमें लेखकों ने साधारण देशभक्त नवजवान किसानों के सबल, प्रशिक्षित और पूरी तरह साज़-सामान से सुसज्जित दुश्मनों से वीरतापूर्ण युद्ध का चित्रण किया है। जबकि कुमिन्तांग फौजें बिना लड़े पीठ दिखा रही थीं, इन नवयुवकों ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में अपने देश की रक्षा की और दृढ़ता से शत्रु का मुकाबला किया। पार्टी की जनता पर विश्वास करने और प्रति-जापानी मोर्चे में सारे वर्गों की जनता को एकजुट करने की नीति पर उन्होंने अमल किया। उन्होंने जनता को अपने साथ संगठित किया और छापेमार जत्थों से लेकर धीरे-धीरे अपने में इतनी शक्ति पैदा की कि जापानी हमलावरों को परास्त कर सके।

लेखक उन उन्मुक्त प्रदेशों में रहे हैं और उन्होंने मुकाबले के युद्ध में भाग लिया है इसलिए वे उन लोगों से भली प्रकार परिचित हैं, जिन्होंने शत्रु को मार भगाया था और इसीलिए उन्होंने उनका बड़े उत्साह से और अत्यन्त स्पष्टता के साथ चित्रण किया है। लेखकों को स्थानीय मुहावरों, उनके चुटकुलों और हास्य पर अधिकार है, यही कारण है कि इस रोमांचकारी उपन्यास में हल्का-सा आशावाद हर जगह बिखरा दिखाई देता है।

सर्व प्रथम यह उपन्यास सितम्बर, ४६ में चीनी भाषा में प्रकाशित हुआ था और उसे अपार लोकप्रियता प्राप्त हुई थी। जून, ५४ तक इसके ३१ संस्करण निकल चुके थे और लगभग ५ लाख प्रतियाँ बिक चुकी थीं। इसी का फिल्मीकरण सारे देश में बहुत लोकप्रिय हुआ है।

: १ :

उथल-पुथल — ग्रीष्म, १६३७

स्याँग झील के किनारे स्थित शैंज्या गाँव में एक बूढ़ा किसान रहता था जिसके दो बेटे थे एक तो दा-श्वी जो इक्कीस साल का था और दूसरा रू जिसकी आयु बारह वर्ष की थी। उनके पास अपनी एक एकड़ से भी कम जमीन थी जिस पर गेहूँ बोये जाते थे और उन पर गाँव के पटेल शेन का भारी कर्ज था जिसके बोझ तले वे दबे हुए थे। शेन गाँव का सबसे बड़ा जागीरदार और सक्रिय साहूकार था। शेन वहाँ पुश्त-दर-पुश्त से वहाँ का स्थानीय बड़ा सामन्त था और इसका सबूत गाँव के नाम 'शैंज्या' से मिलता है जिसका अर्थ है "शेन परिवार"।

दियेह* की इच्छा थी कि दा-श्वी अपना घर बसाले और शादी के लिए वह शेन से और कुछ कर्ज लेने को तैयार था। उस ज़माने में गरीब किसान भी शादी-बरात ठाठ-बाट से कर देना अपने लिये एक सामाजिक कर्तव्य समझता था। अपनी गिरी हुई आर्थिक स्थिति को देखते हुए दा-श्वी शादी के बारे में अधिक चिंतित था बनिस्बत इस ख़बर के कि जापानी साम्राज्यवादी पीकिंग की ओर जो उत्तर में कोई दो सौ मील दूर स्थित है, बढ़े आ रहे हैं।

"हमारी हालत वैसे ही काफ़ी खराब है," उसने कर्ज़ का विरोध करते हुए कहा। "अगर हम इसी तरह उधार लेते रहे तो हमारे पास जो बचा-खुचा ज़मीन का टुकड़ा है वह भी हाथ से जाता रहेगा।"

क़र्ज़ लेने और बोझ बढ़ाये जाने की तो उन किसानों की परम्परा ही थी उसी का अनुकरण करते हुए दियेह ने ज़िद की और कहा कि हम अभी और

---

* दियेह चीनी भाषा में पिता के लिये प्रयुक्त होता है।

बोझा बर्दाश्त कर सकते हैं। दा-श्वी रज़ामंद न हुआ। वह हृष्ट-पुष्ट था, उसके चौड़े कंधे और पुष्ट बाहें थीं और मेहनती था। वह जानता था कि अगर वह तन-मन से जुट गया और डट कर मेहनत करली तो जल्द ही वे कर्ज़ उतार देंगे। और उसके बाद आज़ादी से वह शादी-ब्याह रचा सकेगा।

घर में अभी यही बहस चल रही थी और गुत्थी न सुलझी थी कि ७ जुलाई, १६३७ को जापानी पीकिंग से कुछ दूर मार्को पोलो पुल तक चढ़ आये। चीन और जापान के बीच युद्ध की सरकारी तौर पर घोषणा भी कर दी गई।

शेंज्या में, कुमितांग फौज की आज्ञा के अनुसार पुलिस ने खाइयाँ खुदवाने के लिए वहाँ के किसानों को पकड़ लिया। उन जबरन भर्ती किये गए लोगों में दा-श्वी भी था। महीने भर जो उन्होंने खुदाई की उस दौरान में पुलिस ने वही रवायती क्रूरता का व्यवहार किया और दा-श्वी को कई बार सिर में गदा के आघात खाने पड़े।

खाइयाँ बाद में बेकार साबित हुईं। जापानियों से पिट कर शीघ्र ही कुमितांग फौज देहात में घुस आई और वहाँ जो कुछ देर रुकी तो उसने खुल कर लूट-मार की। जब बड़े-बड़े शहर एक के बाद दूसरा जापानियों के क़ब्ज़े में जाने लगे तो पुलिस की टुकड़ियाँ भी वहाँ से रवाना हो गईं। हर रोज़ जापानी हवाई जहाज़ सिर पर मँडराते रहते और शहरों पर बम्बारी करते। बड़े-बड़े अधिकारी अपने सोने-चाँदी की रकमें लेकर अधिक सुरक्षित स्थानों को कूच करने लगे। और उनके पीछे-पीछे टटपूँजिया हुक्काम भी वे तमाम चीज़ें जो उनकी थीं या न थीं छीन-झपट कर लेते हुए चले गये।

देहाती बेचारे अब चिंतित होने लगे। एक दिन सवेरे दा-श्वी निकला और ग्राम-शासन कार्यालय में गया ताकि वहाँ कुछ ताजी ख़बरें मिल जायें। लेकिन वहाँ पहुँच कर क्या देखता है कि किसानों की एक ख़ासी भीड़ आँगन में खड़ी है और सबके कान पटेल और गाँव के कुछ भद्र पुरुषों के बीच होने वाले वार्तालाप पर लगे हुए हैं। भद्र पुरुष बेचारे इतने डर गये कि वे अपने लच्छेदार भाषणादि के अहंकार भी भूल गये और आपस ही में उलझ पड़े।

"मारो गोली इस सबको! बेकार में कुल्हाड़ा लगवाने के लिये अपनी गर्दन झुकाये रखने से क्या फ़ायदा?"

"और सारी ज़मीन-जायदाद योंही छोड़ जायें? मैं तो यहीं रहता हूँ और देखता हूँ ऊँट किस करवट बैठता है!........."

बहुत से लोगों का कलेजा मुँह को आ रहा था और वे बेचारे परेशान हाल इधर-उधर भागे-दौड़े फिर रहे थे। कुछ दिनों बाद जब युद्ध-ग्रस्त इलाकों से शरणार्थियों का रेला रोता-पीटता और परेशान-हाल गाँवों में आने लगा तो लोग और भी भयभीत होगये।

दा-श्वी, उसका बाप और भाई रू अपनी ज़मीन के टुकड़े पर गेहूँ की बुआई कर रहे थे। उनके पास ढोर-डंकर या बैल तो थे ही नहीं इसलिए दोनों भाई तो बक्खर खींच रहे थे और बाप उसे पीछे से ढकेल रहा था। बक्खर बहुत भारी था और रू अभी बेचारा बच्चा ही तो था, इसलिए ज्यादातर ज़ोर दा-श्वी पर ही पड़ रहा था। था वह बैल जैसा तगड़ा और मेहनती इसलिए बक्खर को बड़े आराम से खींच रहा था।

"ऐसे नाज़ुक मौके पर तुम गेहूँ बो रहे हो!" शरणार्थियों में से एक ने आश्चर्य प्रकट किया। "तुम समझते हो इन्हें खाने के लिये तुम यहाँ बने रहोगे?"

दा-श्वी रुका और उसने अपनी कमर सीधी की। "वह ठीक कह रहा है, हम शायद यह सब फ़िज़ूल ही में कर रहे हैं।" उसने दुखी हो अपने पिता से कहा। "चलो छोड़ो भी इसे।"

दियेह ने क्रोधपूर्ण दृष्टि उस पर डाली। "कहाँ भाग कर जायेंगे हम? चल-चल खींच बक्खर, बेटा! मर जायें तो खैर कोई झगड़ा ही न रहे पर अगर जीते रहे तो खाने को तो चाहिये ना।"

दा-श्वी का एक रिश्ते का बड़ा भाई ब्लैकी* (काला) त्से भी शोंज्या में ही अपनी पत्नी और बच्चे के साथ रहता था। कल्लू कई महीनों से घर

* हमारे यहाँ भी इस प्रकार के रंग वाले को "कल्लू" कह कर पुकारते हैं।

नहीं आया था। वह गुप्त रूप से कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य था और उसे कल्लू इसलिए कहते थे क्योंकि उसका रंग गहरा साँवला था। वैसे जाति का तो वह लुहार था लेकिन बाद में उसने एक होटल खोल ली थी जिसके द्वारा वह क्रांतिकारियों को इस इलाके से उस इलाके में आने-जाने में सहायता देता था। उसके बाद पुलिस ने "कम्युनिस्टों को निर्मूल करने" की मुहिम चलाई। अब उसके लिए स्थिति भयानक हो चली और वह वहाँ से निकल भागा। घर पर उसकी पत्नी ने चटाइयाँ और टोकरियाँ बुन-बुन कर अपनी और बच्चों की गुज़र-बसर की।

शरणार्थी और अधिक संख्या में आने लगे और जहाँ-कहीं भी उन्हें रहने की जगह मिलती वे उस पर कब्जा कर लेते। श्रीमती कल्लू त्से शेंग्या के उन अनेक देहातियों में से एक थीं जिन्हें जापानी बला से त्रस्त कुटुम्बियों को अपने यहाँ शरण देनी पड़ी थी। एक दिन तीसरे पहर उनकी मां श्रीमती याँग और बहन मे उनके दरवाज़े पर आ खड़ी हुईं। वे अपने गाँव से भाग कर आई थीं जो जापानियों के क़ब्जे में चला गया था। गांव शेंग्या से सिर्फ ५० मील के फासले पर पश्चिम में था।

"अब क्या करें भला हम?" श्रीमती याँग ने घबराकर कहा। "चारों तरफ डाकुओं और गद्दारों का दौर-दौरा है......इस तमाम विपत्ति से बचने के लिये इस लड़की को लेकर कहाँ जाऊँ? अब वह बड़ी हो गई है, इसका ब्याह भी कर देना चाहिये। मैं तो सोचते-सोचते थक गई कोई रास्ता ही नहीं दीखता........."

कुछ दिनों पश्चात् श्रीमती त्से दियेह के पास गई और उनसे प्रस्ताव रखा कि दा-श्वी और उनकी बहन में रिश्ता कायम हो जाय। दियेह प्रस्ताव सुनते ही पुलकित हो उठा।

"यह तो खूब रहेगी!" उसने मुस्कराते हुए कहा, "अब हमारे पास पैसे-वैसे तो हैं नहीं लेकिन अगर तुम्हारी मा राजी हो जायँ तो......"

"इस आपा-धापी के जमाने में कौन ब्याह करता है?" दा-श्वी दृढ़ता से बड़बड़ाया, लेकिन उसका दिल अजीब अंदाज़ से धड़कने लगा।

इसके पहले भी मे कई बार अपनी बड़ी बहन से मिलने शेंज्या आई थी। दा-श्वी भी वहाँ उससे कई बार मिला था और उससे घण्टों बातें की थीं। वह बड़ी सुन्दर लड़की थी, घरेलू कामों में बड़ी दक्ष और आदत-स्वभाव की बड़ी अच्छी थी। एक बार दा-श्वी श्रीमती त्से के पास कुछ रफू-मरम्मत करवाने के लिए कोई चीज ले गया। वह तो बाहर गई हुई थीं लेकिन मे उस समय वहीं आई हुई थी और वह काम उसने बड़ी सफाई और फुर्ती के साथ चुप-चाप कर दिया।

दा श्वी ने उस दिन सोचा मे बड़ी अच्छी लड़की है। अगर मेरी उससे शादी होजाय तो मैं बड़ा सुखी रहूँगा।······

उसके भाई की बीवी, श्रीमती त्से उसके विचार से परिचित थी। अब जबकि दा-श्वी के पिता राजी हो गये थे तो वह मा से बात पक्की करने के लिये घर वापस आई।

मे काँग (ईंटों का पलंग) पर बैठी कुछ सी-पिरो रही थी। वह सत्रह वर्ष की, पतली-दुबली पर बड़ी ताकतवर थी। वह पानी से भरी हुई बाल्टी बगैर कहीं रखे दूर तक लेजा सकती थी। उसकी मा कुछ पुराने खयाल की थी और उससे बालों का लम्बा कटा हुआ जूड़ा खड़ा गुँथवाती थी। जब उसकी मा और बहन बातें कर रही थीं तो मे ने क्षण भर के लिए अपनी बड़ी-बड़ी आँखें ऊपर को उठाईं। उसने देखा कि उसकी बहन उसकी ओर देख कर मुस्करा रही थी और अनुमान लगाया कि वे दोनों उसके भावी विवाह के बारे में बात चीत कर रही हैं। वह बड़े जोर-जोर से लजाने लगी। उसने सिर झुका लिया मानो काम में लगी हुई हो, और बड़ी गौर से उनकी बातें सुनने लगी।

दा-श्वी बड़ा अच्छा लड़का है—ईमानदार और भोला, उसने सोचा। अगर उस जैसे सुस्वभावी किसान से मेरा विवाह हो जाय तो जिन्दगी-भर मैं तो संतुष्ट रहूँगी······

उसे यह सुनकर बड़ा आश्चर्य और निराशा हुई कि माँ उस रिश्ते के लिये तैयार नहीं हैं। दा-श्वी का परिवार बहुत गरीब था······"ऐस

जल्दी की जरूरत नहीं है," श्रीमती यांग ने अन्त में कहा। "बाद में बातें करेंगे इस पर।"

शीघ्र ही यह स्पष्ट होगया कि दो मेहमानों को रखना श्रीमती त्से के लिये दूभर हो रहा था। मे और उसकी मा वहां से अपने एक और कुटुम्बी के यहाँ पड़ौस के गाँव में चली गईं। शादी का सवाल अब खटाई में पड़ गया।

× × × ×

पतझड़ आगया। डाकू लूट-मार में व्यस्त हो गये और हर गांव पर उनका खतरा मँडराने लगा डाकुओं के जत्थे देहातियों पर दबाव डालते और उन्हें सरकारी ओहदा देने पर मजबूर करते और उनके "रक्षकों" का दम भरते हुए निरंतर उनके "पोषण" के लिए उन पर कर लगाते थे।

शेंज्या में लिएव नामक एक छोटा-सा ऑपरेटर था जिसके पास एक बन्दूक और पांच आदमी थे। एक दिन वह शेन, पटेल के पास गया और उससे उसने पूछा, "क्या इरादा है? दूसरे सारे गाँव संगठित हो चुके हैं। अगर हमने भी वही नहीं किया तो मैं किसी सुरक्षा का वायदा नहीं कर सकता।"

लिएव गाँव का मशहूर दादा था। पटेल का अपना गिरोह भाग गया था अब उसके लिए रजामन्दी के सिवाय कोई चाराकार न था। उसी दिन तीसरे पहर को गाँव के लोगों को मन्दिर के आँगन में बुलाया गया। दा-श्वी और उसके पिता दोनों वहाँ उपस्थित थे। लिएव के कमरपट्टे में पिस्तौल रखी हुई थी, वह सीढ़ियों पर ही आकर खड़ा होगया और एकत्रित समूह के सामने भाषण देने लगा। उसने नये-नये शब्द-शब्दावलियाँ इस्तेमाल कीं जो कि उसने हाल ही में सुनी थीं लेकिन उनके अर्थ के बारे में वह अब तक संदेह में था।

"देखो बात यह है कि," उसने कहा, "हर गाँव में एक सुरक्षा-

गिरोह है और हमारे लिए भी एक जरूरी है जिसका खर्चा गाँव वालों को देना होगा। इस जमाने में तो हम सब को मिलकर काम करना चाहिये और जो कुछ भी हो बाँट कर खाना चाहिए। इसी को 'कम्युनिज्म' कहते हैं।"

वह नीचे उतरा, सिगरेट का पैकेट निकाला और उन्हें बाँटना शुरू कर दिया "आओ, हम सब कम्युनिस्ट व्यवस्था बरतें।" उसने खुश हो कहा।

गिरोह के लिए खाने-पकाने की सुविधाओं और सोने के लिए मन्दिर में ही शीघ्र प्रबन्ध कर दिया गया।

दियेह ने क्रोधित हो दा-श्वी की बाँह खींची। "चल, काम करें घर चलकर, ये लोग तो सब अन्धे हैं।"

उसी दिन तीसरे पहर को कुछ देर बाद सियो नामक एक तरुण पड़ौसी किसान ने दा-श्वी से गिरोह में आ मिलने के लिये कहा। दा-श्वी ने सिर हिलाकर 'ना' कह दिया।

"मेरे खान्दान में तो आजतक कोई ऐसे गंदे काम में नहीं पड़ा," उसने कहा।

पड़ोस के एक और गाँव होज्वांग में डाकुओं का एक और गिरोह कायम हो गया। उसका अगुआ हो नामक एक बहुत बड़ा जमीदार था जिसके पास कोई ७५० एकड़ जमीन थी। कुमितांग पार्टी का वह एक सदस्य था और कुमितांग फौज में एक अफसर भी। जिनलुंग जो एक चालाक, दुष्ट नवयुवक था "होज्वांग कम्पनी" में बड़ा ओहदेदार था और हो का कारिन्दा था। इस गिरोह में जो काफी विशाल था सेना से भागे हुए अनेक सैनिक और भूतपूर्व पुलिस वाले थे; उनके पास असंख्य बन्दूकें थीं जब लिएव ने देखा कि उसका जत्था होज्वांग-जत्थे के मुकाबले में कुछ भी नहीं है तो वह उन्हीं में जा मिला।

हो का विस्तृत गिरोह एक गाँव से दूसरे गाँव में अन्न वसूल करते हुए घूमता फिरा। साधारणतया उनकी माँगें थीं १००० पौंड वजन की चीजें—अब वह चाहे गोश्त हो, गेहूँ हो, तेल हो या सिरका हो। किसानों की बड़ी तंग हालत थी। उसके अतिरिक्त गिरोह सारे गाँव से पैसों की शक्ल में कर

भी वसूल करता था।

इसी दौरान में जापानी पश्चिमी रेलवे से दक्षिण की ओर आरहे थे। और चूँकि अभी वे बयाँग झील से काफी दूर थे इसलिये लोगों को साँस लेने का अभी मौका था।

एक दिन तीसरे पहर दा-श्वी अपने पिता के साथ नाव में बैठा और रू नाव चलाने लगा। कोई आधा मील तक जाने के बाद वे खाड़ी से निकल कर बयाँग झील में दाखिल हुए। किनारे के स्पष्ट दिखाई देने वाले उथले पानी में मुश्कबेंतों की घनी उपज थी। वे अपनी नाव से बाहर आये और अपने चमकदार हँसिये उनमें चलाने शुरू कर दिये।

जल-मुर्गियों की चिल्ल-पों से उदासीन जो उनकी मौजूदगी से भयभीत होगई थी वे सतत गति से अपना काम करते रहे। उनके सिरों के ऊपर एक बाज मँडरा रहा था। दा-श्वी ने सोचा भगवान जाने मेरी और मे की कभी शादी होगी भी या नहीं। यह जानने का उसके पास कोई साधन ही न था। मे की मा ने उसकी इच्छा के विरुद्ध उसका रिश्ता किसी और से तय कर दिया था और विवाह की तारीख भी निश्चित कर दी थी। यह खुशनसीब आदमी वही जिनलुंग था जो कभी कारिन्दा था पर अब डाकू बन गया था।

सूर्य करीब-करीब अस्त होगया था; पानी की सतह पर उसका लाल प्रतिबिम्ब आँखें चौंधिया रहा था। मुश्कबेंतों से लदी हुई नाव बड़े आहिस्ता-आहिस्ता बाँध की ओर चली, इस बार दोनों भाई उसे खेने में लगे हुए थे। जब तक उन्होंने नाव से सामान किनारे पर उतारा तब तक अँधेरा हो चुका था और चाँद वृक्षों के ऊपर पहुँच चुका था।

अगले दिन सुबह दा-श्वी और दियेह ने अधिकांश मुश्कबेंत शेंग के यहाँ ले जाकर भर दिया ताकि उनका चढ़ा हुआ ब्याज उतर जाय। कुछ ही घण्टे पश्चात् हो के डाकुओं ने एक ताजा कर लागू कर दिया और बचा हुआ मुश्कबेंतों का ढेर भी साफ हो गया।

दूसरे दिन कमर में पिस्तौल बाँधे बड़े सच्चर पर सवार हो जिनलुंग शैंज्या की तरफ आया। सड़क पर उसने दा-श्वी को फावड़े से खाद खोद

कर बाल्टी में भरते हुए देखा। लगाम खींचते हुए उसने अपना सिर एक ओर को झुकाया और अभिवादन के लिये दो-तीन सोने के दाँत चमका दिये।

"ए, बेवकूफ—यह काहे के लिये कर रहे हो?" उसने पूछा। "हमारे साथ आजाओ और सफेद रोल व सूअर का भुना हुआ गोश्त खाओ।

दा-श्वी जानता था कि जिनलुंग किस किस्म का आदमी है। उसका घबराहट में पसीना छूट पड़ा। "नहीं, नहीं मुझसे तो वह काम आता ही नहीं है," उसने असमंजस में पड़ कर जवाब दिया।

"क्या कहा! तुम्हारा मतलब है सफेद रोल और सूअर का भुना हुआ गोश्त खाना तुम्हें नहीं आता?" जिनलुंग ने रुखाई से उसे चिढ़ाया।

दा-श्वी से कोई उत्तर न बन पड़ा। सड़क पर वह धीरे-धीरे सिर झुकाये हुए चला जा रहा था, खाद खोदता और बाल्टी में भर लेता था।

जिनलुंग तिरस्कारपूर्ण दृष्टि से उसे देखता रहा। "तू तो ठीक से बना ही नहीं, तेरी आँखें तो तेरे चूतड़ों में हैं!" उसने उसकी खिल्ली उड़ाई। खच्चर को लात जमाकर, चाबुक घुमाई और सरपट चाल से उसे दौड़ाता हुआ आगे निकल गया।

जब तक वह आँखों से ओझल न हो गया दाश्-वी उसे देखता रहा।

× × × ×

अक्तूबर में कम्युनिस्ट सेना के जत्थे जनरल लू के नेतृत्व में शेंत्या से कुछ मील दूर आकर रुके। दा-श्वी के एक पड़ौसी ने जब वह बाज़ार से कपड़ा खरीदने किसी और कस्बे में गया था तो लौटते में उन्हें देखा था। उनकी वह पूरी तरह प्रशंसा भी नहीं कर सकता था। उन डाकुओं से जिन्हें वह "लालची पेटू फौजी" कहा करता था वे लोग कितने भिन्न थे! उसने बताया कि वे किस तरह खुरदरे कपड़े की वर्दी पहनते हैं, बाजरा-ज्वार खाते हैं, जापानियों से लड़ते हैं, किसानों की देख-भाल करते हैं और डाकुओं का सफाया करते हैं।

"इसी को तो मैं सच्ची सेना कहता हूँ।" उसने अपनी मुट्ठी में से

अँगूठा दिखाते हुए कहा। "अगर जापानियों से लड़ना है तो उनसे जा मिलो! जो भी कोई उन लालची-पेटू फौजियों में जा मिलता है पागल है।"

इसी प्रकार की रिपोर्टें सब जगह पहुँचीं। फौरन दर्जनों नवजवान बालू में भर्ती होने के लिए तैयार होगये। कम्युनिस्ट "आठवें मार्ग की सेना" का उस समय यही नाम था। (और ये ही शब्द आमतौर पर कम्युनिस्टों के लिए भी प्रयुक्त होते थे।) "होज्वांग कम्पनी" ने जब देखा कि बालू तो उनका आनन-फानन में सफाया कर देगी तो डर के मारे झट अपना नाम "स्वसुरक्षा सेना" रख लिया। उसमें ग्वो नामक एक और कुमिन्तांग सदस्य जा मिला जो पहले सेना में कप्तान था और च्यांग काई-शेक के गुर्गों के साथ फौज से भाग आया था। वह अपने आप को एक बहुत बड़ा फौजी समझता था और उसने "उप प्रधान सेनापति" की उपाधि से अपने को सुशोभित कर लिया था। इन दोनों संगठनों ने साथ-साथ खूब काम किया। उन्होंने उस इलाके पर इस प्रकार शासन किया मानो वह उसकी अपनी छोटी रियासत हो।

दा-श्वी अब तक अपने विवाह के समाचार की प्रतीक्षा करते-करते थक गया था। उधर श्रीमती त्से में इतना साहस न था कि वह उससे सच-सच बता देती कि माजरा क्या है क्योंकि बातचीत को अब काफी समय हो चुका था। इसीलिए उसने अंदाज़ लगाया कि अब कोई उम्मीद बाकी नहीं है। घर पर आर्थिक स्थिति दिन-ब-दिन बद से बदतर होती जा रही थी। दिन में एक दफा तो उन्हें पेट भर कर भोजन भी न मिलता था। दा-श्वी को बड़ी परेशानी और क्रोध महसूस हुआ।"

"बस अब बहुत होगया।" उसने अपने पिता से कहा। "अब भूखों मरने की नौबत भी आगई। मेरी समझ से अगर मैं बालू में भर्ती हो जाऊँ तो हमारी हालत बेहतर हो सकती है।"

"तेरा तो दिमाग खराब होगया है! जिन चीजों से कोई वास्ता नहीं उनमें मत पड़। मैं कल ही तेरी शादी की बातचीत पक्की कर दूँगा।"

"मैं कभी शादी नहीं करूँगा! बाल बढ़ाकर भिक्षु बन जाऊँगा! मैं तो सेना में भर्ती होना चाहता हूँ।"

"मैंने कह दिया ना, तू जा सकता फौज में," "दियेह क्रोध में चिल्लाया और अपना लम्बा पाइप उसने दा-श्वी के सिर पर ठोंका।" ऐं, ज़िद करता, है —करेगा ज़िद !"

दा-श्वी ने क्रोध में मुँह सिकोड़ा और कांग पर लटक गया। लिहाफ से अपना सिर ढँका और उसे नींद आगई।

अगले दिन सवेरे दा-श्वी का भाई कल्लू त्से ख़िलाफ़ उम्मीद शँज्या की वापस आगया। अब भी उसका स्वास्थ्य अच्छा था और वह उत्साहित व प्रसन्न-चित्त दिखाई देरहा था हाँ, उसके कपड़ों पर हर जगह पैबन्द ही पैबन्द लगे हुए थे। दा-श्वी को अब फिर देखने पर उसकी मूँछों के नीचे एक मुस्कराहट नाच गई। उन दोनों में खूब घुटी और वे देरतक गप्पें लगाते रहे।

पास-पड़ौसी और मित्रों को जब पता चला कि कल्लू आगया है तो सबके सब वहाँ आने लगे। स्पष्टवादिता और ईमानदारी के लिए तो वह मशहूर था ही; इसीलिए लोग उससे बातें करने और उसके पास बैठने में आनन्द लेते थे। उसके दो कमरों का मकान जरा-सी देर में मुलाकातियों से भर गया।

यह वह दौर था जब "कुमितांग और कम्युनिस्ट सहयोग" हो रहा था और कल्लू त्से के लिए कुछ छिपाने की जरूरत न थी। उसने अपने दोस्तों को युद्ध के बारे में बताया और उन नये आदर्शों का जिक्र किया जो सारे देश में फैल रहे थे—यानी "जापानी साम्राज्यवाद को परास्त करो," "सारे राष्ट्र को लामबंद करो," "जनता का जीवन-स्तर बेहतर बनाओ" के आदर्श।.........

किसानों ने नई शब्दावली बड़े मज़े से सुनी।

सब चले गये लेकिन दा-श्वी वहीं रुका रहा। उसके भाई ने बड़ी गौर से उसकी ओर देखा।

"क्या तुम पराजित देश में गुलाम रहना चाहते हो?" कल्लू ने यकायक पूछ लिया।

"वैसा तो कोई भी नहीं चाहता," दा-श्वी ने कहा। "क्या तुमने अभी-अभी हमें नहीं बताया कि वह कितना भयंकर होगा?"

"बहुत अच्छे!" कल्लू ने मंद स्वर में कहा, "मेरे साथ काम करो। हम

लोग एक देश-रक्षक सेना बनायेंगे। जब जापानी हम पर हमला करेंगे तो हम उनका मुकाबला करेंगे।"

घण्टे भर से भी ज्यादा देर तक दा-श्वी का भाई बोले जा रहा था लेकिन अभी भी कुछ चीजें ऐसी थीं जिन पर दा-श्वी को अब तक विश्वास न था।

"हम निहत्थे लोग उन्हें कैसे मार भगायेंगे?" उसने पूछा।

कल्लू से हँस दिया। "हमें इसकी फिक्र नहीं करनी चाहिये कि उधर हजारों जापानी हैं। बल्कि डर तो इस बात का है कि जनता उनके खिलाफ जरा देर में खड़ी होगी। एक बार लोगों को जगा दिया कि बस फिर हम नहीं हार सकते। हथियार हमारे पास हैं। कल चलकर थोड़े हथियार यहाँ ले आते हैं—क्या खयाल है तुम्हारा?"

दा-श्वी स्तम्भित रह गया। "अच्छा! ……" उसने लड़खड़ाते स्वर में कहा, "लेकिन कल तो मुझे कुछ अपना काम भी करना है……।"

"डरने की कोई बात नहीं है," कल्लू ने मुस्कराते हुए कहा। "हम साथ-साथ चलेंगे। दो भाई अगर कहीं घूमने जायेंगे तो कोई भी खयाल न करेगा। मैं यकीन दिलाता हूँ कि कुछ भी नहीं होगा।"

दा-श्वी सकुचाया। "मुझे पिता जी से आज्ञा लेनी पड़ेगी।" उसने बात टालते हुए कहा।

उसके भाई ने सिर हिलाया और दा-श्वी के कंधे झिंझोड़े। "अरे बाबा, उनसे इसका जिक्र ही क्यों करते हो? मैं नहीं चाहता यह बात सब पर प्रकट हो जाय, यह एक राज़ है।" वह दा-श्वी पर झुका और उसके कान में उसने अपनी योजना कह दी।

दा-श्वी ने एक क्षण सोचा। "ठीक है, चलो तो फिर ऐसा ही करते हैं," उसने हँसते हुए कहा। कुछ और निर्देश सुनने के बाद वह घर वापस आ गया।

दूसरे दिन दोनों आदमी कंधों पर बाँसों में सींक के बने हुए खाली मछली-जाल की टोकरियाँ लटकाये चल पड़े। जिस किसी ने भी उनसे रास्ते में

पूछा वे कहाँ जा रहे हैं कल्लू ने लापरवाही से जवाब दिया कि मछली खरीदने जा रहे हैं जिन्हें यहाँ लाकर वे फुटकर भाव में बेचेंगे।

एक बार गाँव के बाहर वे बाँध के किनारे-किनारे काफी दूर तक चले गये फिर मुड़ कर पश्चिम की ओर चल दिये। सूर्यास्त तक वे फू ली नदी के किनारे स्थित फू शी गाँव में पहुँचे। उन्होंने दरवाजे पर दस्तक दी और एक बूढ़ी स्त्री ने आकर किवाड़ खोले। वह हाथ में एक दिया लिये हुए थी और उसकी रोशनी में उसने उन दोनों को घूर कर देखा।

"मैं वह चीजें लेने आया हूँ," कल्लू ने दबे स्वर में कहा।

सफेद बालों वाली महिला उन्हें एक अन्दरूनी आँगन में ले गई। वहाँ उसने एक बड़ा टाट का थैला निकाला जो अनाज के ढेर में छिपा हुआ था और उसे खोला। थैला बारूद के दस्ती गोलों से भरा हुआ था और उसमें सभी आकार के लगभग तीन सौ गोले थे। दोनों ने अपनी-अपनी टोकरियाँ भरीं और कमल के पत्तों से उन्हें ढँक लिया। बूढ़ी महिला ने उन्हें अनाज की कुछ टिकियें और पानी दिया और कल्लू उससे कुछ देर तक शान्तिपूर्वक बातें करता रहा। उसके बाद उन्होंने अपने बाँस उठाये और उन्हें कंधों पर रख कर रात ही के समय घर की ओर रवाना हुए।

"इतने बम तुम्हें किसने दे दिये?" अँधियारी सड़क पर लंबे-लंबे डग भरकर चलते हुए दा-श्वी ने कानाफूसी की।

"ये हाथ से फेंके जाने वाले गोले हैं, दिये किसी ने भी नहीं," उसका भाई हँस दिया। "हमने इन्हें इकट्ठा किया है। जब कुमिन्तांग फौज भाग खड़ी हुई तो हथियार और गोला बारूद ढेरों पीछे छोड़ गई। रायफलें और पिस्तौल जो हमने इकट्ठी कीं उनमें से अधिकतर तो हमने जनरल लू के पास पहुँचा दीं। हम तो इन थोड़े-से गोलों से भी अपना काम अच्छी तरह कर लेंगे, समझे? देखते रहो तुम!"

जब वे लौट कर गाँव पहुँचे तो पौ फट चुकी थी। वे सीधे स्कूल की इमारत में पहुँचे जिसे जापानियों के मार्को पोलो पुल पर आक्रमण के बाद से इस्तेमाल नहीं किया गया था। जुलाहा श्वाँग जिसने फुर्सत के वक्त बैठकर

अपनी जमीन का छोटा-सा टुकड़ा जोत लिया था, स्कूल के अहाते में बैठा उनकी बाट जोह रहा था। यह मांस से थल-थल नाटा आदमी काम में बड़ा निपुण था। कक्षा के एक कमरे में उसने पहले से ही दो गहरे सूराख खोद लिये थे। चुप-चाप तीनों गोले गाड़ने में लग गये। और जब मुर्गों की बाँगों की आवाजें आईं तो वे अपना काम कर चुके थे।

× × × ×

अगले कुछ दिनों में कल्लू त्से ने लगभग एक दर्जन आदमियों को संगठित कर लिया। हर रात उस निर्जन स्कूल में बैठकें कर-करके उन्होंने अपने संगठन का नाम "जापानी-विरोधी देश-रक्षक सेना" रख लिया। साथ ही उन्होंने यह ऐलान भी कर दिया कि जनरल लू के आदेशानुसार इस प्रकार के जत्थे संगठित हुए हैं और उन्होंने ही भारी माउजर पिस्तौलों से उन्हें लैस किया है। उन्होंने यह खबर भी फैलादी कि वे हर उस व्यक्ति को भुगतेंगे जो जापानियों से लड़ने का विरोध करेगा।

दा-श्वी दिन भर काम में लगा रहता और रात को अपने भाई के साथ इधर-उधर जाता। कल्लू ने जिस नव-संसार का नक्शा उसके सामने रखा था उससे वह बहुत आकर्षित और आनन्दित था।

"यह क्या पागलपन सवार हुआ है तुझे?" दियेह ने एक दिन उससे पूछा।

"जापानियों का मुकाबला कर रहा हूँ।"

"वे जो हजारों कुमिन्तांग फौजी जो जापानियों का मुकाबला करने चले थे आज उनकी हड्डी-पसली का भी पता नहीं! तुम मुट्ठी भर लोग उनका क्या बिगाड़लोगे?"

"तुम्हारा मतलब है हम अपने हाथ-पैर भी न हिलायें?"

दियेह लाजवाब हो गया, दा-श्वी ने उसकी खामोशी का फायदा उठाते हुए कहा, अगर तुम मुझे यह नहीं करने दोगे तो मैं फौज में चला जाऊँगा।"

"लोग तेरी वहाँ नाक मरोड़ देंगे। खैर मेरा तुझ पर अब बस ही क्या है। जो तेरे जी में आये कर!" दियेह ने क्रोधी हो हथियार डाल दिये।

पटेल शेन को यह शक होगया कि कल्लू त्से कम्युनिस्ट है और उसे इसकी बड़ी चिन्ता हुई। तब तक उसके वैयक्तिक गिरोह के कुछ आदमी लौट आए थे और उसने उसकी हिम्मत और बढ़ा दी थी। उसका पहला लक्ष्य तो यह था कि त्से का गिरोह एक दम खतम कर दो लेकिन जब उसे खबर हुई कि उसके पास बन्दूकें भी हैं तो उसने अपने गिरोह के एक पुराने आदमी गुलू को पहले जासूसी करने भेजा।

एक दिन रात को जब गुलू छिपे-चोरी उस निर्जन स्कूल की तरफ आ-रहा था तो चौकीदार ने उसे देख लिया। त्सुर संतरी बड़ा भारी जिस्म का भद्दा-सा नवजवान था और वृक्षों की छाया में छिपा खड़ा था।

"कौन है!— बोलो वरना मारता हूँ गोली।" वह गरजा।

गुलू ने सोचा वास्तव में त्सुर के पास बन्दूक होगी और वह अवाक रह गया, पर वहाँ से भाग जाने का भी साहस उसे न हुआ। त्सुर ने उसे जा दबोचा और खींचकर कल्लू त्से के पास लेगया। गुलू आतंकित होगया।

"मिस्टर त्से......मास्टर त्से—मुझे गोली न मारिये।" उसने काँपते हुए कहा। "मुझे तो ऐसा करने का हुक्म दिया गया था... ..मेरे लिये कोई चारा ही न था......इसलिए मैंने ऐसा किया।"

लेकिन जब कल्लू ने उससे दोस्ताना लहजे में कुछ सवाल पूछे तो उसने ऐसे जबाब दिये कि जिन्हें सब कोई जानते थे, सफेद झूठ है। कल्लू को क्रोध आगया और उसने उसे डराया-धमकाया। गुलू फिर लरज़ने लगा। आँखें मटकाते हुए उसने शेन के मन्सूबे का सारा किस्सा उलट दिया।

कल्लू ज़ोर का ठहाका मार के हँस पड़ा।

"हमारे पास बेतादाद पिस्तौल और दस्ती गोले हैं," उसने भरे हुए दो बड़े संदूकों की ओर इशारा करते हुए कहा, "जाओ और मिस्टर शेन को जता दो। उनसे कह देना कि अगर वह ईमानदारी बरतें और जापानियों से लड़ें तो हम उनका अपनी पाँतों में स्वागत करेंगे।—लेकिन अगर उन्होंने इसी किस्म

की चालबाजी और की तो हम उन्हें ठीक कर देंगे।"

गुलू ने बड़ी उत्सुकता से वायदा किया कि वह यह सब ठीक-ठीक शेन को बता देगा और वहाँ से एकदम चल दिया।

दूसरे दिन तीसरे पहर को देशरक्षक सेना ने कूच कर दिया। हरेक व्यक्ति के पास कमर में दस्ती बम के गोले बँधे थे। उसके अलावा हरेक के पास एक एक चवर थी जिस पर उन्होंने कपड़ा लपेट रखा था और उसे अपने कूल्हों में लपेट लिया था। उनके जाकेटों के नीचे चवर इस तरह उभरे हुए थे जैसे पिस्तौलें। कुछ लोगों की पीठ पर चिड़िया मारने के छोटे तमंचे लटके हुए थे। वे स्वयं-सेवकों का मार्चिंग गीत गाते हुए, ठप-ठप करते हुए सड़कों पर चले जारहे थे।

उठो,

ओ गुलामी से लड़ने वालो !

बनाओ एक बड़ी दीवार

अपने गोश्त और खून से !.........

दा-श्वी को डर था कि कहीं लोगों को यह पता न चल जाय कि पिस्तौल नकली हैं। वह अपना सिर बार-बार घुमाता था और छल से अपनी चवर हाथ पर टोक कर देख लेता था कि वह अपनी जगह है या निकल गई। इसी तरीके से देश-रक्षक सेना सड़कों पर कई जगह मुड़ी। जब वे ग्राम-शासन कार्यालय में पहुँचे और दरवाजे में से घुस पड़े तो वे बहुत विशाल और अशुभ दिखाई दिये।

पटेल शेन एक भड़कीला नीले रंग का कुर्ता पहने हुए था जिसके काज में से सोने की जंजीर लटक रही थी। जब उसने इतने बड़े हुजूम को देखा तो उसके हाथ-पैर फूल गये, सारी उसकी हेकड़ी हवा हो गई। उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं, लरजते हाथों से उसने अपना नारंगी हैट उतार कर रख दिया। कल्लू ने से को झुक कर अभिवादन करने के बाद उसे कुर्सी पर बैठाया और गुलू को हुक्म दिया कि चाय व सिगरेट पेश करे।

"नहीं, उसकी तकलीफ न करो," कल्लू ने मतलब की बात पर

आते हुए कहा। "अब कुमितांग और कम्युनिस्ट जापानियों से लड़ने के लिए समझौता कर चुके हैं। आपका क्या इरादा है अब?"

पटेल शेन ने अपनी मूँछों पर ताव दिया। "हाँ, हाँ बिल्कुल, देश को तो तरजीह देना ही पड़ेगी। जापानियों का मुकाबला करने के लिए तो मैंने हमेशा कहा है।" उसने साहस से कहा।

"बहुत अच्छे!" कल्लू त्से ने कहा, "जबकि हम सब जापानियों के विरोधी हैं—यानी कि एक ही परिवार के लोग हैं—तो मेरा सुझाव है कि आपकी ग्राम 'सुरक्षा सेना' अधिक कार्यसाधकता के लिए हमारी देश-रक्षक सेना में मिल जाय। क्या ख़याल है आपका?"

बस यही चीज थी जिसका शेन कट्टर विरोधी था लेकिन अपना विरोध प्रकट करना उसे न आता था। उसने जोर से खाँस कर बात टालने का हीला निकाला।

"हाँ तो, बताइए क्या कहते हैं?" कल्लू ने दबाव डाला।

"हाँ हाँ······अच्छा ख्याल है······।" पटेल के पसीने छूट रहे थे, "लेकिन······मुझे फैसला करने का अंतिम अधिकार नहीं है······अपन इस पर बाद में बातचीत करेंगे।

कल्लू ताड़ गया कि शेन जान बूझ कर टालमटोल कर रहा है और वह कुछ अधिक तीखी बात कहने वाला था कि एक किसान ने हाँपते हुए आकर खबर दी कि सशस्त्र डाकुओं ने पड़ौस के गाँव पर धावा बोल दिया है। पटेल शेन ने अपनी "सुरक्षा सेना" के सैनिकों से आँखें मिलाईं लेकिन कुछ बोला नहीं।

कल्लू त्से उठ खड़ा हुआ। "आओ चल कर देखें!"

"यह तो उनका काम है," पटेल ने उन्हें रोका। "हम क्यों इस पर दिमागपच्ची करें!"

"दिमागपच्ची करें?" कल्लू ने सशंक स्वर में कहा। "अगर हम ही जनता की रक्षा नहीं करते तो हमारा क्या फायदा? ये बन्दूकें हम किस लिए लिये फिरते हैं? अगर तुम डरते हो तो घर बैठो चूड़ियाँ पहन कर—

हम जाते हैं !"

"तो फिर चलो हम सब साथ चलें," पटेल ने कहा, उसका चेहरा असमंजस से तमतमा रहा था।

कल्लू त्से की अगुआई में देशरक्षक सेना और पटेल अपनी 'सुरक्षा सेना' को साथ लिये उनके पीछे-पीछे बाँध के किनारे-किनारे उस गाँव की ओर चल पड़े जिस पर डाकुओं ने धावा बोल दिया था।

जब वे सतत गति से दुलकी चाल चले जारहे थे दा-श्वी के दिल में तूफ़ान उठा। उसे महसूस होरहा था कि चबर उसके कूल्हे में लिपटी हुई है और अब हमारे लिए वह मौका आगया है। उसने सोचा लोगों को भयभीत करने के लिए तो चबर एक अच्छी चाल है लेकिन अगर अब हमें उनका इस्तेमाल करना पड़ा तो सारा गुड़ गोबर हो जायगा !

उसने अपने दस्ती बमों पर नजर डाली जो उसकी कमर में बँधे हुए थे, फिर उसने त्सुर का जो उसके आगे-आगे दौड़ा जारहा था कंधा पकड़ कर खींचा।

"ये दस्ती बम तुम किस तरह चलाते हो ?" वह फुसफुसाया।

"मुझे तो नहीं मालूम," त्सुर ने कहा, "मैंने तो कभी चलाये नहीं।"

"वाह, क्या बात कही है !" दा-श्वी ने व्यंग्य से अपने आप से कहा। हालाँकि पश्चिम से कड़ी सर्द हवा चल रही थी पर वह पसीने से शराबोर होरहा था। लेकिन उसने देखा कि कल्लू हमेशा की तरह अब भी उसी खामोशी के साथ सीना ताने लम्बे डग भरता हुआ आगे को बढ़ा चला जारहा है।

जब वे अपने लक्षित स्थान पर पहुँचे तो डाकुओं का वहाँ निशान तक न था।

पटेल शेन बाँध के एक टीले के ऊपर खड़ा होगया। "हमारा सौभाग्य कि हम उन्हें पकड़ न सके," उसने मूछें मरोड़ते हुए लापरवाही से कहा। "तुम्हारे दस्ती बम शायद चल ही न सकें।"

कल्लू त्से की आँखें चमक उठीं। "चलेंगे नहीं ? लो देखो !"

उसने एक बम की पिन खोली और उसे जोर से दूर एक खाली खेत

में फेंक दिया। ऐसे जोर के धमाके से वह फटा कि कान बहरे हो गये, जमीन की मिट्टी धमाके से ऊपर को विस्फुटित हुई और पत्ती गड़बड़ाकर दीवानों की नाईं इधर-उधर भागने लगे। पटेल खौफ के मारे खड़े से बैठ गया और टीले के ऊपर जहाँ वह खड़ा था रेंगता हुआ पीछे की ओर जाने लगा। उसे इसका भान ही न था कि उसके इस प्रकार रेंगने से उसके सुन्दर वस्त्र खराब होते जारहे थे।

"तुम्हें उनके साथ इस तरह खिलवाड़ नहीं करना चाहिये!" उसने तिरस्कार-भरे स्वर में कहा, पर देश रक्षक सेना ने उसका चिल्ला कर समर्थन किया।

"और यह देखो मेरी वाली!" खुर चिल्लाया और आस्तीनें चढ़ा कर उसने एक और बम फेंक दिया।

बिजली की-सी तेज़ी से वह भी फटा और शेन जो अभी ही खड़ा हुआ था धमाका सुनते ही फिर धड़ाम से नीचे आ गिरा।

"बन्द करो! बन्द करो यह!" वह चिंघाड़ा। "मुझे विश्वास हो गया है! तुम ज़रूर किसी को मार डालोगे!"

श्वाँग ने मूर्खता से अपनी आँखें घुमाईं और एक बम अपने सिर पर घुमाया।

"नहीं, नहीं," उसने विरोध किया। "मैंने अभी अपना बम नहीं फेंका है। देखो सब कोई!"

शेन लड़खड़ाता हुआ गिरा और उसने श्वाँग की बाँह पकड़ ली। "बहुत हो गया, भाई!" उसने हाथ जोड़े। "बन्द करो यह नादानी अब!"

श्वाँग ने अपना मुँह ऐंठ लिया मानो वह बहुत निराश हुआ हो। सब के सब लोग हँस पड़े।

"तुम और कुछ भी करलो, अपनी पिस्तौल न चलाओ!" खुर ने सावधान करते हुए कहा और दा-श्वी का कंधा थपथपाया।

दा-श्वी ने अपनी चवर कूल्हे में महसूस की और अपनी हँसी न रोक सका।

जब वे अपने गाँव लौटे तो अंधेरा हो चला था।

उसी रोज़ शाम को कल्लू त्से ने एक आदमी के हाथ पटेल को बुलवाया ताकि वह आकर दोनों जत्थों के विलय पर बात-चीत कर सकें। पटेल की बेचारे की तो हिम्मत न हुई पर उसने अपने सेक्रेटरी को यह कहने के लिए भेज दिया कि उसे सुझाव मंजूर है। तब कल्लू ने निम्नलिखित शर्तें तैयार कीं: शेन पटेल की हैसियत से काम करता रहेगा पर उसकी 'सेना' त्से के मातहत काम करेगी। दोनों जत्थे जापानियों के विरुद्ध संयुक्त मोर्चा बनायेंगे और सारे गाँव को लामबन्द करेंगे। धनवानों से धन लिया जायगा और बलवानों से उनकी मेहनत। जिस किसी के भी पास हथियारों का जखीरा होगा—मसलन पटेल के पास है—तो वह सारा-का-सारा जापानियों के विरुद्ध लड़ने के लिए दान दे देगा।

सेक्रेटरी की रिपोर्ट सुनने के बाद पटेल को रात भर नींद न आई।

अगले दिन कल्लू त्से अपने कुछ आदमियों को लेकर फिर पटेल के पास पहुँचा और पटेल हर शर्त पर राज़ी हो गया। दोनों गिरोह मिलकर एक हो गये। शेन के कुछ आदमियों ने इस्तीफा दे दिया लेकिन सारी बन्दूकें उनसे ले ली गईं और दुबारा दूसरों को बाँट दी गईं। शेन की पुरानी टोली के मुखिया की पिस्तौल अब कल्लू त्से के कूल्हे में आ बँधी। सारी बन्दूकें जिन्हें शेंज्या के बड़े-बड़े जमींदारों ने वहाँ और पड़ौस के गाँवों में छिपा रखा था ढूँढ निकाली गईं और देश-रक्षक सेना के सैनिकों में बाँट दी गईं। और भी शस्त्र खरीदने के लिए चन्दा इकट्ठा किया गया। देशरक्षक सेना की सदस्यता और शस्त्रास्त्र दोनों में वृद्धि हो गई।

× × × ×

जब देश-रक्षक सेना की कार्यवाहियों की खबर होज्वाँग गाँव में पहुँची तो हो ने यह निश्चय किया कि उसे कुछ-न-कुछ अवश्य करना चाहिये। उसने ग्वो, जिनलुंग और लिएव को शेंज्या पर एकाएकी धावा मारने भेज दिया।

वे अचानक शासन कार्यालय पर टूट पड़े और उन्होंने आटे की १००० पौंड रोटियाँ और अण्डे माँगे। ज्योंही पटेल ने यह सुना वह जान गया कि यह गड़बड़ करने का हीला-मात्र है। उसने कहा मैं अभी आता हूँ और दफ्तर से निकल कर सीधा कल्लू त्से के यहाँ पहुँचा।

"इतनी रोटियाँ हम कहाँ से लायेंगे? मेरी तो समझ में नहीं आता क्या करें? तुम ही मेहरबानी करके निपटो।" पटेल ने प्रार्थना की।

दुखी भंगिमा लिये त्से ने दा-श्वी और त्सुर को बुलाया और वे तीनों पटेल के साथ दफ्तर को वापिस आये। उन्होंने देखा ग्वो राक्षस जैसा भीमकाय था और पटेल की कुर्सी पर बैठा हुआ था। वह कुमिंतांग की पूरी वर्दी पहने हुए था और सेम ब्राउने कमर पट्टा बाँधे हुये था। उसके पास जिनलुंग गहरे रंग का गैर फौजी सूट पहने हुए खड़ा था, उसका हैट उसके चिकने बालों पर पीछे की ओर पड़ा हुआ था और कमर पट्टे में दो पिस्तौल बँधे हुए थे। गिरोह के दूसरे लोग भी विभिन्न पोशाकें पहने हुए थे। वे सबके सब सशस्त्र थे और उनकी मलिन आँखें उनके चरित्रों का प्रमाण थीं।

ग्वो ने अनुमान लगाया कि काले रंग का, भरी दाढ़ी वाला आदमी जो दो देहाती उजड्ड लोगों के साथ है कल्लू त्से ही होगा।

"तुम त्से लुहार ही हो ना?" उसने जान-बूझकर तिरस्कारपूर्ण स्वर में पूछा।

कल्लू ने अपना दाहिना पैर एक छोटी बेंच पर रख लिया और घुटने पर कुहनी रख कर खड़ा हो गया।

"हाँ मैं ही लुहार त्से हूँ। पर तुम्हें उससे क्या?" उसने लापरवाही से जवाब दिया।

"मुझे इससे क्या, एँ? मैं तुम्हें और इस गाँव वालों को हुक्म देता हूँ कि फौरन १००० पौंड रोटियाँ लाकर दो।"

"हमारे पास यहाँ भूसे की रोटियाँ तक नहीं हैं और तुम केक माँगने आये हो!" कल्लू ने एक रूखी हँसी हँसते हुए उसे झिड़का।

"हमें थोड़ी हरारत है," डाकू लिएव ने समझदारी से कहा, "और

हमें केक ही खाने हैं !"

"ख्याल तो तुम्हारा नेक है, अगर इसमें कामयाब हो जाओ !" त्सुर बोला।

"इस जैसे गरीब गाँव में तुम्हें केक कहाँ से मिल जायेंगे ?" दा-श्वी ने साहस बटोर कर कहा। "हमारे यहाँ तो पेस्ट्री की एक दूकान भी नहीं है।"

ग्वो का चेहरा ऐंठ गया। "हमारा समय नष्ट हो रहा है। देते हो या नहीं, बोलो ?"

अब तक श्वाँग ने जो देश-रक्षक सेना बुलवाई थी वह वहाँ आ पहुँची। आँगन में किसानों के एक गिरोह के साथ खड़े होकर वे बातचीत सुनने लगे। श्वांग का तुनक मिज़ाज एकदम भड़क उठा।

"क्या कहते हो तुम—इन लोगों के लिए तुम्हारे पास केक हैं या नहीं ?"

"नहीं !" भीड़ ने गरज कर कहा।

ग्वो का चेचक के दागों से भरा चेहरा आग की तरह लाल हो गया। "कौन यह हुल्लड़ कर रहा है ?" उसने घृणित स्वर में कहा।" "यह हमारे जत्थे के कमाण्डर का हुक्म है। अगर तुम देने से इन्कार करते हो तो आओ मेरे साथ और उन्हें जवाब दो।"

उसके इशारे पर ही उसके साथियों ने अपनी पिस्तौलें निकाल लीं और घोड़े चढ़ा लिये।

त्सुर ने तुर्ता-फुर्ती अपनी रायफल का घोड़ा सीधा कर लिया। देश-रक्षक सैनिक भी अपनी पिस्तौलों के घोड़े चढ़ाये हुए आँगन से कमरे में घुस आये। दा-श्वी का दिल जोर-जोर से धड़कने लगा। पटेल शेन दरवाजे से खिसका और नौ दो ग्यारह हो गया।

सहसा कल्लू सीधा खड़ा हो गया और उसने अपना हाथ उठाया। अपने लोगों को आँखमारी।

"ठीक है। जो कोई भी केक खाना चाहता है मेरे साथ आये।" उसने कहा।

"ए त्से ! देखना गड़बड़ करने की कोशिश मत करना।" जिनलुंग ने

सशंक हो चीखकर कहा।

कल्लू ने अपना सिर ऊपर को उठाया, "तुम्हारा कमाण्डर है ना? हमारा भी एक कमाण्डर है। अगर तुम्हें केक चाहिये तो आओ मेरे साथ जनरल लू के पास और वहाँ खाओ।"

"यह ठीक है," त्सुर ने कहा। "उसके पास ढेरों केक हैं!"

आँगन में किसानों ने शोर मचाया :

"चलो जनरल लू के पास! चलो जनरल लू के पास!"

ग्वो की आँखे साँड की आँखों के ढेलों की नाईं उभर आईं। उसने कल्लू त्से के सामने ही मेज ठोकी।

"ऐसी की तैसी इस बकवास की।" वह चिंघाड़ा, "मैं किसी जनरल लू को नहीं मानता। बाँध लो बे इस हरामजादे को।"

अनेक डाकू कल्लू की ओर बढ़े। उसने भी अपना पिस्तौल उठाया और उनकी तरफ बढ़ा।

"देखूँ कौन पहले चलाता है?" उसने चुनौती दी।

श्वाँग और देश-रक्षक सैनिकों ने बन्दूकें साथ लीं, कुछ ने अपने दस्ती बम निकाल लिये।

घोड़ों की टापों की नजदीक आती हुई आवाज सुनते ही सब ठिठक गये।

तीन आदमी खुरदरे सफेद कपड़े की वर्दी पहने हुए आये। घोड़ों से उतर कर वे आँगन में दाखिल हुए।

"लीडर त्से कहाँ है?" पहले ने पूछा।

पटेल के दफ्तर की ओर इशारा करते हुए एक किसान ने उत्तर दिया, "वहाँ अन्दर हैं।"

आदमी उछलकर कमरे में पहुँच गया। वह त्से के करीब गया और उसका हाथ दबाने लगा।

कल्लू त्से की बाँछे खिल गईं, "अरे, तुम कब आये यहाँ?"

"असल फौज पीछे आ रही है। हम तुमसे मिलने पहले चले आये।"

"वाह, वाह! आओ उस कमरे में बैठकर बातें करें।" उधर देश-रक्षक

सैनिक उन सिपाहियों के इर्द-गिर्द बड़ी उत्सुकता से जमा हो रहे थे कि वे दोनों पश्चिमी दिशा के कमरे में गये।

ग्वो का मुँह खुला रह गया, वह मूर्खों की नाई वहीं खड़ा रहा। जिनलुंग ने उसको कुहनी मार कर संकेत किया।

"आओ चलें!"

"हाँ, हमें देर भी हो रही है," ग्वो ने रुँधे गले से कहा। कल हम फिर आयेंगे।"

"हम केक लेने कल आयेंगे," लिएव चिल्लाया।

डाकू जल्दी-जल्दी निकल कर भाग गये।

जो सिपाही बड़े अच्छे मौके पर आ पहुँचे थे जनरल लू की सेना के सैनिक थे जो बयाँग झील तक आई थी।

जब वह फौज की टुकड़ी गाँव में आ गई तो उसने स्थानीय सुरक्षा अड्डे कायम किये और इस पर भी खास तौर से जुट गये कि डाकुओं का सफाया करदें। हो को हुक्म दिया गया कि या तो वह जापानियों से मुकाबले के युद्ध में उनसे मिल जाय या अपने हथियार उन्हें सौंप दे। इसके सिवा कोई चारा ही न था। हो ने उनके हुक्म की तामील का वायदा कर लिया।

दिसम्बर के महीने में कल्लू रूसे ने दा-श्वी को बारूद खरीदने के लिये होज्वाँग गाँव में भेजा। दा-श्वी बड़ी सड़क पर जा रहा था कि उसने संगीत-मिश्रित कुछ गोलियाँ चलने की आवज सुनी। सड़क के दोनों किनारों से लोगों के जत्थे आये और किसी की देहलीज पर दा-श्वी को उन्होंने ढकेल दिया। नीचे से लिएव एक दुनाली छोटी-सी बन्दूक लिये लोगों को चीरता हुआ चला आया। उसके पीछे छः संगीतज्ञ चले आ रहे थे जो अपनी हैसियत के अनुसार बाजे बजा रहे थे। उनके पीछे एक नीले रंग की पालकी आ रही थी। उसीके पीछे दुलहन की लाल पालकी थी जो लाल साटन और सोने के लेस से ढँकी

हुई थी। उसके पीछे पिस्तौल बाँधे आदमियों का एक गिरोह आ रहा था। यह भव्य जुलूस धीरे-धीरे चलता जा रहा था।

ये सारा ठाठ-बाट कौन कर रहा होगा? दा-श्वी ने सोचा। मालूम करने पर उसे पता चला कि जिनलुंग की शादी हो रही है और दुलहन का पारिवारिक नाम यांग है। दा-श्वी दिल बैठ गया।

"क्या उसका नाम मे है?"

"जी हाँ, क्या जानते हो उसे?"

दा-श्वी ने निश्चल व स्तब्ध हो दुलहन की पालकी को गुजरते हुए देखा।

उसी क्षण मे आँसुओं में भीगी हुई पालकी में हिचकोले ले रही थी। उसने बड़ी देर से सुन रखा था कि जिनलुंग अच्छा आदमी नहीं है। पिछले दो दिन से वह काँग पर पड़ी बीमारी का बहाना बना रही थी। उसने लिहाफ से अपना सर ढँक लिया था और खूब बिलख-बिलख कर रोई थी पर उसकी मा ने उसे ढाढ़स बँधाया था और मना लिया था। जब दुलहन की पालकी आकर रुकी तो वह थक कर चूर हो गई थी, उसे भान ही न था कि उसे कोई पालकी में बैठा रहा है।

: २ :

कम्युनिस्टों का प्रभाव—दिसम्बर १९३७-३८

विवाह के पश्चात् पहले तीन दिन तक तो मे के साथ अच्छा व्यवहार किया गया। रिवाजानुसार ही वह अपनी सुसराल में रही। चौथे दिन उसकी सास ने उससे सिलाई का काम दिखाने के लिए कहा। इसका भी रिवाज ही था। उस इलाके में यह रिवाज था कि बहू अपनी सास के लिए सूती कपड़े का पाजामा तैयार करके अपनी हुनरमंदी प्रदर्शित करती थी। जब पाजामा सिलकर

तैयार हो गया तो उसकी सास ने बड़ी बारीकी से उसका परीक्षण किया। काम उसे पसन्द न आया और उसने गैररज़ामंदी में सिर हिला दिया। उसकी सिलाई मोटी थी; कहीं अस्तर टेढ़ा-मेढ़ा था। सास ने अपना असंतोष बड़े पैने ढंग से प्रकट किया।

साल भर बीता होगा कि सुसराल वालों ने घर के सारे काम मे पर लाद दिये। हर रोज वह गेहूँ पीसती, खाना पकाती, मुश्कबेंत काटती और कोई दस फीट लम्बी चटाई बुनती थी।

उसकी सुसराल वालों के पास किसी ज़माने में पैसा था लेकिन जिनलुंग के बाप ने सब नष्ट कर दिया था। अब जो कुछ बचा था उसमें एक तो उनका पुराना भव्य भवन जो अब जीर्ण-शीर्ण हो चुका था और एक बगीचा था। परिवार का सारा खर्चा जिनलुंग के सिर था जो वक़्त-फवक़्त किसी से धोखा-फरेब से कुछ डालर ऐंठ लाता था। उस माले-गनीमत की मदद से वे लोग कुछ दिन तो जरा रोब-दाब और ठाट-बाट से गुज़ार देते थे। उनके इन क्षणिक ऐश्वर्यों में मे कभी शरीक न होती थी। वे लोग उसे गँवार 'फूहड़' समझते थे और गिरी निगाहों से देखते थे।

एक बार उसके ससुर ने जब वह अफीम पीकर मदहोश हो गया था उसे कुछ मक्खन लगे, सिके हुए टोस्ट दिये। ठीक उसी समय उसकी सास आ धमकी।

"क्यों मन्नी, क्या तेरे दो पेट हो गये हैं?" उसने स्नेहपूर्वक पूछा।

"मेरा ख्याल है कि अगर इसे एक बार पेट भरके खिलादो तो वह ज्यादा मेहनत कर सकती है।" उसके ससुर ने समझाया।

उसकी सास ने नाक से साँस छोड़ी पर बोली नहीं। मे की भूख मर गई। उसने टोस्ट टोकरी में ले जाकर रख दिये और अनाज पीसने चली गई। इस पतली-दुबली छोटी लड़की ने अपने बाल पीछे करके उनका जूड़ा बाँध लिया था जैसे कि अधेड़ उम्र वाली स्त्रियाँ करती हैं। वह एक बड़ा-सा भरा हुआ लबादा पहने हुए चक्की के भारी पाट को घुमा रही थी और आँसू उसके गालों पर ढुलक रहे थे।

उसकी सास बाज़ की भाँति उसे घूर रही थी। घर की हर एक चीज़ ताले

में बन्द रखी जाती थी। हर वक्त खाना पकाते समय सास नेमतखाने का ताला खोलती और जितना उस वक्त के लिये ज़रूरी होता आटा, दालें वगैरह खुद अपने हाथ से निकालकर देती थी। मे की उस समय बुरी हालत थी पर वहाँ था ही कौन जिससे वह गिला करती। उसका पति असभ्य और दुष्ट था और उसकी भवें सदैव तनी रहती थीं। उन दोनों का तो आपस में कहना-सुनना ही क्या था। मे की मा अपने गाँव वापस चली गई थी। गाँव वहाँ से काफी दूर था। अब उसके लिये सान्त्वना की एक ही जगह थी—वह अपनी बहन के यहाँ शेंज्या चली जाती और जी भर कर रोती। उसकी शोचनीय दशा का जब दा-श्वी को पता चला तो उसे हार्दिक दुःख हुआ। लेकिन अब जब कि वह विवाहिता थी वह बेचारा उसकी क्या मदद करता!

सन् १९३७ में दिसम्बर में जापानियों ने हमला किया। नवसंगठित क़म्युनिस्ट सेनाओं ने फू नदी के किनारे उनसे तीन दिन और तीन रातें डट कर लड़ाई की और मार भगाया। १९३८ के वसन्त में दुश्मन ने एक हज़ार से भी अधिक सैनिकों, तोपचियों और यानों के साथ पुनः आक्रमण किया। कम्युनिस्टों के पास स्थायी सेना में केवल तीन सौ सैनिक थे पर फिर भी उन्होंने दुश्मन को दिन भर नदी के किनारे रोके रखा। तब जापानी घुस आये और उन्होंने जिले की तहसील वाले परकोटे से घिरे शहर पर कब्जा कर लिया। बा लू की सेनाएँ देहातों की ओर भाग गईं। उन्होंने वहाँ की स्थानीय कम्युनिस्ट टोलियों से सहयोग किया और लोगों को अधिकाधिक संख्या में संगठित करने लगे।

प्रचार-जत्थे के सदस्य अक्सर शेंज्या में आते रहते थे। स्त्रियों की सहायक लाल सेना की सदस्याएँ भी अपनी नीली वर्दी में वहाँ आती थीं। वे दीवारों पर पोस्टर चिपकातीं और सड़कों व गलियों में खड़े होकर भाषण दिया करती थीं। जब कभी मे अपनी बहन के यहाँ आई हुई होती तो उसके साथ सभाओं में जाती जहाँ स्त्री सहायकों को देखकर उसे ईर्ष्या होती थी। भला कल्पना

कीजिए कि वे किस तरह श्रोताओं के सामने भाषण देती होंगी और लिख पढ़ लेती होंगी! वे किसी से दबती भी नहीं थीं!

कभी छटे-छमासे वह दा-श्वी को सड़कों पर प्रसन्नचित्त चलते हुए देख लेती थी। उसके सिर पर एक छोटी सफेद तौलिया लिपटी होती थी, और कमर में रायफल लटकी रहती थी!

छोटा रू भी जन-आन्दोलन में शामिल हो गया था। वह नवयुवक सहायकों में था जो गीत गाते थे, ड्रिल करते थे और आमतौर पर काम आते थे।

मे किसी तरह भी उनमें शामिल नहीं हो सकती थी क्योंकि वह शेंज्या में ज्यादा से ज्यादा रही तो तीन दिन। उसकी सास उसे वहाँ अधिक रहने ही न देती थी।

पतझड़ आया और किसान-सभाएँ संगठित हुईं। कई गाँवों में तो कल्लू ऐसे ही उनका नेता था और अधिकतर शेंज्या से बाहर ही रहता था। शेंज्या की किसान-सभा में दा-श्वी भी "काडर" बन गया, (सरकारी महकमों और जन-संगठनों के सक्रिय कार्यकर्त्ता को यही नाम दिया जाता है) पटेल शेन उसकी पीठ पीछे उसके खिलाफ बड़ी घिनावनी बातें करता रहा।

"हुँह! ये मुट्ठी भर ढपोरसंख, जाहिल लोग क्या कर लेंगे सुसरे?" वह उनका उपहास करते हुए कहता था।

जब ज़मीन का लगान और सूद की दर कम करवाने का कार्यक्रम शुरू हुआ तो शेन और भी अधिक असंतुष्ट हो गया और उसने चोरी-छिपे इस कार्यक्रम को असफल बनाने की भरसक चेष्टा की। लेकिन जब किसान-सभा के अनेक सदस्यों ने जिला-सरकार से उसकी शिकायत की तो वह रास्ते पर आ गया। दा-श्वी को हैरानी होती और साथ ही अविश्वास भी जब वह उसे देखते ही झुक कर सलाम करता और कुशल-क्षेम पूछता था।

दियेह ने हिसाब लगाया कि वह चक्रवृद्धि ब्याज जो उसे शेन को देना था अब तक मूलधन के बराबर होगया था। यदि लगान और ब्याज घटाओ का कानून लागू न होता जिसके कारण कि अब तक न वसूल किये गये लगान

और ब्याज निर्धारित रकम से अधिक लेना अवैध घोषित होगया है, तो वह अपनी जमीन खो बैठता। अब इतने दिनों के बाद बाप-बेटे बड़े आराम और बेफिक्री से खाना खा सकते थे।

"यह किसान-सभा के ही दम का जहूर है कि हमारी गर्दनें जमींदार के पंजे से निकल गईं," दियेह ने दा-श्वी से कहा, "अब किये जाओ मेहनत से काम!"

अब तो दा-श्वी पहले से कहीं अधिक उत्साह के साथ काम में जुट गया।

× × × ×

श्वाँग ने सोचा कि दा-श्वी जैसे मेहनती को तो कम्युनिस्ट पार्टी में ले लेना चाहिये। एक दिन दोपहर को वह उसे ताड़ने के लिए उसके घर गया।

"क्या तुम व्यस्त हो? आओ कुछ कुरकुला ही जमा करें," उसने सुझाया। दा-श्वी ने अपना हँसिया और कुछ रस्सी ली और दोनों गाँव से चल पड़े। खेतों में कुछ देर तक कटाई करने के बाद वे ऐसे स्थान पर आये जहाँ नरकटों के घने झुरमुट खड़े थे। जब वे हँसिया चला रहे थे तो श्वाँग ने इधर-उधर नजर दौड़ा कर देखा कि और कोई तो उन्हें नहीं देख रहा और फिर दा-श्वी से प्रश्न किया:

"क्या ख्याल है तुम्हारा, मार भगायेंगे हम जापानियों को?"

"निश्चित रूप से!"

"क्या तुम्हें डर लगता है उनसे?"

"उनसे डरने की क्या बात है?"

"दा-श्वी, कौन हमें जापानियों के खिलाफ लड़ने में हमारी अगुआई कर रहा है, भला?"

यह तो अजीब आदमी है, दा-श्वी ने सोचा। ये सब प्रश्न मुझसे

क्यों पूछ रहा है वह ? फिर भी बड़े विश्वास के साथ उसने उत्तर दिया, "कल्लू त्से, और कौन !"

श्वाँग हँस पड़ा। "जानते भी हो कौन है कल्लू त्से ?"

दा-श्वी ने ढूँढती निगाहों से उसकी ओर देखा। "मेरा भाई है और कौन होता !"

छोकरा तो बूदम है ! श्वाँग ने व्याकुल हो सोचा। वे खामोशी के साथ कटाई करते रहे। कई मिनट बाद श्वाँग ने फिर किस्सा छेड़ा।

"दा-श्वी, भविष्य में जब कम्युनिस्ट व्यवस्था प्रचलित हो जायगी, तुम समझते हो अच्छा होगा हमारे लिये या नहीं !"

"मैं नहीं जानता......अगर वे मेरी जमीन का भी समान वितरण करदें तो क्या होगा ? मेरे पास है ही कितनी जमीन, एक एकड़ भी तो नहीं।..."

श्वाँग ने अपनी कमर सीधी की और जोर-जोर से हँसिया चलाने लगा।

"अरे बौड़म ! तुम्हारी जमीन का टुकड़ा भला कोई क्यों बाँटने लगा !" उसने क्रोधपूर्ण दृष्टि दा-श्वी पर डाली जो अभी तक यंत्रवत् अपना हँसिया चला रहा था। "चलो खतम करो कटाई, अपन वापस चलते हैं।"

जलाऊ डण्ठलों के ढेर उन्होंने कन्धे पर रखे और बगैर कुछ बोले गाँव वापस आगये।

दा-श्वी की समझ में कुछ न आया। वह सोचता ही रहा कि आखिर श्वाँग के दिल में बदा क्या है।"

एक दिन शाम को पहरे पर त्सुर की पारी आई। उसने दा-श्वी से साथ चलने को कहा। अपनी रायफल लिये दा-श्वी त्सुर के साथ गाँव को आने वाली सड़क के उस पार पहरे पर गया।

डण्ठलों के ढेर पर बैठ जाने और कुछ देर यों ही गप्पें मारने के बाद त्सुर बोला, "तुम भी दोस्त हो बड़े जोरदार आदमी, पर जरा सुस्त हो। क्या कोई तुमसे भर्ती होने के लिए कहता था ?"

दा-श्वी की समझ में अब भी कुछ न आया। "काहे में भर्ती होने के लिए ?"

"अरे यार तुम बड़े घुन्ने हो, बोलते ही नहीं !" त्सुर को क्रोध आगया।

"क्या श्वाँग ने तुमसे इस बारे में बातचीत नहीं की ?"

"नहीं, कोई खास बात तो की नहीं उसने मुझसे !" दा-श्वी ने जवाब दिया।

इस मूर्ख को मैं क्या चाटूँगा ! त्सुर ने परेशान होकर कहा। यह श्वाँग का "उम्मीदवार" (पार्टी सदस्यता के लिए उम्मीदवार—अनु०) है और किसी ने मुझसे कहा भी नहीं कि मैं इससे बातचीत करूँ ·····लेकिन मुझे कुछ करना जरूर चाहिये !

सहसा दा-श्वी को बात सूझ गई। "तुम्हारा मतलब है कम्युनिस्ट पार्टी में भरती होने के लिए !" वह चीखा।

त्सुर उससे लिपट गया। "अरे पर चीखते क्यों हो ? क्या सब आदमियों को सुनाना चाहते हो अपनी बात ?"

"त्सुर," दा-श्वी फुसफुसाया, "अगर मैं पार्टी में शामिल हो जाऊँ तो क्या अपने खेत की देख-भाल भी कर सकूँगा ?"

"हाँ, हाँ बिल्कुल। अगर किसान खेती ही न करेंगे तो हम खायेंगे क्या ?"

"तब तो मैं तैयार हूँ। तुम मेम्बर हो क्या ? क्या-क्या करना पड़ता है भर्ती होने के लिए ?"

"मुझे······," त्सुर कहना तो चाहता था लेकिन जानता था कि उसे कहना नहीं चाहिये। "हम खुद ही क्यों न देखें क्या-क्या होता है," उसने अस्पष्ट स्वर में कहा। "अगर मैं सुनूँगा तो तुम्हें बता दूँगा और तुम्हें पता चले तो तुम मुझसे कह देना, ठीक ?"

"ठीक," दा-श्वी बोला।

जब त्सुर की पहरेदार की ड्यूटी पूरी होगई तो दा-श्वी उसके साथ-साथ गाँव को वापस आगया। "अगर तुम पता लगालो कि पार्टी में किस तरह भर्ती होते हैं तो मुझे भूल न जाना !" दा-श्वी ने सरगोशी के लहजे में त्सुर को याद दिलाया।

खुर ने मुस्कराते हुए स्वीकृति प्रकट की और वे विदा हुए।

अगले पन्द्रह दिन तक दा-श्वी बड़ी बेचैनी से उस खबर की प्रतीक्षा करता रहा लेकिन खुर ने बाद में विषय छेड़ा ही नहीं। दा-श्वी के मस्तिष्क को तो वह प्रश्न निरंतर कष्ट दे रहा था पर पूछने का उसे साहस न हुआ। उसने देखा कि जब श्वाँग किसानों से किसी महत्त्वपूर्ण विषय पर बातें करता हुआ होता और वह उसके पास चला जाता तो उसे देखते ही वे उसे किसी काम के लिए कहीं भेज देते। उसने अनुमान लगाया कि उसे जान-बूझ कर अलग रखा जारहा है और इससे उसे बड़ा कष्ट पहुँचा।

एक दिन रात को श्वाँग ने देश-रक्षक सेना को बुलाया। उनका उद्देश्य यह था कि यातायात के साधन नष्ट-भ्रष्ट कर दिये जायें और पश्चिम में जापानियों के कब्जे में जो इलाके हैं उनमें आम सड़कों पर बड़े-बड़े गड्ढे खोद लिये जायें। जब वे बड़ी सड़क पर पहुँचे तो श्वाँग ने कुछ संतरी नियुक्त कर दिये और शेष को विभिन्न टुकड़ियों में बाँट दिया। उन्होंने एक दूसरे से स्पर्द्धा की और यह दर्शाया कि कौन ज्यादा खोदता है और कितनी जल्दी खोदता है। मौसम सख्त सर्दी का था लेकिन फिर भी दा-श्वी ने अपना ओवर कोट उतार फेंका और आस्तीनें चढ़ा लीं। उसने अपनी कुदाली भरपूर ताकत के साथ जमीन में गहरी मारी और इतना खोदा कि कोई उसकी बराबरी न कर सका। उसके अपनी तरफ के हिस्से में तो आनन-फानन में दस फीट गहरी खाई खुद गई।

जब वे लौटे तो दा-श्वी अपने साथ बड़ा लंबा टेलिफोन का खम्भा जिसमें खूब लम्बा तार लिपटा हुआ था, लेकर आया। श्वाँग भी कंधे पर एक कुदाली व फावड़ा लिये और कमर में तार की गेडुरी लपेटे उसके पीछे पैर घसीटता हुआ चल रहा था। वे लोग सबसे पीछे धीरे-धीरे चल रहे थे। आधे रास्ते में ही उन्होंने अपने विजय-चिन्ह उतार कर रखे और विश्राम किया।

उज्ज्वल चन्द्रमा की चाँदनी में ऊँकड़ू बैठे हुए उन आदमियों की परछाइयाँ अद्भुत दिखाई दे रही थीं। दा-श्वी ने अपना पाइप सुलगा लिया। श्वाँग पसीने से तर-बतर था।

"अरे मेरी पीठ," उसने हास्य का अभिनन्दन करते हुए कहा। "इस वजन ने तो मेरी कमर तोड़ के रखदी !"

"जलाऊ लकड़ी इसकी खूब बनेंगी," दा-श्वी ने टेलिफोन के खम्भे को स्नेहपूर्वक थपथपाते हुए कहा। "जब इन्हें फाड़ लेंगे तो इनसे तुम्हें जितना चाहिए पानी उबाल कर देंगे हम !"

"दा-श्वी, जब भी तुम कोई काम करो खूब दिल लगा कर करो ! तुम बड़े अच्छे आदमी हो।"

"लेकिन तुम तो मुझे काम का आदमी समझते ही नहीं," दा-श्वी ने दुःखी होकर कहा।" अगर समझते होते तो मुझे कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल न कर लेते !"

"तुम जानते भी हो पार्टी का क्या काम होता है ?" श्वाँग ने मुस्करा कर पूछा।

"हाँ, हाँ जानता क्यों नहीं—पार्टी जापानियों से लड़ती है !"

"और क्या करती है ?"

"वह हमारे लगान घटाओ कार्यक्रम की अगुआई करती है और इसका ख्याल रखती है कि हम गरीब लोग भूखों न मरें।"

"ठीक है," श्वाँग ने हँसते हुए कहा। "कम्युनिस्ट पार्टी चाहती है हरेक को पहनने को कपड़ा, खाने को रोटी, पढ़ने को किताबें और जीने का पूरा हक हासिल हो।"

"मेरा हृदय से यह विश्वास है कि कम्युनिस्ट पार्टी अच्छा और न्यायोचित संगठन है" दा-श्वी ने भोलेपन से कहा। और पाइप श्वाँग को थमा दिया।

श्वाँग ने दो-चार कश लिये और फिर पूछा, "तुम्हारी नजर में हमारे गाँव में कौन कम्युनिस्ट है ?"

"यह तो ऐसा हुआ जैसे तुम मेरे अपने भाई के बारे में पूछ रहे हो। एक तो तुम ही हो !"

श्वाँग हँस दिया पर उसने जवाब कुछ न दिया। दा-श्वी ने उसकी

बाँह पकड़ ली।

"मुझे इस तरह कौतूहल में न रखो!" उसने जल्दी से कहा। "मैं तुम ही लोगों से सीखना चाहता हूँ, तुम्हारे साथ ही काम करना चाहता हूँ क्योंकि मैं जानता हूँ तुम लोग बहुत नेक काम कर रहे हो!"

"कम्युनिस्ट पार्टी हम-तुम जैसे मजदूरों और किसानों से ही बनी है। तुम्हारे स्वागत का कोई प्रश्न नहीं है। दर असल हमारी बैठक हो भी चुकी है और उसमें तुम्हें मेम्बर बना भी लिया गया है।"

"क्या वास्तव में मैं मेम्बर हूँ?" दा-श्वी ने उछल कर अपना आनन्द जाहिर किया और चीख उठा।

"इतने जोर से न चीखो! अपनी सदस्यता बहुत गुप्त रखनी चाहिए। यहाँ तक कि अपने माता-पिता और पत्नी को भी यह नहीं बताना चाहिए।"

दा-श्वी ने उस रहस्य को दूसरों पर प्रकट न करने का वचन दिया। जब वह घर लौटा तो प्रसन्नता से उसका चेहरा दमक रहा था मानो उसके नसीब खुल गये हों।

अगले दिन देहात के कम्युनिस्टों की एक सभा में दा-श्वी का कम्युनिस्ट पार्टी की पाँतों में स्वागत किया गया।

सभा के समाप्त होने के बाद दा-श्वी अपने खेत को लौट आया। उसके पिता ने उसे बताया कि मे को पीटा गया है और वह अपनी बहन के यहाँ ठहरी हुई है। बूढ़े ने अपना सिर हिला दिया।

"देवतागण सब चैन की नींद सो रहे हैं कि ऐसी खूबी की छोकरी ऐसे दुष्टों के पल्ले बाँध दी और कुछ नहीं कहते," उसने आह भरी।

"उनके पास पैसा जो है!" दा-श्वी ने क्रोध में कहा।

"वह हमसे हमेशा अच्छा बर्ताव करती आई है। जाकर उसे देख क्यों नहीं आते तुम?" उसके छोटे भाई रू ने सुझाव दिया।

"नहीं, होने दो जैसा हो रहा है!" दा-श्वी ने जवाब दिया। लेकिन एक पाइप पी चुकने के बाद वह कल्लू के घर की ओर चला।

जब वह घर में दाखिल हुआ तो मे अपनी बहन के साथ बर्तन माँझ

रही थी। उसकी पीठ दा-श्वी की ओर थी। लैम्प के मन्द प्रकाश में मार की कोई खराशें उसे न दीख पड़ीं।

"मेरी मा तो अंधी हो गई थीं कि लौंडिया को उठाकर ऐसे घर में ब्याह दिया!" श्रीमती त्से ने कटु स्वर में कहा। "वे इसे कोसते हैं, पीटते हैं। अब के इसकी सास माचिस कहीं रखकर भूल गई। मे ने अपने पैसों से दूसरी माचिस खरीदी। सास ने उस पर यह दोष लगाया कि उसने माचिस चुरा ली है और उसके मुँह में कुछ तीलियाँ ठूँस दीं। फिर एक लकड़ी ली और उसे सिर पर और मुँह पर बड़ी बेदर्दी से पीटा! देखो!" उन्होंने मे को बाँह पकड़ कर खींचा। "देखने दो दा-श्वी को भी मार के निशान!"

मे ने बहन से अपनी बाँह छुड़ाई और भाग गई। चेहरे को हाथों से ढँकते हुए वह फूट-फूटकर रोने लगी।

"इसका सिर तो जख्मों से लहू लुहान हो रहा है," श्रीमती त्से ने आह भरते हुए कहा, "और माथा सारा सूजा हुआ है। कमबख्तों ने इसकी आँख भी तो नहीं छोड़ी!"

"सूअर साले! ऐसे जहरीले हैं हरामज़ादे!" दा-श्वी ने ढाढ़स बँधाया, शब्द उसके कण्ठ में आकर रुक गये थे।

"अगर साल भर बाद ही वे इससे ऐसा बर्ताव करने लगे हैं तो आगे चलकर न जाने क्या करेंगे!" श्रीमती त्से ने कहा।

"ख़ैर कुछ भी हो, मैं तो अब वहाँ जाऊँगी नहीं!" मे ने विद्रोह स्वरूप सिर उठाते हुए कहा।

"अइ हय! नहीं जायेगी तो क्या करेगी तू फिर?"

"लाल फौज की स्त्री सहायकों में भर्ती हो जाऊँगी!"

"मूर्ख न बन! पढ़ना-लिखना तुझे आता नहीं, कैसे ले लेंगे वे तुझे?"

"नहीं नहीं ठीक है," दा-श्वी फौरन बोल उठा। "उनके यहाँ और भी बहुत-सी स्त्रियाँ हैं जो पढ़ी-लिखी बिल्कुल नहीं हैं!"

श्रीमती त्से के बच्चे की आँखों में नींद भरी हुई थी, वह चीख-चीख कर रोने लगा; दा-श्वी उठ कर चल दिया।

अगले दिन जिनलुंग एक और आदमी को साथ लेकर आया और घसीटकर मे को ले गया। दा-श्वी उसके बारे में बहुत चिंतित था लेकिन उसने मन-ही-मन सोचा: अगर मैं उसके बारे में सवाल करने शुरू कर दूँगा तो लोग समझेंगे हमारे दोनों के दरम्यान कुछ-न-कुछ दाल में काला है, और उससे तो मामला और भी बिगड़ जायेगा।

उसने भी उस विषय को वैसा ही छोड़ दिया।

कई दिनों के बाद दा-श्वी को आज्ञा दी गई कि वह जिले के ट्रेनिंग स्कूल में 'काडरों' की शिक्षा प्राप्त करे। पुराने जमाने में किसान के लड़के को सरकार की तरफ से फौजी ट्रेनिंग के अतिरिक्त कोई ट्रेनिंग दी ही न जाती थी।

"क्या यह ट्रेनिंग-ब्रेनिंग तुम्हें सिपाही बनाने के लिए नहीं दी जा रही? दियेह ने पूछा? "तुम अपने भाई कल्लू से कहकर किसी और को क्यों नहीं भिजवा देता?"

"यह कोई सैनिक-ट्रेनिंग थोड़े ही है। मुझे तो चिंता इस चीज़ की है कि वे कहीं मुझे किसी दूर-दराज़ स्थान पर काम के लिए न भेज दें," दा-श्वी ने सोचते हुए जवाब दिया।

"यहाँ तेरे बगैर हम यह जमीन भी तो नहीं जोत सकते!" पिता ने दुखी होकर कहा।

दा-श्वी बेचारा जानता ही न था क्या करे। दियेह बूढ़ा हो चला था और रू तो अभी बहुत छोटा ही था, खेत पर किसी प्रकार का भारी काम उसके बस का न था। दा-श्वी को अपनी ज़मीन के उस टुकड़े और जीर्ण-शीर्ण पुरानी झोंपड़ी से बहुत लगाव था और वह वहाँ से जाना नहीं चाहता था। कल्लू त्से गाँव से बाहर गया हुआ था इसलिए उसने अपनी समस्या श्वाँग के सामने पेश करने की ठानी।

पूर्व इसके कि उसे मुँह खोलने का मौका मिला, श्वाँग ने प्रसन्नचित्त हो उसे काडर-स्कूल में भर्ती होने पर बधाई दी।

"वहाँ तुम सांस्कृतिक दृष्टि से और राजनीतिक समझदारी में काफी बेहतर हो जाओगे। जब स्कूल से निकलोगे तो एक महत्वपूर्ण कार्यकर्त्ता बनके

निकलोगे। फिर ज़रा हम जैसे बेवकूफों को नीची निगाह से न देखना!" उसने व्यंग्य किया।

"उसे कैसे भेज रहे हो तुम, मुझे क्यों नहीं भेजते?" त्सुर बड़बड़ाया।

"तुम्हें जल्दी काहे की है? जब वह आ जायगा तो तुम चले जाना। हम एक बार में एक आदमी ही भेज रहे हैं।"

जब दा-श्वी ने देखा कि स्कूल जाने के लिए लोग झगड़ रहे हैं तो उसे कुछ और महसूस होने लगा। झटपट वह सामान बाँधने के लिए घर को लौटा। उसने अपने पिता को पुनः आश्वासन दिया कि ट्रेनिंग बहुत अच्छी चीज़ है और साथ ही श्वाँग के मकान पर जो किस्सा हुआ वह भी उसे कह सुनाया। दियेह ने भी अपने बेटे को अधिक कुछ कहना ठीक न समझा। बल्कि इसके विपरीत उसने एक पुराने सन्दूक की जेब में से एक मुड़ा-सा मैला नोट निकाल कर दा-श्वी के जेब-खर्च के लिए दिया। अगले दिन सवेरे अपना बिस्तर लेकर दा-श्वी स्कूल के लिए रवाना हुआ।

स्कूल उस गाँव में स्थित था जहाँ आजकल काउण्टी* सरकार का मुख्यालय बना हुआ था। रास्ते में दा-श्वी एक गाँव में जाकर कल्लू त्से से मिला। अभी उनमें अभिवादन ही हुआ था कि एक नवयुवती दौड़ी हुई आई। उसका धारीदार लबादा धूल-धूसरित था और बाल सब उलझे हुए थे। वह मे थी।

"मुझे बचाइए दूल्हा भाई!" मे ने कल्लू से प्रार्थना की। "वे मुझे जिन्दा नहीं रहने देंगे।"

उसकी बड़े-बड़े आँसुओं से भरी हुई आँखों ने दा-श्वी को देखा और अपना सिर कल्लू की ओर घुमा लिया। क्षण भर तक तो वह बोल ही न सकी। आहिस्ता-आहिस्ता उसने कल्लू के प्रश्नों के उत्तर दिये और उसे बताया कि जब से जिनलुंग उसे घसीट कर ले गया था क्या-क्या ज़ुल्म उस पर ढाये गये।

"अच्छा! तो तू घूमना-फिरना चाहती है ना?" जिनलुंग ने कहा

* जिले से बड़ा पर प्रान्त से छोटा।

था। "जहाँ जरा-सी बात हुई और तू दौड़ी हुई अपने बहनोई के घर चली गई !" उसने कई बार जोर-जोर से उसके गालों पर थप्पड़ मारे थे और फिर एक कमरे में बंद कर दिया था। उसके बाद उसने और उसकी मा ने मे पर काम पर काम लाद दिये और भूखों मारा।

"अब जो तू शेंज्या गई तो मैं तेरी टाँगे तोड़ दूँगी, समझी !" उसकी सास ने उसे चेतावनी देते हुए कहा था।

मे उस व्यवहार को सहन न कर सकी। वह एक रात जब जिनलुग घर पर सोने के लिए नहीं आया वहाँ और रुकी। पौ फटने के पहले ही वह खिड़की में से निकल कर, दीवार पर उतरी और वहाँ से कूद कर दौड़ पड़ी।

"मैं वहाँ अब नहीं रह सकती," उसने कल्लू से जरा धीमे स्वर में कहा।

"तुमने नहीं कहा था कि बूढ़े-जवान, मर्द-औरतें सबको जापानियों से लड़ना चाहिए ! मैं लाल सेना के स्त्री सहायकों के संगठन में दाखिल होना चाहती हूँ। मुझे पढ़ना-लिखना तो आता नहीं लेकिन हाँ मैं पानी भर सकती हूँ और दूसरे छोटे-मोटे काम कर सकती हूँ······कोई भी काम हो उन शैतानों के साथ रहने से तो वह बेहतर ही होगा !"

कल्लू सोच में डूब गया, उसकी त्यौरियाँ चढ़ गईं। "अगर हम तुम्हें किसी ट्रेनिंग के लिए भेज दें तो कैसा रहेगा ?"

"ट्रेनिंग का क्या मतलब है ?"

"ट्रेनिंग बहुत बढ़िया चीज है !" दा-श्वी ने तुरन्त कल्लू का समर्थन किया।

"उससे तुम्हारी समझदारी में सुधार होगा। उस······उससे तुम्हारी राजनीतिक समझ भी बेहतर हो जायेगी······यह तो बिल्कुल ऐसी ही है जैसे स्कूल में पढ़ने जाओ !"

"अच्छा है ! तब तो मैं जरूर जाऊँगी ट्रेनिंग लेने। कुछ भी हो अब मैं घर तो जाऊँगी नहीं !" मे ने कहा।

कल्लू ने मे के लिए एक परिचय-पत्र लिखा और वह दा-श्वी तथा

दूसरे तरुण विद्यार्थियों के साथ ट्रेनिंग स्कूल को गई। उसकी ससुराल वालों ने बहुत दिनों तक उसे ढूँढने की कोशिश की लेकिन वे उसे पा न सके।

× × × ×

काउण्टी का ट्रेनिंग स्कूल एक कम्पाउण्ड में स्थित था जिसके अंदर अनेक बड़ी-बड़ी इमारतें बनी हुई थीं। दा-श्वी और दूसरों ने अपने-अपने परिचय-पत्र डीन को पेश किये जो लगभग तीस वर्ष का था। उसका नाम चेंग था और वह सफेद खुरदरे कपड़े की वर्दी पहने हुए था। सभी विद्यार्थियों के नाम रजिस्टर में दर्ज करने के बाद उसने मे से मैत्रीपूर्ण ढंग से पूछा कि वह उस स्कूल में क्यों आई है।

मे के चेहरे का रंग उड़ गया, और उसकी जबान लड़खड़ा गई, पर अन्त में सहसा उसके मुख से निकला, "ट्रेनिंग हासिल करने के लिए!"

चेंग ने तब तक स्कूल का उद्देश्य समझाया जब तक वह उसे भली भाँति समझ न गई।

"ओह......" उसने मुस्कराते हुए कहा, "तो ट्रेनिंग इसलिए है कि हमें घर पर न रहना पड़े बल्कि बाहर भी हम काम कर सकें।"

डीन हँस पड़ा और उसने उसे कुछ नम्बर दिये। फिर उसने फिर वही प्रश्न दा-श्वी से पूछा।

दा-श्वी आगे बढ़ा और रस्म के तौर पर उसने मस्तक नवाया। "इसलिए कि हम आखिरी दम तक जापानियों से लड़ें और उन्हें मार भगायें!" उसने बुलंद आवाज से उत्तर दिया।

चेंग ने भी उसको झुक कर अभिवादन किया। "यदि आपको कुछ आदमियों के गिरोह की कमान दे दी जाय तो क्या आप उसके नेतृत्व करने का साहस कर सकेंगे?"

"जी हाँ, अवश्य!" दा-श्वी गरजा।

चेंग ने सर हिलाया और दूसरों से प्रश्न करने को मुड़ा।

जब इन्टरव्यू समाप्त हो गये तो डीन ने विद्यार्थियों को श्रेणियों में विभाजित कर दिया। पुरुष-स्त्रियाँ सभी एक श्रेणी में थीं पर उनके रहने के क्वार्टर अलग-अलग थे। दा-श्वी और मे एक ही कक्षा में रखे गये थे।

दा-श्वी को सहसा पार्टी का वह पत्र याद हो आया जिसमें प्रमाणित किया गया था कि वह कम्युनिस्ट है। उसने झट वह पत्र जेब में से निकाला और उत्तेजित हो उसे चैंग की ओर बढ़ा दिया।

"यह अपनी 'सदस्यता' का पत्र किसे दूँ मैं?" वह चीखा।

चैंग ने तुरन्त मिस चेन की ओर इशारा किया। मिस चेन कोई चालीस के लगभग थीं और कमरे के दूर-दराज कोने में बैठी हुई थीं। उन्होंने अपना हाथ प्रमाणपत्र लेने के लिए बढ़ाया और मुस्करा दीं।

"ऐसा शोर-गुल न मचाइए," वह मंद स्वर में बोलीं। यहाँ बहुत-से गैर-सदस्य भी हैं।"

प्रारम्भिक पूछ-ताछ पूरी हो गई।

जब ट्रेनिंग-काल प्रारम्भ हुआ तो मे और दा-श्वी को आदी बनने में बड़ी कठिनाई हुई। दिन के समय तो उनकी कक्षा लगती थी और रात को बहस-मुबाहसे की बैठकें होती थीं। प्रत्येक कार्य के लिए घण्टा बजता था—प्रातः उठने, रात्रि को सोने, व्यायाम, गायनादि सबके लिए......और जब उनकी आँखें झपकने लगतीं तब कार्यक्रम समाप्त होता। यही सम्पूर्ण दिनचर्या थी।

लगभग तीन सौ विद्यार्थी थे जो एक ही मेस के हाल में बैठ कर खाना खाते थे। भोजन बड़ा सादा होता था, साधारणतया ज्वार-बाजरे की रोटी और शलजम आदि। भोजन का समय बहुत थोड़ा होता था। दा-श्वी तो बिना खटके जल्दी-जल्दी खालेता था पर मे के होठों पर गरम शोरबे से छाले पड़ जाते थे।

रात के समय पुरुष विद्यार्थी एक बड़े कमरे के फर्श पर सोते थे। उनकी चटाइयाँ घास-फूस की बनी होती थीं और ईंटों के तकिये होते थे। स्त्री विद्यार्थियों को उतनी सख्ती नहीं थी वे काँग पर सोया करती थीं। हालाँकि उनका बिस्तर फर्श से कुछ ऊपर होता था परन्तु उस कड़कड़ाती सर्दी में वे

उसे गर्मी भी नहीं सकती थीं। मे अपने साथ कोई बिस्तर नहीं ले गई थी। वह अपने से उम्र में बड़ी लड़की तियेन से लिपट कर सोती थी और फलस्वरूप एक-न-एक का शरीर अध खुला रह जाता था। उस कड़ी सर्दी में मे की टाँगों की पेशियाँ ठिठुर जाती थीं और सारा शरीर अकड़ जाता था। इसी पीड़ा के कारण आधी रात को ही उसकी आँख खुल जाती थी और वह कष्ट से रोने लगती थी। उसे महसूस होता, काश मैं अपनी बहन के पास चली जाती और फिर कभी इस मनहूस स्कूल की शक्ल न देखती।

तियेन ने हाई स्कूल पास कर लिया था और अब पार्टी मेम्बर बन गई थी। वह मे के घुटनों की पेशियों पर मालिश करती और बहन की तरह उसे तसल्ली देती रहती। कभी-कभी वह छोटे-छोटे गरम रोल खरीदती और उनमें मे को शरीक करते हुए कहती, "एक तुम खाओ, एक मैं खाती हूँ। हम दोनों खूब मेहनत करेंगे और घर के बारे में सोचेंगे भी नहीं।"

मे अपनी सुसराल जाना न चाहती थी। वह यह भी जानती थी कि यदि वह अपनी बहन के यहाँ रहने लगी तो एक-न-एक दिन जिनलुंग पकड़ कर ले जायेगा। कम-से-कम स्कूल में वह आजाद तो थी। उसने अपने बाल छाँट कर छोटे कर लिये और उन्हें बढ़ाने की ठानी।

दा-श्वी को भी रात को बहुत सर्दी लगती थी और वह बड़ा परेशान रहा करता था। लेकिन सबसे अधिक कष्ट उसे अपनी कक्षाओं से होता था। विद्यार्थी जीवन के विविध क्षेत्रों से वहाँ आये थे, कुछ पहले पढ़े-लिखे थे कुछ निपट निरक्षर। वे हर वज़ह की और ढंग की पोशाक पहनते थे। दा-श्वी ठेठ किसान लगता था। वह एक फटी-सी कमरी पहनता था जो एक पट्टे से लिपटी हुई थी जिसके नीचे वह अपना लंबा, पर छोटे मुँह वाला पाइप इस तरह खुरस लेता था कि जैसे छुरा रख लिया हो। उसका सिर एक खुरदरी सफेद तौलिया से लिपटा हुआ होता था ताकि धूप और गर्द से बच सके।

विद्यार्थी धूप में आँगन में बैठे अपनी कक्षा लगाते थे। दा-श्वी सामने कुछ ऊँचे स्थान पर बैठ जाता और जो कुछ भी पढ़ाया जाता उसे बड़े ध्यान से कान लगाकर सुनता था। लेकिन 'वर्तमान परिस्थितियों' या 'संयुक्त मोर्चा'

या 'छापेमार-नीति' का क्या अर्थ होता है यह उसके बिल्कुल पल्ले न पड़ता।

शिक्षकों में से एक 'दीर्घ चढ़ाई' में हो आया था। उसका ऐसा मोटा हूनानी लहजा था कि एक बार जब उसने दा-श्वी से प्रश्न पूछा तो वह बेचारा उसकी ओर शून्यता से घूरने लगा। दूसरी कठिनाइयों के अतिरिक्त दा-श्वी लिखना भी न जानता था। जब उसने देखा कि कुछ विद्यार्थी व्याख्यान के समय जल्दी-जल्दी नोट्स ले रहे हैं तो उसने अपने दिल में कहा, "बड़ा सुखद दिन होगा जब मैं भी ऐसा ही कर सकूँगा!"

जब वे बहस-मुबाहसे के लिए छोटी-छोटी टुकड़ियों में बँट जाते तो दा-श्वी और मे खामोशी से पास-पास बैठ जाते। जब पूछा गया कि वे क्यों नहीं बोलते तो दा-श्वी ने उत्तर दिया, "मैं तो एक किसान हूँ। यदि आप मुझसे फसलों के बारे में पूछें तो मैं बता सकता हूँ। पर भाषण देना मेरे बस की बात नहीं है।"

मे इतनी शर्मीली थी कि यदि कभी विद्यार्थी उसे गाने के लिए बाध्य करते तो वह रो पड़ती थी। फिर भी उन्होंने पीछा न छोड़ा—"बस ज़रा थोड़ी-सी चीजें याद करलो और सुना दो। इसी प्रकार तुम धीरे-धीरे सीख जाओगी।"

दा-श्वी कई रातों तक करवटें बदलता रहा पर आँख न झपकी।

"हम तो चार-पाँच बुद्धू बगलोल हैं," एक दिन उसने बहुत परेशान हो मे से कहा, "अगर कोर्स के खतम होने तक भी हमें कुछ न आया तो क्या होगा?"

मे भी इसी चिंता का शिकार थी। "यहाँ तो हम स्कूल की रोटियाँ रोज़ तोड़ लेते हैं पर जब वापस घर जायेंगे तो लोगों को क्या मुँह दिखायेंगे। ऐसा लगता है कि हम अपने साथियों की बराबरी नहीं कर सकेंगे।"

"मुझे तो इस पर तनिक विश्वास भी नहीं है," दा-श्वी ने दृढ़ता से कहा। "यदि दूसरे पढ़-लिख सकते हैं तो हम क्यों नहीं पढ़ सकते?"

हर रोज़ डीन चेंग विश्रांति के घण्टों में उन्हें नये-नये अक्षर सिखाता। रात को बिस्तर पर लेटे-लेटे दा-श्वी उन्हें अपनी उँगलियों से सीने पर लिखकर उनका अभ्यास करता। अब उसने अपने पर जब्र किया और पहले से कहीं

अधिक गौर से वह व्याख्यान सुनने लगा जिसका कुछ अंश उसकी समझ में भी आने लगा। जब उसने आम जनता के सम्मुख भाषण देने का संकल्प कर लिया तो वह बहस के समय अपनी कक्षा में उठ खड़ा होता और पसीने में तर-बतर अनेक असम्बद्ध मुहावरों का प्रयोग करने का प्रयत्न करता। मे का चेहरा सुर्ख हो जाता था, वह भी किसी-न-किसी तरह कुछ वाक्य गलत-सलत इस्तेमाल कर लेती थी। उनके सहपाठियों ने उनको उत्साहित किया और कहा कि अब वे पहले से बेहतर हैं।

सारे स्कूल में दा-श्वी ही सबसे अधिक उद्यमी था। अपने कमरे के सब लड़कों से कहीं जल्दी उठ बैठता था। बरतन माँजने के बाद वह आँगन में तथा दफ्तर में झाड़ू लगाता था। डीन चेंग ने एक बार सब लड़कों के सामने उसकी प्रशंसा करते हुए कहा था कि व्यावहारिक जीवन में वह एक आदर्श विद्यार्थी है। यह सुनकर दा-श्वी बड़े असमंजस में पड़ गया था।

"हम तो काश्तकार बच्चे हैं, सिवाय इसके कि कभी-कभी अपने शरीर का इधर-उधर उपयोग करलें और कुछ नहीं कर सकते!" उसने झेंपते हुए कहा।

अंततः दा-श्वी ने अनुभव किया कि वह प्रगति करने लगा है, लेकिन उसे यह आशंका घेरे हुए थी कि मे पीछे रह गई है। एक दिन उसने उससे पूछा, "कैसे चल रही है तुम्हारी पढ़ाई? आदी हो गई इस जिन्दगी की या नहीं?"

मे ने अपना जूड़ेदार बालों का सिर हिला दिया, और उसके धूप जले चेहरे के गालों पर एक आकर्षक मुस्कान से गढ़े पड़ गये। वह निश्चिंत थी, प्रमुदित थी और उसकी बड़ी-बड़ी आँखें चमक रही थीं।

"पूरी तरह से!" उसने उत्तर दिया।

उसने दा-श्वी को बताया कि किस प्रकार मिस चेन ने उन्हें समझाया है कि यहाँ स्कूल में जो कठिनाइयाँ हमें झेलनी पड़ रही हैं उनसे आगे चलकर, जब हम जापानियों से लड़ेंगे तो काफी मदद मिलेगी। वहाँ की दुर्लभ कठिनाइयाँ फिर हम आसानी से सहन कर सकेंगे। हमें चाहिये कि यहाँ जो भी दुश्वारी

हमें पेश आये उसका हम हिम्मत से सामना करें ताकि हममें दृढ़ता व पुख्तगी आ जाय।

दा-श्वी के दिल में गुदगुदी हुई। मे ने तो वास्तव में काफी उन्नति कर ली है! उसने सोचा। जब वह वहाँ से ठुमकती हुई चली तो उसके जूड़े के बाल हवा के झोंकों से छेड़खानी करते हुए लहरा रहे थे।

× × × ×

उस दिन दा-श्वी के पाइप का तम्बाकू खत्म हो गया। कुछ घण्टे तो उसने मन को मारा पर जब तलब बहुत ही बढ़ गई तो वह चुपके से निकला और पड़ौस की दुकान से दो सिगरेट खरीद लाया। स्कूल के नियमानुसार किसी को सिगरेट खरीदने की आज्ञा न थी। वह मर्दाने पेशाबघर में छिप गया और सिगरेट सुलगा ली। ज्योंही उसने मजे में आकर पहला कश छोड़ा है कि एक विद्यार्थी आ गया। अब तो बचने का मौका ही न था पर फिर भी उसने तावड़तोड़ सिगरेट पैर के नीचे फेंका और उसे कुचल दिया। विद्यार्थी ने क्षणिक दृष्टि उस पर डाली और फिर शिकायत करने चला गया।

शाम को दा-श्वी के स्वाध्याय मंडल की बैठक बुलाई गई और सब-के-सब ने उसे आड़े हाथों लिया।

"नियम का पालन क्यों नहीं करते तुम?······ क्या अनुशासन का अर्थ तुम्हारी समझ में नहीं आता?······"

दा-श्वी का चेहरा फक हो गया, हकलाते हुए बोला, "मैं तो······ यह पहली बार ही ···· मेरा तम्बाकू खुट गया था······अब के तो माफ कर दो···· अब कभी ऐसा नहीं करूँगा······।"

अभी वह अपनी बात पूरी भी न कर पाया था कि एक-के-बाद दूसरा विद्यार्थी खड़ा होने लगा और, "अध्यक्ष महोदय, मुझे भी कुछ कहना है!······" हर कोने से दा-श्वी की इस हरकत की सख्त नुक्ताचीनी हुई। उनका कहना था कि वह हमारी नुक्ताचीनी स्वीकार नहीं कर रहा, किसी ने कहा वह बेईमान

है। यहाँ तक कि मे भी उनमें शामिल हो गई और बोली, "अध्यक्ष महोदय, मैं भी कुछ कहना चाहती हूँ······।"

एक सुसरा सिगरेट पीलिया तो हुल्लड़ मच गया, उसमें ऐसा कौनसा भारी पाप कर लिया। दा-श्वी ने दिल-ही-दिल में क्रोधित हो कहा।

"अगर यही बात है तो, इसकी ऐसी की तैसी, मैं अब उम्र भर तम्बाकू पीऊँगा ही नहीं!" उसने गाली देते हुए अपने उद्‌गार प्रकट किये और पाइप को घुटने पर दे मारा। "आप देखेंगे अब मैं कितना बदल सकता हूँ! असल का चीनी नहीं हूँ अगर अब तम्बाकू पियूँ!" आपे से बाहर हो उसने पाइप के टुकड़े जमीन पर फेंके और ताबड़तोड़ निकल गया।

दूसरे दिन तक दा-श्वी का कोप व घृणा शांत नहीं हुई थी। वह न किसी से बोला, न किसी की बात जवाब दिया, यहाँ तक कि मे को भी नहीं। तीसरे पहर डीन चेंग ने उसे दफ्तर में बुलाया पहले तो उसने दा-श्वी से अपने काल्पनिक घाव उगलवाये फिर मुस्कराते हुए धैर्य से उसे समझाया।

"वह सारी नुक्ताचीनी ख्वाह वह नर्म हो या सख्त सब तुम्हारे भले के लिए की गई थी। अगर तुम नुक्ताचीनी नहीं सह सकते तो फिर तुम्हारी उन्नति भी नहीं हो सकती। तुम पार्टी-मेम्बर हो। तुम्हें तो चाहिए कि तुम औरों से भी बढ़कर अनुशासन का पालन करो और उनके सामने एक आदर्श रखो।

चेंग ने अनेकों उदाहरण ऐसे पेश किये जिनमें अनुशासनोल्लंघन किया गया था और बताया कि अनुशासन के लिए सख्त व प्रभावशील कार्यवाही क्यों आवश्यक है। जितना दा-श्वी सुनता गया उतना ही खामोश होता गया। अन्त में उसने कहा, "आपने जो मुझे राह बताई इसके लिये धन्यवाद। अब मैं सब समझ गया।"

उसी दिन शाम को पार्टी के सदस्यों की बैठक थी। दा-श्वी ने अपनी गलती स्वीकार की और जोर से हँसते हुए कहा, "अब तक तो मेरी समझ मोटी थी पर अब मेरा मस्तिष्क बिल्कुल साफ हो गया है। मुझे उम्मीद है कि आप लोग मुझे अपनी गलतियों व कमजोरियों से आगाह करते रहेंगे। मैं वायदा करता हूँ कि मेरा जो साँड का-सा गुस्सा है उसे अब मैं अपने पर हावी न

होने दूँगा।"

दूसरे सदस्य हँसने लगे। उन्होंने कहा कि एक बार गलती करके अगर सुधार ली जाय तो वह गलती नहीं रहती और वह उससे आगे सोच-समझकर अपने को निरन्तर सुधार सकता है।

दर असल दा-श्वी ने अपने को सुधारा भी और उसके साथ-साथ मे ने भी अपने को सुधारा और इस हद तक प्रगति की कि तियेन सोचने लगी कि अब उसे कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल होने का सुझाव देना चाहिये।

"तुम्हारी नज़र में कौन बेहतर है कुमितांग वाले या कम्युनिस्ट?" तियेन ने मे से पूछा।

"जाहिर है, कम्युनिस्ट बेहतर हैं!"

"तो फिर तुम किस पार्टी में रहना चाहती हो?"

"मैं किसी पार्टी-वार्टी में नहीं रहना चाहती, मैं तो जापानियों से लड़ना चाहती हूँ। मैं चाहती हूँ लाल सेना के स्त्री-सहायकाओं में भर्ती हो जाऊँ।"

मे को याद आया कि किस प्रकार उसके बहनोई कल्लू त्से को कम्युनिस्ट होने के जुर्म में बहुत पीटा गया था और पार्टी-मेम्बर बनने में उसे भय लग रहा था। इसके विपरीत उसे स्त्री-सहायकाओं की बात अधिक जँचती थी क्योंकि वह समझती थी कि स्वतत्र और स्वच्छन्द जीवन उसे उसी संगठन में प्राप्त हो सकता है।

तियेन ने उसके कंधे पकड़कर झिंझोड़ा। "तुम तो बिल्कुल बुद्धू हो। अगर कम्युनिस्ट पार्टी न हो तो लाल सेना कहाँ से आ जाती? अब तो उसका नाम भी लाल सेना नहीं रहा—उसे या तो बा लू कहते हैं या ८वें मार्ग की सेना। पार्टी-मेम्बर हो जाने पर तुम हमारी बैठकों में शामिल हो सकोगी और मुल्क में क्या उथल-पुथल हो रहा है वह जान जाओगी और प्रगति कर सकोगी। तुम अभी इस प्रश्न पर ज़रा और गौर से विचार करो।"

मे ने उस मसले पर बहुत सोच-विचार किया, पर कुछ निश्चय न कर सकी। इस पर उसने दा-श्वी से सलाह-मशविरा किया।

"तुम ऐसी गूंगी क्यों होगई?" उसने क्रोध में कहा। "मेम्बरशिप

पार्टी में बहुत ही गुप्त चीज है। इस तरह की चीज तुम मुझसे कैसे पूछ रही हो?" और यह महसूस किये बिना ही कि वह खुद सब भेद प्रकट किये दे रहा है उसने जारी रखते हुए कहा, "यह तो जानो खैर हुई कि मै खुद पार्टी-मेम्बर हूँ वरना शायद तुम ये बातें गैरों से कर बैठती!"

मे घबड़ा गई। "मै क्या करूँ, अबतो मैंने तुमसे कह ही दिया!"

"तो तुम भर्ती हो जाओ पार्टी में," दा-श्वी ने पूरे राजदाराना अंदाज में कहा, "फिर तुम्हें ऐसे मामलों में समझ-बूझ अपने आप आजायगी!"

मे ने तियेन से कह दिया कि मैंने कम्युनिस्ट बनने का निश्चय कर लिया है। मिस चेन ने उसे आवश्यक फार्म भरने में सहायता दी। मे और दस दूसरे विद्यार्थी कम्युनिस्ट पार्टी में भर्ती होने के समारोह में गये। पार्टी के फरहरे और चेयरमेन माओ के चित्र के सामने उन्होने अपनी वफादारी का अहद किया।······उसके बाद से दा-श्वी और मे पार्टी-मेंबरों की बैठक में साथ-साथ जाने लगे।

× × × ×

एक दिन तीसरे पहर एक मध्यम कद का आदमी वर्दी पहने हुए स्कूल में आया और डीन के बारे में पूछने लगा। उसकी आयु २७-२८ के लगभग होगी; मुँह के सारे दाँतों पर सोने का खोल चढ़ा हुआ था और वह एक पुड़ा अपनी बगल में दबाए हुए था। जब चैंग ने उसे सम्मानपूर्वक बैठाया तो उसने बड़ी शिष्टता से पूछा कि यहाँ इस स्कूल में मे नामक कोई छात्रा है क्या। चैंग ने हाँ कह दिया। तब आदमी बोला कि मैं होज्वाँग की जापान-विरोधी देश-रक्षक सेना में काम करता हूँ जोकि जनरल लू के निरीक्षण में चलती है। साथ ही उसने यह भी कहा कि मे मेरी पत्नी है और उसका इस स्कूल में ट्रेनिंग पाना बिल्कुल उचित है, मैं उससे मिलने आया हूँ और उसे यह पुड़ा देना चाहता हूँ। चैंग ने सोचा कि ठीक है और उसे प्रतीक्षा करने के लिए कह कर वह मे को बुलाने चला गया।

जब डीन अकेला लौट कर आया तो जिनलुंग तब तक दो सिगरेट पी चुका था। चेंग ने सतर्कता से उसे ऊपर से नीचे तक देखा और कहा, "मे आपसे मिलना नहीं चाहती। कहती है आप उसे मारते हैं।"

जिनलुंग तिरस्कारपूर्ण हँसी हँसा। "अजी ऐसे छोटे-मोटे झगड़े तो मियाँ-बीवी में आये दिन होते ही रहते हैं! आखिर मैं उसका दुश्मन तो हूँ नहीं। क्या वह उम्र भर मुझसे नहीं मिलना चाहती है? मैं सेना का सैनिक हूँ। डीन साहब, क्या आप समझते हैं वह ठीक सोच रही है?"

"देखिए हम तो पति-पत्नी के बीच मिलाप करवाना चाहते हैं," डीन ने धीरे से कहा। "यदि आप चाहते ही हैं तो मिल लीजिए पर वायदा कीजिए उसे मारेंगे तो नहीं?"

जिनलुंग ने धड़ाधड़ कसमें खालीं। डीन चेंग गया और मे को ले आया।

जिनलुंग ने बड़े स्नेह से उसे अभिवादन किया। अनेक कुशल-मंगलादि के प्रश्न किये। फिर पुटलिया खोली और उसमें से एक जनाना लंबा रुईदार लबादा निकाला।

"इसे पहन लो। मौसम बड़ा सर्द है—कहीं बीमार न होजाओ! अगर किसी चीज की जरूरत हो तो मुझसे कहो। पहनलो यह लबादा, अपन चलकर किसी रेस्तोराँ में अच्छा खाना खायेंगे!"

मे ने पहले कभी उसे इतना नम्र व प्रियंवद नहीं देखा था, उसका भी दिल पिघल गया। डीन से आज्ञा लेने के बाद वह जिनलुंग के साथ चली गई।

आकाश पर घने बादलों का साम्राज्य था। हवा बिल्कुल बन्द थी पर सर्दी हड्डियों में घुसी जा रही थी। रेस्तोराँ में लियेव और सियेव ने जो उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे एक गरम, सुविधापूर्ण कमरा रिजर्व करवा लिया था। जिनलुंग ने सबसे मँहगे खाने और शराब का आर्डर दिया।

"मे," खाते हुए उसने कहा, "घर से आने के पहले तुमने किसी से एक लफ्ज़ भी न कहा। रिश्तेदार, दोस्त, पड़ौसी सब-के-सब ने मेरी मखौल

उड़ाई। तुमने तो मेरी ऐसी मद की कि कहीं मुँह दिखाने का न रहा!"

"मैं अब बड़ी मेहनत से पढ़ रही हूँ," मे ने उत्तर दिया। "जब मैं यहाँ का कोर्स पूरा करके प्रति-जापानी प्रतीकार आंदोलन में काम करके लौटूँगी तो तुम लज्जित न होकर मुझ पर गर्व करोगे।"

"औरतों के बस बाल ही बड़े होते हैं, अक्ल उनमें रत्ती भर नहीं होती! औरत भला क्या काम कर सकती है! तुम्हारे लिए सबसे उम्दा बात यह है कि मेरे साथ घर लौट चलो। तुम्हारे खाने के लिए वहाँ अभी काफी है।"

अब मे समझी जिनलुंग का क्या उद्देश्य था, उसका चेहरा उतर गया। "मैं ऐसे घर नहीं जाना चाहती जहाँ मुझे पीटा जाय।"

"मारा तो मेरी मा ने था ना तुम्हें। सो मैं उन्हें पहले ही समझा चुका हूँ। यह मैं मानता हूँ कि कभी-कभी मुझे गुस्सा बड़े जोर का आ जाता है पर इसका यह मतलब तो नहीं कि तुम अनिश्चित समय के लिए यहाँ पड़ी रहो!"

खाने में मे को अब बिल्कुल स्वाद न आरहा था। वह उठ खड़ी हुई। "मुझे स्कूल वापस जाना है। वे मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे। मुझे वैसे ही बहुत देर होगई है।"

जिनलुंग ने उसकी कमर पकड़ कर उसे जबरदस्ती बैठा दिया। "ऐसी जल्दी काहे की है तुम्हें?"

मे बड़ी बेचैनी से उन्हें खाते हुए देखती रही। लियेव व सियेव बाहर चले गये और जिनलुंग ने बिल अदा किया।

"तुम आज ही मेरे साथ घर चल रही हो," उसने कहा, "चलो चलें!"

"पहले मुझे डीन को तो सूचना देना चाहिए!" मे ने परेशान होकर कहा, उसकी आँखों में आँसू आगये।

"उसकी जिम्मेदारी मेरे सिर रही," जिनलुंग ने अक्खड़ता से कहा। उसने कठोरता से उसकी बाँह पकड़ी और दरवाजे की ओर ढकेला। "तुम उसकी चिन्ता न करो।"

दरवाजे की दरार में से मे ने साफ-साफ देख लिया कि जिनलुंग के

दोनों जिगरी दोस्त बाहर घोड़ा लिये खड़े हैं।

"मैं तुझे लेकर जाऊँगा, चाहे तुझे घसीट कर ही क्यों न ले जाना पड़े।" वह चीखकर बोला।

रेस्तोराँ में और बाहर सड़क पर भीड़ जमा हो गई। जिनलुंग ने अपनी पिस्तौल निकाल कर हवा में घुमाई। "क्या देख रहे हो यहाँ! मेरी बीवी है यह, घर ले जा रहा हूँ इसे! भीड़ लगाने की क्या बात है! जाओ, भाग जाओ!"

भीड़ तितर-बितर हो गई।

लियेव और सियेव ने हठी मे को उठाया और घोड़े पर बैठा दिया और उसे ले चले। जिनलुंग पिस्तौल लिये पीछे-पीछे चला।

घनाच्छादित आकाश से हिम-वृष्टि प्रारम्भ हो गई; बर्फीली, ठण्डी हवा के झोंके आने लगे। घोड़े पर सवार मे दुख और शीत से ठिठुरने लगी। ज्योंही वे गाँव की सरहद पर पहुँचे कि वह सहसा कूद कर जमीन पर आ गिरी। दो-चार कदम दौड़ी होगी कि लड़खड़ा कर गिर पड़ी और जोर-जोर से रोने-चीखने लगी।

जिनलुंग ने उसे बन्दूक से कोंचा। "चली चल सीधी तरह वरना जान से मार डालूँगा!" उसने कड़क कर कहा।

"मार डालो तो फिर! मैं भी नहीं चलूँगी!" वह पीछे को लुढ़क गई।

जिनलुंग ने अपना भारी-भरकम चमड़े का पट्टा खोला और उसे मारने के लिए ऊपर को उठाया ही था कि कुछ आदमियों का गिरोह पहाड़ी की चोटी पर दीख पड़ा। वे स्कूल के विद्यार्थी थे और दा-श्वी उनके आगे-आगे था।

जिनलुंग उछलकर घोड़े पर बैठा और उंगली मे को बताते हुए बोला, "ठीक है! तू बड़ी पक्की है! मैं फिर तुझसे मिलूँगा!"

पैर रक़ाब में घुसेड़ते हुए उसने घोड़े को एड़ लगाई, उसके दोनों हमजोली उसके पीछे धड़-धड़ाते हुए भागे। बर्फ के धुंधलके में वे शीघ्र ही लुप्त हो गये।

: ३ :

छापेमार-आन्दोलन—१६३६

जिनलु ंग होज्वाँग गाँव को वापस चला गया और देश-रक्षक सेना में अपनी कपटपूर्ण कार्यवाही करता रहा। हालाँकि देश-रक्षक सेना जापान-विरोधी आंदोलन का ही एक भाग थी फिर भी वह अपना अधिकांश समय किसानों का गला काटने में बिताती थी। उसके मेम्बर अब तक हो को अपना युद्धपति मानते थे और सिवाय, खाने-पीने, शराबखोरी, औरतबाजी, और जुए के और किसी काम में उन्हें दिलचस्पी ही न थी। जिनलु ंग का ग्वो से एक पतिता पर बड़ा भारी झगड़ा हो गया था। कुछ दिनों बाद ग्वो की बन्दूक की गोली 'अचानक' निकल गई और जिनलु ंग के पेट में जा लगी। घाव बड़ा भयंकर था और वह मर-सा गया था...... ।

इस प्रकार की नीच हरकतों पर किसानों की प्रतिक्रिया का जब जनरल हो को पता चला तो उसने फौरन फौज भेजकर देश-रक्षक सेना को पुनर्संगठित करवाया। हो जानता था कि ज़रा-सी पड़ताल हुई नहीं और उसकी कार्यवाहियों का भाँडा फूटा। ग्वो और उसी जैसे कुछ और लोगों को लेकर वह उस प्रदेश के कुमिंतांगीय कम्युनिस्ट विरोधी आन्दोलन में जा मिला। जिनलु ंग अभी तक बिस्तर से लगा हुआ था इसलिए वह होज्वाँग में ही रहा।

मे ने काडरों के स्कूल में अपनी ट्रेनिंग पूरी की और जिले की जापान-विरोधी स्त्री संस्था में भर्ती हो गई। उसकी सुसराल वालों ने उसे बहुतेरा ही तो बुलाया, पर वह नहीं गई। अब वे उस पर क्या दबाव डाल सकते थे!

ट्रेनिंग-कोर्स समाप्त करने पर दा-श्वी भी शेंज्या गाँव में लौट आया और किसान-सभा का प्रधान बन गया। नये कानून के अनुसार कि लगान अपनी-अपनी जमीन के अनुसार अदा किया जाय—प्रत्येक व्यक्ति को अपने खेत का क्षेत्रफल लिखवाना पड़ता था। जाँच-पड़ताल से पता चला कि पटेल शेन ने झूठी रिपोर्ट दी है और ज़मीन छिपाये हुए है। जब यह बात सारे गाँव में फैल गई तो शेन ने इतना अपमानित अनुभव किया कि तुरन्त इस्तीफा दे

दिया। एक विशेष निर्वाचन हुआ जिसमें दा-श्वी पटेल चुन लिया गया।

दियेह को भय था कि दा-श्वी की सरगर्मी अब उसके खेत के काम में बाधक सिद्ध होगी। और उससे कहीं बढ़कर आशंका उसे यह थी कि एक गरीब किसान का पटेल चुना जाना भद्र लोक को भड़का देगा। साथ ही दियेह ने यह भी महसूस किया कि उसके पुत्र का ऐसा बड़ा 'अफ़सर' बन जाना उसके सारे परिवार के लिए महान गौरव का विषय है।

एक बूढ़े पड़ोसी ने उसका समर्थन करते हुए सिर हिलाया। "छोकरे में गुण हैं। समझो कल तक ही तो वह सड़क पर गोबर चुगता फिरता था और आज इतने ऊँचे ओहदे पर पहुँच गया!"

इस प्रकार की बात चीत से दियेह बड़ा खुश होता था। "हाँ, और वह यह भी जानता है कि वह क्या कर रहा है।" उसने सिर हिलाया।

"हमारे काडर पुराने किस्म के अफसरों से जुदा हैं," दा-श्वी ने हँस कर कहा। "हम तो सिर्फ जनता की सेवा करना चाहते हैं।"

दियेह ने संतोष के साथ अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरा। "लड़के को जरा-सी ट्रेनिंग मिली है और अब—सौ से ऊपर अक्षर पढ़ सकता है।"

"दो सौ से ऊपर," दा-श्वी ने पिता को सही किया।

"मैंने तो कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि मेरे जीते जी ही हम गरीबों में से भी कोई इतना बड़ा ओहदा ले लेगा। जरा जम कर अच्छा काम कर दिखाओ, समझे!" बूढ़े पड़ोसी ने समझाया।

दा-श्वी ने सीसे की एक आटोमेटिक पेंसिल खरीदी, अपने झोले में उसे लगाया, झोले का फीता एक कँधे पर लटकाया और दफ्तर की ओर चला। सड़क पर उसे मे मिल गई जो एक छोटा-सा थैला बगल में रखे खड़ी थी।

उसके चेहरे का रंग जगमगा रहा था और जब वह उसे देख कर मुस्कराई तो उसकी आँखें नाच उठीं। "उस झोले से तो तुम बड़े कार्य-व्यस्त व्यक्ति लगते हो!"

वह भी मे के थैले की ओर संकेत करके मुस्करा दिया। "और तुम?"

उसने मे से पूछा तुम आजकल गाँव में क्या कर रही हो। उसने जवाब दिया मैं यहाँ तुमसे मिलने आई हूँ। भला क्या वजह हो सकती है उससे मिलने के लिए आने में ?

"मैं इस गाँव की स्त्रियों को संगठित करने आई हूँ। तुम यहाँ के पटेल हो, हैना ? जाहिर है पहले मुझे तुमसे बात-चीत करनी ही पड़ेगी !"

दोनों हँस पड़े और दफ्तर की ओर चले।

"जिनलु ंग अच्छा होगया या अभी नहीं ?" दा-श्वी ने पूछा।

"कौन जाने ? मैं तो अभी तक गई नहीं।"

"क्या फिर तुम्हें तंग किया उन्होंने ?"

"उसके बाप, चचा, मा सब के सब कई बार मेरे पास आये। उस बुढ़िया ने तो वहाँ जिले के दफ्तर के सामने वह झगड़ा खड़ा किया कि तोबा भली। सौभाग्य से कल्लू त्से वहीं थे। उन्होंने कहा, "देखो बूढ़ी अम्मा, अगर तुमने ज्यादा गड़बड़ की तो मैं तुम्हें पकड़वा दूँगा ! उससे बेचारी सहम गई और भाग गई।"

"पर वे लोग हैं खतरनाक !"

"मैं तो मुकाबले के आन्दोलन में हूँ। मेरा वे क्या बिगाड़ लेंगे ? अच्छा छोड़ो भी इसे, आओ मतलब की बात करें। क्या खयाल है तुम्हारा किस तरह स्त्रियों को संगठित करती फिरूँ मैं ?"

"तुम्हारी बहन इस गाँव की स्थितियों से खूब परिचित हैं। उन्हीं के साथ काम करने लगो, बस फिर तुमसे कोई गलती नहीं होगी। अगर कुछ ऐसे सवाल हों जिन्हें वह भी हल न कर सकें तो तुम यहाँ चली आना।"

कुछ और समय तक वे बातें करते रहे, फिर मे उठकर अपनी बहन के घर चली गई।

× × × ×

वसन्त में तो जापानी गाँव के बिल्कुल समीप आ गये थे। पहले तो

उन्होंने नगरों, बड़े-बड़े कस्बों आदि पर कब्जा किया और फिर बार-बार देहातों पर धावे मारे। देहात के अधिकतर देश-रक्षक सैनिक बा लू सेना की टुकड़ियों में जिन्हें 'प्रादेशिक सेनाएँ' कहा जाता था, जा मिले और वहाँ उन्हें कई प्रान्तों के मिले हुए एक इलाके में काम दे दिया गया, उन्हें स्थायी थल-सेनाओं की भाँति देश के अन्य भागों में नहीं भेजा गया।

फिर भी प्रादेशिक सेना के सैनिको को दिन भर सैनिकगिरी करनी पड़ती थी और उनकी ड्यूटी उनके गाँव से कहीं दूर लगाई जाती थी। देश-रक्षक होने का कार्य सम्हालने के लिए हर गाँव में एक छापेमार-टोली संगठित की गई। कई गाँवो का गिरोह एक केन्द्रीय गाँव द्वारा शासित होता था। श्वाँग एक केन्द्रीय गाँव का पटेल बन गया था और साथ ही कम्युनिस्ट पार्टी की शाखा का सेक्रेटरी भी। उसी केन्द्रीय गाँव के अंतर्गत दा-श्वी सुसंगठित छापेमार सेना का सैनिक नेता नियुक्त किया गया था।

छापेमार अब भी जब लड़ाई पर न होते तो अपने खेतों को जोतते थे। लेकिन दा-श्वी चूँकि नेता था इसलिए उसे अपना पूरा वक्त दफ्तर के काम में लगाना पड़ता था। उसे खाने-कपड़े के अलावा दो डालर मासिक मिला करते थे। उसके गाँव वालों ने उसके पिता की खेत के काम में मदद करने की जिम्मेदारी ले ली थी। आर्थिक प्रबन्ध से तो दियेह पूर्णरूपेण संतुष्ट था लेकिन उसे भय यह था कि दा-श्वी को लाम पर जाना पड़ेगा।

"अगर हम जापानियो से न लड़ें और वे यहाँ घुस आयें तब फिर?" दा-श्वी ने पूछा। दोनों में अच्छी-खासी गरमागरम बहस हुई पर अंत में दा-श्वी का पल्ला ही भारी रहा।

गाँव से लेकर केन्द्रीय गाँव तक रास्ते भर उसे अपनी सैनिक अनुभव-हीनता पर दुख होता रहा। ज्योंही वह पहुँचा उसकी त्योरियाँ चढ़ गईं और उसने श्वाँग से पूछा, "तुम्हारे खयाल में क्या मैं यह काम कर सकता हूँ?"

"धीरे-धीरे सीख जाओगे," श्वाँग ने उत्तर दिया। उसने एक बूढ़े सैनिक से दा-श्वी का परिचय कराया। "यह कप्तान पिंग हैं पहले उत्तर पूर्वी सेना में थे। इन्हें बहुत तजुर्बा है और यह तुम्हारी मदद करेंगे।"

दा-श्वी की आँखें खिल उठीं, उसने चैन की साँस ली और कप्तान से लगा बातें छाँटने। जबकि श्वाँग ने लाकर एक भारी भरकम पिस्तौल जो जिला सरकार की ओर से दी गई थी, दा-श्वी को दी तो उसने बड़ी सावधानी से उसका घोड़ा सीधा किया मानो डर रहा हो कि कहीं छूट न जाय।

"इसे चलाते कैसे हैं? उसने घबराहट से पूछा।

जब बूढ़े कप्तान ने उसे चलाने का ढंग बताया तो दा-श्वी ने झट उसे अपनी कमर में लटका लिया। उसे वह बड़ी सुन्दर लगी।

कुछ दिनों बाद शाम के वक्त बूढ़े कप्तान की निगरानी में दा-श्वी संगठित छापेमारों से ड्रिल करवा रहा था। एक छोटा-सा लड़का दौड़ा हुआ आया।

"कुछ गद्दार गैरफौजी लिबास पहने हुए और बन्दूकें लिए हुए डुंग यू गाँव के करीब आ पहुँचे हैं।" हाँपते हुए उसने रिपोर्ट दी। "आप जरा फुर्ती करें!"

"अब तो आप लोग बन्दूकें चलाना जान गये ना?" दा-श्वी ने उत्तेजित हो अपने आदमियों से पूछा।

"हाँ हाँ, बिल्कुल," वे सब एक स्वर में बोले।

"जब वक्त पड़ता है तो भुगतने दो उन्हें भी! आओ चलें!" उसने अपनी पिस्तौल निकाली और उसे खोल लिया और सब लोग उसके पीछे दौड़ रहे थे। जो कुछ भी उनके पास था—हर प्रकार की पुराने किस्म की शिकारी बन्दूक, छोटी बन्दूकें, और बहुत से घर बने भद्दे-से हथियार।

डुंग यू में उन्हें पता चला कि गद्दार अभी-अभी गाँव छोड़ कर उत्तर की ओर भागे हैं।

दा-श्वी उनके पीछे जाने ही वाला था कि बूढ़े कप्तान ने लंबी-लंबी साँसें लेते हुए उसे पकड़ा। "यह ठीक नहीं है!" उसने हाँपते हुए कहा। "इधर-उधर घबरा कर वे तितर-बितर होंगे तो हममें से एक को भी नहीं छोड़ेंगे!"

"बकवास!" त्सुर बोल पड़ा जो दा-श्वी के बाद कमान में दूसरा कमांडर था। "उनके पास बन्दूकें हैं तो हमारे पास भी बन्दूकें हैं। हमें कैसे मार

सकते हैं वे ?"

"और अगर कहीं वे छिप गये तो ? हमारी तो बड़ी पल्टन है। वे तो हमें मील भर के फासले से आते हुए देख सकते हैं। फिर हमारा कोई मौका ही नहीं लग सकता !"

"ठीक कहते हो !" दाश्वी ने कहा। "लेकिन हमें क्या करना चाहिए आप ही बताइए !"

"तीन टोलियों में बँट जाओ। त्सुर पहली टोली लेकर चल दे और उन्हें जा घेरे ताकि वे भागने न पायें। मैं दूसरी टोली लेता हूँ और उन पर दाहिनी बाजू से हमला करता हूँ। तुम तीसरी टोली ले जाओ और बड़ी सावधानी के साथ सड़क पर से सीधे उन पर आक्रमण करो। हम उन्हें तीन तरफ से घेर लेंगे। उनकी चौथी तरफ पानी है। देखते हैं वे किधर भागेंगे !"

प्रत्येक ने इस सुझाव का समर्थन किया। त्सुर और उसके आदमी पहले चल दिये। बूढ़े कप्तान और उनकी टोली वाले आगे को झुके हुए दौड़े और दुश्मन की दाहिनी बाजू घेरने लगे। दा-श्वी की टोली सीधे सामने की ओर चल दी।

अँधेरा होने लगा था और चाँद का कहीं पता न था। सिर्फ कुछ तारे झिलमिला रहे थे। ज्योंही वह वृक्ष-शून्य देहात में से गुजरता हुआ बढ़ रहा था दा-श्वी के विचारों में उथल-पुथल हो रहा था। यही हमारा पहला वास्तविक दायित्व है। मैं उत्तेजित हूँ पर साथ ही किंचित भयभीत। अगर हम धड़धड़ाते हुए सीधे उनके अन्दर घुस पड़ें और टिकने का मौका ही न मिले तो ?"

टोली के आदमी ने अपनी आस्तीन चढ़ा ली।" क्या वे ही नहीं हैं देखो ? जत्थे का जत्था तो है।"

यह था 'कुदाक' मा जिसे 'कुदाक' इसलिए कहा जाता था क्योंकि दूसरों से बूढ़ा होते हुए भी उसका जिस्म बड़ा लचीला था यह अपनी परछाईं देख कर भी उछल पड़ता था। दा-श्वी कुदाक की भीरुता से परिचित था उसने फौरन संशक नेत्रों से इंगित दिशा की ओर देखा। वास्तव में उस घने अंधकार में कुछ आकृतियाँ उसे दीख पड़ीं। उसका दिल धड़कने लगा। फिर उसने देखा

कि कुदाक और गुलू जो किसी समय पटेल शेन के फरमाबरदारों में से थे चुपके से गाँव की ओर खिसक रहे थे।

"तुम भाग क्यों रहे हो? छिप जाओ!" वह गरजा।

कुदाक और गुलू के घुटने डर के मारे काँप रहे थे। आह······भला बताओ तो अच्छी कौन सी जगह है? कुदाक कंपित स्वर में बड़बड़ाया।

"कोई सी भी जहाँ तुम्हारा बदन न दिखाई दे सके," दा-श्वी फुसफुसाया, "और यह बकवास मत करो समझे!"

दोनों पेट के बल जमीन पर लेट गये और जल्दी-जल्दी उन्होंने अनाज के राड़ों से अपने शरीर ढँक लिये। "हम, अगर कहो तो यहीं पड़े रहेंगे।" गुलू ने लड़खड़ाते हुए कहा।

ज्योंही दा-श्वी की टोली वाले दुबके कि शत्रुओं ने गोलीबार शुरू कर दिया।

"चलाओ गोली। चलाओ!" दा-श्वी चीखा। उसके आदमियों ने भी गरजती हुई गोलियाँ दागना शुरू कर दीं।

"कुतिया का बच्चा!" छापेमारों में से होशाँग ने कराहकर कहा। दा-श्वी का दिल बैठ गया। वह रेंगता हुआ उसके समीप पहुँचा। होशाँग बड़ी सावधानी से निशाने लगा रहा था और घोड़े खींच रहा था।

"मैं यह सड़ियल बन्दूक नहीं चला सकता!"

"तुम्हारी ऐसी की तैसी—!" दा-श्वी ने उसे मा की गाली देते हुए कहा। "अरे जब तुम घोड़ा ही नहीं खींचोगे तो चलेगा क्या तुम्हारा सिर?"

उसने होशाँग की उँगली पकड़ी, उसे घोड़े पर जमाया और खींच दिया। गोली धमाका करती हुई निकली और होशाँग उसे सुनते ही उछल पड़ा।

जब गोलीबार अपनी पराकाष्ठा पर था तो दूसरी ओर से किसी की एक दबंग आवाज आई। "गोली चलाना बन्द करो! दा-श्वी गोली मत चलाओ!" यह बूढ़ा कप्तान था।

दा-श्वी ने ताबड़तोड़ गोलीबार बन्द करने का हुक्म दिया। उनके विरोधी पक्ष वालों ने भी शूटिंग बन्द कर दिया और उनमें से कुछ छापेमारों

की ओर बढ़े। दा-श्वी का दिमाग चकराने लगा।

बूढ़ा कप्तान हाँपता हुआ सामने आया और क्रोधित हो बोला, "यह अँधाधुँध तुम किस पर गोलियाँ चला रहे हो?"

'शत्रु' की टुकड़ी में से त्सुर के उलाहनों की आवाज आई। "अबे गूँगे हरामियो हमीं पर गोलियाँ चला रहे थे!"

होशाँग उछलकर खड़ा हो गया। "—अबे तुम्हारी दादी की···सुसरों! पहले तुमने गोली चलाई थी या हमने?"

"बन्द करो, बन्द करो यह!" दा-श्वी बोला। "दुश्मन कहाँ है?"

बूढ़े कप्तान ने जोरदार शपथ खाते हुए कहा, "उनको तो भागे भी अर्सा हो गया!"

दुखी और हताश हो छापेमार घरों को लौटे।

× × × ×

कुछ दिनों बाद उन्होंने सुना कि शी यू गाँव में गद्दार पटेल के दफ्तर पर हमला कर रहे हैं। छापेमार फौरन वहाँ दौड़ जाना चाहते थे।

"चलो उन हरामियों की चल कर आवभगत कर दें।"

"घबराओ नहीं," दा-श्वी ने कहा। "हम भी इसी वक्त जाना चाहते हैं।"

"अभी उजाला है और हम फुर्ती के साथ चल सकते हैं," बूढ़ा कप्तान बोला। "हम जाकर उन्हें चारों ओर से घेर लेंगे और हमें कोई तकलीफ भी नहीं होगी।"

"हाँ, हाँ दिन की रोशनी में हम एक दूसरे पर गोलियाँ भी न चलायेंगे!" त्सुर ने प्रसन्न होकर कहा।

"ठीक है!" दा-श्वी बोला। "चलो, चलें!" और छापेमारों ने कूच कर दिया।

शी यू कोई दो फर्लांग ही रहा होगा कि वे लौट गये। बूढ़ा कप्तान हाँपता हुआ धीरे-धीरे पीछे रह गया। जब वे गाँव के प्रवेश-द्वार पर पहुँचे तो

उसने उन्हें पुकारा, "दो-चार आदमी यहीं पहरे पर बैठा दो!" पर किसी ने उसकी न सुनी। वे सब-के-सब शत्रु को 'घेरने' पहुँच गये।

पटेल का दफ्तर एक खाली-से मैदान में छोटी-छोटी इमारतों से घिरा हुआ था। छापेमार बाहर ही से तीन ओर छतों पर चढ़ गये, ताकि वहाँ से चौथी दिशा पर पटेल के दफ्तर के सामने निशाना साध सकें। बूढ़ा कप्तान भी गिरता-पड़ता बड़ी मेहनत से उनके पीछे चढ़ गया।

"दुश्मन किधर हैं?" दा-श्वी ने नर्म स्वर में उससे पूछा। "कहीं ऐसा तो नहीं कि वे सब भाग गये हों!"

"कोई चीज़ फेंक कर देखो," बूढ़े कप्तान ने आदेश दिया।

छापेमारों ने छतों के कवेलू उखाड़ लिये और पटेल के दफ्तर पर उन्हें बरसाना शुरु कर दिया। उत्तर में ज़रा-सी भी आवाज़ न आई।

त्सुर अधीर हो रहा था। "बात क्या है? मैं नीचे जाकर देखता हूँ?"

वह छत से उतरा और हाथ में बन्दूक लिये सुनसान आँगन में चलने लगा। पटेल के दफ्तर के किवाड़ों पर लात मारकर उसने उन्हें खोल दिया। अन्दर से एक दनदनाती हुई गोली आई और वह बचकर आँगन के एक कोने में जा खड़ा हुआ। गद्दारों ने छतों पर खड़े छापेमारों पर गोलियों की वर्षा शुरु कर दी और फिर एक-एक करके सबके सब मैदान में आ खड़े हुए।

दा-श्वी छत की मुँडेर के पीछे दुबक गया। "वे निकल रहे हैं! चलाओ गोली! चलाओ!" लेकिन वह खुद गोली न चला सका क्योंकि उसकी पिस्तौल ऐंठ गई थी।

छापेमार हक्के-बक्के रह गये। उन्हें जब तक खबर हो तब तक तो गद्दार बाहर निकल कर सड़क पर से निकल भी गये।

"पीछा करो उनका!" बूढ़ा कप्तान गरजा।

छापेमार धब-धब छतों से कूदे और उनके पीछे लपके।

गाँव की सरहद पर आकर छापेमारों ने अँधाधुन्ध गोलियाँ चलाईं और दौड़ते गये। इसी हड़बड़ में त्सुर ने गुलू की बाँह में गोली मार दी। हरेक उसकी सुश्रुषा के लिये थम गया और दुश्मन भाग निकला।

गाँव को लौटने पर बूढ़ा कप्तान इतना क्रोधित था कि किसी से बोला तक नहीं। "मैं तो चला!" उसने गुस्से से कहा। "ये लौंडे कोई लड़ थोड़ा रहे हैं ये तो खिलवाड़ कर रहे हैं। मुझे फौज में रहते-रहते दस साल से भी ज्यादा होगये मैंने कभी ऐसे छिछोरे और बेकार फौजी नहीं देखे।......मैं तो—ऐसों को पूछूँ भी नहीं! मैं तो जाता हूँ!"

"इस पर इतना ध्यान न दो, बूढ़े बाबा," श्वाँग ने उसे तसल्ली दी। "अभी दिन ही कै गुजरे हैं, इन बेचारों के हाथों में तो फावड़ी होती थी। एक दम से उन्हें बंदूकें देकर तुम क्या यह उम्मीद करते हो कि उसी तरह लड़ भी लेंगे। यह तो यों समझो हमने अपंगुओं को पानी की बाल्टियाँ देदी हैं—बेचारे धीरे-धीरे गिरते-पड़ते ही चलेंगे। हम कल पहला काम यही करते हैं कि एक बैठक बुलाते हैं जहाँ तुम उन्हें 'समझा-बुझा' देना।"

श्वाँग के अंतिम मुहावरे पर बूढ़े कप्तान को हँसी आगई। "अच्छा, अच्छा!" फिर कभी उसने इस्तीफे की बात नहीं कही।

दा-श्वी को सारे संसार से घृणा होगई और अपने आपसे सबसे ज्यादा। मैं बहुत बढ़िया नेता हूँ, उसने उदास हो सोचा। मैं एक जत्था लेकर जाता हूँ और दुश्मन तो भाग जाता है और हम अपने ही आदमी को मौत के घाट उतार देते हैं। दुख व अंधकार में डूबे हुए उसने सुना गुलू की मा बाहर पुकार रही है।

"दा-श्वी कहाँ है? उसने मेरे पूत को क्यों गोली लगवा दी? वह है किस का नेता, मैं पूछती हूँ।"

दा-श्वी को उसके सामने आने में शर्म आरही थी। वह अगले कमरे में गया और किवाड़ बंद कर लिये।

दा-श्वी के दोष बड़े जोर और ब्यौरे के साथ बयान करती हुई बूढ़ी महिला दफ्तर में आगई।

"वह यहाँ नहीं है," किसी ने कहा।

वृद्ध महिला ने श्वाँग को सशंक नेत्रों से घूरा। "पटेलजी, आखिर मैं क्या करूँगी अब? अगर मेरा लड़का ही काम न करेगा तो कौन मेरी देख-

भाल करेगा ?" उसने रोते हुए कहा।

श्वाँग ने उसे शांत करने की असफल चेष्टा की।

गुलू भी श्वाँग की ओर बढ़ आया, उसकी बाँह पर एक तरफ से पट्टियाँ बँधी हुई थीं। "त्सुर को तो मुझसे कोई शिकायत भी न थी, फिर उसने मेरे क्यों मार दी गोली ?" उसने दयनीय स्वर में कहा। "दा-रवी को तो रत्ती भर परवाह नहीं है! मैं अब कोई काम न कर सकूँगा और मेरा परिवार भूखों मरेगा! त्सुर मुझे गोली मार के खुश थोड़े ही रह सकेगा! मैं उस पर मुकद्दमा चलाऊँगा!"

"अच्छा, अच्छा बहुत होगया अब!" हो श्वाँग ने उस सारी कराहट और रोने-धोने से तंग आकर कहा। "त्सुर ने कोई तुम्हें जान-बूझकर नहीं मार दिया। उसे खुद को बड़ा पश्चाताप हो रहा है। फिर यह तो जरा-सा घाव है। कौन कहता है तुम किसी काम के न रहोगे ?"

"जरा-सा घाव है! जरा-सा वह कहता है! मैं भी तुम्हें एक गोली मारे देता हूँ फिर देखूं तुम्हें कैसा लगता है!" गुलू ने कुपित हो कहा।

गुलू, उसकी मा और होशाँग एक दूसरे पर चीखने लगे। अंत में जब श्वाँग ने किसी तरह उन्हें शांत किया तो कहा कि हमारा संगठन इसकी तलाफी २०० पौंड ज्वार देकर कर देगा। वृद्ध महिला ने तुरन्त उत्तर दिया कि यह काफी नहीं है। आखिरकार काफी गरमागरम बहस के बाद गुलू और उसकी मा २५० पौंड ज्वार की माँग रख कर चले गये। हरेक ने सुख की साँस ली।

ज्योंही वे वहाँ से हटे कि कुदाक मा अपनी बंदूक वापस देने पहुँच गया। उसने इस बात पर अपनी पत्नी से राय लेली थी। उनके पास थोड़ी सी जमीन थी और खाने के लिये काफी था। लड़ाई से वह उक्ता गया था। लड़ाई बड़ी खतरनाक चीज थी। उसमें तो आदमी घायल हो जाते हैं!

"क्या उम्र भर इसी तरह कायर बने रहोगे ?" श्वाँग ने मुस्कराते हुए पूछा। फिर बड़ी देर तक उसने उसे समझाया कि अपनी जमीनों की सुरक्षा के लिए जापानियों से लड़ना कितना आवश्यक है।

अंत में कुदाक की समझ में बात आगई। उसने अपनी बंदूक उठाली और लज्जित हो लौट आया।

श्वाँग ने खुशी-खुशी उस कमरे का द्वार खोला जहाँ दा-श्वी छिपा था। और उसके कंधे थपथपाये। "फिक्र न करो, हमने उस घायल वीर का मामला तय कर दिया!"

दा-श्वी का सिर नीचे गड़ा हुआ था, वह कुछ न बोला।

"क्या बात है?" श्वाँग ने मालूम किया।

"मैं तो छोड़ता हूँ इस काम को," दा-श्वी बुदबुदाया।

"बहुत अच्छे!" श्वाँग हँस दिया और उसकी बाँह पकड़ते हुए बोला। "मैं भी चलता हूँ तुम्हारे साथ! चलो सब घर चलें!"

दा-श्वी की मूर्छा सहसा भंग हुई। "श्वाँग, मेरा दिल मुझे कोस रहा है। मेहरबानी करके मजाक न करो!"

"मैं तो मजाक नहीं कर रहा हूँ। मैं तो तुमसे बातचीत करना चाहता हूँ। चलो, चलो हम चल कर घर पर खाना खायें," श्वाँग अनमने दा-श्वी को जबरदस्ती अपने घर खींच ले गया।

शाम के खाने के बाद चिराग जलाया गया और श्वाँग ने असल मुद्दा कह डाला। "आखिर तुम क्यों छोड़ना चाहते हो?"

"मैं न तो उन आदमियों की अगुआई कर सकता हूँ और न ही मुझे लड़ना आता है। फिर मेरा क्या फायदा?"

"जनरल कोई मा के पेट से बन के नहीं आ जाते। सभी को सीखने में वक्त लगता है।"

"मैं नहीं सीख सकता, मैं तो—मैं तो कोई और काम करूँगा!"

"इस बकवास से क्या फायदा?" हमें लड़ना सीखना पड़ेगा वरना जब जापानी चढ़ आयेंगे तो हम सबके सब डूब जायेंगे!" उसने देखा कि दा-श्वी वास्तव में हतोत्साह था और इसीलिए उसने स्वर नर्म करते हुए कहा, "तुम्हें इसी का गम है न कि हमारा एक आदमी घायल हो गया? कल ही हम लोग मिल बैठें और सब तय करलें—क्या-क्या गलतियाँ हमने की हैं और

आइ'दा उन्हें किस प्रकार सुधारें।" फिर उसने मंद स्वर में कहा, "कलू त्से का कौल है कि कम्युनिस्टों को विपत्तियों से नहीं घबराना चाहिए। जितनी मुसीबतें हम पर पड़ेंगी हम उतने ही पक्के और पुख्ता होते जायेंगे और एक दिन वह आयेगा जब हम फौलाद की भाँति दृढ़ और सख्त हो जायेंगे और हमें कोई भय न रहेगा।"

उस रात दान्श्वी श्वाँग के घर ही रहा। उसे नींद न आई और रात भर चैन न पड़ा परन्तु वह यह जानता था कि श्वाँग सच कहता है।

× × × ×

अगले दिन देश-रक्षक सेना के नेताओं की बैठक हुई। कल्लू त्से भी बैठक में शामिल होने के लिए गाँव में लौट आया। ज्योंही उसने बैठक की कार्यवाही शुरू की वह हँस पड़ा।

"हमारे छापेमारों ने दो लड़ाइयाँ लड़ीं। चाहे हम जीते न हों पर दुश्मन को हमने डराकर भगा जरूर दिया!" इस पर लोग हँस दिये और कल्लू ने कहना जारी किया, "फिर भी गंभीरता से सोचें तो हम किसान ही तो हैं, हमारे लिए यह लड़ना-भिड़ना वैसे भी सरल काम नहीं है। हम में कमजोरियाँ हैं लेकिन हम उन्हें दूर कर सकते हैं। जैसी कि पुरानी मसल है: 'सुर्खरू होता है इन्साँ ठोकरें खाने के बाद, रंग लाती है हिना पत्थर पे घिस जाने के बाद' इस मुसीबत को भी सह लीजिए और अपने आप को आने वाली कठिनाइयों का सामना करने के लिए तैयार कर लीजिए।"

बूढ़ा कप्तान बोलने के लिए खड़ा हुआ, "मैं कहता हूँ हम लोगों में संगठन तो बिल्कुल है ही नहीं। हमारे आदमी लड़ने इस तरह जाते हैं जैसे ततैयों को छत्ते में से निकाल भगाया हो। यह तो बिल्कुल नहीं चलेगा! फौज में तो जब कोई अफसर आदेश दे तो हरेक को उसे बजा लाना चाहिए। जब वह कहे पूरब में जाओ तो हरेक को पूरब की ओर जाना चाहिए। जब वह कहे पच्छिम में बढ़ जाओ तो हमें चाहिए पच्छिम की ओर बढ़ जायें। अगर

ऐसा हो तो कोई गलती नहीं करेगा। अगर हम हुक्म ही न मानेंगे तो लड़ेंगे क्या खाक !"

गलतियों के बारे में एक आम बहस शुरू होगई।

"मैंने भी एक गलती की थी," दा-श्वी सहसा बोल उठा, उसका चेहरा तप रहा था। "कल लड़ाई के दौरान में मैं अपनी बंदूक न चला सका। जब हम वापस आये तो मैंने उसे जाँचा और देखा कि 'सेफ्टी' अभी तक खुली हुई है !"

हरेक व्यक्ति ने ठहाके मारे लेकिन कुछ चिल्लाने लगे, "हँसिए नहीं ! हँसिए नहीं !"

त्वुर ने समर्थन करते हुए कहा, "ठीक कहते हैं ये, हम में से किसी को भी नहीं हँसना चाहिये। मुझे देखिए मैं कितना जोरदार लड़ने वाला हूँ ! मैंने अपने ही एक आदमी को गोली मार दी ! आइंदा जो मैंने सावधानी न बरती तो गोली ही क्या चलाई ! अब मेरी हरेक गोली दुश्मन के सीने में लगेगी !"

बूढ़ा कप्तान प्रफुल्लित व उत्तेजित हो उछल कर खड़ा हो गया "मैं कहता हूँ अब जो हम लड़ें तो किसी योजना के साथ लड़ें; हमें चाहिए कि हम कुछ स्काउट* रखें, कुछ मध्यस्थ रखें और सबसे बढ़कर बात यह कि हम कठोर अनुशासन रखें !"

"बिल्कुल ठीक है !" श्वाँग ने अनुमोदन किया। "आओ, यहीं हम कुछ नियम बनालें !"

वहीं नियम बना लिये गये और यह सभी ने इकरार किया कि जो कोई भी इन नियमों की अवहेलना करेगा उसे दण्ड दिया जायगा।

दा-श्वी का खोया हुआ उत्साह जैसे वापस आगया था। "हाँ, अब तो हमारे पास काम शुरू करने का सामान आगया ना !" उसने प्रमुदित हो कहा। "यह बात बड़े भारी महत्त्व की है ! एक-एक नियम का हमें पालन करना

* सेना के शत्रुओं पर आक्रमण करने के पूर्व खुफियागीरी के लिये आगे भेजा जाने वाला दस्ता।

चाहिए और दूसरों से करवाना चाहिए। हरेक को चाहिए कि इन्हें कण्ठाग्र कर ले। पिछली झड़प में तो हम रह गये थे लेकिन अब देखते हैं क्या होता है।"

कल्लू त्से को यह देख कर अपार हर्ष हुआ कि सब आदमी पुनरुत्साहित हो उठे हैं! "बहुत बढ़िया बात हुई यह!" उसने भी उन्हें सराहा। "आप लोगों में आत्मविश्वास और साहस है। दो-चार लड़ाइयों के बाद आपके अंदर अनुभव भी आ जायगा।"

"आपको चाहिए कि वक्त-बेवक्त अगर कुछ दुश्वारी भी आये तो उसे हँस कर बर्दाश्त करें।" उसने दा-श्वी की ओर आँख मार कर कहा। "जहाज तभी सुरक्षित रह सकता है जब उसका नाविक संतुलित व संयमित रहे। आप अपने लैफ्टिनैण्टों पर नियंत्रण रखिए, वे लोगों पर कण्ट्रोल रखेंगे और फिर देखियेगा कि कोई कठिनाई बाकी नहीं रहती।"

बैठक के बाद कल्लू त्से शी यू गाँव चला गया जहाँ जिला-सरकार का दफ्तर था। दा-श्वी उसके साथ कई देहातों के छापेमार संगठनों के नेताओं की एक बैठक में शरीक होने के लिए गया। मे शी यू में ही काम कर रही थी और उसने सोचा कि वह एक पंथ दो काज कर लेगा—उससे मिल भी लेगा और बैठक में भी शिरकत कर लेगा।

× × × ×

उस दिन तीसरे पहर के वक्त जब दा-श्वी गली में होता हुआ मे के घर जा रहा था तो उसने किसी स्त्री को मे के घर का पता पूछते हुए सुना। वह उसे पहचान गया, वह वही मशहूर 'सोनी' थी जो शी यू में आत्ममैथुन के लिए बदनाम थी। (इस प्रकार की स्त्री के लिए स्थानीय भाषा में 'फटी जूती' शब्द प्रयुक्त होता है।) उसके चेहरे पर पावडर के भारी तह थोपे हुए थे और बाल तेल के कारण चमक रहे थे। वह एक लाल जाकेट पहने थी और हरे रंग का बड़ा तंग पाजामा। चलते समय वह बड़ी मटक-मटक कर और कामुक ढंग से इतरा कर चल रही थी।

"तुम मे से किस लिए मिलना चाहती हो ?" दा-श्वी ने पूछा।

"किस लिए मिलना चाहती हूँ ? हुँह ! मैं उसे अदालत में घसीट कर ले जाऊँगी !" सोनी ने गरज कर अपना प्रकोप प्रकट किया।

दा-श्वी उलझन में पड़ गया। वह आगे बढ़ गया और कुछ दूर जाकर मे के घर के आँगन में दाखिल हो गया। तीन-चार बार उसने आवाज दी पर कोई जवाब ही न आया। वह घर में चला गया और क्या देखता है कि मे बड़ी ही उदास और परेशान-सा मुँह बनाये कॉग पर बैठी है।

"क्या बात हो गई तुम्हें ?" दा-श्वी ने चिंतित हो पूछा।

मे की बारे-बारे मूर्छा दूर हुई, "मैं अपना काम छोड़ रही हूँ !" उसने तनिक कटु स्वर मे उत्तर दिया।

दा-श्वी ने चैन की साँस ली और हँस पड़ा। उसने पूछा क्या बात है।

"मैं यह काम नही कर सकती······यह तो बड़ा ही उद्दीपनात्मक है।" मे को उस समय बड़ा ही क्रोध आ रहा था इसलिए उसकी बात कुछ अस्पष्ट-सी जान पड़ी। "हरेक यही कहता था कि वह ठीक औरत है और मेहनत से काम करेगी····· हमने उसे उठाकर स्त्री-मण्डल का चेयरमैन चुन दिया। मैं भला कैसे जानती कि वह वैसी औरत है······मरी। छिनाल है। और उसकी यह हिम्मत देखो कि हरेक के सामने मुझे फटी जूती कह कर पुकारती थी !" मे की अश्रु मिश्रित वाणी में धीरे-धीरे उभार आ रहा था और वह जोर-जोर से कहे जा रही थी। जब उसने 'फटी जूती' वाले कुख्याति के विशेषण का अंतिमबार जिक्र किया तो वह पूरी तरह काबू से बाहर हो गई और हर उस शालिनी स्त्री की भाँति जिसके साथ अन्याय हुआ हो वह खूब फूट-फूट कर रोई।

दा-श्वी अब भी न समझ पाया था कि यह मुसीबत आ कैसे गई और उसीके बारे में विवरण जानना चाहता था कि इतने में बाहर से सोनी की कर्कश आवाज फटती हुई सुनाई पड़ी। "कहाँ हो तुम, मे ? हम अदालत में जारहे हैं !"

दा-श्वी लपकता हुआ आँगन में पहुँचा। "यहाँ खड़ी चीख क्यों रही है तू ऐं ?" वह चीखा।

पड़ौसियों को प्रसन्न करने के निमित्त जो सब-के-सब बड़ी दिलचस्पी से सुन रहे थे, सोनी ने अपना उत्तर ऐसे नाटकीय ढंग से सिर हिला-डुलाकर और हाथों के हाव-भाव द्वारा दिया कि सब अचंभित रह गये। "उसने मुझे स्त्री-मंडल की चेयरमैनी से निकलवाया है। उसका तो मुझे इतना गम नहीं है, उस काम में मिलता-मिलाता ही क्या! मैं तो यह जानना चाहती हूँ कि उसमें इतना दुस्साहस कहाँ से आगया कि वह मुझे कहती है मेरे यहाँ तो मेरे यार आते हैं, मैं फटी जूती हूँ, छिनाल हूँ? यह मैं हरगिज बर्दास्त नहीं कर सकती!"

दा-श्वी एक रूखी हँसी हँस दिया। "तुम उसे अदालत में घसीटना चाहती हो क्योंकि उसने कहा है तुम्हारे यार बहुत हैं। तो क्या हैं नहीं तुम्हारे यार?"

सोनी ने असमंजस से उसकी ओर निहारा। "यह मेरी और मे की बात है। तुम बीच में न पड़ो!" वह घर की तरफ चलने लगी।

दा-श्वी ने उसका रास्ता रोक लिया और बुलंद आवाज में तस्वीर का दूसरा रुख भी सुनाया ताकि पड़ौसी दोनों तरफीन की बात जान जायें। "उस आधी रात को जैंग और मोटे सान का तुम्हारे घर में झगड़ा कैसे होगया था? और ला ने भला सड़क पर कैंची लेके तुम्हारा पीछा क्यों किया था?......क्यों!"

यह तो सारा भाँडा ही फूट गया, सोनी के शस्त्र कुंठित हो गये पर फिर भी उसने मोर्चा बनाये रखा। "इसका सम्बंध सिर्फ स्त्री-मंडल से है। तुम्हारी भला मे क्या लगती है जो तुम इतना इतरा कर उसका पक्ष ले रहे हो?"

दा-श्वी ने उसे आँगन वाले दरवाजे की ओर ढकेल दिया। "ऐ, ज्यादा हेंकड़ी मत बतला मुझे समझी। जज के सामने तुझे कौन पूछेगा! चल, रास्ता ले अपना!"

दरवाजे पर सोनी ने अपनी अंतिम गोली मार दी। "दूसरे लोगों के मामलों से अलग रहना सीखो तुम!" और क्रोध से दाँत कटकटाते हुए और कूल्हे मटकाते हुए वह चली गई।

मे आनन्द के आँसू रो रही थी। उसने दा-श्वी का घर में स्वागत किया।

"तुमने तो वाकई उसकी बोलती बन्द करदी! उस कुतिया ने तो मेरी जिंदगी अज़ाब में कर रखी थी।"

"क्या अब भी तुम जाना चाहती हो?" दा-श्वी ने हँसते हुए पूछा।

"क्यों भला? यह तो मेरा अपना काम है!"

स्वीकृति में सिर हिला देने के बाद दा-श्वी उसी सबक पर जा पहुँचा जो हाल में उसने खुद सीखा था। "हरेक व्यक्ति को अपने काम में कभी-न-कभी कठिनाई आती ही है। हम कम्युनिस्टों को कठिनाइयों व विपत्तियों से नहीं घबराना चाहिए। जितनी भी मुश्किलें हम पर पड़ेंगी हम उतने ही ज्यादा मजबूत होते जायेंगे और अंत में इस्पाती बन जायेंगे और हमें कोई चीज डरा न सकेगी!"

लगभग एक घण्टे तक बातचीत करने के बाद दा-श्वी को अचानक याद आया कि उसे केंद्रीय गाँव में अभी बहुत-सा काम करना है। मे उसे रात को खाने के लिए रोकना चाहती थी पर वह विवश हो अनेच्छापूर्वक वहाँ से चल दिया।

× × × ×

मई का महीना था वसंत ऋतु की गेहूँ की फसल तैयार खड़ी थी। तमाम छापेमारों के जत्थे फसल की सुरक्षा के लिए खेतों को घेर कर खड़े हो गये। दा-श्वी के आदमियों को बाँध के किनारे खड़ा किया गया। निरंतर तीन दिन तक शत्रु का कहीं निशान भी न दीख पड़ा। सिकादे* तपती हुई धूप में निरंतर भिनभिनाते रहे। बाँध के किनारे वेद वृक्षों की छाया में ऊँघने लगते थे। कुछ बड़े आलस्य के साथ नदी में तैरते थे और बाकी किसानों को फसल की कटाई में सहायता देते थे।

उथले पानी में छींटे उड़ाता हुआ एक स्काउट यह सूचना देने के लिए आया कि दुश्मन शातान गाँव तक आ पहुँचा है। गाँव नदी के दूसरे छोर से

१ जन्तु विशेष

नीचे की ओर कोई आधा मील की दूरी पर स्थित था। दा-श्वी उछल पड़ा और बाँध के नीचे खड़े होकर बड़े उत्तेजित हो उसने लोगों को पुकारने के लिए सीटी बजाई। कुछ तैराक जल्दी में नंग-धड़ंग एक हाथ में अपने कपड़े लिये और दूसरे में अपनी बंदूकें लिये दौड़े आये।

"जापानी शातान तक आगये हैं!" दा-श्वी पसीने में शराबोर था। "तैयार हो जाओ, और जब तक मैं आज्ञा न दूँ कोई गोली न चलाये! हरेक को अपने नियम याद हैं ना?"

"जी हाँ!" लोगों ने एक साथ जवाब दिया।

"ठीक है," दा-श्वी बोला, "अगर एक ने भी उन्हें तोड़ा तो बुरी तरह खबर लूँगा!" उसने अपना हाथ लहराया। "चल पड़ो!"

लोग बाँध के सहारे अपनी-अपनी जगहों पर जाकर जम गये और अंदर की ओर चित हो लेट गये। बूढ़े कप्तान के सुझाव पर एक मुखबिर कल्लू त्से को खबर देने जिला सरकार के दफ्तर में भेज दिया गया।

पिस्तौल हाथ में लिये दा-श्वी बड़ी बेचैनी के साथ एक मुकाम से दूसरे पर गया और लोगों को समझाता गया, "याद रखो—पहले देखलो फिर सावधानी से निशाना साधो, चुप रहो और अपने हवास मत खो बैठो!"

लोग बाँध के ढाल पर बिल्कुल निश्चल पड़े रहे और बेचैनी से सामने के किनारे की ओर देखते रहे।

वे बड़ी देर तक प्रतीक्षा करते रहे पर दुश्मन का कहीं नाम-निशान न दीख पड़ा। दा-श्वी ने महसूस किया कि कुछ-न-कुछ गड़बड़ हुई है।

बूढ़ा कप्तान उठ कर खड़ा हुआ और उसने बड़े चौकन्नेपन से इधर-उधर ताका। उसने दा-श्वी की बाँह जकड़ ली। "देख रहे हो? वह वहाँ पर!"

वे सब अपने सामने देखने में इतने तल्लीन थे कि लगभग दस जापानियों का और गद्दारों का एक गिरोह जो सामने के किनारे पर वृक्षों के झुरमुट में से निकल कर आ रहा था उन्हें न दीख पड़ा।

"अब क्या करें हम लोग?" दा-श्वी ने पसीने से नहाये हुए पूछा।

"घबराने की कोई बात नहीं, सब ठीक हो जायगा," बूढ़े कप्तान ने पुनरा-

श्वासन दिलाते हुए कहा। "वहाँ गहरा है। यहाँ ठीक हमारे सामने ही एक ऐसा स्थान है जहाँ नदी उथली है हम यहाँ से उस पार जा सकते हैं। वे यहाँ तो आयेंगे ही। अपने आदमियों से कह दो कि जब तक शत्रु पानी में न उतर आये गोली न चलायें!"

दा-श्वी ने लोगों को खबर भेजी कि वह 'एक......दो' कहकर इशारा करेगा। 'दो' पर गोलियाँ चला देनी थीं।

लोग अपनी साँस रोके हुए टीले पर से झाँकने लगे। फौलादी कंटोप-धारी जापानी, बन्दूकें लिये हुए और एक पंक्ति में चलते हुए एक गद्दार की अगुआई में सामने के किनारे पर आ रहे थे। अब जापानी पानी में चलकर नदी पार कर रहे थे।

"एक!" दाश्वी ने बुलन्द आवाज में कहा।

एक बन्दूक चली। यह होशाँग ने चलाई थी। वह जरा न रुका और हिदायतें भूल गया। बाकी छापेमारों ने भी उसका अनुसरण किया।

जापानी भयभीत हो गये और एक जापानी को जो मर गया था और उस गद्दार को जो उन्हें ला रहा था वहीं पानी में छोड़कर भागे।

"अपनी गोलियाँ बचा कर रखो! जब तक उन्हें देख न लो गोली मत चलाओ!" बूढ़े कप्तान ने चीख कर कहा।

त्सुर उछल पड़ा, "चलो उनकी बन्दूकें पानी में से निकाल लायें!" बहुत से आदमी बाँध पर चढ़े और उसके साथ बन्दूकें निकालने दौड़े।"

"बाकी तुम सब यहीं रहो!" दा-श्वी चिल्लाया। "वे फिर हमला करेंगे!"

त्सुर एक जापानी बन्दूक ले आया। दूसरा एक फौलादी कंटोप लाया और तीसरा एक कारतूसों का पट्टा ले आया। ज्योंही वे बाँध पर चढ़े विजयोल्लास से उनके चेहरे खिले हुए दीख रहे थे। कुदाक मा अभी तक सोते में खड़ा ऊँचे जापानी बूटों में से पानी निकाल रहा था। दूसरों से वह कहीं बूढ़ा और सुस्त था।

"इतने बहादुर तुम कब से होगये कुदाक?" दा-श्वी ने बाँध पर से पुकार कर पूछा। "जल्दी करो!"

कुदाक ने कहा मैं आ रहा हूँ। उसने बूट अपनी गर्दन में लटका लिये।

कई गोलियों ने गद्दार के सिर का कचूमर निकाल दिया था और उसका भेजा पानी की सतह पर तैर रहा था।

तीसरे पहर दुश्मन अब कहीं बड़ी संख्या में फिर से सामने किनारे के झुरमुट में से निकल कर आये। उनके आगे एक जापानी अफसर था जिसके पास एक सैमूराय* तलवार थी। उसकी बाजू में उदय होते हुए सूर्य का सेना-चिन्ह लिये एक जापानी चल रहा था। रणभेरियाँ खूब चमक रही थीं। जापानियों ने अपना झण्डा झुरमुट के सामने एक टीले पर गाड़ दिया, अफसर ने अपनी तलवार खींच ली, बिगुल गूँज उठे और शत्रु उथले पानी की ओर दौड़ने लगा।

बाँध पर खड़े छापेमार इस प्रकार की विशाल मोर्चेबन्दी पर लड़खड़ा गये। दा-श्वी का दिल धड़कने लगा। इतने बहुत-से हरामियों को हम कैसे मार डालेंगे? इतने में ही काउण्टी-देश-रक्षक सेना कल्लू त्से की अगुआई में दौड़ती हुई आई और हाँपते हुए छापेमारो के साथ लेट गई! उनकी बन्दूकों के घोड़े चढ़ गये।

"हो जाओ तैयार," कल्लू ने आवाज दी। "जब तक मैं सिगनल न दूँ, कोई बन्दूक न चलाये!"

दुश्मनों ने बन्दूकों और मशीनगनों के दहाने खोल दिये। गोलियाँ दनदनाती हुई उनके सिरों पर से गुजर गईं। छापेमार बड़ी बेचैनी से सिगनल की प्रतीक्षा करते हुए जमीन से चिपट गये। शत्रु उथले पानी में दबे-दबे आ गया। उनकी बन्दूकों के कुंदे धूप में चमकने लगे। कल्लू की चीख के साथ ही छापेमारों ने गोलियों की बौछार शुरू कर दी। आगे-आगे जो जापानी थे वे वहीं गिर पड़े। दूसरे अपने आपको मशीनगन की धड़धड़ाहट से छिपाये हुए मुड़े और भाग लिये।

जापानियों ने तीन बार और हमले किये पर हर बार उन्हें खदेड़ दिया गया।

× × × ×

---

*जापान का सैनिक वर्ग जो सामंती व्यवस्था में था, यहाँ तात्पर्य सैनिक की तलवार से है।

रात हुई तो दुश्मन भाग कर शातान को चले गये। दूर फासले पर उनकी बन्दूकों की आवाज और उनकी जोर-शोर की बुलन्द, पाशविक चिल्लाहटें मन्द सुनाई दे रही थीं। गाँव की सरहदें भड़कते हुई शोलों के खूँख्वार मुँह में थी।

बाँध पर लोग थके-हारे विश्राम कर रहे थे और ग्रीष्म के तारों से लदे हुए आकाश की ओर ताक रहे थे। उनके गले प्यास व गरमी से सूख गये थे। बड़े-बड़े मेंढकों की उत्साहपूर्ण टर्र-टर्र सुनाई पड़ रही थी।

"कोई आ रहा जान पड़ता है!" कुदाक ने कानाफूसी की और अपने गाँव की सड़क की ओर संकेत करते हुए कहा। लोगों ने उस अंधकार में देखा कि कुछ धुँधली आकृतियों की लम्बी पंक्ति, बुरी तरह लदी हुई और आहिस्ता-आहिस्ता चलकर उन्हीं की ओर बढ़ी आ रही है।

"वे किसान हैं, हमारे लिए रसद ला रहे हैं!" कल्लू ने दा-श्वी से कहा। "तुम अपने कुछ आदमियों को नीचे लेजाओ और उन्हें खिला दो प[illegible] खा-पीकर जब तुम कुछ सुस्तालो तो यहाँ आ जाना फिर हम खाने चले जायेंगे[illegible]

दा-श्वी के आदमी गये और बाँध से कोई सौ गज दूर ही किसानों से मिल लिये। छापेमारों ने भी खूब छक कर खाया और घड़ा पानी पिया।

श्वाँग ने किसानों द्वारा लाये हुए सिगरेट बाँटे। "तुम लोगों ने तो यार खूब ठूँस लिया। अभी औरतें कुछ गेहूँ की टिकियाँ लेकर आने वाली हैं जो अभी पक रही हैं! उन्हें कहाँ रखोगे अब?" उसने मजाक से कहा।

खुर ने अपने पतलून का पट्टा खोल लिया। "फिक्र न करो हमारे पास है अभी जगह!" हँसते हुए उसने कहा।

दा-श्वी के छोटे भाई रू ने जो युवक सेना के जत्थे का मुखिया था बारूद और दस्तीबम ऊपर बाँध पर चढ़ाने में मदद की। ल्यू नामक एक छापेमार ने सिगरेट माँगी और रू दौड़ कर उसके लिए सिगरेट ले आया।

"क्या थक गये?" उसने ल्यू से पूछा।

"थक गया?" ल्यू बोला। "अरे भाई, जापानियों से लड़ने में तो मजा आता है मज़ा!" रू ने उसकी ओर सराहना और किंचित ईर्ष्या से निहारा। ल्यू उससे पाँच या छः वर्ष ही बड़ा होगा।

"ल्यू," उसने प्रार्थना की, "एक बार तुम्हारी बन्दूक मुझे चलाने दो ना।"

ल्यू ने बन्दूक भरी और उसे समझाने लगा, "यह कुन्दा अपने कन्धे पर जरा मजबूती से सम्हाल कर रखो वर्ना जो गोली छूटेगी ना तो तुम धड़ाम से उल्टे गिरोगे।"

रू ने बन्दूक कसकर पकड़ ली और आँखें बिल्कुल बन्द करके गोली छोड़ दी।

"यह ठीक नहीं है," ल्यू ने कहा। "जरा मुझे देखो!"

ल्यू के होंठों पर जलती हुई सिगरेट लटक रही थी, उसने जम कर निशाना साधा और अपने निशाने के लिये नजर दौड़ाई।

एक जापानी सन्तरी ने नदी के पार से जलते हुए सिगरेट को देखकर गोली चलाई और ल्यू वहीं ढेर हो गया, जमीन पर गिरने के पहले ही उसके प्राण-पखेरू [illegible] गये।

गोली की आवाज सुनते ही दा-श्वी दौड़ा हुआ आया। जब उसने देखा कि ल्यू का काम तमाम हो गया है तो उसने रू को बहुत झाड़ा। लड़का इतना सहम गया कि दा-श्वी की डाँट भी न सुन सका।

कल्लू रसे ने हुक्म दिया कि लाश वहाँ से हटा दी जाय। "यह सब उस साली सिगरेट की वजह से हुआ!" उसने दुखी स्वर में कहा। "अब से कोई सिगरेट न पिये। कोई भी नहीं! तुम लोग नीचे ही रहो और दुश्मन पर निगाह रखो!"

पश्चिम की ओर आकाश में सुबह का तारा झिलमिला रहा था। मैं और चन्द स्त्रियाँ जो और खाना ला रही थीं बाँध से कोई तीन फर्लांग दूर एक छोटे-से गाँव में श्वाँग को मिलीं।

"कल्लू ने कहा है कि तुम लोग ज्यादा नजदीक न जाना। यहीं रुक जाओ!" वह उन्हें एक आँगन में ले गया जहाँ कुछ स्त्रियाँ कुछ सिगड़ियों पर दलिया पका रही थीं, फिर वह कुछ लोगों को बुलाने के लिये बाँध पर आ गया।

कल्लू ने फिर दा-श्वी के ही लोगों को भेज दिया क्योंकि वे ही सबसे ज्यादा देर तक लड़ रहे थे। ज्योंही उन्होंने आँगन में कदम रखे कि शोर मचाती

हुई औरतें गरमागरम दलिये की तश्तरियाँ लेकर उन्हें घेरने को दौड़ीं।

"तुम लोगों को तो बेटा बड़े जोर की भूख लग रही होगी!······चलो खालो। भरे पेट पर ही लड़ा भी जाता है वरना क्या!······"

एक लड़की ने एक जापानी टोप छीना और उसे अपने सिर पर रखकर देखा।" इसके बजाय वे लोग कोई हाँडी-वाँडी क्यों नहीं रख लेते?

छोटी लड़कियाँ खी-खी करने लगीं।

"अरे यह क्या खी-खी-खी-खी लगाई है," मे ने डाँटकर कहा।

"खाना परोसो!" और मर्दों से उसने क्षमायाचना करते हुए कहा,

"माफ कीजियेगा हम लोग यह खाना इतनी देर से लाये। इकट्ठा करने में जल्दी की फिर भी बड़ी देर लग गई।"

स्त्रियों ने उबले हुए अण्डे, तले हुए आटे के पारे, गरम शेल, भुने हुए बत्तक के अण्डे और दलिये के प्याले उन्हें पेश किये। "पेट भर कर खाना।" उन्होंने कहा। "जापानियों से भरे पेट ही लड़ा जा सकता है।"

मे काडर-स्कूल में जाने के पहले ही गर्भवती हो गई थी और अब उसका उदराकार काफी बढ़ गया था। दा-श्वी का विचार था कि ऐसी हालत में मे को घूमना-फिरना नहीं चाहिए।

"हम खुद खा-पी लेंगे," उसने कहा। "आप लोग तो रात भर खाना पकाती और ले जाती रही हैं······आप लोग अब जरा आराम कर लीजिए!"

"हाँ, हाँ जरा इनकी भी सुनिये!" मे हँस पड़ी। "अगर तुम मर्द रात-दिन लड़ाई लड़ने के बाद भी नहीं थकते तो भला हम क्यों थकने लगीं?"

खाना खाने के बाद आदमियों ने बड़ी-बड़ी आँखों वाली स्त्रियों को-लड़ाई का हाल सुना-सुना कर उनका मनोरंजन किया। कुछ ही देर में एक मुर्गे ने बाँग दी और शीतल वायु बहने लगी।

सहसा बंदूक छूटने की आवाज आई, बूढ़ा कप्तान हड़बड़ा कर उठ खड़ा हुआ।

"जापानियों ने सुबह-ही-सुबह आक्रमण कर दिया है।"

दा-श्वी ने अपना कटोरा रख दिया। "चलो, वापस चलें।" उसने

और दूसरों ने झट-अपनी बंदूकें उठाई और फुर्ती से कारतूस के पट्टे बांध लिये। दा-श्वी ने घूम कर स्त्रियों को संबोन्धित किया, "आप लोग गाँव की तरफ चल दें।"

"हमारी चिंता न करो," मे ने कहा। "हम ठीक रहेंगे!"

मर्द सवेरे के ओस के धुँधलके में पूरी रफ्तार के साथ दौड़े हुए बाँध पर पहुँचे, पीछे स्त्रियाँ बड़ी बेचैनी के साथ उन्हें देखती रहीं।

× × × ×

छापेमारों ने जाकर देखा कि काउण्टी-देश-रक्षक सेना पर धुँआधार गोलियाँ बरस रही हैं। कल्लू ने कहा कि दुश्मन अब फिर गोली चलायेगा, सब जम कर पड़ जाओ। लगभग उसके फौरन ही बाद अपनी बंदूकों के मुँह दुष्टता पूर्वक चमकाते हुए दुमश्न उथले पानी में धड़ धड़ाते हुए चले आये। छापेमारों ने भी ताबड़तोड़ उन पर सीसा उँढेलना शुरू कर दिया। बहुत से जापानी तो वहीं ढेर हो गये लेकिन वे चलते-चलते किनारे पर आ पहुँचे।

कुदाक मा और होशाँग आतंकित हो गये। मौत सामने देख कर दिल दहल गया और वे बाँध के नीचे को खिसकने लगे।

"जो भी कोई भागता हुआ दीखा मैं उसको गोली मार दूँगा।" कल्लू चीखा। "साथियो, फेंको अपने बम!"

उसने अपने चौड़े पंजे में चार बम लिये और घुमाकर जोर से फेंका। सब तरफ से लोगों ने बम फेंकने शुरू कर दिये। ज्यों ही दुश्मन के अवयव व खून से लथपथ माँस फटकर आकाश पर उड़े कि कान बहरे कर देने वाली गूँज सुनाई दी।

जापानियों का एक और रेला किनारे पर आया और उस पर भी बमों की बौछार हुई। धमाके ने जमीन को मथ दिया और धुयें व विकृत लाशों से वायुमंडल दूषित हो गया। फिर भी जापानियों के कमाण्डर ने अपने सैनिक उतारना बंद न किया। फिर सामने के किनारे पर जापानियों के पीछे और दायें-

बायें बंदूके छूटने लगीं। ये छापेमार थे जिन्हें कल्लू त्से ने उस समय वहाँ भेज दिया था जब दा-श्वी तथा अन्य सैनिक खाना खा रहे थे। बौखलाये हुए जापानी सिपाहियों में भगदड़ मच गई और एक के बाद दूसरे गिरते-पड़ते अपने हथियार वहीं छोड़ते हुए भागे।

कल्लू कमर तक नंगा था और उसके काले शरीर पर पसीने की बूँदे चमक रही थीं। उसने अपना पिस्तौल उठाया। "दौड़ो उनके पीछे!" वह बाँध से कूदा और पानी में घुस गया।

"पकड़ो उनको! मारो!" लोग चिल्लाये। भागते हुए जापानियों के पीछे वे दौड़ते गये।

: ४ :

जापानियों की कुटिल चालें--१९३९

इधर छापेमारों ने जापानियों को खदेड़ा और उधर तीसरे ही दिन आस-पास के देहातों से छापेमारों के लिये उपहारों के ढेर केन्द्रीय गाँव में आने शुरू हो गये—मुर्गे, बत्तक़ के अण्डे, पकौड़ियाँ, मिठाइयाँ, सालिम भेड़ें, सूअर और बुने हुए मोज़ों से भरे हुए टाट के थैले। कल्लू त्से पहुँचा तो देखा मे दफ्तर में उपहारों से घिरी हुई बैठी है और उसकी आँखें उल्लास से नाच रही हैं। वह उसे एक तरफ ले गया।

"तुम्हारी सास की तबियत बहुत सख्त खराब है," वह बोला। "तुम्हारे ससुर तुम्हें लेने आये हैं। कहते हैं अगर तुम जल्दी न गईं तो उन्हें कभी जिंदा न देख सकोगी।" कल्लू कहता गया कि होज्वाँग के पटेल का मेरे पास पत्र आया है। उसने लिखा है कि जिनलुंग का घाव अच्छा हो गया है और वह अब पहले से बदल गया है। डाकुओं का सरदार हो वहाँ से चला गया है। जिनलुंग ने पटेल से यह भी कहलवाया है कि यदि मे मेरी मरणासन्न मा

को देखने आ जाय तो मैं बड़ा एहसानमन्द हूँगा और वादा करता हूँ कि न तो उसे उलाहना दूँगा और न ही मारूँगा।

"जब से जिनलुंग के गोली लगी है शायद तुम उससे कभी नहीं मिली हो," कल्लू ने कहा। "अब तुम्हारी सास मृत्यु-शय्या पर हैं और तुम्हारे ससुर बड़े करुणाजनक ढंग से तुमसे प्रार्थना करने आये हैं ······ मैं समझता हूँ कि अगर तुम इस बार वहाँ न गईं तो इसका बड़ा बुरा असर पड़ेगा। इसके अलावा कुछ ही दिनों में तुम्हारे बच्चा पैदा होने वाला है। शायद घर पर ज़चगी होने में तुम्हें काफी सुभीता भी रहे······।"

मे की आँखें डबडबा गईं और उसने रोते हुए कहा मैं नहीं जाना चाहती। लेकिन कल्लू के अधिक जोर देने पर वह राजी हो गई और अपने ससुर के साथ चल दी।

उसी रात जब मे घर पहुँची तो सास का दम निकल गया था। कई दिन तक सारा परिवार अंत्येष्टि व अन्य संस्कारों में व्यस्त रहा। ज्योंही वे संस्कार पूरे हुए कि मे को प्रसव वेदना का सामना करना पड़ा और उसने एक अकाल प्रसूत बालक को जन्म दिया। बच्चा मुर्गी के बच्चे की नाईं मांसदार था लेकिन वह था लड़का इसलिए उसके दादा को परम आनन्द हुआ। उस दिन से तो बूढ़े ने मे को बड़ा अच्छा खिलाया-पिलाया। वह चाहता था कि मे को पूरी तरह अपने वश में कर ले और उससे बालक का पोषण घर पर ही करवाये, काम पर न जाने दे।

अब चूँकि उसकी दुष्ट सास रास्ते से हट गई थी इसलिए मे का भी व्यवहार अब कहीं बेहतर हो गया। नये शासन के अन्तर्गत जिनलुंग पहले की भाँति दंगे-फिसाद और झगड़े-टण्टे नहीं कर सकता था। मे जिला सरकार की एक काडर थी। बच्चे के जन्म के बाद जब मे आराम कर रही थी तो उस महीने जिनलुंग ने देखा कि किस प्रकार उसके पास किसानों और काडरों का ताँता लगा रहता है, किस प्रकार स्त्रियाँ अपनी समस्यायें लेकर उसके पास आती हैं लेकिन सब कुछ देखते हुए भी उससे दुर्व्यहार का उसे साहस न हो सका।

बड़े दिनों से मे तलाक की बात सोच रही थी लेकिन अब बच्चे के पैदा होने के बाद उसे महसूस हुआ कि बच्चे के लिए बाप का होना जरूरी है और इसीलिए आम पारिवारिक जीवन को अब वह तरजीह देने लगी। उस बच्चे की खातिर उसने जिनलुंग की पत्नी बने रहने का निश्चय कर लिया।

× × × ×

पतझड़ आ गया था। बारिश के बाद भी आकाश पर बादल मँडरा रहे थे। नदियो और झीलो का पानी खतरनाक रूप धारण कर गया था। उस वर्ष सब ओर बड़ी भरी-पूरी फसलें हुई थी पर किसानों को अन्देशा था कि कहीं कटाई से पहले ही बाढ़ आकर उनकी तमन्नाओं पर पानी न फेर दे। काउण्टी सरकार की एक बैठक के बाद कल्लू त्से ने अपने जिले के सभी केन्द्रीय गाँवों के काडरो की एक कान्फ्रेंस बुलवाई। बाँधो को मजबूत बनाने और उनकी हिफाजत के लिए उसने एक योजना पेश की।

"यह भी हमारा युद्ध-सम्बन्धी ही एक कर्त्तव्य है और यह एक ऐसा युद्ध है जिसमें हमें अतिवृष्टि का सामना करना है।" उसने कहा। "यह हमारे काडरों के लिए एक कसौटी भी होगा। हम देखेंगे कि असल में कौन जनता के हितों की रक्षा करने के लिए तैयार है।"

श्वाँग और दा-श्वी ने अपने केन्द्रीय गाँव द्वारा शासित किसानों को उसी रात बाँध पर काम करने के लिए एकत्र कर लिया। पानी ऊपरी सतह से केवल एक फुट नीचा रह गया था। मूसला धार बारिश हो रही थी। रात ऐसी अँधियारी थी कि हाथ को हाथ नहीं सूझता था। वृक्षो के तनो की मशालें जलाई गईं और कुछ फासले से बाँध एक आग उगलता हुआ अजगर दीख पड़ा। लोग इधर-उधर दौड़ रहे थे, सूराख भर रहे थे और मिट्टी के ढेर-पर-ढेर लगा रहे थे ताकि बढ़ते हुए पानी को नीचा रख सकें। सारी रात वे इसमें लगे रहे लेकिन सुबह होने पर भी पानी जोरों से गिर रहा था और पानी की सतह ऊपर को चढ़ी आ रही थी। पूरी तरह भीगे हुए किसानों ने प्रण किया

कि हम भी काम पर डटे रहेंगे चाहे अब "पानी की जगह चाकू ही क्यों न बरसें !" किसी को खाने की सुध न रही। यह संघर्ष अगले दिन और रात भर चलता रहा।

तीसरे दिन सुबह को बारिश और ज्यादा तेज हो गई। अब पानी की सतह पहले से कहीं फुर्ती से उठ रही थी अब पानी बाँध से कोई दो-तीन इंच नीचे रह गया था।

"अब कोई फायदा नहीं !" बूढ़े लोगों ने साँस लेकर कहा। "अब हम कुछ भी क्यों न करते रहें सब बेकार है !"

बाँध की सतह को और ऊँचा कर देने का अब समय नहीं था। यह तय किया गया कि बाँध के बीच में एक सकरा-सा टीला बना दिया जाय।

गिरते-पड़ते और फिसलते हुए श्वाँग एक जगह से दूसरी जगह पर गया। "केन्द्रीय टीला बनालो……हम अब भी उसे बचा सकते हैं……अब तो यही जिन्दगी या मौत है ! खम्बे लगा दो……अब तो कुछ भी चलेगा !" उसने कहा। "कुछ भी हो जाय इसकी फिक्र न करना, बस फसलें बचाना है यह याद रखो !"

बहुत से किसान और काडर सामान लेने के लिए गाँव को दौड़े। काडर गलियों से ढिंढोरा पीटते फिरे और चिल्लाते फिरे, "बाँध खतरे में है ! चलो सब बाँध पर ! टीला बनाने में जो कुछ भी काम आ सके ले आओ !"

सारे गाँव को जगा दिया गया। बूढ़ा कप्तान रोग-शय्या पर से उठा और उसने एक खम्भा उठाया। मर्द, औरतें, और बच्चे राड़ों के ढेर लिये, टोकरियाँ सम्हाले घरों से छतों की कड़ियाँ और बल्लियाँ घसीटते हुए बाँध की ओर लपके जा रहे थे। दा-श्वी ने छापेमारों के हेड क्वार्टर्स के दरवाजे को चीरा, उठाकर कमर पर लादा और नदी की ओर चल दिया।

मे उस समय घर में ही थी जब ढिंढोरे की और चीख-चिल्लाहट की आवाजें उसके कानों में पड़ीं, उसका हृदय धक्क से रह गया। उसने बच्चे को रखा और लपक कर आँगन में आई, नरकटों का एक ढेर खींचा और उसे लेकर बाँध की ओर दौड़ी, पीछे उसका ससुर चीखता-चिल्लाता रहा पर उसकी

गुहार दीवारों से टकरा कर रह गई।

बाँध पर पनाह की भगदड़ मची हुई थी। बम्बे ठोकने की लकड़ी के हथौड़े के आघातों की आवाज कई लोगों के एक साथ चीखने की आवाज को जगह-जगह रोक देती थी। मिट्टी और तख्ते लाने वाले लोग किसी तरह बाँध पर चढ़-उतर रहे थे। पूर्वी विभाग में एक दरार पड़ी कि सब-के-सब उसे भरने के लिए दौड़ गये। फिर पश्चिमी विभाग में एक पाँच इंच की दरार पड़ गई। गंदला पानी अपनी भरपूर शक्ति के साथ निकले जा रहा था। दा-श्वी, खुर और कोई एक दर्जन आदमी उस मूसलधार बारिश में कूद पडे और दरार पर लम्बा दरवाजा रख कर उस पर मिट्टी थोपने लगे। पर अब क्या था, पानी सर से गुजर चुका था! कचकचाते हुए प्रकोपपूर्ण पानी के एक झटके ने दरवाजा मिट्टी और आदमियों को और उनके दक्षिण पाट को मैदान में जाकर फेंका और दरार फैल कर दस फीट चौड़ी हो गई। पानी में तरबतर लोग दुबारा बाँध पर चढ़े और निराशा व घबराहट में उन्होंने देखा कि बढ़ता हुआ पानी दरार को चारों ओर से चौड़ी किये जा रहा है। फिर बूढ़े कप्तान और श्वाँग को एक मुश्कबेतों से लदी हुई नाव जाती हुई दीख पड़ी। उसकी जंजीरें टूट गई थीं और वह सोते के नीचे की ओर जा रही थी। चक्कर खाती हुई पीली नदी में वे साथ-साथ बहे, नाव को उन्होंने रोका और उसे खींचते हुए किनारे तक ले आये।

"इसके पेंदे में सूराख कर दो!" वे चीखे। "और इसमें मिट्टी के ढेले भरदो!"

बीस सेकण्ड में ही नाव अपने मुश्कबेत वगैरह लिये हुए पानी में डूब गई। सारी भारी चीजें जो हाथ में आई बाँध के ऊपर जमा कर दी गईं।

"एक कतार में हो जाओ!" दा-श्वी चीखा।

एक हाथ से दूसरे हाथ में होते हुए मिट्टी के बडे-बडे लोंदे बाँध पर पहुँच गये और उन्हें नाव में ठूँस दिया गया। दस्तों की अगुवाई करने वाले काडर भी दूसरे गाँवों से सुन-सुन कर दौड़ आये। नाव के हर तरफ कीचड़-ही-कीचड़ हो गया और अंत में सारी नाव उससे ढँक गई।

अब दरार को फैलने से रोक दिया गया।

अंधेरा होते ही बारिश थम गई। जल-थल पर एक घने कुहरे का साम्राज्य छा गया। किसी एक को भी दम लेने का साहस न हुआ। ज्योंही रात का अंधकार बढ़ा लालटेनें और मशालें जला ली गईं। चौथे दिन जब सूर्योदय हुआ तो नदी के पानी में कोई विशेष वृद्धि न हुई थी। फिर भी आदमी बाँध पर डटे रहे। उसी दिन तीसरे पहर को बाढ़ उतरनी शुरू हुई और तब जाकर कहीं बीमार बूढ़ा कप्तान उठा और लड़खड़ाता हुआ गाँव की ओर चला।

लोगों ने तनिक विश्राम किया और अपने लहलहाते हुए खेतों की ओर निहारा—१० फीट ऊँचा काओलियांग, धान की लहराती हुई बालियाँ, कपास की चटकती हुई कलियाँ, कल-कल करते हुए गेहूँ के पौधे--अब के ८० प्रतिशत अच्छी फसल होने वाली थी। कुछ बूढ़े आदमियों ने गुनगुनाते हुए भगवान से प्रार्थना की और उसका आभार माना। बच्चों ने फिर अपना खेलकूद शुरू कर दिया। तरुण किसानों ने कहा फसल के लिए अगर इससे दुगुनी मेहनत भी करनी पड़ती तो वह भी बेकार न होती!

सबने एक मुँह हो काडरों के सराहनीय कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की—कि वे किस प्रकार तीन दिन और तीन रातें बिना सोए, बिना एक दाना अन्न का खाए बाढ़ से जूझते रहे। किसानों ने अब उनसे निवेदन किया कि वे घर जाकर कुछ विश्राम करलें। दा-श्वी और श्वाँग ने एक दूसरे की ओर देखा।

"ऐरे," दा-श्वी बोला, "तू तो ऐसी लग रहा है जैसी कीचड़ का बुद्ध!"

"तो क्या अपने भैया को नहीं पहचाने तुम?" श्वाँग ने फौरन जवाब दिया। "हम दोनों तो एक ही ठप्पे के हैं!"

हँसते-खिलखिलाते काडरों ने धीरे-धीरे गाँव का रुख किया।

ग्राम-शासन कार्यालय का करीब-करीब प्रत्येक कमरा चू रहा था। दा-श्वी और श्वाँग ने आखिर एक ऐसा कमरा पा ही लिया जो दूसरों में बेहतर था और अपने चेहरों से कीचड़ धोई। श्वाँग इतना थक गया था कि खड़ा रहना भी दूभर था। दा-श्वी ने उसके पतले मुँह की ओर देखा वह पहले से कहीं पीला और रक्तहीन था और उसकी बिज्जू की-सी बड़ी-बड़ी आँखें अधमिची थीं।

श्वाँग जुलाहा था और पाँच दिन के अन्दर फूलदार कपड़े के बारह थान रातों को काम करके बुन लेता था। उससे उसका स्वास्थ्य खराब हो गया था और वह अब भी जब अधिक काम करता तो खून उलटता था। लेकिन वह पार्टी-मेम्बर था और जब उसकी कोई जिम्मेदारी होती थी तो वह तन-मन से उसमें लग जाता था और उसे पूरा करके ही दम लेता था। बाँध के गत तीन दिनों के भारी श्रम ने उसे बुरी तरह थका दिया था। वह अपनी आँखें तो न खुली रख सका पर फिर भी अपनी बन्दूक साफ करने लगा। दा-श्वी का हृदय द्रवित हो उठा।

उसने श्वाँग की बन्दूक छीन ली और उसे कांग की ओर धकेल दिया। "जरा अपनी शक्ल व हुलिया तो देखो कैसे लग रहे हो? मैं साफ कर दूँगा इसे। जाओ जरा नींद ले लो!"

"नहीं, नहीं यह नहीं हो सकता," श्वाँग ने बन्दूक छीनते हुए कहा, "तुम भी मुझ से कम नहीं थके हो!"

दोनों में खूब खींचा-तानी और ले-दे हुई। फलस्वरूप दा-श्वी ने श्वाँग की बन्दूक साफ की और श्वाँग ने दा-श्वी की बन्दूक धोई। जब तक काम न हुआ दोनों अपने-अपने कांगों पर चुपचाप हठी बालक-से बने बैठे रहे। दोनों थककर चूर हो गये थे। जिस प्रकार बैल हल खींचते-खींचते थक जाते हैं उसी प्रकार थके-माँदे ये दोनों प्राणी बिना कुछ खाये-पिये लम्बे हो गये और गहरी नींद ने उन्हें दबोच लिया।

उस रात किसानों ने चैन से खाना खाया और सवेरे ही सो गये। अब १७-१८ वर्षीय छापेमार बाँध पर पहरा दे रहे थे। त्सुर ने स्वेच्छा से निरीक्षण का काम अपने जिम्मे ले लिया था।

आधी रात के बाद जापानी सिपाही अन्धेरे में ही नाव से आये और झील के कई मील ऊपर आकर उतर गये। उन्होंने लगभग तीन सौ किसानों को घेरा और बाँध की ओर खदेड़ दिया। जिन्होंने भागने की कोशिश की उन्हें गोली से उड़ा दिया गया। जिन्होंने काम करने से इन्कार किया उन्हें पानी में फेंक दिया गया। बाकी लोगों से जबरदस्ती बाँध के स्थल पर कोई दो फर्लांग

लम्बी खाई खुदवाई गई। और क्षीण विभाग के मध्य में एक बड़ा सूराख़ करवाया गया। प्रत्येक दोनों ओर अपनी भरपूर रफ्तार और शक्ति के अनुसार दूर तक दौड़ता गया। पानी सूराख से फूट निकला। और फिर सारा पतला विभाजन नष्ट-भ्रष्ट हो गया। पानी झरने की-सी फुर्ती के साथ गड़गड़ाहट करता हुआ खेतों में घुस गया। पानी की गड़गड़ाहट पाँच मील के फासले तक सुनाई दी।

दा-श्वी और श्वाँग घोड़े बेच कर सोये हुए थे कि त्सुर दौड़ा हुआ आया और उसने उन्हें झिंझोड़ कर जगाया।

"उठ बैठो! दुश्मन ने बाँध तोड़ दिया है! पानी खेतों में भर रहा है!"

वे हड़बड़ाकर उठ बैठे और लपक कर छत पर पहुँचे, वहाँ से उन्होंने देखा। गलियों में छापेमार "सावधान! सावधान!" चिल्लाते फिर रहे थे। "उठ जाओ बाढ़ आ रही है!"

सफेद झाग बिखेरती हुई लहरें समीप से समीप तर चली आ रही थीं ऐसा लगता था मानो लोमड़ियों और खरहों का पीछा कर रही हों जो उससे भयभीत होकर आगे भागे जा रहे थे। आकाश में मृदुल अर्धचन्द्र पृथ्वी की ओर से रूखी रुपहली उदासीनता लिए हुए चमक रहा था और इधर पृथ्वी पर फसलें—सुन्दर लहलहाती फसलें उद्वेलित जलराशि के नीचे गड़ी जा रही थीं!

बाढ़ बौराई हुई खेतों में फैलती गाँवों की ओर बढ़ी जा रही थी। उसे रोकने का अब समय न था। लोग अपने माल-असबाब ले-लेकर छतों पर चढ़े जा रहे थे। कुछ अपनी नावों को लिये किनारे की ओर दौड़े जा रहे थे। गन्दा और मैला पानी सारे गाँव में फैल गया। किसानों की चीखें व पुकारें एक दूसरी में मिलकर बाढ़ की गड़गड़ाहट में खो गईं।

"हे भगवान, अब तो हम सब मर जायेंगे!" एक वृद्धा ने रोते हुए कहा।

दा-श्वी को महसूस हुआ मानो उसके कलेजे में किसी ने छुरा भोंक दिया हो वह बड़ा बिलख-बिलख कर रोने लगा।

लाखों-करोड़ों चिंगारियाँ श्वाँग की आँखों के सामने फटीं और चमकीं,

उसका सीना जल गया और उसके गले में कुछ नमकीन-सा स्वाद जम गया। उसका सारा शरीर हड़फूटन से पीड़ित हो उठा और एकाएक शरीर की ऐंठन और प्रकाश से उसे कच्चे खून की कै हुई। छत की मुँडेर के सहारे टिके-टिके वह खाँसता-खाँसता बैठ गया और खाँसी के धसकों से आक्रांत साँस लेने की कोशिश करने लगा।

× × × ×

उस साल जापानियों ने अनेक काउण्टियों की हजारों एकड़ जमीन पानी में डुबो दी। यह कुचाल उनकी उस योजनाबद्ध मुहिम का ही एक अंश थी जिसके द्वारा वे उन किसानों की कमरें तोड़ देना चाहते थे, जो दिन-प्रतिदिन मुकाबले के आन्दोलन की पाँतों में शामिल होते जा रहे थे। कम्युनिस्टों और सरकारी अधिकारियों ने उन प्रदेशों में जहाँ जापानी हमलावर न पहुँचे थे किसानों को लामबन्द किया, चन्दे एकत्रित किये और भोजनादि की सामग्री जुटाई। काडरों ने अपना पेट काटकर और कपड़े बचाकर अधिक खाना व कपड़े त्रस्त व पीड़ितों को भिजवाये। अनाज और ईंधन से लदी हुई नावें पर नावें आती रहीं।

जब पानी उतर गया तो सरकार ने बुआई के लिए बीज बाँटे। स्त्रियों को संगठित किया गया और उन्हें मुश्कबेंत बाँटे गये जिनसे उन्होंने चटाइयाँ व टोकरियाँ बुनीं। बाढ़-पीड़ित गाँव वालों के लिए दस्तकारी व अन्य अल्प कालीन कार्यों के लिए मौके निकाले गये। और बाढ़ाक्रांत प्रदेश धीरे-धीरे सुधार की ओर बढ़े।

बाढ़-पीड़ितों के सहायता-कार्य के दौरान दा-श्वी और श्वाँग अक्सर होज्वाँग को गये। वहाँ वे कई बार मे से मिले। उसके घर वालों में कोई भी न तो मछली मार सकता था न ऐसा कोई और उत्पादनशील कार्य कर सकता था। इसलिए यदि सरकार उनकी सहायता न करती तो वे भूखों ही मरते। हालाँकि जिनलुंग ने कुछ कहा तो नहीं पर वह इस सहायता के लिए आभारी अवश्य था। इसलिए जब मे ने कल्लू त्से का पत्र उसे बताया जिसमें उसे काम

पर लौट आने का आग्रह किया गया था तो उसे देख कर वह बड़ा खुश हुआ। यह तय पाया कि वह काम पर बच्चे को लेकर जायगी और जब कभी सम्भव हो घर आ जाया करेगी। जिनलुंग ने सामानादि बाँधने में उसकी मदद की। इस सद्व्यवहार पर जिनलुंग के पिता को आश्चर्य हुआ उन्होंने उसे एक तरफ ले जाकर पूछा कि यह क्या माजरा है कि तुम बहू को भेजे दे रहे हो।

"शायद मैं भी चला जाऊँ," जिनलुंग ने उत्तर दिया। "इसके अतिरिक्त अधिकारियों को सन्तुष्ट करने का और कोई रास्ता नहीं!" और बच्चे को गोद में लिये वह मे को जिला-सरकार के दफ्तर में पहुँचाने चला।

कई सप्ताह बाद वृद्ध ससुर मे को बच्चे-सहित नये साल की छुट्टी में घर ले आये। जिनलुंग ने अपने बच्चे को गोद में उठाया तो उसकी सेहत और हृष्ट-पुष्टता को देख कर वह दंग रह गया। उन दोनों ने बड़ी हँसी-खुशी बातें कीं, हँसे, खिल-खिलाये और बच्चे को खिलाते रहे।

अगले दिन रात को एक गली में जिनलुंग की हो डाकू जो अब गद्दार हो गया था, बेटे गूपी से मुठभेड़ हुई।

"आओ, हमारे घर चलो कुछ पियें-पिलायें!" गूपी बोला।

जिनलुंग शराब कब छोड़ने वाला था। सुनते ही, फौरन उसके साथ चल दिया उन दोनों की मुलाकात आकस्मिक नहीं थी क्योंकि हो ने जो घर पर छिपा हुआ था, जिनलुंग को बुलाने के लिए अपने बेटे को भेजा था।

जब से वा लू सेना के कप्तान जनरल लू ने पुराने दस्तों को तोड़कर, जिनमें हो की टोली भी शामिल थी पुर्नसंगठित किया था तभी से हो कुमिन्तांग-प्रदेश में गद्दार की हैसियत से काम कर रहा था। जापानियों द्वारा कब्जे में किये हुए शहर को जाते हुए रास्ते में वह अपने घर वालों से मिलने के लिये रुक गया था। वह जानता था कि जिनलुंग एक दिलेर शख्स है और है भी अच्छा आदमी इसलिए वह उसे भी अपने साथ ले जाना चाहता था।

गूपी और जिनलुंग हो के प्रासाद में दाखिल हुए। परिवार-आराधनागृह से गुजरते हुए उन्होंने आँगन पार किया, उत्तरी दिशा में एक नाजुक-सा दरवाजा खोला और एक गर्म सुप्रकाशित कमरे में प्रविष्ट हुए। जोर से मुस्कराते हुए हो

स्वागतार्थ अपनी आराम कुर्सी पर से उठ खड़ा हुआ। हो को देखते ही जिनलुंग हक्का-बक्का रह गया क्योंकि गूपी ने रास्ते भर अपने पिता की वापसी का कोई जिक्र ही न किया था। हो एक नरम भेड़ के ऊन का हैट ओढ़े था और एक बड़ा कीमती वस्त्र जिस पर लोमड़ी के परों का अस्तर लगा हुआ था पहने हुए था। उसका चेहरा सुर्ख और चमकदार था और वह पहले से कहीं मोटा दीख रहा था। उसने गूपी से शराब उंडेलवाई और तीनों पीने बैठे।

ज्यों-ज्यों शराब पीता गया हो में गर्मी आती गई और वह खूब आनन्दित होता गया। उसने भेड़ के ऊन का हैट उतारा और उसकी गंजी चँदिया चमकने लगी। जिनलुंग पर अपनी बड़ी-बड़ी आँखें गड़ाते हुए उसने उससे अनेक प्रश्न पूछे।

"यहाँ घर पर पड़े रहकर क्यों मुसीबतें उठाते हो," उसने विजय-मिश्रित स्वर में कहा। "मेरे साथ चलो! मैं तुम्हें दस-पन्द्रह साल से जानता हूँ। तुम एक सुयोग्य कार्यकर्त्ता हो और मुझे तुम पर विश्वास है। मेरे साथ चिपके रहो और फिर देखना तुम दुनिया में कितने बड़े आदमी बन जाओगे। उन सर्कस के बीसियों रीछों के बजाय मैं तुम जैसे एक अजगर को साथ रखना चाहता हूँ! और अगर मैं तुम्हें अपना ही आदमी न समझता तो इस तरह की बातें भी न करता।" उसने जिनलुंग के घुटने थपथपाये। "सोच लो बस, गौर करलो!"

"मुझे कहाँ ले जाना चाहते हो?" जिनलुंग ने पूछा।

हो ने एक लम्बा ग्लास चढ़ाया। "पहले तो तुम्हें आज की स्थिति को समझ लेना है," उसने आहिस्ता से जवाब दिया। "जापानियों की हमें तनिक चिन्ता नहीं करनी है। हमारे असल दुश्मन तो वे सड़े-पड़े कम्युनिस्ट हैं। वे लोग सारी स्त्रियों को समान पत्नियाँ बनाने वाले हैं और तुम जानते हो कैसी खतरनाक बात है वह! जिस तरह उनकी ताकत दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है वह बहुत खतरनाक है। ज़माना हुआ हमारे आकाओं ने उनके विरुद्ध एक नीति निर्धारित कर दी थी। पहले तो हम कम्युस्टों का सफाया करने के लिए जापानियों का साथ देंगे फिर जापानियों से निपटेंगे। हमारे उप-प्रधान मन्त्री मि० वाँग चिंग-वी ने पहले से ही नानकिंग में अपनी सरकार स्थापित कर दी है। आज

रूप से तो वह जापान के आधीन है। लेकिन असल में हम लोग अपनी शक्ति और अधिकार एकत्रित कर रहे हैं। बाद में हम कुछ करने के काबिल होंगे। तुम उन कम्युनिस्टों पर विश्वास न रखो। वे तो खरहे की पूँछ की तरह हैं—कभी बढ़ सकते ही नहीं। मैं तुम्हें शहर चलने के लिए कह रहा हूँ, जब कम्युनिस्टों का सफाया हो जायगा तो इन सैकड़ों वर्ग मील के क्षेत्रफल की हुकूमत तुम्हारी मुट्ठी में आ जायेगी!"

इस योजना को सुनकर जिनलुंग की आँखें फट गईं लेकिन वह अब भी सकुचा रहा था। "ग्वो कहाँ है?"

"बूढ़ा ग्वो, लियेव और दूसरे सभी शहर में पहुँचकर मेरी राह देख रहे होंगे," हो ने कहा और फिर कुछ हँसकर बोला, "जापानियों से मैंने सब कुछ तय कर लिया है। हम में से प्रत्येक चाहे बड़ा हो, चाहे छोटा अफसर कहलायगा।"

जिनलुंग ने इतनी पी ली थी कि उसके माथे की नसें उभर आईं। उसने अपना पैमाना रख दिया। "कमाण्डर हो," उसने शान्तिपूर्वक कहा, "तुम तो मुझसे वाकिफ हो·····साफ-साफ और दो टूक बात कहो मुझसे······अगर ग्वो वहाँ मौजूद है······तो मैं नहीं जा सकता फिर!"

हो और उसके बेटे ने ग्वो के जिनलुंग को गोली मारने वाली दुर्घटना पर विशेष महत्व न देते हुए कहा कि जाहिर है उसने तुम्हें जान-बूझकर तो गोली मारी नहीं थी। अन्त में बहुत कुछ समझाने-बुझाने और फुसलाने के बाद जिनलुंग ने खुमार की अवस्था में ही अपनी स्वीकृति दे दी।

जब वह जाने के लिए उठा तो हो ने उसे दो औंस अफीम दी। "इसका पता किसी को न होने पाये अच्छा!" उसने चेतावनी दी। "चलने से पहले मैं तुम्हें इत्तला करवा दूँगा।

जिनलुंग ने लड़खड़ाते कदमों से घर की राह ली।

मे ने बच्चे को सुला दिया था और खुद बैठी हुई लैम्प की रोशनी में कुछ सीना-पिरोना कर रही थी। रात काफी हो चुकी थी और वह समझ गई थी कि जिनलुंग कुछ-न-कुछ गड़बड़ कर बैठा होगा। जब वह लड़खड़ाता हुआ, घर में दाखिल हुआ तो उसके चेहरे पर नशा उबला पड़ रहा था। घर में लैम्प का तेल उसके आने तक खुट चुका था।

"इतनी रात गये तुम्हारा आने का क्या मतलब है?" मे ने पूछा। "कहाँ चले गये थे?"

"किसी खास जगह नहीं," जिनलुंग बड़बड़ाया। "मेरा एक दोस्त मिल गया था और हमने दो-चार प्याले शराब पीली।"

"कौन था वह?"

"तुम नहीं जानतीं उसे।" जिनलुंग काँग पर बैठ गया। "मेरा गला बिल्कुल सूख गया है, थोड़ा पानी दो।"

ज्योंही मे कमरे से बाहर निकली उसने झट अफीम की पुड़िया जेब में से निकाली और उसे तस्वीर की फ्रेम के पीछे छिपा दिया। पर उसे उस जगह से सन्तोष न हुआ। उसने उसे वहाँ से भी निकाल लिया और कमरे में इधर-उधर कोई सुरक्षित स्थान ढूँढने में लग गया। आखिरकार उसने उसे दराज़ के नीचे पड़े एक पुराने जूते में छिपा दिया। जल्दी-जल्दी उसने कपड़े उतारे, बिस्तरे में घुसा और सो गया।

मे बाहर खड़ी खिड़की में से सारा तमाशा देख रही थी। वह अन्दर आई, पानी मेज़ पर रखा और बड़ी सतर्कता से जूते में से मोमजामे में बँधी पुड़िया को निकाल लिया। उसने पुड़िया खोली और देखा कि वह अफीम है; उसे फिर लपेट दिया और पुड़िया उठाकर अपने वक्ष में रख ली। फिर उसने अपने पति को जगाया।

जिनलुंग ने उठकर थोड़ा पानी पिया। उसने मे की ओर सुर्ख, मखमूर आँखों से ताका। "बहुत रात हो गई आओ सो जाओ।"

"मैं नहीं सोऊँगी जब तक तुम मुझे यह न बताओगे कि आज रात को क्या कर रहे थे?" मे ने झिड़कते हुए उत्तर दिया।

"मैंने तो ज़रा तीन-चार पेग शराब पी होगी। मैंने कोई जुआ नहीं खेला, किसी औरत के पास नहीं गया। आखिर तुम इतनी गरम क्यों हो रही हो?"

"अच्छा! तो सच-सच नहीं बताओगे—तो योंही सही। आज से तुम अपना रास्ता लो और मैं अपना। मैं तुम से बाज़ आई!"

"बकवास न करो। मैं कहीं नहीं जा रहा हूँ। क्या मैं अब तुम्हारी खैर-खबर नहीं रखता हूँ? चलो आओ सो जायें ·····।"

"तुम इतने ढीठ क्यों हो गये हो? अब भी नहीं बताओगे क्या? मैं तुम से पूछती हूँ यह अफीम तुम कहाँ से लाये?"

जिनलुंग के पैरों तले जमीन खिसक गई लेकिन वह मे की ओर घूरता रहा और फिर उसने सख्ती से पूछा, "कैसी अफीम?"

"ढोंग मत करो अब!" मे बोली। "मैंने तुम्हें देख लिया था। मैं अफीम नहीं लेना चाहती मैं तो सिर्फ यह जानना चाहती हूँ कि तुम्हें दी किस ने अफीम? अगर बतादोगे तो कोई झगड़ा न होगा वरना तुम पछताओगे मैं कहती हूँ!"

जिनलुंग लाजवाब हो गया। इस डर से कि कहीं वह हो-हल्ला न मचाये उसने, योंही लापरवाही से कहा, "गूपी ने दी है।"

"काहे के लिए?"

"उसने सोचा मैं इसे बेच कर पैसा उगालूँगा। वह जानता है कि हम तंगी में हैं।"

"अच्छा! बाढ़ के फौरन बाद जब तुमने अपनी सफेद चिड़ियें कौड़ियों के दाम उसे बेचीं तब उसने तुम्हारी मदद न की?" जिनलुंग चुप रहा और मे ने फिर कहा, "हम पति-पत्नी हैं। कोई भी बात अगर तुम से सम्बन्धित है तो लाज़मी मुझे उसका शरीक होना चाहिए। भला तुम मुझसे छिपा क्या रहे हो? बतादो, मैं तुम्हें कोई तकलीफ न दूँगी। मुझे सब कुछ बताओ कि आखिर यह है क्या!"

चूँकि जिनलुंग ने किस्सा छेड़ दिया था और उधर मे दबाव डाले जा रही थी इसलिए जिनलुंग ने अनेच्छा से कुछ और उसे बता दिया। "असल में यह अफीम तो मुझे गूपी के बाप ने दी है लेकिन देखो किसी से कह मत

देना तुम यह !"

सारी तस्वीर धीरे-धीरे मे के सामने आ रही थी लेकिन उसने ऐसा जाहिर किया मानो बात उसकी समझ में न आई हो। "ओह, बस ? क्यों दी भला उसने तुम्हें अफीम ?"

"सड़ी-सी बात है और तुमने सवालों की झड़ी लगा दी, एँ! तुम भी कमाल करती हो !"

वह काँग से उतरा और जाकर यह देखा कि अफीम जहाँ उसने छिपाई थी वहाँ है या नहीं। मे हँस पड़ी और उसने वह मोमजामे की पुड़िया उसे थमा दी। "यही ढूँढ रहे हो ना तुम ? इसके काफी पैसे बनेंगे। ऐसी चीजें फटे-पुराने जूते में नहीं रख देनी चाहिएँ—खराब हो जाती हैं। कहीं सम्हाल कर रख दो इसे !"

"कल पहला काम इसे बेचना है। तुम्हारा हिस्सा तुम्हें दे दूँगा," जिनलुंग ने कपटपूर्ण मुस्कान के साथ कहा।

"यह हिस्से-विस्से की क्या बात की तुमने ?" मे ने जवाब दिया। "वह क्या करवाना चाहता है तुमसे ? अगर यह हमारे भले के लिए है तो मैं भी इस में तुम्हारी मदद करूँगी।"

जिनलुंग नशे में था और मे की इस स्नेहपूर्ण सहानुभूति का लोभ-संवरण न कर सका। "वह मुझे अपने साथ शहर ले जाना चाहता है," वह फुसफुसाया। "घबराओ नहीं, मैं उसके साथ जा नहीं रहा हूँ !—भगवान् करे मेरी जबान गल जाय जो मैं तुमसे झूठ कहूँ तो !"

"यह तो तुम पर निर्भर करता है तुम चाहो जाओ, न चाहो न जाओ।" मे ने मुस्कराते हुए कहा। "ऐसा कोसने देने की क्या बात है इसमें। उसने लैम्प बुझाया, कपड़े उतारे और बिस्तर में जा घुसी।

शीघ्र ही जिनलुंग की आँख लग गई। कुछ क्षण तक मे ने उसकी सतत श्वाँसें सुनीं, फिर आहिस्ता से कांग से उतरी और अपने कपड़े पहन लिये। उसने एक नीले कपड़े का टोप सिर पर ओढ़ा, हल्के से दरवाजा खोला और खिसक गई। सरसराती हुई सर्द हवा उसके बारीक कपड़ों को भेदती हुई उसके

शरीर के अवयवों को ठिठराये दे रही थी। कुछ देर दौड़ते हुए और कुछ देर चलते हुए वह केन्द्रीय गाँव के शासन-कार्यालय में पहुँची। वह दरवाजे पर दस्तक करती रही कि इतने में श्वाँग नींद से उठकर लड़खड़ाता हुआ आया। फुर्ती के साथ उसने उसे सारा किस्सा कह सुनाया। फिर इस डर से कि कहीं उसकी अनुपस्थिति का पता न चल जाय वह घर की ओर दौड़ी।

श्वाँग ने दा-श्वी को जगाया। उन्होंने झटपट सलाह-मशिवरा किया और फिर वे छापेमारों को लेकर हो के मकान पर पहुँचे और उसे घेर लिया। कुछ लोगों को छत पर तैनात कर दिया और दीवार फाँद कर अन्दर के सहन में जा कूदे। बन्दूकें हाथों में लिये उन्होंने एक-एक कमरा और कम्पाउण्ड ढूँढ मारा लेकिन हो और उसके बेटे का कहीं पता न चला।

: ५ :

दूल्हा—१९४०

हो के परिवार में एक भेड़िये जैसा बड़ा कुत्ता था। अभी एक मास पूर्व ही गाँव वालों को आदेश दिया गया था कि तमाम गाँवों के कुत्ते मार दिये जायँ ताकि उनके भूँकने से छापेमारों की गतिविधि का पता न चल सके। हो के परिवार वालों ने विरोध करते हुए कहा कि हमारा कुत्ता न भूँकता है न किसी के काटता है और हमने इस पर बहुत-सा पैसा खर्च किया है। गाँव के काडर अब तक हो से घबराते थे इसलिए उसके कुत्ते को जीवित रहने दिया गया।

जब दा-श्वी और उसके आदमियों ने हो के मकान को घेर लिया तो कुत्ता जोर-ज़ोर से भूँकने लगा। हो जाग पड़ा और उसने झटपट कपड़े पहने।

उसका बेटा गूपी दौड़ा हुआ अन्दर आया और बोला, "बड़ा बुरा हुआ! उन्होंने तो सब तरफ घेरा डाल दिया है।"

हो ने जल्दी से अपना चमड़े का पोर्टफोलियो उठाया और एक पिस्तौल ले ली। "मुझे तो यहाँ से फौरन निकल जाना चाहिए," उसने अपनी रखैल से कहा। "तुम मत घबराना। मैं कुछ ही दिन बाद तुम्हें किसी को भेज कर बुलवा लूँगा।"

वह और उसका पुत्र एक छोटे-से कमरे में गये। एक संदूक हटाया और दो बड़े चौरस पत्थर के सिल उठाये जहाँ नीचे उतरने की सीढ़ी थी। गूपी की बैटरी की रोशनी में वे जीने से उतरे। रखैल ने सिलें फिर जमादीं, संदूक फिर उठा कर वहीं रख दिया और आकर बिस्तर पर लेट गई। सीढ़ियाँ उतरने पर दोनों ने एक दरवाजा खोला और एक सुरंग में दाखिल हो गये। चूँकि गाँव झील के समीप था इसलिए पानी के डर से सुरंग अधिक गहरी न खोदी गई थी। वह ईंटों से बनाई हुई एक पुरानी सुरंग थी। सुरंग में चलते-चलते वे अपने पारिवारिक क़ब्रिस्तान में जो गांव के बाहर था, जा निकले। उन्होंने अपनी बैटरी बुझा दी और जापानियों द्वारा क़ब्जाये हुए शहर की ओर चले।

छापेमारों ने सुबह होने तक हो के मकान की तलाशी ली लेकिन सात ज़ंग खाई हुई बंदूकों के अलावा उन्हें कुछ न मिला। श्वाँग और दा-श्वी ने अपने आदमियों को बंदूकें देकर शासन-कार्यालय को दौड़ाया और उन्हें हिदायत कर दी कि जाकर "गद्दारों को चुन-चुन कर हटाओ" कमेटी से कहें कि वे जिनछुंग का पता लगाएँ। फिर वे दोनों नेता ज़िला सरकार में कल्लू त्से को इस घटना की सूचना देने गये।

कोई एक हफ्ते बाद नये साल की छुट्टियों के दौरान कल्लू ने अपनी दाढ़ी साफ़ करवाई, बेहतरीन कपड़े पहने और अपनी पत्नी व बच्चे के साथ होज्बाँग में अपने सम्बन्धी जिनछुंग के यहाँ दिन भर ठहरने के लिए गये। एक जिले-नेता के उसके घर आने से मे के ससुर ने बड़ा गर्व अनुभव किया और कल्लू त्से की उसने खूब आव-भगत की।

दोपहर का खाना खाने के बाद कल्लू और जिनलुंग पास के कमरे में गये और वहाँ आराम से बातें करने लगे। कल्लू ने जिनलुंग के घाव के बारे में पूछा।

"वैसे तो वह बिल्कुल ठीक हो गया है लेकिन उसका असर यह हुआ कि अब मैं कोई काम नहीं कर सकता। आजकल हम बड़ी मुसीबत में दिन काट रहे हैं।"

"घबराओ नहीं, जिनलुंग! हमारी जापान-विरोधी सरकार तुम्हारे परिवार को कभी भूखा न मरने देगी।"

"हमें तो बस आसरा ही तुम्हारा है।"

"तुम्हारी कोई भी कठिनाई हो मुझे बताने में न झिझकना। अगर तुम घर पर पड़े-पड़े ऊब गये हो और कुछ करना चाहो तो उसका प्रबंध किया जा सकता है। हमारी ताकत अब बढ़ रही है। जापानियों को कुमिंतांग से इतना डर नहीं है जितनी कम्युनिस्टों का नाम सुनकर उनकी नानी मरती है। इसमें तो कोई शक ही नहीं कि हम उन्हें हरा देंगे। मैं समझता हूँ कि अगर तुम जैसे व्यक्ति अपने गुण व योग्यता देश के लिए काम में लाओ तो चीन के इस संघर्ष में तुमसे बहुत मदद मिल सकती है।"

जिनलुंग तो अपनी तारीफ सुनकर फूला न समाया। "मुझ में कौन गुण रखे हैं?" उसने आत्महीनता से कहा। "मेरा तो दिमाग ही स्थिर नहीं रहता है, आज कुछ सोचता हूँ कल कुछ।"

"योग्य व्यक्ति तो आज सैकड़ों मौजूद हैं। पर सवाल यह है कि वे सही रास्ते पर चलते हैं या गलत पर। उनमें से कुछ तो जापानियों के नौकर हो गये हैं उनको गद्दार जैसा घृणित नाम दिया जाता है और यह एक ऐसा कलंक है जो आसानी से नहीं मिटता। कुछ ऐसे हैं जो सत्य पर आरूढ़ हैं और राष्ट्रीय हीरो बन गये हैं। वे जहाँ कहीं भी जाते हैं जनता खुले दिलों से उनका स्वागत करती है।"

इस अंतिम वाक्य से तो जिनलुंग के गुदगुदी हो गई। वह अच्छी तरह भाँप गया कि कल्लू को उसके हो से सम्बन्ध है इस बात का पूरा

पता है। उसने कई बार चोरों की-सी निगाहें कल्लू पर डालीं मगर जाहिर यही किया मानो वह आम बातचीत कर रहा हो। लेकिन कल्लू भी बातों में कमजोर न था, बातें करते-करते उनकी बहस ने कई रुख पलटे और बातें होती ही गईं।

तीसरे पहर जब कल्लू ग्राम-शासन-कार्यालय में चला गया तो जिनलुंग काँग पर लेट कर गहन चिंतन में लीन हो गया।

"तुम बहनोई जी से हो वगैरह की सारी बातें साफ-साफ कह दो," मे ने कहा। "अगर साफ-साफ बतलाओगे तो वे कुछ न करेंगे और अगर कुछ छिपाया तो फिर शक्ल कुछ और ही होगी।

"मुझे अब कुछ नहीं कहना है"

"तुम समझते हो वे जानते नहीं? भला तुम उनसे बच कर कहाँ जाओगे?"

जिनलुंग को पक्का विश्वास हो गया कि हो-न-हो मे ने ही यह बात कल्लू से कही है। लाल-पीली आँखें निकालते हुए वह मे की ओर लपका और चीख कर बोला, "हाँ वह क्यों न जानते भला, तुम्हारी इस सड़ियल ज़बान ने ही उन्हें बताया है। बन्दर की बच्ची—आज मैं तेरी तबियत दुरुस्त किये देता हूँ!" उसने झाड़ू का हत्था लिया और मारने के लिये उठाया।

मे उसकी ओर उँगली उठाते हुए हँस दी। "मारो, लगाओ न मेरे—आस्तीन के सँपोलिये! मैंने तुम्हें दूध जो पिलाया है, मेरे ही न काटोगे तो किसके काटोगे! न जाने तुम्हारी बुद्धि कहाँ चली गई है! वे जानते तो हैं ही तुम्हारी चालों को वरना हो को गिरफ्तार करने कैसे चले जाते? तुम शायद जानते नहीं कि दीवारों के भी कान होते हैं। इस कस्बे में कोई रहस्य गुप्त नहीं रह सकता। तुम्हारी अफीम के बारे में तो कल्लू ने मुझसे भी बातें की थीं। जान-बूझकर और चोरी-छिपे गद्दारों से साँठ-गाँठ करने के जुर्म में वे तुम्हें गिरफ्तार कर सकते थे। लेकिन इसके बरखिलाफ वे तुम्हारे साथ रियायत कर रहे हैं और तुम्हें पकड़ नहीं रहे। अब बताओ तुम्हें मुझ से शिकायत क्या है।

जिनलुंग उन्हीं प्रकोपपूर्ण नज़रों से मे को देखता रहा पर उसने झाड़ू की मूठ फेंक दी। मा की गाली देते हुए वह काँग पर जा लेटा।

मे स्नेहपूर्वक और खुशी-खुशी उसके पास जा बैठी। "जिनलुंग, कल्लू अभी गाँव में ही है उसकी मौजूदगी का फायदा उठाओ। उसे सारा किस्सा अ से लेकर ह तक सुना दो। हालाँकि कोई बहुत बड़ी तो नहीं पर मैं भी एक काडर हूँ और मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूँ कि तुम पर कोई आर नहीं आयेगी।"

जिनलुंग बड़ी देर तक गौर करता रहा। अंत में कुछ द्वेषपूर्ण स्वर में बोला। "मैं उससे बातचीत तो कर लूँगा पर अफीम नहीं दूँगा किसी को!"

"जो तुम्हारे जी में आये करो, मेरी बला से! अगर मैं तुम्हारी जगह होती तो मर जाती लेकिन उस जैसे गद्दार से कोई चीज न लेती! चीनी में कुछ आत्म-सम्मान तो होना चाहिए!" और क्रोधातुर हो वह कमरे से बाहर चली गई।

बाद में जब कल्लू वापस आया तो जिनलुंग ने उससे कोई एक घण्टे तक खुसर-फुसर की। कल्लू प्रमुदित हो उठा। उसने जिनलुंग को आश्वासन दिलाया कि उसकी हो से जो साँठ-गाँठ है उस पर ध्यान न दिया जायगा। इस आश्वासन से उत्साहित हो जिनलुंग ने अफीम की एक छोटी-सी पुड़िया निकाली और उसे दे दी।

"मैं तो असल में तुम्हारा इन्तजार ही कर रहा था कि तुम आओ और तुम्हें यह सौंप दूँ। मैं जानता था कि यह मामला शुरू से ही गलत है।"

मे जो अभी-अभी अन्दर आई थी कल्लू को देख कर मुस्करा दी। जिनलुंग तो आखिर चीज़ें समझने वाले आदमी हैं। उन्होंने हो के साथ जाने से साफ इन्कार कर दिया।

"वह इंसान ही क्या जिसमें आत्म-सम्मान न हो?" जिनलुंग ने सद्भावना से कहा। "मैं कोई गद्दार थोड़े ही हूँ। वह तो मुझे अपना सारा धन देकर भी नहीं खरीद सकता था! जो कोई भी जापानियों का साथ देता है मैं कहता हूँ वह हरामी है साला।"

कल्लू के जाने के कुछ देर पहले उसने मे से प्राइवेट तौर पर कहा, "सुनो, वह इस समय दुविधा में पड़ा हुआ है। तुम उसे अब मेरी तरफ करलो। वह बड़ा जोरदार तीरंदाज है, फिर उसमें और भी कई गुण हैं। उसे

समझा-बुझाकर अपने काम में मिल जाने के लिए राजी कर लो। देखना कहीं ऐसा न हो कि वह गद्दारों के हथे पड़ जाय।"

मे ने वचन दिया वह भरसक प्रयत्न करेगी। कल्लू अपने बीवी-बच्चे सहित विदा हो गया।

× × × ×

नये साल की छुट्टियों के बाकी दिनों में मे ने जिनलुंग की हर सनक सर आँखों पर ली और साथ ही उससे नौकरी करने के लिए अनुरोध भी करती रही। जिस दिन वह काम पर लौटने वाली थी उसकी पिछली रात को सोने के पहले उसने जिनलुंग से पूछा, "तो क्या सोचा तुमने उसके बारे में? अगर तैयार हो तो चलो कल मेरे साथ!"

जिनलुंग कांग पर लेटा लिहाफ ओढ़े अपना आखरी सिगरेट पी रहा था उसने कोई उत्तर न दिया।

"हम दोनों साथ-साथ काम करके खासी तरक्की कर सकते हैं," वह बोली।

"अगर हम दोनों चल दिये तो यहाँ पिताजी की कौन देखभाल करेगा?"

"ओह, छोड़ो इसे! घर पड़े रहकर तुम उन्हें क्या फायदा पहुँचा सकते हो? फिर इसके अलावा अगर हम दोनों काम करने लगेंगे तो ग्राम-शासन वाले उनकी मदद कर देंगे।

जिनलुंग ने अपना सिगरेट बुझाया, लबादा उतारा और बिस्तर में घुस गया। "आधी रात का समय है," उसने टालते हुए कहा। "मेरी आँखें झपक रहीं हैं, चलो अब सो जायँ। क्या वही मुर्गे की एक टाँग लगा रखी है—कर लेंगे बातचीत बाद में।"

"तुम भी खूब हो! इतने दिनों से जूतियाँ चटखाते फिर रहे हो कि अब कोई काम की बात तुम्हारी समझ में ही नहीं आती! तुम्हारा शुमार किनमें है—मजदूर हो, किसान हो, सिपाही हो, विद्यार्थी हो, व्यापारी हो क्या हो तुम? अगर

तुम प्रतिकार आन्दोलन में भर्ती हो जाओ तो मुझे गर्व हो तुम पर और अगर इसी तरह घर में मक्खियाँ मारते रहोगे तो मुझे तुम पर शर्म आने के सिवाय क्या होगा ? अगर तुम यह काहिली और निठल्लापन नहीं छोड़ते तो मैं तुम्हारे साथ नहीं रह सकती !"

"ऐ ! तुम्हारी नौकरी-नौकरी सुनकर तो कान पक गये ! कैसी नौकरी करवाना चाहती हो तुम मुझसे ?"

"बरसों तुम बन्दूकें घुमाते रहे हो, निपुण बन्दूकधारी हो। मुझे तो तुम से ईर्ष्या होती है क्योंकि तुम तो फौज में भर्ती होकर सीधे जापानियों से लड़ सकते हो !"

ज्योंही जिनलुंग ने सुना "फौज में भर्ती हो जाओ" उसके लिए तो वर्तालाप वहीं खतम हो गया। बिस्तर में लिपटते हुए उसने दृढ़ता से कहा,

"अरे बख्शो बाबा ! बा लू फौज में रहना टेढ़ी खीर है— वहाँ कौन टिक सकता है !" मे का बोलते-बोलते गला सूख गया पर वह टस-से-मस न हुआ, अपनी ही हाँकते हुए बोला, "कुछ भी हो मैं तो इसका कायल हूँ कि 'जैसी चली बयार पीठ पुनि तैसी कीजे।' तुम मेरी चिन्ता न करो!"

मे समझ गई कि वह निरा मिट्टी का माधो है। क्रोधावेश में वह खड़ी हो गई। "अच्छा, तो जाओ करो गद्दारी, बन जाओ विश्वासघाती ! उसी के तुम लायक भी हो ! खाओ, शराबें पियो, रण्डीबाज़ी करो और जुए खेलो—इज्ज़त व अन्तःकरण को धूल में मिलाते फिरो।"

"यह क्या बक रही हो तुम ?" जिनलुंग क्रोध में चीखा। "कौन है गद्दार ? दूसरे के मुँह पर क्यों कीचड़ उछालती हो ?"

मे ने उसकी बात पर कान न दिया। उसने अपना तकिया उस चौड़े काँग के दूसरे सिरे पर रख लिया, लैंप बुझा दिया, कपड़े उतारे और अपने लिहाफ में लिपटकर लेट गई। जिनलुंग ने भी क्रोधित होकर अपने लिहाफ की शरण ली।

वे दोनों एक-दूसरे की ओर पीठ किये घण्टों खामोश लेटे रहे। लेकिन जिनलुंग से न रहा गया उसने अपना तकिया उठकर मे के पास रख लिया।

"ऐसा गज़ब न करो। अपन अब भी इसका तसफिया कर सकते है। ऐसे भड़कने की क्या बात है?"

"मैं तुमसे इतनी शराफत के साथ बातें करने की कोशिश कर रही हूँ। तुम्हें चाहिए कुछ दूरअन्देशी से काम लो। जानती हूँ बा लू सेना में काम करना आसान नहीं है लेकिन तुम वहाँ क्या कुछ नहीं सीख सकते? मुझे ही देख लो—अभी मुझे काम करते हुए दिन ही के हुए हैं लेकिन मैं चीज़ों को अब कहीं ज्यादा अच्छी तरह समझती हूँ। मैं खत पढ़ लेती हूँ और जरूरत पड़े तो पुर्जे लिख सकती हूँ। और तुम इतने बड़े हो गये तुम्हारे लिए अब तक काला अक्षर भैंस बराबर ही है। अगर तुम सेना में भर्ती हो जाओ और जी लगाकर पढ़ो तो तुम दिन-ब-दिन सुधरते जाओगे और कुछ काम के आदमी बन जाओगे।"

"मुझे तो बस यही डर है कि वे मुझे कहीं दूर भेज देंगे," जिनलुंग ने विनोद करते हुए कहा। "मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता।"

"मैं इतनी गम्भीरता से बात रही हूँ और तुम्हें दिल्लगी सूझी है। अगर बाहर जाने ही के तुम खिलाफ हो तो हम कल्लू त्से से कह देंगे कि वह तुम्हें यहीं काउण्टी देश-रक्षक सेना में कहीं रखवा दें।"

जिनलुंग प्रमुदित हो खिलखिला उठा। "फिर तो बढ़िया रहेगा। अगर तुम पहले ही यह बात बता देतीं तो मैं कभी का राज़ी हो जाता!"

अगले दिन जिनलुंग अपने पिता से कुछ कहे-सुने बगैर मे के साथ कल्लू त्से से मिलने ज़िला-सरकार के दफ्तर को चला गया।

× × × ×

जिला-सरकार के दफ्तर में कल्लू बैठा हुआ दा-श्वी से हो के मामले पर विचार-विनिमय कर रहा था। उन्हें खबर मिली थी कि जिस दिन हो फरार हुआ था उसके दूसरे ही दिन शेंज्या का पटेल शेन भी गायब होगया था। कुछ दिन पहले किसी ने उन दोनों को चोरी-छिपे बातें करते हुए भी देखा था।

"अरे भाई, चोर-चोर मौसेरे भाई जो ठहरे," दा-श्वी ने कहा। "मुझे विश्वास है हो ही उसे फुसलाकर ले भागा होगा।"

कल्लू ने सिर हिला दिया। "जान पड़ता है हो न उसे इधर-उधर के किस्से सुना कर डरा दिया होगा और इसीलिए वह भाग गया। उसके जो घर वाले हैं उनके साथ दूसरों का-सा ही व्यवहार किया जाना चाहिए। बाद में हम उसे समझा-बुझा कर वापस लाने की कोशिश करेंगे।"

डीन चेंग जो काउएटी की कम्युनिस्ट पार्टी का सेक्रेटरी था वहाँ आ पहुँचा और उसने कल्लू से बातचीत की। उसी के अनुसार कल्लू ने दा-श्वी को कुछ निर्देश दिये।

"काडरों को जो काम बाँटे गये थे उनमें कुछ परिवर्तन कर दिया गया है। वापस जाओ और श्वाँग को सूचना दो कि अपने जिले के काम की फौरन यहाँ आकर रिपोर्ट दे। केन्द्रीय गाँव के पटेल अब तुम नियुक्त कर दिये गये......"

"अरे बाप रे!" दा-श्वी चिल्लाया, "और देश-रक्षक सेना के अगुआ की हैसियत से जो मेरे कार्य हैं उनका क्या होगा?"

कल्लू पुनर्आश्वासन दिलाते हुए मुस्करा दिया। "त्सुर को उसका अगुआ बना दो और तुम उसके सहायक बन जाओ।

"अच्छा तो फिर मैं जाने की तैयारी करूँ," दा-श्वी बोला और अपने राशन की कूपनें लेने के लिए चला गया।

ज्योंही दा-श्वी आँगन पार कर रहा था कि उसे मे दिखाई दी जो बच्चे को गोद में लिये कल्लू के दफ्तर की ओर जा रही थी, जिनलुंग अपना बिस्तर लिये उसके पीछे जा रहा था। दा-श्वी को उसे पुकारने का मौका ही न मिला और वे फाटक में से अदृश्य हो गये। वह राशन आफिस की ओर बढ़ा जहाँ पहुँच कर उसने देखा कि वहाँ का क्लार्क एक गोलीयंत्र पर गिनती कर रहा था। वह उसके काम समाप्त करने की प्रतीक्षा करता रहा उधर उसे कल्लू के मैत्रीपूर्ण वर्तालाप की आवाज आ रही थी गो क्या बातें हो रही थीं वह उसकी समझ में न आईं।

उसने मन-ही-मन सोचा आखिर यह जिनलुंग अब तक क्यों नहीं पकड़ा

गया ? आखिरकार उसने अपने राशन के कूपन लिये और ज्योंही आँगन में उसने क़दम रखा कि मे और परिवार से जो कल्लू से अपना काम करके लौट रहे थे उसकी मुठभेड़ हो गई।

जिनलु ंग ने अभिवादनार्थ मस्तक नवाया और स्नेहपूर्वक मुस्करा दिया। "आजकल बहुत व्यस्त हो दा-श्वी ?"

"हाँ ····· कहाँ चले ?" दा-श्वी असमंजस में पड़ कर हकलाने लगा।

"सब कुछ तय हो गया है, मुझे काउण्टी की देश-रक्षक सेना में जगह मिल गई है।" जिनलु ंग अपनी पत्नी और बच्चे को लेकर शांतिपूर्वक कम्पाउण्ड से बाहर हो गया।

दा-श्वी बड़े गुस्से में लपका हुआ कल्लू त्से के पास पहुँचा। "यह किस क़िस्म का घपला कर रखा है तुमने ऐं ? जिनलु ंग को भला तुमने कैसे नौकरी देदी जबकि उस पर गद्दार होने का शक है ?"

कल्लू ने जिनलु ंग के सुधर जाने का किस्सा समझाया। सुनकर दा-श्वी कुछ ठण्डा पड़ा पर उसे खुशी नाम को न हुई। और वैसे ही परेशान वह केन्द्रीय गाँव की ओर चला।

× × × ×

जब दा-श्वी ने अपनी नई ज़िम्मेदारियाँ सम्हालीं तो उसका काम पहले से कहीं बढ़ गया। नियमित कामों के अलावा उच्च अधिकारियों ने आदेश दिया था कि पढ़ाई का काम भी और बढ़ा दिया जाना चाहिए ताकि काम का स्तर सुधर सके। काडरों ने स्थानीय प्रारम्भिक शाला के अध्यापक को निमन्त्रित किया और वह उन्हें फुर्सत के समय पढ़ाने लगा। कुछ दिनों में उन्होंने बहुत प्रगति करली।

एक दिन दा-श्वी अपने दफ्तर में बैठा अखबार पर उङ्गली फेर कर पढ़ रहा था कि उसके पिता प्रसन्न व उत्तेजित कमरे में दाखिल हुए।

"बेटा, मैंने तुम्हारे लिए दुलहिन तलाश करली। वह श्ये ल्यू में रहती

है......नाम है हूवार। अभी कोई अठारह वर्ष की है और बड़ी शालिनी है। बिल्कुल तुम्हारे मतलब की है। तुम्हें ज़रूर पसंद आयेगी वह!"

दा-श्वी ने किसी तरह पिता को बैठाया। "ऐसे आपत-काल में जबकि हमें दो जून भोजन तो नसीब होता नहीं तुम्हें शादी की सूझी है।"

"अरे तू नहीं जानता," दियेह ने विजय के स्वर में कहा। "बरसों से अपना पेट काट कर जमा कर रहा हूँ इसकी तैयारी में। एक-एक कौड़ी करके मैंने कुछ डालर जमा किये हैं और अब भगवान् ने वह दिन दिखाया है। लड़की के घर वाले भी हैं गरीब पर उन्होंने पैसे-वैसे नहीं माँगे। उन्हें तो बस यही सन्तोष है कि तुम बा लू में हो और सच्चरित्र हो। खैर, इसमें हमारा अधिक खर्च नहीं होगा। तुम्हें कुछ नहीं कहना पड़ेगा मैंने सारा प्रबन्ध कर लिया है।"

"पढ़ना जानती है वह?"

दियेह के हाथों के तोते उड़ गये। "अरे यह तो मैंने पूछा ही नहीं।—शायद पढ़ी-लिखी नहीं है। पर मैं कहता हूँ कि एक देहाती लड़की को पढ़ने-वढ़ने से क्या सरोकार?"

"अगर पढ़ी-लिखी नहीं है तो मुझे नहीं चाहिए।"

बूढ़े आदमी ने ज्योंही अपने पुत्र की ओर उँगली उठाई है उसकी दाढ़ी लरज़ने लगी। "तूने इने-गिने दो-चार कीड़े-मकोड़े खींचना क्या सीख लिए हैं अपने आगे किसी को गिनता ही नहीं। मैंने इतनी दौड़-धूप की और बड़ी मुश्किलों के बाद तेरे लिए इतनी अच्छी लड़की ढूँढी और तू है कि मीन-मेख निकाले जाता है। अगर तूने इस दफ़ा इंकार कर दिया तो क्या खबर फिर कभी ऐसा मौका मिले न मिले?"

"वह पढ़ी-लिखी है नहीं और मेरे साथ काम कर नहीं सकेगी" दा-श्वी बुदबुदाया। "मेरे लिए वह ठीक नहीं रहेगी...... ।"

"इतनी जिद ठीक नहीं बेटा," उसके पिता ने समझाया। "ऐसी आदर्श लड़की जिसमें कोई कमी न हो तुम्हें कहाँ से मिल जायगी? मैं कब्र में पैर लटकाए बैठा हूँ और तुम बीस से ऊपर हो गये हो। मैं चाहता हूँ मेरी आँखें मुँदने के पहले ही अगर तुम अपना घर बसा लो तो अच्छा है। अगर तुम

ज्यादा दिन लगाओगे तो शायद मैं तुम्हारा ब्याह देखने के लिए जिंदा न रहूँ······।" बूढ़े आदमी का गला भर आया।

दा-श्वी भी द्रवित हो उठा और पिता के प्रति आभारी अनुभव कर उसने और विरोध न किया।

उसे किसी काम से दूसरे कमरे में बुला लिया गया जहाँ उसे काफी देर हो गई। और जब वह लौट कर आया तो उसके पिता जा चुके थे।

× × × ×

१८ मार्च, १६४० को दा-श्वी का भाई रू कल्लू त्से के पास से एक खत लेकर आया जिसमें उसे आदेश दिया गया था कि वह फौरन घर पहुँच जाय और कल्लू भी उन्हें वहीं मिलेगा। दा-श्वी ने दफ्तर का सारा काम-काज ठीक किया, पिस्तौल अपनी कमर में लटकाई, कागजों की फाइल ली और भाई के साथ चल दिया। रास्ते में रू दा-श्वी की ओर घूरता हुआ नाचता गाता रहा :

छोटा-सा एक आदमी दहेली पर बैठा था,
पत्नी की चाह में रोता-तड़पता था।
पूछा किसी ने तुझे दुलहन क्यों चाहिये ?
बोला जलाये दिया और बात करे वह,
दिया बुझावे और सोये साथ मेरे वह।

"तू इतना चुरग क्यों रहा है रे ?" दा-श्वी ने गुर्राकर पूछा।

रू ने शरारत से उसका मुँह चिढ़ा दिया।

जब वे घर पहुँचे तो उन्होंने दरवाजे में लाल बत्तियाँ लटकी हुई देखीं और प्रवेश-द्वार के दोनों ओर लाल कागज की पट्टियों पर 'चिरजीवो' आदि वाक्य लिखे हुए देखे। आँगन में मित्रगण बैठे चाय बना रहे थे और भँपती हुई टिकियाँ पका रहे थे। चारों ओर कोलाहल मचा था।

दियेह प्रमुदित व प्रफुल्लित बाहर आया। "हम तुम्हारी ही राह देख रहे हैं। चलो चलकर अपना नया कमरा तो देखो।" उसने अपने

पुत्र को घर में घसीटा।

छोटे कम्पाउण्ड के पश्चिमी सिरे पर जहाँ खेती-बाड़ी के औजारों का एक सकरा-सा भण्डार था वहाँ से हल, बक्खर, खुरपी आदि उठाकर उसे बिल्कुल साफ कर दिया गया था। नये बनवाये हुए काँग पर माँगी हुई चद्दर बिछी थी। तकियों की जोड़ी के अलावा दो तह किये हुए लिहाफ रखे थे। दीवार को एक बहुत बड़े अक्षर जिससे तात्पर्य है सुख-समृद्धि और प्राचीन काल की एक सुन्दर लड़की के चित्र से सजाया गया था। कमरे के मध्य में एक मेज और दो कुर्सियाँ बिछी थीं। सुगन्धित चाँदी के वर्क की बनी हुई दो बत्तियाँ और दो लाल बत्तियाँ मेज के बीच में रखी थीं। जिनमें पहली देवताओं को धन-दान देने के लिए जलाई जाने वाली थी।

"देख रहे हो तुम," बूढ़े आदमी ने गर्व से कहा, "कुछ मैंने अपना लगाया कुछ इधर-उधर से माँगा और हर एक चीज़ ठीक ढंग से जम गई।"

"कल्लू भैया कहाँ हैं?" दा-श्वी ने उत्तेजित हो पूछा। "शादी करने के पहले अपने अफसरों से भी तो इजाज़त लेनी है।"

"चल ज़रा दम मार ले!" पिता ने खुशी-खुशी उससे कहा। "तेरे भैया ने तो कभी की इजाज़त दे दी है!"

मित्रों व कुटुम्बियों की एक टोली नाचती-गाती अन्दर घुस आई, "नया दूल्हा देखे नया कमरा! नया दूल्हा देखे नया कमरा!"

बूढ़े ने दा-श्वी को पकड़ा और खींचकर काँग पर जा बैठाया और शादी की खुशियाँ मनाने वालों ने कुछ बांसुरी-वाद्यकों के साथ मिलकर नाचते-गाते कमरे का चक्कर लगाया और फिर बाहर निकल गये।

"दा-श्वी," उसके पिता ने सन्दूकची में से नये कपड़ों की गठरी निकालते हुए कहा, "इन्हें पहन लो। तुम्हारी शादी की पालकी अभी आती होगी, उसमें बैठकर तुम्हें दुलहन को लेने जाना पड़ेगा।"

कपड़ों में एक लम्बा काला लबादा और नीला रुई भरा पाजामा—दोनों मशीन पर सिले हुए कपड़े थे।—और साथ में पट्टियाँ भी थीं……

"इन्हें पहनकर मैं न जाने कैसा लगूँगा?" दा-श्वी ने विरोध किया।

"मैं नहीं पहनता !"

"पहनकर तो देखो बेटे !" पिता ने उसे फुसलाया।

और कुछ लोगों ने आकर दा-श्वी के कपड़े बदलवाये और वह क्या बड़बड़ा रहा है इस पर जरा ध्यान न दिया। पीछे खड़े होकर उन्होंने अपनी दस्तकारी देखी। पाजामा जरूरत से ज्यादा लम्बा था और लबादा जो टखनों तक आना चाहिए था घुटनों तक ही आकर रह गया। रू ने एक चमकदार काली टोपी जिसके ऊपर लाल मोती जैसा बटन टँका हुआ था अपने भाई को ओढ़ा दी। वह भी बहुत छोटी थी और उसके बालों के ऊपर तक ही आ सकी।

"क्या कहने हैं! वाह वाह!" बूढ़े आदमी ने पूरी सन्तुष्टि से कहा। "अब तो तुम पूरे दूल्हा लग रहे हो!"

दा-श्वी ने उद्विग्न हो अपने आपको आँचा। फिर उसने टोपी एक ओर फेंक दी और कपड़े उतारने लगा। "ये तो बन्दरों का पहनावा है। मैं नहीं पहनता इन्हें!" उसने दृढ़ता से कहा।

दियेह ने बेटे के हाथ पकड़ लिये। "उतारो नहीं उन्हें!" उसने आग्रह किया।

"इन्हें माँगने में मुझे बड़ी दुश्वारी हुई है! इन्हें न पहनोगे तो पहनोगे क्या?"

"मैं वा लू का काडर हूँ," दा-श्वी बड़बड़ाया। "ऐसे बेढंगे कपड़े कैसे पहन लूँ?"

लोगों ने क़हक़हे लगाये और उसे आश्वासन दिलाया कि वैसी परिस्थिति में वे बिल्कुल ठीक हैं। उसके भाई ने टोपी फिर उसके सिर पर लाकर मढ़ दी। दा-श्वी ने अपने पिता की ओर निगाह डाली जो थका हुआ, हाँप रहा था और उसकी भवों से पसीना टपक रहा था। उसने अनेच्छा से कपड़े तो पहन लिये पर पिस्तौल अलग करने को वह सहमत न हुआ।

"अरे पर शादी करते वक्त पिस्तौल की क्या जरूरत?" उन्होंने उसे छेड़ा।

"हमारे यहाँ तो हुक्म है कि न बन्दूक आदमी को छोड़े और न आदमी

बन्दूक को," दा-श्वी ने दृढ़ता से कहा। किसी भी तरह वह न माना।

बहस जारी थी कि कल्लू रसे आ पहुँचा उसने खुले दिल से बूढ़े आदमी को मुबारकबाद दी।

दा-श्वी ने तपाक के साथ उसका स्वागत किया। "कल्लू भैया," उसने रुआँ-सा होकर कहा, "देख रहे हो वे लोग क्या कर रहे हैं मेरा ?"

कल्लू हँसते-हँसते लोट-पोट हो गया। "क्यों क्या बुराई है इसमें, दूल्हा मियाँ !"

"लो भई, इन्हीं समधी का इन्तजार था आओ शुरू करें सब कुछ," दियेह ने प्रफुल्लित हो कहा।

कल्लू ने दियेह को एक ओर ले जाकर कहा, "मुझे अभी-अभी पता चला है कि पश्चिम में शत्रु बहुत आगे बढ़ा चला आ रहा है," वह फुसफुसाया। "मुझे छापेमारों को लेकर वहाँ पहुँच जाना है ताकि सुरक्षा के लिए मोर्चे तैयार कर सकूँ। आप लोग करिये अपना काम मैं जरा देर बाद में आऊँगा।"

दा-श्वी ने उनकी बातें सुन लीं और विचलित हो पूछा, "क्या मैं भी चल सकता हूँ ?"

कल्लू हँसने लगा। "नहीं, उसकी जरूरत नहीं है। त्सुर तुम्हारा काम सम्हाल लेगा। तुम तो अपने ब्याह में ध्यान लगाओ !"

त्सुर की ठिंगनी बूढ़ी मां जो अपने झड़े हुए बालों में एक लाल फूल लगाये थी दूल्हा के साथ दुल्हिन को लेने के लिए जाने वाली थी। अपने छोटे बँधे हुए पैरों से आहिस्ता-आहिस्ता सरक कर दा-श्वी के पास पहुँची।

"चलो, पालकी में चल कर बैठो" वह बोली। "वक्त हो गया।"

दा-श्वी के चेहरे की रंगत उड़ गई। "तो क्या मुझे पालकी में भी बैठना पड़ेगा ?"

"तो क्या तुम समझे थे पैदल चलना पड़ेगा ?" वृद्ध महिला हँस पड़ी।

"मेरे पास यहाँ एक घोड़ा है," कल्लू ने झट कह दिया। "तुम उस पर सवार हो कर जा सकते हो, बाद में मुझे लौटा देना। मैं फिलहाल किसी की साइकल माँग लूँगा।"

"यह ठीक है" एक पड़ौसी ने सहमति प्रकट की। "बा लू वाला घोड़े पर ज्यादा जँचेगा।"

और घोड़ा दूल्हा के लिए रख लिया गया। बूढ़ी महिला ने कुछ हिदायतें दा-श्वी को दीं और अकेली ही उस सुन्दर पालकी में जा बैठी और दा-श्वी उस क़द्दावर शेन घोड़े पर सवार हो गया। ढमाढम बाजे बजाने वाले बरात के आगे-आगे थे और बरात श्ये ल्यू गांव की ओर रवाना हुई जहाँ दुलहन दूल्हा की प्रतीक्षा कर रही थी।

× × × ×

अपने धीरे-धीरे चलते हुए घोड़े पर झूमते हुए दा-श्वी ने दिल में सोचा—है यह बड़ी मज़ेदार चीज़। कल मेरे मस्तिष्क में कहीं ख्याल तक न था और आज मैं ब्याह रचाने जा रहा हूँ। हवार......न जाने कैसी लड़की होगी वह? क्या मे ही की-सी अच्छी, सुशील और नेकबख्त है? अजी चलो भी, जब ओखली में सिर दिया तो मूसल का क्या डर? ख़ैर, मैं उसे पढ़ा-लिखा दूँगा और प्रतिकार-आंदोलन में शामिल कर लूँगा......।

वे बाँध को पार करके नीचे उतरे और झील के किनारे उत्तर की ओर बढ़े। बैंड वाले, फूलों से ढँकी हुई पालकी, क़द्दावर शेन घोड़े पर सवार दा-श्वी, पीछे कुछ मेहमान नीचे लटकते हुए वृक्षों के नीचे को बटिया में धीरे-धीरे चले जा रहे थे। वेद वृक्षों ने बाँध पर सायबान बना रखा था और अपनी ताज़ी, हरी परदार शाखों से वे पानी की सतह को चूम रही थीं। दूर कहीं झील में एक नैया पानी की लहरों में डगमगा रही थी जिसमें से किसी नवयुवक के गीत गाने की मंद ध्वनि सुनाई दे रही थी। लगता था गीत भँवरे के आने पर पुष्प की हृदय-धड़कन व पुष्प के फलने-फूलने के बारे में था।

कुछ ही देर में वे श्ये ल्यू गाँव में पहुँच गए। वसंत के इस सुहावने दिन से मोहित हो दा-श्वी ऊँघने लगा और अपनी शादी पर विचार करने लगा। बिना किसी कारण ही वह हँसने लगा।

ज्योंही वे बड़ी गली में दाखिल हुए गोलियाँ चलने की आवाज़ें गूँजीं। देहातियों में भगदड़ मच गई और बराती एकदम सकते में आ गये। गली के दूसरे सिरे पर पीली वर्दियाँ पहने जापानी सैनिक गोलियाँ बरसाते हुए चले आ रहे थे। दा-श्वी ने बिजली की-सी फुर्ती के साथ अपना घोड़ा घुमाया और ताबड़तोड़ भागा। घोड़ा दौड़ाता हुआ वह गाँव के सिरे पर आया और जापानियों के एक दूसरे ढोले में से गुजरता हुआ भागा, जापानी बड़े जोर-शोर से चीख़ रहे थे। हवा पर सवार घोड़े के पीछे उन्होंने अपनी बन्दूकों के दहाने फेर दिये लेकिन उनकी सारी गोलियाँ ऊँटपटाँग पड़ीं। अपने श्वेत घोड़े की पसीने में तर गर्दन पर झुके हुए दा-श्वी ने अपनी पिस्तौल निकाली और उनकी गोलियों का जवाब दिया। जापानी अपनी जान बचाने इधर-उधर भागे। और जब तक वे सम्हलें तब तक तो दा-श्वी कहीं दूर निकल गया। जापानियों ने उसका पीछा किया लेकिन पैदल कहाँ तक भागते वह तो घोड़े पर उनसे कहीं आगे निकल गया था। उनका शिकार धूल उड़ाता हुआ, रास्ता धुंधला बनाता हुआ बाँध के ऊपर पहुँच गया।

उस दिन जापानियों ने अपनी गीदड़ भभकी वाले आक्रमण से छापेमारों को पश्चिम तक पीछे हटा दिया था और सीधे श्ये ल्यू गाँव में घुस आये थे। वहाँ उन्होंने खुल कर खूँरेज़ी और लूट-मार मचाई। जब उन्हें पता चला कि कोई शादी होने वाली है तो उन्होंने दुलहन को जा पकड़ा। पहले तो जापानी पल्टन के लीडर ई नो ने उसके साथ बलात्कार किया और फिर अनेक अन्य जापानियों ने भी······ ···।

प्रभात के झुटपुटे में एक लुटी-पिटी, कीचड़ में लथ-पथ नवयुवती घिसटती हुई एक कुएँ की ओर बढ़ी। कुछ क्षण तक वह बिलख-बिलख कर रोई और फिर सिर के बल धड़ाम से कुएँ में कूद पड़ी। यह अभागी ह्वार थी जो मुकाबले के युद्ध की एक और भेंट बनी।

: ६ :

बाज़ के पंखों वाला बेड़ा—१६४०-४१

भावी विवाह के इस भयंकर व विनाशकारी परिणाम के संताप से दा-श्वी के पिता का दिल बैठ गया। महीनों से उसने पलंग न छोड़ा। कुछ जापानियों ने वह चमकीली पालकी जिसमें ख़ुर की मा सवार थी यह समझते हुए कि उसमें दुलहन बैठी होगी रोक ली। जब एक नाटी-सी, झुर्रियोंदार चेहरे वाली बुढ़िया उसमें से निकली तो जापानियों ने बगलें बजा-बजा कर ठहाके मारे और फिर अपनी बन्दूकों के कुन्दों के क्रूर प्रहारों से उसकी हड्डी-पसलियाँ तोड़ दीं।

उसी दिन जापानियों ने श्ये ल्यू गाँव पर कब्ज़ा कर लिया। उन्होंने गाँव के प्राचीन दुर्ग की मरम्मत की और वहाँ अपने सैनिक तथा कठपुतली सैनिकों को तैनात कर दिया। पास-पड़ौस के देहातों पर उन्होंने कई बार धावे बोले और दा-श्वी व ख़ुर की अगुआई में छापेमारों से उनकी बार-बार झड़पें हुईं। अन्त में एक बहुत ही निर्णयात्मक मुठभेड़ में छापेमारों ने जापानियों को बुरी तरह परास्त कर दिया। दुर्ग की सुरक्षा के लिए ग्वो की कमान में कुछ कठपुतली फौज छोड़ कर वे शहर की ओर भाग गये। और उसके बाद न तो ग्वो और उसके सैनिकों को साहस हुआ कि छापेमारों से लड़कर उन्हें आतंकित कर सकें और न ही छापेमार उन कठपुतलों से दुर्ग को छीन सके।

१० अक्तूबर, १६४० को कम्युनिस्ट पार्टी ने 'दुहरा दसवाँ राजनीतिक कार्यक्रम' लागू किया। कल्त्यू त्से ने कार्यक्रम की एक प्रति भूतपूर्व पटेल शेन को भिजवा दी जो अभी तक जापानियों द्वारा कब्ज़े में किये गये शहर में रह रहा था। साथ ही उसने एक पत्र भी नत्थी कर दिया जिसमें शेन को अपने गाँव शेंग्या वापस आने का निमन्त्रण दिया गया था। शेन शहर में रुपया पानी की तरह बहा रहा था और घर लौटने के लिए उद्विग्न था। कार्यक्रम पर शेन ने कई दिन तक ख़ूब सोच-विचार किया और उसने देखा कि कार्यक्रम में तमाम वर्गों यहाँ तक कि सामान्त वर्ग में भी एकजुटता के लिए एक स्पष्ट व्यवहारिक आधार

स्थापित किया है। जापानियों और गद्दारों के विरुद्ध एक संयुक्त मोर्चे की भी उसमें योजना थी। उसे महसूस हुआ कि उसने व्यर्थ ही घर छोड़ा और अब बेकार ही शहर में समय नष्ट कर रहा है। उसने यह भी सुना कि दूसरे जागीरदार जो अपने गाँवों को वापस चले गये थे उनके साथ किसी प्रकार का अत्याचार नहीं किया गया था। उसे अपनी मूर्खता का भान हुआ और उसने अपना बिस्तर-बोरिया बाँध कर शेंज्या की राह ली।

दा-श्वी पार्टी की नीति का अध्ययन कर रहा था। जब उसे पता चला कि शेन वापस आ गया है तो वह उससे मिलने गया और उसे उसने चेयरमेन माओ के बुनियादी सिद्धान्त समझाये।

उसी दिन मे गरम कपड़े लेने और बच्चे को अपने ससुर के पास छोड़ने के लिये घर जा रही थी। बच्चे का हाल ही में दूध छुटा था और अब उसे भी निरन्तर देखभाल दरकार न थी। केन्द्रीय गाँव से गुजरते हुए वह दा-श्वी के दफ्तर में रुकी। जब उसे मालूम हुआ कि वह शेन से मिलने गया है तो वह एक शान्त कमरे में बैठ गई और उसकी प्रतीक्षा करने लगी। कुछ ही देर में वह त्योरियाँ चढ़ाये दफ्तर को लौटा।

"क्यों क्या बात हुई?" मे ने मुस्कराते हुए पूछा। "क्या तुम्हारे काम में कुछ गड़बड़ हो गई?" दा-श्वी ने साँस ली और अपना झोला खूँटी में टाँग दिया पर बोला कुछ नहीं। "मैंने सुना तुम शेन के यहाँ गये थे," मे ने कहा। "क्या उसने तुम्हें नाराज़ कर दिया?"

"शेन ने वापस आकर देखा कि उसके परिवार के किसी भी सदस्य को कोई कष्ट नहीं पहुँचा है। वह बहुत खुश है और उसे हमसे कोई शिकायत नहीं है।"

"तो फिर तुम्हें कौन-सी चीज परेशान किये है?"

दाश्वी सन्तप्त हो शांत रहा।

उसकी पीड़ा की कल्पना मे न कर सकी। "हम बरसों से साथ-साथ काम करते आ रहे हैं। मैं कोई अजनबी तो हूँ नहीं—मुझे क्यों नहीं बताते," उसने आग्रह किया।

दा-श्वी ने उसकी ओर देखा। "शादी का झगड़ा है मे," उसके मुँह से निकला।

"तुम तो अभी जवान हो," मे ने विनम्रता से कहा। "क्या तुम्हें डर है अब तुम्हें अपना 'साथी' नहीं मिल सकेगा ? यह तो कोई चिन्ता की बात नहीं।"

"यही तो सब कुछ नहीं ! मैं तो उम्र भर भी कुँवारा रहूँ तो कोई ग़म नहीं······लेकिन पिता नहीं मानते—उन्हें और कुछ सूझता ही नहीं है।······ जब वह बेचारी लड़की मर गई तो वह बीमार पड़ गये और उनका दिमाग खराब हो गया। अब तो खैर उनकी हालत कुछ बेहतर है लेकिन जब कभी उनसे मैं मिलता हूँ वह रो पड़ते हैं और कहते हैं······और कहते हैं······" दा-श्वी का गला रुंध गया।

"कहते क्या हैं वह ? पूरी बात कहो यह क्या कि आधी बात कही और आधी निगल गये !"

"अरे कहते क्या हैं, कहते हैं ज़माना बड़ा जालिम है। पहले उन्होंने चाहा था तुम्हारे साथ मेरा रिश्ता करें और समझे थे कि बस हो गया। किसे खबर थी कि उनकी तमन्नाओं की किश्ती किनारे आकर डूब जायगी। फिर जब दूवार हमारी देहलीज तक आ गई तो वह मुसीबत आ खड़ी हुई।······वह बस वही कहे जाते हैं और वह दुर्घटना उसका कलेजा खाये जाती है। कभी-न कभी वह अचानक चीख पड़ते हैं······मुझे डर है अब वे ज्यादा नहीं जियेंगे।"

मे ने बच्चे की ओर से विमुख अपने बाल किरोदते हुए उसकी ओर घूरा। उसे दा-श्वी से कितनी सहानुभूति थी इसका वह स्वयं वर्णन न कर सकती थी। दा-श्वी के प्रति सहानुभूति और दिलजोई की भावना में वह ऐसी डूब गई कि दा-श्वी का प्रश्न भी न सुन सकी गो उसे ख्याल था कि उसने कोई प्रश्न पूछा है।

वह लज्जा से झुक गई और लड़खड़ाते स्वर में बोली, "क्या कहा तुमने ?······काउण्टी सरकार बहुत जल्दी चुनाव करने जा रही है······और मैं तुम्हें उसी की सूचना देने आई थी।······"

पिछली मुलाकात के बाद से वे क्या-क्या करते रहे इस पर उन्होंने

बातचीत की, फिर मे ने एक पुटलिया खोली और उसमें से कपड़े का एक जोड़ी जूता निकला।

"तुम्हें इतनी दौड़-धूप करनी पड़ती है—मुँह पर से तुम्हारे जूते ऐसे फट गये हैं जैसे शेर ने मुँह खोल लिया हो—यह तो बड़ी शर्म की बात है!" उसने सख्ती से कहा। "मुझे तुम्हारे पैर नाप का मालूम न था।······इन्हें जरा पहन कर देखो ठीक आते हैं या नहीं।"

दा-श्वी ने नया जूता पैर में डाला और प्रसन्न हो मे की ओर निहारा। "बड़े सुन्दर हैं ये······बिल्कुल ठीक आये! तुम भी ऐसी ही······"

मे की आँखें डबाडबा गईं और अन्तर में तीव्र वेदना हुई। "इस तरह की बातें न करो—यह कोई बड़ी बात नहीं," उसने व्यथित हृदय से कहा। "आइन्दा कभी कोई कपड़ा फट जाय और रफू वगैरह करवाना हो तो मुझे दे दिया करना, मैं उसे ठीक कर दूँगी।"

संध्या के धुंधलके में मे ने बच्चे को लेकर घर की राह ली।

× × × ×

'सीमान्त प्रदेश' में—जो लाखों की जनसंख्या के कई प्रान्तों का संयुक्त प्रदेश था सर्वत्र निर्वाचन हुए। शहरों पर जापानियों ने कब्जा कर लिया था, कुछ बड़े-बड़े तिजारती कस्बे भी उन्होंने हड़प कर लिये थे और दिन के समय यातायात के सारे साधनों पर वे ही नियन्त्रण करते थे। पर रात्रि के समय वे यदा-कदा ही निकलते थे। जापानियों की कठपुतली फौज के सैनिकों ने कई गाँवों पर अधिकार जमा रखा था। लेकिन बहुसंख्यक लोग जिन्हें निरन्तर जापानियों और उनकी कठपुतलियों के हमलों व अत्याचारों का शिकार होना पड़ता था धीरे-धीरे अधिकाधिक शक्तिशाली प्रतिकार आन्दोलन का निर्माण कर रहे थे और इस प्रकार कम्युनिस्टों के नेतृत्व में एक जनवादी सरकार की नींव रख रहे थे।

चुनावों में प्रत्येक व्यक्ति और वर्ग ने वोट दिया। यहाँ तक कि शेन जैसे जागीरदार को भी वोट देने की अनुमति दे दी गई थी। लोगों ने जिसे चाहा

उसे चुना। सरकार के सभी स्तरों पर गाँव से लेकर जिले तक, काउण्टी तक प्रशासन अफसर बल्कि सीमान्त प्रदेश के सर्वोच्च सदस्य अधिकारी भी तभी चुन लिये गये। केवल एक ही रोक थी और वह यह कि कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य शासन के सिर्फ एक तिहाई भाग के लिये ही चुनाव लड़ सकते थे।

कल्लू उसे काउण्टी सरकार का सदस्य निर्वाचित हुआ। गो जिला-स्त्री संस्था की अध्यक्ष चुनी गई। दा-श्वी जिला-देश-रक्षक सेना का, जो पहले छापेमारों का संगठन थी पर अब कुलवक्ती सेना की टुकड़ी की हैसियत से काम करने वाली थी, नेता चुन लिया गया। जिले के ही सैकड़ों किसान उसके सदस्य थे। सेना के सदस्य अपने खेतों पर काम करते रहे लेकिन बन्दूकें उनके पहलू में रहीं और आवाज देते ही चलने को तैयार रहे।

जिला-देश-रक्षक सेना के नेता की हैसियत से दा-श्वी की जिम्मेदारियों का क्षेत्र भी बढ़ गया और वह पहले से कहीं अधिक व्यस्त रहने लगा। १९४१ की वसन्त में उसे एक ऐसी समस्या पेश आई जिसका पूर्व उदाहरण छापेमारी के अपने तजुरबे में उसे कभी न हुआ था। जिले के अन्तर्गत और प्रदेशों के अतिरिक्त चयांग झील आती थी जिसके सामने के किनारे पर लेक हार्बर नामक किला स्थित था। जापानी सैनिक छोटी-छोटी वाष्प-नावें आस-पास आने-जाने के लिए इस्तेमाल करते थे। किसी भी मछुए को जो उन्हें दीख पड़ता वे पकड़ लेते और उसका असबाब छीन लेते, किसानों के माल ढोने वाली नावों का माल हथिया लेते और घरेलू बत्तकों के गिरोह छीन लिया करते थे—और उनकी लूट-खसूट इस हद तक बढ़ गई कि झील में होने वाला सारा व्यापार लगभग ठप पड़ गया।

दा-श्वी ने देश-रक्षक सेना के सदस्यों और देहातियों की एक बैठक बुलाई जिसमें वाष्प-नावों पर क्या कार्यवाही की जाय इस पर बहस की गई। उसके भाई रू ने जो अब सोलह साल का था और देश-रक्षक सेना का सदस्य था, जब यह सुना कि एक वाष्प-नाव पर आक्रमण की योजना बन रही है तो उत्तेजित हो दाँत पीसने लगा।

उसे अकस्मात एक बात सूझी। "भैया मुझे एक बड़ी अच्छी बात

सूझी है !" वह चीख उठा।

"यह बैठक है—भाई-वाई क्या लगाया है ?" दा-श्वी ने सख्ती से कहा। सब हँस दिये।

रू की बोलती बन्द हो गई पर वह अड़ा रहा। "अगर मैं आपको भाई नहीं कह सकता, तो कहता हूँ—अध्यक्ष महोदय, मैं एक सुझाव पेश करना चाहता हूँ।......"

"अच्छा, चलो तुम्हारा सुझाव भी सुनें पर देखो याद रखना यह एक गम्भीर बैठक है तुम हँसी-ठट्ठा न कर बैठो।"

"जी, मैं हँसी बिल्कुल नहीं कर रहा हूँ," रू ने क्रोधित हो कहा। "मेरा ख्याल है कि हमारे पास एक नली की बन्दूकें हैं—अगर हम जहाज के जापानियों पर पहली बारी में ही जोरदार हमला न कर सके तो दिक्कत में फँस जायेंगे। हमें चाहिए उनके बहुत ही निकट पहुँच जायें और शिकारी बन्दूकों से उन्हें फोड़ दें बस फिर ये सब साले ठीक हो जायेंगे !—यही है मेरा सुझाव !"

"ख्याल तो समझ में आने वाला है," देश-रक्षक के एक सदस्य ने सहमति प्रकट की।

"मैं समझता हूँ कि अगर हम बीस-पचीस बन्दूकें इस्तेमाल करें और उन सब को एक साथ छोड़ दें तो उनमें से हर एक का सफाया हो सकता है," जोव नामक एक मछुए ने कहा।

"मेरी तो समझ में आई नहीं यह बात," कुदाक ने संशक हो कहा। "अपनी पुरानी बन्दूकों से अक्सर गलत निशाना लग जाता है......"

दा-श्वी ने एक मिनट सोच कर कहा, "ख्याल तो बुरा नहीं। हम क्यों न इसे भी कर देखें पर साथ ही अपनी पिस्तौलें और रायफलें भी इस्तेमाल करें।"

आक्रमण-सम्बन्धी विवरण पर बहस हुई और बैठक बर्खास्त हो गई।

यह तय पाया कि उसी दिन तीसरे पहर को जब शत्रु की वाष्प-नाव लेकहार्बर को लौट रही हो हमला कर दिया जाय। लोग बीस छोटी नावों में, जो पहले आमतौर पर कलहंस और राजहंस का शिकार करने के काम आती थीं

बैठकर चल पड़े। दो-एक ही फेर में हल्की कश्तियाँ पानी की सतह को पार कर गईं, लोगों की पतवारें इस तेजी और रागात्मकता के साथ चल रही थीं मानो ऊपर उड़ते हुए बाज़ के फड़फड़ाते पंख। नावें शीघ्र ही क़द्दावर नरकटों के झुरमुटों से होकर किनारे के उथले भाग में पहुँच गईं। गुश्कबेंतों के वृक्ष निरर्थक न थे बल्कि चटाइयाँ और टोकरियाँ बनाने के लिए उगाये गये थे और झील के उथले भाग का अधिकांश भाग उनसे ढँका हुआ था। वृक्ष नहरों को काटते हुए सुन्दरता के साथ लगाये गये थे। उन लहरों में चलती हुई नावें झील से बिल्कुल न दिखाई देती थीं। प्रत्येक नाव में दो शिकारी बन्दूकें भरी हुई और तैयार रखी थी। इन पुरानी शिकारी बन्दूकों में न घोड़े थे न और कुछ, इसलिए उनमें काम-चलाऊ चीज़ें लगा ली थीं ताकि सुलगाने में आसानी हो। लोग निस्तब्ध हो वाष्प-नाव की राह देखने लगे।

दिन डूब रहा था जब वाष्प-नाव की सीटी की कर्कश ध्वनि ने पश्चिम से अपनी आमद का एलान किया।

"वह आ रही है," दा-श्वी ने कहा। "तैयार हो जाओ!"

ज्योंही वाष्प-नाव दृष्टिगोचर हुई लोगों ने अपनी बन्दूकें साधीं और नाव के पीछे उसी तेजी से उन्हें हिलाते रहे जितनी तेजी से नाव चल रही थी······सौ······पचास······बीस गज़ दूर······और फिर बिल्कुल सामने!

"चलाओ गोली!" दा-श्वी चीखा।

बिजली की-सी गर्जन के साथ चालीस बन्दूकें एक ताल से गरज उठीं। जिन्होंने धुँए का ऐसा काला बादल बनाया कि हर एक चीज अन्धकार में डूब गई। लेकिन इंजन के चलने की गड़गड़ाहट अब भी साफ सुनाई दे रही थी।

"यह भी अजीब बात है," रू बोला। "मेरी तो समझ में नहीं आ रहा है यह। अगर जापानी मरे नहीं हैं तो वे हमारी गोलियाँ क्यों नहीं लौटाते या फिर भाग क्यों नहीं जाते?"

"खामोश रहो," दा-श्वी फुसफुसाया। "देखो!"

ज्योंही धुएँ का पर्दा उठा उन्होंने एक छोटी-सी नाव को जो अब भी

उनके मुकाबिल थी चक्कर खाते हुए देखा लेकिन जापानियों में से एक का पता न चला।

"मैं जाकर देखता हूँ," मछुए जोव ने कहा।

कमर में एक छुरा दबाए वह झील में कूद पड़ा और पानी के अन्दर ही अन्दर तैरता हुआ जहाज की ओर बढ़ा। ठीक उसी वक्त उसके चक्कर रुक गए और वह लेकहार्बर की दिशा में बढ़ने लगा। दुर्बल मछुए ने जहाज के ऊपरी भाग को कसकर पकड़ लिया और आस-पास नजरें दौड़ाईं—सामने एक जापानी झुके हुए देश-रक्षक सेना की दिशा में ही निशाना लगा रहा था!

जोव ने अपने को पानी से निकाल कर ऊपर कर लिया और बिल्ली की-सी उछल की भाँति वह जहाज के डेक पर जा कूदा और जाकर, जापानी की पीठ में अपना छुरा भोंक दिया। एक और जोर से भोंका और जापानी वहीं ढेर हो गया।

जोव ने अब जो देखा तो कोई एक दर्जन जापानियों की लाशें दिखाई दीं जिनके गोश्त के बड़े-बड़े लोथड़े शिकारी बन्दूकों के एक साथ चलने से उधड़ कर गिर पड़े थे। वह एंजिन पर पहुँचा और उसे रोकने के तमाम पुर्जों को खींचने और धकेलने के बाद भी असफल रहने पर उसने देश-रक्षक सेना के लोगों को जो अपनी छोटी नावों को खे रहे थे पुकारा, "जल्दी करो! यह मुझसे रुकता ही नहीं। आओ इसे जाने न दें!"

देश-रक्षक सेना के आदमियों ने अपनी पूरी ताकत से नावें लेकर वाष्प-नाव का पीछा किया लेकिन उनका अन्तर धीरे-धीरे बढ़ता गया। जोव घबराहट में ब्रेकों को खींचता रहा पर सब बेकार। वह खड़ा हो गया और अपने दोनों हाथ इस प्रकार हवा में घुमाने लगा मानो उस हवा में वह कश्तियों को अपने करीब खींच ही तो लेगा।

"तेज, और तेज! मरदूदों—! दौड़ो जोर से!" वह गरजा।

ऊँटपटाँग हिचकोले खाती हुई वाष्प-नाव मुश्कबेतों के झुरमुट में जा कूदी। अभी धीरे-धीरे आगे बढ़ ही रही थी कि देश-रक्षक सेना के आदमी उसकी डेक पर जा चढ़े और उन्होंने इंजिन को फौरन रोक दिया।

सारी डेक खून से लथपथ थी और फिसल रही थी और अब तक कुछ मुर्दा जापानियों के खुले हुए घावों से खून बह रहा था। आदमियों ने बन्दूकें और बारूद एकत्र किया और लाशों को झील में पाट दिया। रू ने विस्मय से जहाज की ओर निहारा।

"यह जहाज भला हम घर ले चल सकेंगे ?" उसने पूछा।

जहाज में एक कैनवास-विशेष जो कुछ सख्त होता है एक लोहे की फ्रेम पर खिंचा हुआ था और उसकी लकड़ी की डेक थी। दा-श्वी को याद आया उसने कहीं सुना था कि ऐसे ही किसी जहाज के कहीं टुकड़े एकत्र किये गये थे। उसने इधर-उधर ढूँढा तो उसे एक पकड़ मिली। तमाम आदमी बोल्ट खोलने में लग गये। टुकड़े-टुकड़े निकाल कर उन्होंने नावों में भरना शुरू कर दिया। जब काम पूरा हो गया तो देश-रक्षक सैनिक घरों को लौटे।

"किनारे-किनारे चलो," दा-श्वी बोला, "और लोगों को देखने दो।"

उसीकी नाव सबसे आगे थी। उसके पीछे V के आकार में बाकी बेड़ा चला जा रहा था। विजयोल्लास से लोग अपनी जरा-जरा-सी नावें भी बड़ी तेजी से दौड़ा रहे थे और बीस नावें फुर्ती व चुस्ती के साथ पानी को चीरती हुई बढ़ी जा रही थीं। किनारे पर स्थित गाँवों के तमाम किसानों और मछुओं ने किनारे पर कतारें बना ली थीं। एक बूढ़े सज्जन ने जिनकी लम्बी-सी सफेद दाढ़ी थी (नई रोशनी का भद्र पुरुष जो काउण्टी सिनेट में हाल ही में चुना गया था) बेड़े की ओर इङ्गित किया।

"अरे वाह! देखते हो—कितना सुन्दर दृश्य है—जैसे बाज़ का पंख हो!"

सुनते ही किसानों के दिल बल्लियों उछलने लगे; उन्होंने ने मुस्करा कर सिर हिला दिये। बाज़ के पंखों वाला बेड़ा—बिल्कुल ठीक कहा!"

और उस दिन से जिला देश-रक्षक सेना का वही नाम पड़ गया।

जिला स्त्री-संस्था में मे के साथ एक काडर काम करती थी जिसका नाम निउर था। दोनों लड़कियों में बड़ी घनिष्ठ मैत्री हो गई। उन्होंने सुना कि बाज़ के पंखों वाला बेड़ा एक और जहाज पर हमला करने की तैयारी कर रहा है और उनकी भी तीव्र लालसा थी कि बेड़े के साथ जायें।

जब उन्होंने दा-श्वी के सामने यह सुझाव रखा तो वह हँस कर कहने लगा, "यह कोई धार्मिक मेले में जाना नहीं है—यह युद्ध है। तुम तो घर पर ही रहो।"

इस उत्तर से निरुत्साहित लड़कियों ने किसी-न-किसी तरह चोरी-छिपे जाने का निश्चय किया। "हम अपनी नाव में बैठकर उनके पीछे चल पड़ेंगे और उनसे कहेंगे कि हम तो अखरोट जमा कर रहे हैं।" मे ने सुझाया। "बस, फिर अपन सब कुछ देख लेंगे।"

उसी दिन तीसरे पहर को बाज़ के पंखों वाला बेड़ा आक्रमण के लिए रवाना हुआ। जब देश-रक्षक सैनिकों को पता चला कि जापानी इस बार दो जहाजों में आयेंगे और हर जहाज पर लगभग दस आदमी होंगे तो उन्होंने झील के उस भाग में जहाँ दोनों किनारों पर मुश्कबेतों के घने झुरमुट थे, एक कमींगाह तैयार की। आदमी दो गिरोहों में बँट गये। दा-श्वी जिसका सरदार था वह तो दक्षिणी तट के पास छिप गया और दूसरा जिसका अगुआ मछुआ जोव था वह पहले गिरोह के ठीक मुकाबिले वाले उत्तरी छोर पर जा छिपा। यह निश्चय हुआ कि दा-श्वी के गिरोह वाले आगे वाले जहाज पर गोलियाँ चलायेंगे; और जोव के गिरोह वाले दूसरे पर हमला करेंगे। सभी आदमी उम्दा-सी शिकारी बन्दूकों से लैस थे और उन्होंने अपनी बन्दूकों को भली भाँति जाँच-परख कर भर लिया। बन्दूकें कई फीट लम्बी थीं और गोली चलाते समय उन्हें सहारा देना पड़ता था पर साथ ही उनमें बारूद काफी भरी जा सकती थी।

ग्रीष्म की बड़ी शीतल, मंद, सुगंधित वायु मृदुल मुश्कबेतों में सरसरा रही थी और उसकी ताज़ी, हरी सुगंध से वायुमंडल महक रहा था। पूर्व की ओर सूर्य की गर्मी का आवाहन करते हुए पुष्पित पंकजों का समूह लहरा-लहरा कर नृत्य कर रहा था। एक छोटी नाव जिसमें दो लड़कियाँ सवार थीं उत्तरी तट की ओर से कमल के समूह की ओर धीरे-धीरे चली आ रही थी—लड़कियाँ मे और निउर जैसी लग रही थीं।

"वही हैं मूर्ख लड़कियाँ," दा-श्वी ने क्रोधातुर हो कहा। "कह दिया था मत आना, अच्छा हुआ हमारी नज़र पड़ गई उन पर।" उसने अपनी नाव

उनके पीछे दौड़ाई लेकिन वे कमलों में बड़ी गहरी छिप गई थीं और बिल्कुल स्थिर हो गई थीं, दाश्वी उन्हें न ढूँढ सका।

"ये तुम औरतों ने क्या लगा रखा है कि यहाँ आकर सारा मामला बिगाड़ दिया? अगर तुम फौरन यहाँ से न चली गईं तो हम गोली चला देंगे।" उसने गरज कर धमकी दी।

निउर ने अपना सिर आगे को निकाला। "हम तो अखरोट तोड़ रहे हैं। तुम्हें हमसे क्या बाधा पहुँच रही है?" उसने कुछ निडर हो कहा।

दा-श्वी ने अपनी उंगली उस पर उठाते हुए कहा, "अरी शरीर ढीठ छोकरी, यह क्या मजाक बना रखा है? अगर तुम न गईं तो वापस जाकर हम तुम्हारी खूब खबर लेंगे।"

"अच्छा-अच्छा जाते हैं बाबा, अभी जाते है।" निउर ने झटपट कहा और चल दी।

कुछ आदमी नावें खेकर माजरा देखने चले।

"क्या चाहते हो?" दा-श्वी ने उन्हें डाँटा। "लौटो और जाकर नरकटों में छिप जाओ।"

रू शरारत से मुस्करा दिया। "कमाण्डर से कहने आये थे कि अभी दिन बहुत बाकी है और जहाज आने में बड़ी देर है। अगर हम जरा तैरने चले जायें तो कैसा रहे?'

"यहाँ लड़ने आये हो या खेलने?" दा-श्वी ने त्योरियाँ चढ़ाते हुए कहा।

"जापानियों का जहाज तो अभी कोई एक घंटा हुआ गुजर भी गया" मछुए जोव ने मुस्कराते हुए कहा। "अब तो आने में उन्हें बड़ी देर लगेगी। मौसम इतना गरम है, तैर लेने दो ना बेचारों को।"

दा-श्वी ने आगे कुछ न कहा। उसके भाई ने उसकी चुप्पी को रजामंदी समझ कर झील में जोर का गोता लगाया। दूसरों ने भी कपड़े उतारे और कूद पड़े। हालाँकि दा-श्वी का भी दिल तो ललचाया पर उसने ऐसा नहीं किया। इसकी बजाय उसने कमल का एक बड़ा-सा पत्ता तोड़ा और उससे हवा

करने लगा। उसकी आँखें सामने पश्चिम की ओर जापानी जहाजों की तरफ लगी हुई थीं।

रू ने तैरते हुए अपने चेहरे की पानी की बूंदें पोंछी। "आओ होड़ लगायें देखें कौन सबसे तेज तैरता है।" उसने चुनौती दी। और पानी पर बाहें मारता हुआ वह चल पड़ा।

अनेकों उसके पीछे लग पड़े—कुछ मुँह निकाले हुए कुछ एक ओर को झुके हुए। मछुआ जोव जो पतला-दुबला आदमी था सबके बाद में चला लेकिन लम्बे-लम्बे हाथ मार कर और मेंढक की-सी फुर्ती से तैर कर वह दूसरे सबसे आगे निकल गया और रू से आगे बढ़ने लगा, उधर दर्शक खड़े खुशियों में चीख रहे थे और उन्हें आगे बढ़ने के लिए उकसा रहे थे। दा-श्वी की अकस्मात् कमल के समूहों में से जो नजर पड़ी तो उसे दो सिर बाहर निकले हुए दिखाई दिये—मे और निउर जो उस दौड़ को देख रही थीं।

"अरे तुम अभी तक गईं नहीं।" वह गरजा। "अभी जरा देर में जापानी यहाँ आ जायेंगे और स्थिति खतरनाक हो जायगी। चलो, जाओ वापस।"

मे ने हँसकर उसकी बात मानी और दोनों लड़कियाँ चल दीं।

दा-श्वी को महसूस हुआ कि वक्त कम रह गया है। उसने तमाम आदमियों को बुला लिया। नावें फिर मुश्कवेंतों के झुरमुट में लुप्त हो गईं और पानी की सतह फिर से शांत व स्थिर हो गई। हरे सिर वाली बत्तकें बड़ी शांति के साथ तैर रही थीं, उन्होंने अपनी गर्दनें आगे को निकाल रखी थीं और पर फड़फड़ाती हुई चली जा रही थीं। वे एक छोटे-से घेरे में घूमीं और छिपे हुए आदमियों की ओर झिड़कते हुए उन्होंने 'क्वा क्वा क्वा' किया और पश्चिम की ओर उड़ गईं। उनके हरे गुच्छेदार पंख धूप में चमकाये हुए सोने की नाईं चमक रहे थे।

× × × ×

समय का एक-एक क्षण पहाड़ लग रहा था। जहाजों का कहीं नाम-निशान नजर न आता था। मौसम तबदील हो गया—गहरे बादल उमड़-घुमड़ कर आये और आधे आकाश पर छा गये। कराहती हुई वायु के दबाव से मुश्कवेतों के वृक्ष झुक गये थे। आदमियों को चिंता हो रही थी कि बारिश उनकी बारूद भिगो देगी और वे अपनी बन्दूकें न चला सकेंगे। कुछ ने सोचा कि जहाज नहीं आ रहे हैं और वापस जाना चाहते थे लेकिन दा-श्वी ने उनके वहीं ठहर कर प्रतीक्षा करने पर जोर दिया।

आखिरकार करीब आते हुए जहाज के एंजिन की धड़-धड़ाहट सुनाई दी।

"जल्दी, तैयार हो जाओ।" दा-श्वी ने पुकार कर कहा। ठीक सामने वाले लोगों को उसने सिग्नल दिया।

देश-रक्षक सेना के आदमियों ने बन्दूकों के बारूद की डोरी जलाने के लिए माचिसें सुलगाईं लेकिन वायु के तीव्र झोंकों ने इन्हें बुझा दिया। घबराहट में इधर-उधर दौड़ कर लोगों ने अपने शरीरों की आड़ करके माचिसें सुलगाईं और बन्दूकों की डोरियाँ जलाईं। जहाजों की आवाजें और बुलन्द होने लगीं और शीघ्र ही वे क्षितिज पर दिखाई दे गये। वे सतत गति से देश-रक्षक सेना वालों की ओर बढ़े चले आ रहे थे।

हवा तेजतर हो गई और पानी की बड़ी-बड़ी बूँदें गिरने लगीं। आदमियों ने खुद कपड़े उतार कर बारूद के मुँह ढँके। चीते के-से पीले रंग के दो जहाज साफ दिखाई दे रहे थे। जापानी हरे मस्तूलों के नीचे पानी से बचने के लिए छिप रहे थे और साफ दीख रहे थे। पहले जहाज में एक भरी-पूरी नाव लदी हुई थी। जहाज के ऊँचे मस्तूल पर जहाँ दिशा देखने की जगह बनी होती है एक जापनी दूरबीन द्वारा देख रहा था।

अब आगे वाला जहाज करीब-करीब दा-श्वी के आदमियों के बिल्कुल सामने आ गया था और दूसरा जोव के गिरोह के करीब आ रहा था। दिशा-सूचक स्थान पर खड़ा जापानी जो दूर देख-देख कर आँखें थका रहा था पास के किनारे के नीचे जो नजर डाली तो दा-श्वी की बंदूक का कुन्दा सामने दिखाई दिया। आतंकित हो वह बन्दर की भाँति मस्तूल से चिपट गया, लेकिन पूर्व इसके

कि वह चिल्लाये दा-श्वी ने उसके सीने में गोली मार दी। जापानी सिपाही सिर के बल पीछे को उलटा और सिर नीचे पाँव ऊपर धड़ाम से डेक पर आ गिरा।

दोनों किनारों से तोपखाने की कान फाड़ देने वाली गरज के साथ बंदूकें दनदनाईं। पानी पर सब तरफ ऐसे घने काले धुएँ का बादल छा गया कि कोई चीज भी न दीख पड़ी; लेकिन दूसरे जहाज की दक्षिणी किनारे से टकराने और टूटने की आवाज सुनाई दी, उसका एंजिन बन्द हो चुका था। पहला जहाज अब भी चल रहा था और उसमें से मशीनगन की गोलियाँ दक्षिणी किनारे के निकट मुश्कबेंतों की ओर घूर रही थीं जहाँ दा-श्वी और उसका गिरोह छिपा हुआ था। कुछ छोटी नावों पर प्रहार हुआ और वे डूबने लगीं। अपनी लम्बी शिकारी बन्दूकें छोड़ कर लोग उथले पानी में कूद पड़े। अपनी बन्दूकें सिर के ऊपर निकाले वे और भी आगे मुश्कबेंतों के झुरमुट में चल दिये। जोव और उसके साथी जो दूर उत्तरी तट पर थे नावें खेते हुए नहरों की भूल-भुल्लैयों में चले गये और अदृश्य हो गये।

वायु के झोंकों ने धुएँ का पर्दा चाक कर दिया और गड़गड़ाते हुए बादलों को छाँटकर फिर निर्मल आकाश सामने कर दिया। अब तक गोलियों की आग उगलते हुए बचा हुआ जापानी जहाज उन नावों की ओर बढ़ा जिन्हें दा-श्वी के आदमी छोड़ गये थे। जापानियों ने लम्बी शिकारी बंदूक पहले कभी न देखी थी। उत्तेजित हो बड़बड़ाते हुए उन्होंने उसे अपने जहाज पर रख लिया।

उत्तरी छोर के निचले भाग में कमलों के झुण्ड में छिपी हुई दोनों लड़कियाँ मे और निउर कुछ देख ही न पाईं कि क्या हो रहा है। बड़ी देर तक साथ रहने के बाद निउर अधीर हो उठी

"जापानी सब मर-मरा गये होंगे," वह बोली। "आओ बाहर निकल कर जरा देखें।"

"नहीं, नहीं यह ठीक नहीं," मे ने उसे सावधान किया। "वह मशीनगन नहीं देखी तुमने अभी। हमको अभी हरेक चीज का पता भी तो नहीं है कि

कौन-सी क्या चीज है।"

"जरा फासले से तो देख सकते हैं। जब तक देखेंगे नहीं पता कैसे चलेगा क्या हो रहा है। यहीं हमेशा के लिये तो रह नहीं सकते हम।"

ज्योंही लड़कियाँ खुली झील की ओर निकलीं कि जापानियों ने उन्हें ताड़ लिया और उन्हीं की ओर जहाज का मुँह फेर दिया। लड़कियाँ भय से थर्रा उठीं उन्होंने झटपट कमलों के झुण्ड की ओर नाव मोड़ी और अपनी पूरी ताकत के साथ मुश्कबेंत खींचने लगीं। अब जहाज करीब-करीब उनके सिरों पर आ चुका था। अचानक बंदूकें दनदनाईं और जापानी मशीनगन-चालक अपनी जगह लोट-पोट हो गया। सारे डेक पर जापानी धड़ाम से गिरे और वहीं तमाम हो गये। दो घायल सिपाही पागलों की भाँति पानी में कूदे और डूब गये।

जापानी जहाज ने जब दक्षिणी तट पर उनकी नावों पर गोलियाँ चलाई थीं, उसके बाद दा-श्वी और उसके साथियों ने नरकटों को छोड़ कर झील के कमलों वाले भाग के इर्द-गिर्द घेरा डाल दिया था। कमल के बड़े और चौड़े पत्तों से अपने सिर ढँकते हुए और कमल के फूलों की आड़ में पूरी तरह छिपे हुए लोग झील के कहीं आगे खिसक गये थे।

जापानी जहाज ने लड़कियों का ठीक उस जगह तक पीछा किया था जहाँ से पाँच गज के फासले पर लोग छिपे हुए थे और जब छापेमारों ने गोलियाँ चलाई थीं। साथ ही जोव का गिरोह नरकटों से निकल कर जापानी जहाज की दीवार तक निकल आया था और वहाँ से उन्होंने भी बन्दूकें चलाई थीं। इस, आगने-सामने की गोलियों का असर बड़ा विनाशकारी हुआ और जहाज पर एक जापानी भी जिंदा न बचा।

हवा बदली और साथ में बारिश को ले आई जिसने अपने पूरे क्रोध व प्रकोप के साथ मूसलाधार पानी गिराया। घड़घड़ाती हुई बिजलियों और तूफान ने नरकटों के सिरे और पानी की सतह को बराबर कर दिया था। चपटे कमल के पत्तों की सतह पर बड़े-बड़े मोती के-से पानी के बूँद गिरते रहे। झील में जोर-जोर की लहरें उठ रही थीं और झर्ने की मानिंद बरसते हुए मूसलाधार पानी के

सम्मुख वह एक कुहरे से भरा हुआ टुकड़ा दीख रहा था। बारिश में तर-बतर लड़कियों ने प्रमुदित हो एक जापानी जहाज को नष्ट करने में देश-रक्षक सैनिकों का साथ दिया और युद्ध-चिन्ह एकत्र किये।

रात हो चुकी थी। वे छोटी-छोटी नावें जिनके पीछे-पीछे दूसरा जापानी जहाज था, तेज हवा के विरुद्ध दिशा में चल कर घर की ओर बढ़ रही थीं। उस घने अंधेरे में कुछ न दीख पड़ता था; यहाँ तक कि डाँडों की ध्वनि और लोगों की चीखें भी घररर करती हुई तेज हवा और पानी के पड़ने की आवाज में दब जाती थीं। बिजली की जोरदार चमक और कड़क ने उनके बदन में अचानक कँपकँपी पैदा करदी और कम होता हुआ अंधकार उन्हें और भी गहरा प्रतीत होने लगा।

"हमारे करीब ही रहो मे," दा-श्वी चिल्लाया। यदि तुम हम से छिटक गई तो कभी न लौट पाओगी।"

"हम तुम्हारे बिल्कुल पीछे हैं," मे चीखी। "हम तुम्हें खोयेंगे नहीं।" उसके वाक्य का उत्तरार्ध हवा ने निगल लिया और बिजली की गरज ने आकाश हिला दिया......।

: ७ :

सोने की जंजीर—ग्रीष्म, १९४१

तूफान की सख्त सर्दी में देर तक रहने के कारण मे को जुकाम होगया और वह बिस्तर पर पड़ी रही। दूसरे दिन शाम को देश-रक्षक सेना के आदमी अपने साथ केकों के दो डिब्बे लेकर जिन्हें उन्होंने जापानियों के जहाजों में पाया था, मे से मिलने आये। मे घर पर अकेली थी क्योंकि निउर देहातों में काम करने के लिए जा चुकी थी।

ज्योंही दा-श्वी ने वह हास्यास्पद उपहार मे को दिया वह हँसने लगा।" स्त्री-संस्था की अध्यक्ष महोदय, हम आपको ये उपहार इसलिये दे रहे हैं ताकि आपकी हालत कुछ बेहतर हो जाय और आपको घटिया और हानिकारक रोटियाँ न खानी पड़ें।" उसने चमकीले लाल रंग के डिब्बे मे के तकिये के पास रख दिये।

"अरे बापरे!" मे हँस दी। "ये तो आप लोगों का मालेगनीमत है। मैं भला ऐसी चीजें खाने का साहस कैसे कर सकती हूँ!"

"ये कोई बात करने का तरीका नहीं है," मछुए जोव ने डँपटते हुए कहा। "आप दोनों लड़कियों ने हमारी बड़ी सहायताकी; हम सबकी इच्छा है कि आप इसे स्वीकार करें।"

"अगर तुम दुश्मनों को अपने पीछे न दौड़ातीं," कुदाक मा ने जोव का साथ देते हुए कहा, "तो हम जीत ही न पाते और हमारी बंदूकें खो बैठते सो अलग!"

मे ने एक डिब्बा तो निउर के लिए अलग रख दिया और दूसरा खोलकर उसके केक देश-रक्षक सैनिकों को देने लगी

रू ने अपने होंठ चबाये और अतिरंजनात्मक प्रफुल्लता से मुँह सिकोड़ते हुए बोला, "वाह, ऐसे बुरे नहीं हैं! ऐसे मीठे हैं—कि मेरा सिर चकराने लगता है!"

प्रत्येक व्यक्ति हँस पड़ा। बड़ी देर तक हँसी-खुशी वे बातें करते रहे और अंत में जब अपने क्वार्टरों को लौटने का समय होगया तो वहाँ से उठकर गये।

"तुम लोग चलो, "दा-श्वी ने कहा। "ज़रा मे के लिए दवा गरम कर दूँ और मैं भी आया।"

उनके जाने के बाद उसने कटोरे भर दवा उबाली। "गरम-गरम पी जाओ," मे को दवा देते हुए उसने कहा। "पीते ही पसीना आ जायगा और तुम्हारा जुकाम खतम होजायगा।"

ऐन उसी वक्त जिनलुंग आ धमका। दा-श्वी स्तंभित रह गया। उसने घबराहट में कटोरा काँग की पट्टी पर रखा और कृत्रिम उत्सुकता के साथ उसका

अभिवादन किया लेकिन जिनलुंग ने तो उसे कहीं निरुत्साहित स्वर में उत्तर दिया।

"तुम काफी थक गई होगी," दा-श्वी ने असमंजस में कहा। "मैं चलता हूँ।"

"दवा पिलाने के लिये धन्यावाद," मे बोली। "आप को इतना कष्ट हुआ इसके लिए क्षमा करना।"

"हम सब साथी हैं। कष्ट की कोई बात नहीं," दा-श्वी ने उत्तर दिया और उनकी इजाजत ली।

जिनलुंग काँग के दूसरे सिरे पर लेट गया और एक लिहाफ उसने अपने ऊपर ढँक लिया। उसने सिर तह किये हुए बिस्तर पर रख लिया जिसे वह अपने साथ घर लाया था। ज्योंही उसने सिगरेट सुलगाया मे दवा पीने के लिए उठी।

"तुम अपना बिस्तर क्यों वापस ले आये?" उसने पूछा।

"वापस क्यों न लाता? मैं बीमार जो हूँ।" उसने झिड़कते हुए उत्तर दिया।

मे को वह ज़रा भर भी बीमार न लगा पर उसने योंही पूछ लिया, "तुमने आने की इजाज़त ली थी?"

जिनलुंग ने एक लम्बा कश खींचा। "मैंने उनसे कह दिया था।" उसने अक्खड़ता से कहा।

"कितने दिन रहोगे तुम यहाँ?"

"कहा नहीं जा सकता," जिनलुंग ने लापरवाही से उत्तर दिया। "देखते हैं अच्छा होने के बाद मेरा क्या विचार होता है। "मेंढक भी हर कूद के बाद आराम करता है," मुझे कम-से-कम तीन-चार दिन तक तो आराम करना ही है।"

अच्छा तो यह बात है, यह नाकारा निखट्टू फिर वही टण्टे करने लगा। मे ने सोचा और क्रोधित हो कटोरा खिड़की में रख कर सिर लिहाफ में छिपाया और लेट गई।

दूसरे दिन श्वाँग काउण्टी सरकार से आया और उसने मे से गुप्त रूप से कहा कि जिनलुंग ने देश-रक्षक सेना में बहुत बुरा बर्ताव किया है। जब कभी मर्जी हुई काम किया और जहाँ कोई बात उसे न जँची वह शिकायतें और चेमेगुइयाँ करने लगा। दिल में यह समाये हुए कि पृथ्वी उसके ही इर्द-गिर्द घूमती है जिनलुंग अपनी उस सादा जिंदगी से न निबाह सका।

एक रात उसे खाना पसंद न आया और हर किसी के सामने उसने रसोइये को खूब कोसा और गालियाँ सुनाईं। फिर उसी गुस्से और गरमी में उस ने कल्लू त्से से कहा मैं जा रहा हूँ और बिस्तर लपेट कर वहाँ से चल दिया।

"कल्लू ने कहा है कि तुम उसे समझा-बुझा कर संगठन में रोकने की चेष्टा करो," श्वाँग ने कहा। "अगर हम उसे तैयार कर लें तो जिनलुंग है बड़ा बढ़िया सैनिक। अगर वह काउण्टी नहीं लौटना चाहता तो उसे यहीं रखो कुछ दिन और कोशिश करके उसे यहीं ज़िला-देश-रक्षक सेना में रखवा दो।"

मे काफी देर तक सोचती रही, क्रोध से उसका चेहरा लाल-पीला हो गया। "ओह तो, यह बात है।" उसने आह भरी। "क्या करूँ मैं उसका? मेरी तो समझ में कुछ नहीं आता।"

प्रोत्साहक मुस्कान के साथ श्वाँग ने उसका कंधा थपथपाया। "अगर अच्छा पुल्टिस बंधे तो पस सब निकल जायगा।"

मे ने सिर हिला दिया। "लेकिन कुत्ते की चमड़ी पर भी कहीं पुल्टिस रुका है? खैर मैं उससे बात करके देखूँगी।"

मे कई दिन तक जिनलुंग से बहस करती रही। कभी नरमी से कहती, कभी सख्ती से, कभी जरा धमका कर, कभी ललचा- फुसला कर और आखिरकार जिनलुंग ने घुटने टेक दिये।

"अच्छा मैं यहीं जिले में काम करूँगा—पर यह सब तुम्हारे कहने से!"

जिला देश-रशक सेना में वह लेफ्टिनेण्ट नियुक्त हो गया।

× × × ×

जिनलुंग को अपने सैनिक-अफसर दा-श्वी से घोर ग्लानि थी। हुक्म मानने से उसे सख्त नफरत थी और वह सारा श्रेय खुद ही लेना चाहता था। एक दिन दा-श्वी ने उससे कहा कि जिला देश-रक्षक सेना को आदेश दिया गया है कि वह श्ये ल्यू गाँव में जाकर जिले पर कब्ज़ा करके उसे नष्ट करदें। साथ ही आक्रमण की योजना पर बहस करने के लिए एक बैठक बुलाने की भी उसने उसे सूचना दी।

"बहस-वहस की कोई जरूरत नहीं," जिनलुंग ने हेंकड़ी जताते हुए कहा। "मैं और मेरा गिरोह इसे कर लेंगे और सब ठीक हो जायगा।"

दा-श्वी को शक था फिर भी उसने नम्रता से कहा, "फिर भी अगर हम सब ने मिल कर यह काम किया तो ज्यादा अच्छी तरह इसे कर सकेंगे······"

"अच्छा अगर तुम्हारा यही ख्याल है तो फिर तुम ही कर लो, मैं इससे अलग रहूँगा!" जिनलुंग ने रुक्षता से प्रत्युत्तर दिया। "एक आदमी की ही तो कमी रहेगी, और वह कोई खास बात है नहीं!"

जिनलुंग के सहयोग से धृष्टतापूर्ण इन्कार और आपत्ति से दा-श्वी को ताव आ रहा था पर उसने क्रोध को दबा रखा। भृकुटी चढ़ाये हुए वह दूसरे काडरों को बैठक के लिए बुलाने गया।

जिनलुंग काँग पर पड़ा हुआ अपनी प्रखर बुद्धि पर जोर दे रहा था। शाम के वक्त वह उठा और अपनी बेहतरीन साटिन की जाकेट और पाजामा पहना। एक बढ़िया-सा हैट कुछ बाँकपन से सिर पर रखा, कमर में पिस्तौल घुरेसा, फिर कोई दस आदमियों की अपनी टोली को बुलाया। वे टहलते-टहलते झील पर पहुँचे, वहाँ एक किश्ती पर सवार हुए और चोरी-छिपे तट के सहारे-सहारे मुश्कबेंतों के जंगल में श्ये ल्यू के पास पहुँच गये। यहाँ पहुँच कर जिनलुंग नाव से उतरा। उसने अपने आदमियों को छिपकर प्रतीक्षा करने का आदेश दिया और स्वयं बड़े साहस के साथ शहर के बेहतरीन रेस्तोराँ में पहुँचा। वहाँ उसने एक छोटा-सा प्रायवेट कमरा लिया और अच्छे खाने का आर्डर दिया।

"पहले तो यह करो कि खाना अच्छी तरह पकाओ," उसने वेटर से हेंकड़ी जताते हुए कहा। "लेकिन मुझे परोसने के पहले तुम जरा किले तक चले

जाओ और वहाँ से मेरे परम मित्र लियेव को बुला लाओ। उनसे कहना कि एक सज्जन यहाँ बैठे हुए उनका खाने पर इन्तजार कर रहे हैं। देखो, उन्हें लेकर ही आना समझे, फिर मैं तुम्हें अच्छी बख्शीश दूंगा।"

वेटर की बाछें खिल गईं। उसने 'सज्जन' को आश्वासन दिया कि वह काम अवश्य करेगा और झुककर सलाम करते हुए बाहर हो गया।

कुछ ही देर में वह लियेव को साथ लेकर लौटा। लियेव जिनलुंग को देखकर चकित हुआ पर साथ ही प्रमुदित भी।

"मैंने सोचा तुम्हारे साथ कुछ पियें-पिलायें," जिनलुंग ने मैत्रीपूर्ण मुस्कान के साथ कहा। "हम जैसे पुराने दोस्तों के लिए यह ठीक नहीं कि हम एक-दूसरे की सूरत को इतने अर्से तक तरस जाँय……"

वेटर ने खाना और शराब पेश की और चला गया। उसके जाते ही लियेव जिनलुंग की ओर झुक गया ताकि राज़ की बातें कर सके। "क्या मैंने जो सुना है कि तुम उनके साथ काम कर रहे हो सही है?" उसने अपनी दो उंगलियाँ उठाकर 'आठ' का चिन्ह बनाया जिससे उसकी मुराद थी 'आठवें मार्ग की सेना' या 'बा लू'।

"बकवास!" जिनलुंग ने हँस कर कहा। "मैं तो छोटा-मोटा व्यापार करता हूँ। तुम्हारा कैसा चल रहा है यहाँ?"

"अरे, मत पूछो यार!" लियेव ने श्वाँस छोड़कर कहा। "ग्वो को तो तुम जानते ही हो—मरदूद के हाथ काले हैं और दिल पत्थर का। कहीं भी हम लूट-मार करें सारा माल काफूर हो जाता है! निगल जाता है सुसरा! इसकी तो अभी क्या कहूँ—! मुझे तो उसकी कहीं छाया भी नहीं दीखती! अभी उसी दिन उसने कुछ रक़म बनाई थी। एक व्यापारी को झपट कर पकड़ा और उस पर यह इल्जाम लगाया कि वह बा लू को कुछ चीज़ें चोरी-छिपे भिजवाता है। और उसे डरा-धमकाकर साटिन के एक दर्जन थान मार लिये। अब बताओ कहाँ चले गये वे? वह समझता है हमें पता ही नहीं!"

"उस हरामी ने तो किसी को फायदा पहुँचाया ही नहीं आज तक," जिनलुंग ने रूखेपन से कहा।

"एक दिन मैंने एक साइकिल वाले को पकड़ा, उसके लायसेंस की तारीख निकल गई थी......ग्वो ने कहीं मुझे देख लिया और बोला लाओ मैं चलाकर देखता हूँ इसे। इसकी तो साले की—! वह उसे ले गया और थूथनी लटकाये चला आया। साइकिल तो ऐसी धाँसू थी कि क्या बताऊँ तुम्हें—बिल्कुल नई थी!" लियेब ने उदासी से कहा। जितना ज्यादा वह बोलता जाता उतना ही अधिक क्रोध उसे आता जाता। शराब में धुत्त वह लड़खड़ाकर अपने कप पर गिर पड़ा।

जिनलुंग के चेहरे का रंग बदल गया। उसने दुष्टता से अपनी एक भृकुटी चढ़ा ली। "मैं तुम्हारा ऐसा इन्तजाम कर सकता हूँ कि उस कुत्ते से भी तुम्हारी निभ जाय।......बस तुम उससे उगलवालो सब कुछ," वह फुसफुसाया। "मैं तुम्हें वह साइकिल उससे दिलवा दूँगा,—एँ तो क्या कहते हो फिर!"

"भई वाह, बहुत उम्दा ख्याल है यह," लियेब ने प्रफुल्लित होकर कहा। "तो तुम्हारी योजना क्या है?"

"सच-सच कह दूँ तुमसे," जिनलुंग बुदबुदाया, "मैं वहाँ एक कप्तान हूँ। अगर ग्वो पट जाय तो हमारी टोली उनके खिलाफ बहुत शक्तिशाली बन सकती है। हम लोग बड़े-बड़े काम कर सकते हैं। तुम और मैं तो भाई-भाई हैं ही—हमारा साझा और हिस्सा बराबर का ही होगा। मेरा स्वभाव तो तुम जानते हो, मैं तुमसे कोई दुर्व्यवहार तो करने से रहा!"

जिनलुंग की बातें सुनकर लियेब का दिल बल्लियों उछलने लगा, आश्चर्य से उसकी आँखें खुली रह गईं। बड़े शद्दोमद के साथ वह चीखा, "—उसकी तो मा का! यह बात मुझे जँच गई भाई! मैं भी जरा कुछ 'कम्युनिस्टों' की-सी करूँगा! पर इसकी शुरूवात कैसे करें?"

उसकी बातों पर जिनलुंग ने अपनी चॉपस्टिकों से इशारा करके चुप कर दिया क्योंकि ठीक उसी वक्त वेटर नूडल* के दो प्याले लेकर आया। जब वह चला गया तो उन दोनों ने मिलकर एक विवरणपूर्ण योजना तैयार की।

---

*एक चीनी पकवान।

दोनों एक ही स्वभाव और सिद्धान्त के थे इसलिए हर बात में उनका एक-दूसरे से इत्तेफाक हुआ और योजना बन गई। जब सब कुछ पूरा हो गया तो वे रेस्तोराँ से बाहर आये और एक दूसरे से विदा हुए।

लियेव अपनें चौमंजिले दुर्ग को लौट गया। आधीरात को वह छत पर पहरा देने के लिए गया। हर समय दो पहरेदार पहरे पर खड़े होते थे। उस दिन उसकी और सियोव की बारी थी, उसने चुटकियों में उसे पटा लिया और साथ देने को राज़ी कर लिया। जब चन्द्रमा लगभग अस्त हो चुका था तो लियेव ने तीन तीलियाँ माचिस की यके-बाद-दीगरे जलाईं और किले की खाई की दूसरी ओर से भी तीन ज्वालाएँ उसी के जवाब में जलीं। दोनों कठपुतलियों ने शान्तिपूर्वक फाटक खोल दिये। जिनलुंग और उसके आदमी धड़ाधड़ घुस आये और फुर्ती से दूसरे मंजिल पर पहुँचे जहाँ कठपुतली सैनिक अब तक गहरी नींद सो रहे थे और लैम्प अभी तक जल रहे थे। खामोशी के साथ उन्होंने सारी बन्दूकें इकट्ठी कर लीं। फिर जिनलुंग लियेव के साथ झटपट ग्वो के तिमंजिले कमरे पर पहुँचा।

डूबते हुए चन्द्रमा की मद्धम किरणें खिड़की में से होकर कमरे में प्रवेश कर रही थीं। उन्होंने उस धुंधले प्रकाश में एक व्यक्ति को लिहाफ में लिपटा हुआ देखा। ग्लानि से दाँत कटकटाते हुए जिनलुंग ने उसके सिर की ओर पिस्तौल करके तीन गोलियाँ चलाईं। उसने जो लिहाफ-गद्दे उठाकर फेंके तो देखा कि ग्वो की बजाय वहाँ दो थान कपड़े के पड़े हैं और उन्हें देखकर उसमें क्रोध की ज्वाला भड़क उठी। पर कपड़ा उम्दा साटिन का था। ऐसा सुनहरा मौक़ा भला जिनलुंग कब छोड़ देता! उसने और लियेव ने झटपट अपनी पीठों में जाकेट के नीचे वह कपड़ा लपेट लिया, इतने में बाकी गिरोह आ पहुँचा।

"इनकी तो मा का—!" जिनलुंग ने गाली दी। "वह तो बड़ा सस्ता निपट गया!"

क़ैदियों पर पहरा देने के लिए उसने आदमी भेजे और सियोव को आज्ञा दी कि वह वापसी के लिए नावों का प्रबन्ध करे। इतने में उसने और लियेव

ने ग्वो के कमरे की पूरी तरह तलाशी ली। जो कुछ भी मूल्यवान वस्तुएँ वहाँ थीं उन्होंने अपने कपड़ों में छिपालीं।

ग्वो का सौभाग्य कि उसी रात वह वहाँ के एक धनाढ्य जमींदार के यहाँ अफीम पीने के लिए गया था। जब उसे किले के अन्दर गोलियाँ चलने की आवाज आई तो उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा और शरीर में ऐंठन-सी महसूस हुई। किसी को पता लगाने उसने भेजा। ज्योंही उसने सुना कि बा लू ने किले का मुहासरा कर लिया है तो वह जापानियो द्वारा कब्जाये हुए शहर की ओर चल दिया।

दूसरे दिन सवेरे दो नावें जिला-सरकार शहर में आती हुई दीख पड़ीं। एक में तो कैदी भरे हुए थे, एक साइकिल थी और अन्य युद्ध-चिन्ह थे; और दूसरी में लियेव, सियोव, गिरोह के अन्य सदस्य और हथियाई हुई बंदूकें थीं। जिनलुंग बड़े गर्व के साथ जहाज़ की दीवार पर बैठा था। जैसे ही वे अपनी मंज़िले-मक्सूद के समीप आये उन्हें तीन छोटी-छोटी मछलियाँ मारने की नावें दिखाई दीं जिनमें से एक पर दा-श्वी खड़ा था।

"अरे जिनलुंग बाबा, तुम कहाँ चले गये थे?" दा-श्वी ने तपाक से उसका स्वागत किया। "हम यहाँ तुम्हें ढूँढ रहे हैं!"

"मैं ज़रा किले का मुहासरा करने चला गया था, हो गया" जिनलुंग ने आत्म-संतुष्टि के स्वर में चीख कर कहा। दूसरी नाव की ओर संकेत करके उसने कहा, "वह देखो कैदियों से भरी नाव! और तुम यहाँ क्या करते रहे? मछलियों का शिकार क्यों?" उसने तिरस्कार के साथ कहा।

नावें एक-दूसरे के साथ चलने लगीं। दा-श्वी कूदकर नाव पर पहुँचा और खुले दिल से जिनलुंग का अभिवादन किया। "हम आज रात ही किले पर हमला करने का विचार कर रहे थे। हम तो मौका ही देख रहे थे और तुमने उसे फतह भी कर लिया! तुम बड़े जोरदार आदमी हो जिनलुंग! तुमने वह किया कैसे?"

जिनलुंग ने बड़ी डींग मारी और अपनी शेखियों के साथ सारा किस्सा सुनाया, फिर लियेव और सियोव की ओर संकेत करते हुए बोला, "इन दोनों ने

मेरी बड़ी मदद की !"

अब जाकर दा-श्वी को संकेत मिला कि वे दोनों कैदी नहीं हैं पर उसने फौरन उनकी ओर मुस्कराते हुए कहा, "बहुत अच्छे—हमारे संग काम करना बड़ा गौरवशाली है।......" उसने अपना पाइप और तम्बाकू की थैलिया उन की ओर बढ़ाई।

लिगेव ने सिगरेट बाँटे और सियोव ने मैत्री-भाव से कहा, "अब हम सब एक हैं।"

"क्या किला तुमने जला डाला ?" दा-श्वी ने जिनलुंग से पूछा।

"क्यों, भला जला क्यों देते ? हम तो वहाँ से एक-एक आदमी को निकाल लाये। जलाने न जलाने से कोई फर्क नहीं पड़ता।"

"मेरा ख्याल है अगर उसे जला दें तो बेहतर होगा। दुश्मन अगर फिर घुस आया तो उसका इस्तेमाल कर सकता है। तुम लोगों को रात भर बड़ी मेहनत करनी पड़ी होगी—जाओ घर जाकर ज़रा आराम कर लो। हम उसकी देख-भाल कर लेंगे।"

दा-श्वी उछलकर फिर अपनी शिकारी नाव में आ गया और अपने आदमियों के साथ श्ये ल्यू की ओर चला ! जिनलुंग और उसके आदमी जिला प्रधान-दफ्तर की ओर आगे बढ़े।

"दा-श्वी का क्या ओहदा है वहाँ ?" लियेव ने सरगोशी से पूछा।

जिनलुंग ने तिरस्कार प्रकट करते हुए कहा। "यों तो उसे कप्तान बना रखा है पर अपने को वह कोई हुक्म नहीं दे सकता।"

किले को फूँक देने के पश्चात् दा-श्वी और देश-रक्षक सैनिक कई दिन तक श्ये ल्यू में ही में रहे जहाँ उन्होंने स्थानीय सरकार पर जन-शासन बहाल किया और सैनिक संगठन का निर्माण किया। जब वे वापस आ गये तो जिनलुंग को, जो अब अपने बराबर किसी को समझता ही न था, यह डर लगा कि वह जो कुछ करना चाहता है उसमें दा-श्वी रोड़े अटकायेगा। छापेमार-अभियान के बहाने वह अपने गिरोह के कुछ आदमियों को लेकर फिर श्ये ल्यू पहुँचा। उसने बड़ी सावधानी के साथ केवल वही व्यक्ति चुने जो बिल्कुल उसी ठप्पे के थे। उन

में एक भी पार्टी-मेम्बर नहीं था।

दा-श्वी को यह मनमानी ठीक न लगी। श्वाँग से इस मामले पर बहस करने के बाद उसने उनसे कई बार वापस आने को कहा। पहले कुछ हुक्मों की तो सुनी-अनसुनी हो गई पर अन्त में जिनलुंग ने एक झूठी रिपोर्ट इस आशय की भेज दी कि गाँव के इर्द-गिर्द दुश्मनों के घुस आने का खतरा है इसलिए हम अभी नहीं लौट सकते। दा-श्वी ने निश्चय किया कि वह खुद जाकर ही उन्हें ले आये।

सूर्यास्त के समय वह गाँव में पहुँचा और पूछ-ताछ के बाद उस छोटे-से बोर्डिंग हाउस में गया जहाँ जिनलुंग का दस्ता ठहरा हुआ था। वह एक कमरे में दाखिल हुआ, जो जाहिर था, सोने के लिए इस्तेमाल होता था। बिस्तर यों ही अस्त-व्यस्त पड़ा हुआ था। हालाँकि दीवार पर बंदूकें लटक रही थीं पर दरवाजा बिल्कुल खुला हुआ था। वह उसके सामने के कमरे तक गया और वहाँ भी यही अव्यवस्था दीख पड़ी। कमरे में गुलू के अलावा और कोई न था।

"मैं तो स्वर्ग, पृथ्वी, चीते का सिर चाहता हूँ......तीन छोटे बन्दर नहीं चाहिएँ मुझे..... लाओ थोड़ा और कर्ज दो मुझे......अब की बार जीत कर रहूँगा!" गुलू शराब में धुत्त स्वप्न में बहकी बहकी जुए की बातें कर रहा था।

"उठ बैठो, उठ जाओ!" दा-श्वी ने उसे जोर से झिंझोड़ा।

गुलू ने करवट ली और कोई और ख्वाब देखने लगा। "मेरे पीछे मत पड़ो," उसने मूर्खतापूर्ण मुस्कराहट से कहा। "मैं थक कर चूर हो गया हूँ!"

दा-श्वी खूब ही तो चीखा और उसे उसने खूब ही झकझोरा पर उसने उठने का नाम न लिया।

दा-श्वी का पारा चढ़ गया और वह बोर्डिंग हाउस के मालिक से मिला। मालकिन से उसने पूछा दस्ते के लोग कहाँ गये हैं। मालकिन ने उसे ऊपर से नीचे तक घूरकर कहा, "वे आपको वान के घर मिलेंगे।

"कौन है वह? कहाँ रहता है?"

"आप वान को नहीं जानते? उसके पेशे वाले तो हरेक जगह हैं। ऐसा करिये दरवाजे से निकल कर पूरब को घूम जाइए। वहाँ उत्तर की ओर जा

पहली गली हो उसी में चले जाइए और आखिर में आपको एक छोटा-सा दरवाजा मिलेगा, बस वही वान का घर है। देखिए कुछ भी हो किसी को मेरा नाम न बता दीजिए कि मैंने आपको उसका पता दिया है।"

दा-श्वी ने मालकिन को ताकीद की कि वह दस्ते के कमरों पर निगाह रखे और खुद वान के घर की ओर चला। आँगन में दाखिल होते ही घर में कुछ क़हक़हों की आवाजें उसे सुनाई पड़ीं। खिड़की में लटके हुए पारदर्शी पर्दों में से जो उसने झाँका तो देखा कि एक लैंप टिमटिमा रहा था और एक काँग पर दो लड़कियाँ व कई मर्द बड़े हर्ष व उल्लास से चुम्बन-आलिंगन कर रहे थे व उन्हें भींच रहे थे।

एक लड़की को उसकी गर्दन में बाँह डालकर अपनी ओर खींचते हुए लियेव ने कहा, "मेरे मुँह का प्यार ले मेरी नन्हीं-सी जान!"

"अरे पर ऐसी बेदर्दी से न घसीटो," उसने खी-खी करते हुए शरीर छुड़ाया।

"लियेव ने उसे अपनी बाँहों में भींच लिया, जबरन काँग पर डाल दिया और उसके होठों को खूब दबा-दबा कर चूसा।

दा-श्वी यह शर्मनाक दृश्य देखकर खिड़की के पीछे हट गया, लज्जा से उसका मुँह लाल होगया। उसे उन अनेकों पड़ौसियों का अनुभव हुआ जो कम्पाउण्ड की दीवार पर से उचक कर यह देख रहे थे। बड़ा उद्वेलित व व्यग्र हो वह मकान में दाखिल हुआ। अपने नेता पर नजर पड़ते ही देश-रक्षक सेना के आदमियों पर पाला पड़ गया, उनके जिस्म में काटो तो खून नहीं।

"जिनलुंग कहाँ है?" उसने पूछा।

"ओह वह," लियेव ने लापरवाही से उत्तर दिया, "वह तो हर वक्त व्यस्त रहता है। हमें तो पता ही नहीं चलता वह कहाँ जाता है।"

दूसरों ने भी यही प्रकट किया कि उन्हें जिनलुंग का कोई पता नहीं है। दा-श्वी ताड़ गया कि वहाँ उसे कोई मालूमात न मिल सकेंगी जब वह वहाँ से चला तो सैनिकों के तिरस्कारपूर्ण क़हक़हे उसे सुनाई दिये।

क्रोधित व उकाकर दा-श्वी गाँव के पटेल से मिला। पटेल उससे

परिचित था और उसने उसका पुरतपाक स्वागत किया। जब दा-श्वी ने जिनलु ंग के बारे में पूछा तो पटेल ने अपनी कमीज के बटन खोलकर सीने के दो कुरूप, बैंजनी घाव उसे बता दिये।

"तुम नहीं जानते—वह यहाँ आकर तीस कैटीज़* ज्वार के राशन टिकट देकर साठ कैटीज़ गेहूँ लेना चाहता था। पूर्व इसके कि मैं आपत्ति पूर्ण करूँ उसने धड़ से मेरे बन्दूक का कुन्दा जमा दिया! उस जैसा बा लू तो मैंने आज तक जिन्दगी में कभी देखा ही नहीं! उसने तो हमारी व्यवस्था को बिल्कुल मटिया-मेट करके रख दिया है!"

पटेल के वृद्ध पिता ने चेतावनी देने की निगाहों से अपने पुत्र की ओर देखा। "तुम अब कुछ ज्यादा बोलने लगे!" और फिर दा-श्वी को सम्बोधित करके नम्रता से बोले, "कप्तान साहब, आज रात आप खाना हमारे साथ ही खाइएगा।"

पटेल के हृदय की भड़ास अभी न निकल पाई थी पर फिर भी वह शांत होगया।

दा-श्वी को उस समय खाने की कैसे सूझती उसने तो पटेल से पूछा कि जिनलु ंग अपना समय कहाँ बिताता है। वृद्ध सज्जन ने उसे फिर टोका।

"उसकी कोई निश्चित जगह नहीं है। मेरे बेटे को क्या मालूम?"

जब दा-श्वी चलने लगा तो पटेल उसे दरवाजे तक छोड़ने आया। "हर रात वह जमींदार गोव के यहाँ जाता है," वह फुसफुसाया। "कौन नहीं जानता कि वह जमींदार की लड़की के साथ सोता है! तुम भी जाओ और अपनी आँख से देखो। उस जैसे बा लू से तो मेरा पहले कभी वास्ता नहीं पड़ा। वह तो इतना साफ गद्दार और विश्वासघाती है जैसे कि सफेद आटे में गोबर का काला कीड़ा।"

उसने दा-श्वी को गोव के मकान का रास्ता बताया और दा-श्वी चल दिया।

---

*चीनी वजन जो एक पौंड के बराबर होता है।

बड़ी झक-झक और फुसलाहट के बाद गोव के दरबान ने उसे कम्पाउण्ड में घुसने दिया। आखिरकार दा-श्वी आँगन पार करके एक सुप्रकाशित कमरे के दरवाजे पर जाकर खड़ा हो गया। उसने देखा कि बहुमूल्य वस्त्रों में सुसज्जित कई आदमी महजोंग* खेल में जुटे हुए थे लेकिन पहले-पहल उसे उनमें जिनलुंग-सा कोई न दिखाई दिया।

एक बूढ़े बदमाश ने जो महजोंग-मेज पर बैठा था अपने चश्मे के ऊपर से दा-श्वी को घूर कर देखा। "क्या चाहते हो?"

"मुझे किसी की तलाश है," दा-श्वी ने उत्तर दिया।

उसकी आवाज सुनते ही एक व्यक्ति का चिकना सिर, जिसकी पहले उसकी ओर पीठ थी, घूमा! "अरे तुम हो। आओ, अन्दर आ जाओ!" यह जिनलुंग था जो रेशमी खम्भे की नाईं सुन्दर वस्त्रों में सुशोभित था।

"मुझे तुमसे कुछ कहना है, "दा-श्वी ने संक्षेप में कहा।

बड़ी मित्रता भरे-ढंग से जिनलुंग ने उसे खींचकर एक कुर्सी पर बैठाया और सिगरेट पेश की। "हाँ हाँ, जरूर कहो! यह बाज़ी पूरी कर लूँ और चलता हूँ तुम्हारे साथ!"

जिनलुंग की बगल में बैठी एक लड़की जिसका बाँया हाथ उसके कन्धे पर रखा था चिल्ला रही थी, "पुर्वाई, पुर्वाई! यही तो हमारी चाल है!" और उसने अपने दाहिने हाथ से एक हाथी दांत छीन लिया। "जिनलुंग," उसने स्नेह से हँसते हुए उससे आग्रह किया, "यह तुम्हारा तुरुप है—ज़रा-सी चाल से तुम्हें दुगुना मिल गया! इधर खेल पर ध्यान दो!"

दा-श्वी बड़ी बेसब्री और व्यग्रता से बैठा प्रतीक्षा करता रहा। नौकर आये और सुगन्धित कमल के सूप के कटोरे परोस कर चले गये। हरेक खाने के लिये रुक गया। दा-श्वी को महसूस हुआ कि उसके क्रोध के दबाव से उसके फेफड़े फट जायेंगे। वह उठ खड़ा हुआ। "मुझे कुछ नहीं चाहिए। मैं जाता हूँ!"

---

*चीनी खेल जो १४४ रंगीन गोटों से खेला जाता है।

जिनलुंग ने बड़ी खामोशी से उसे नखशिख तक घूरा। "अच्छा तो तुम चलो। अपन बाद में बातें करेंगे।"

दा-श्वी भृकुटी चढ़ाए हुए तीव्र गति से वहाँ से बाहर आ गया। बगैर खाये-पिये या सोये वह उसी रात जिला-सरकार के प्रधान दफ्तर को लौट गया और वहाँ जाकर उसने श्वाँग को सारे मामले की रिपोर्ट दी।

× × × ×

दो दिन बाद जिनलुंग को कल्लू का पत्र मिला जिसमें उसे आदेश दिया गया था कि वह अपने दस्ते-सहित फौरन लौट आए। "यह उसी नालायक की हरकत है जो मेरी पीठ पीछे मेरी बुराई करता है!" उसने मन-ही-मन गाली दी। लेकिन पत्र की भाषा कड़ी थी जिससे उसका दिल भय से धड़कने लगा। अपने दस्ते को साथ ले वह जिला-प्रधान दफ्तर को लौट आया।

सबसे पहले वह मे से मिलने घर गया ताकि देखें ऊँट किस करवट बैठ रहा है। "सुना है कल्लू यहीं आया हुआ है," उसने लापरवाही से पूछा।

"हुँऽम," मे ने अधखुली निगाहों से उसकी ओर देखकर संदिग्ध उत्तर दिया।

"उसने मुझे वापस आने का हुक्म क्यों दिया है?" उसने पूछा।

"तुम्हें नहीं मालूम क्या?" उसने रुक्षता से उत्तर दिया।

"हाँ, मुझे मालूम नहीं!" वह भड़क उठा। "यह उस हरामज़ादे दा-श्वी का काम है। उसे मुझ से डाह है क्योंकि मैं उससे कहीं अच्छा सैनिक हूँ और अब वह मुझे तबाह करना चाहता है······!"

"बकवास मत करो!" मे ने उसे टोका। "दूसरे का ही ढेरू दीखता है तुम्हें अपना फूला नहीं! दा-श्वी वैसा आदमी नहीं है। वह तुम जैसा नहीं है! मेरा तुम्हें समझाते-समझाते और कहते-कहते कि तरक्की करो, कलेजा पक गया, लेकिन तुम्हारे कानों पर जूँ न रेंगी।···· तुम तो बिलकुल बिल्ली के गू हो न लीपने के न पोतने के!"

"धत् तेरे की !" उसने जंगली की नाईं मेज़ पर मुक्का मारा। "वह पाजी दा-श्वी आता क्या है उसे ? मैं जब किले का मुहासरा कर रहा था तो वह झील में बैठा मछलियाँ पकड़ रहा था ! वह तो खाद उठवाने लायक है, और कुछ उसके बस की नहीं ! तुम्हारे लिए तो वह हीरा है, पर मैं उससे टट्टी का लोटा उठवाना भी अपनी हतक समझता हूँ। हूँ, मैं कई दिन से जानता हूँ कि तुम दोनों की गहरी आपस है। उसी रात जब मैं घर आया तो तुम दोनों हम-बिस्तर थे और वह तुम पर झुका हुआ था······वह ऐसा कौनसा बड़ा भारी रहस्य था—बताओ मुझे !"

मे को इतना क्रोध आया कि उसका सारा बदन काँपने लगा। वह रो पड़ी। "जिनलुंग," उसने बिलखते हुए कहा, "तुम—तुम—मुझ पर तोहमतें लगाते हो। मेरा अपमान करते हो ! खुद तुम रण्डीबाजी करते फिरते हो और यहाँ आकर मुझे ही दोष देने की कोशिश करते हो।"

जिनलुंग आगे को बढ़ा और उसने मे के बाल पकड़ लिए। "किसके साथ रण्डीबाजी करता हूँ मैं, बोल ?" वह गरजा। "बता मुझे ! बता न मुझे !"

मे ने झगड़कर अपने को छुड़ाया और उस पर चीखी ! "शराब तुम पियो, दूसरे नशे तुम करो, रण्डीबाजी तुम करो, जुआ तुम खेलो······और नाम बा लू का बदनाम करो ! सब तुम्हें जानते हैं !

जिनलुंग ने एक जोर का तमाँचा उसके मुँह पर मारा। वह चकराकर दीवार से जा टकराई और उसकी नाक से खून बहने लगा। ज्योंही वह उसे पीटने के लिए दोबारा बढ़ा कि एक आदमी दौड़ा हुआ दरवाज़े में से आया और उसने उसे पीछे से पकड़ कर जो धक्का दिया है तो लुढ़कता हुआ जमीन पर जाकर गिरा। जिनलुंग ने जो उठ कर देखा है तो दा-श्वी खड़ा था। घृणा से जलते हुए वह अपने शत्रु पर टूट पड़ा। लेकिन ठीक उसी क्षण श्वाँग और कल्लू से आ पहुँचे और उन्होंने दोनों को छुड़ाया।

हाँपते हुए अपने हाथ कूल्हों पर रख कर दा-श्वी चीखा, "यह अच्छी रही ! लड़ते-लड़ते बाहर से आओ और घर में आ कर भी लड़ते रहो—और वह भी एक औरत से।"

"मैं कहता हूँ तुम्हारी तो—!" जिनलुंग क्रोधोन्मत्त हो चीखा। "मैं अगर अपनी बीवी को मारता हूँ तो तुम्हारे बाप का क्या जाता है! तुम्हारी मा का—! मेरी पीठ में आकर मारने से क्या मिला तुम्हें!"

कल्लू और श्वाँग ने उसे घसीट कर बाहर कर दिया पर वह अब तक गरज रहा था।

दा-श्वी ने मे को सहारा देकर उठाया। उसके हाथ और कपड़े सब खून से लथपथ थे।

× × × ×

कल्लू और श्वाँग घण्टों जिनलुंग से बातें करते रहे पर वह इसी पर जिद करता रहा कि वही ठीक कह रहा है और वह आखिर तक ज़रा भी न दबा। वह क्रोधित हो खामोश बैठा रहा और वे उसे समझाते रहे। वास्तव में उसने उनकी एक बात भी नहीं सुनी क्योंकि वह अपने मस्तिष्क में कोई और ही योजना बना रहा था। अंततः वह खड़ा हो गया।

"दा-श्वी कहता है मुझ में यह बुराई है और वह कमज़ोरी है—मैं अब उसे बता दूँगा कि जिनलुंग किस कैंडे का आदमी है।" उसने छाती ठोक कर कहा। "तुम देखना कौन जापान विरोधी-संघर्ष का हीरो है और कौन रीछ के भेस में सर्कस का आदमी है।" और वह दरवाज़े से निकल गया।

आँगन में वह अपने गाँव वाले से मिला। आदमी जिनलुंग के बच्चे को जो कि बीमार था लेकर आया था। गाँव वालों ने सोचा कि उसके मा-बाप उसकी देख-भाल बेहतर तरीके से कर सकेंगे।

"मुझे नहीं चाहिए यह! मेरा बच्चा नहीं है यह!" जिनलुंग ने ग्लानि से कहा। "अगर यह मरने ही वाला है तो इसे इसकी मा को ले जाकर दो, वहीं मरे तो अच्छा होगा।"

उसने लियेव को फुसलाया। "ये लोग समझते हैं ये हमसे कहीं अधिक शूरवीर और बुद्धिमान हैं और हमें योंही धकेल सकते हैं," उसने कहा। "अब

अपने को जरा दो-चार हाथ बताने हैं उनको !"

बड़ी देर तक वे बातें करते रहे। रात हुई तो उन्होंने स्योव को भी फोड़ लिया। फिर अपनी बंदूकें लेकर बे लगाम जंगली घोड़ों की भाँति वे गाँव से चल पड़े।

पहले तो वे श्ये ल्यू को गये जहाँ खूब शराब पीने के बाद उन्होंने रस्से की एक गेरडुरी और एक बड़ा छुरा खरीदा। गाँव छोड़कर वे बाँध के सहारे चले और परकोटे से घिरे उस व्यापारिक नगर में पहुँचे जहाँ कठपुतली फौज का कब्जा था। लियेव इसी इलाक़े में डाकू रह चुका था और आस-पास की जगहों को खूब अच्छी तरह जानता था। पश्चिमी दीवार के सामने उस स्थान पर वह उन्हें ले गया जो संतरी वाले मीनार से कहीं दूर था। परकोटे के इर्द-गिर्द बनी खाई को उन्होंने तैर कर पार किया, दीवार के एक छेद में जो कँटीली झाड़ियों में छिपा हुआ था, वे घुसे और उसमें से बाहर निकल कर चोरी-छिपे गाँव में दाखिल होगये।

वे चुपचाप उन तंग, निस्तब्ध गलियों में चलकर व्यापारिक संघ के प्रधान के यहाँ गये। उसके कम्पाउण्ड का फाटक बिल्कुल बन्द था। अपने जिगरी दोस्तों के कंधों पर खड़े होकर जिनलुंग ने कम्पाउण्ड की दीवार पकड़ी और अपने को ऊपर की ओर खींचा और रस्से की मदद से दूसरों ने भी दीवार फाँद ली। तब वे सबके सब अन्दर की ओर गये। जहाँ आँगन पार करके वे एक अंदरूनी दीवार के पास पहुँचे पर वहाँ भी फाटक पर बड़ा-सा ताला लटक रहा था। इस दीवार को उसी तरह फाँदना जैसे कि बाहर की दीवार फाँदी थी, कठिन था क्योंकि यह बहुत ऊँची थी। पास ही एक ऊँचा दरख्त था पर उसकी शाखायें अधिक लम्बी न थीं। धूर्त जिनलुंग पेड़ पर चढ़ गया, रस्सी का एक सिरा उसने एक मजबूत शाखा में जो दीवार से ऊँची थी बाँध दिया और दूसरा सिरा लियेव की कमर में बाँध दिया। लियेव को जमीन से ऊपर उठाया और दो-चार हाथ में ही वह दीवार पर था। जब पेड़ से बँधा हुआ रस्सी का सिरा खोल लिया गया तो दूसरे दो भी दीवार पर खेंच लिये गये। दीवार का ऊपरी हिस्सा आँगन की कुछ इमारतों की छत से सटा हुआ था। उन्होंने छत पार की

और एक ऊँचे-से खम्मे के जो गर्मियों में शामियाने आदि के लिए इस्तेमाल होते थे सहारे रपसते हुए नीचे आ गये।

इमारतों में से जिन्होंने वह पोला-सा स्क्वायर बनाया था सिर्फ पूर्वी व उत्तरी दिशाएँ प्रकाशित थीं। पूर्वी विंग की खिड़की में से झाँक कर उन्होंने देखा कि लोग ताश खेल रहे हैं। केवल एक थके-माँदे नवयुवक के अलावा बाकी सब खिलाड़ी स्त्रियाँ थीं। लिवेव को पूर्वी विंग के दरवाजे के बाहर खड़ा करके जिनलुंग और सियोव स्थिर, शान्त उत्तरी द्वार में प्रविष्ट हुए।

व्यावारिक संघ का प्रधान काँग पर लेटा धूम्रपान कर रहा था। वह घबड़ाकर उठ बैठा।

"घबराइए नहीं," जिनलुंग ने झट कह दिया। "हम आपको नुक्सान पहुँचाने नहीं आये हैं।"

"कौन हैं आप लोग?" मोटा व्यापारी चिल्लाया।

"मैं बा लू में एक कप्तान हूँ। मैं ही वह शख्स हूँ जिसने श्ये ल्यू का किला फतह किया था। हम में से कुछ ने यह तय किया है कि हम इस जिम्मेदारी को छोड़ें और बा लू को भी सलाम कर लें। हम आपको अपनी बन्दूकें सौंप देंगे लेकिन आपको हमें कुछ पैसे किराये के लिए कर्ज़ देने होंगे।"

जिनलुंग ने मेज पर पिस्तौल रख दी और बैठ गया। सियोव ने भी ऐसा ही किया।

मोटे व्यापारी-नेता को पुर्नआश्वासन दिया गया। "बहुत अच्छे, बहुत अच्छे," वह मुस्करा दिया। "मेरे पास कुछ पैसे हैं, लीजिए ले लीजिए।"

उसने जेब से नोटों का एक बण्डल निकाला और जिनलुंग को थमा दिया। जिनलुंग उन्हें गिनने लगा।

"हमारे साथ बहुत-से आदमी हैं," जिनलुंग ने कहा। "ये कै दिन चलेंगे! क्या थोड़े और नहीं दे सकते आप हमें?"

मोटू के चेहरे का थल-थल गोश्त सिकुड़ गया। उसने एक क्षण सोचा, फिर चाबी निकाली। काँग पर झुकते हुए उसने दीवार में बना एक दरवाजा खोला। उसके खानों में से उसने एक जवाहरात की डिबिया निकाली। उसमें

की वस्तुओं को टटोल कर अन्त में व्यापारी ने अंगूठियों की एक जोड़ी निकाली जिसमें से एक में हरा और दूसरी में लाल हीरा लगा हुआ था।

"ये लीजिए कप्तान साहब," वह जिनलुंग को देते हुए बोला। "इन्हें ले जाइए और जहाँ भी आप जायें ये आपके काम आयेंगी। इन्हें दोनों को ले जाइए।"

ज्योंही वह दीवार में लगी तिजोरी का ताला लगाने को मुड़ा कि जिनलुंग ने उसका दोनों हाथों से गला दबा दिया और सियेव ने झट रस्सी का फंदा गर्दन में डाल कर उसे खींच लिया। मोटेराम की आँखें बाहर आ गईं; गला घुटने की रुंधी हुई आवाज़ें आईं। सियोव भय से काँप रहा था और रस्सी उसके लरज़ते हाथों से नीचे गिर पड़ी थी। जोर से हाथ-पैर मारकर मोटेराम काँग से लुढ़ककर जमीन पर गिर पड़ा। रस्सी अब भी उसके गले में बँधी खिंच रही थी। जिनलुंग ने एक पैर उसके सीने पर रख दिया और रस्सी का एक सिरा अपने हाथ में ले दूसरा सियोव को पकड़ा दिया। दोनों ने खूब जोर लगा कर उसे ऐसा खींचा कि मोटेराम की पुतलियाँ फिर गईं, जीभ मोटी और बैंजनी रंग की होकर चिपक गई और उसका शरीर एक ठोस गेंद की नाईं सिकुड़ गया। तब कहीं जाकर जिनलुंग ने रस्सी डाली, जवाहरात की डिबिया पर टूटा और उसे खोल डाला। लम्बी सोने की ज़ंजीर देखते ही उसकी आँखें लोभ से जगमगा उठीं। डिबिया बन्द करके उसने उसे कमीस में रखली।

"छुरा दो!" वह सियोव की ओर देखकर चीखा।

सियोव ने एक चमकता हुआ सूअर मारने का छुरा निकाला लेकिन अपना लकवे से ग्रस्त हाथ वह न उठा सका। जिनलुंग ने सख्त ग्लानि से दाँत पीसे, छुरा उसके हाथ से छीना, व्यापारी के स्थिर शव पर झुका और उसकी गर्दन में भोंक दिया। ज्योंही उसने छुरा निकाला खून की फौवार से उसके सारे कपड़े रंग गये लेकिन जब उसने दो बार और पाशविकता के साथ छुरा मारा तब जाकर कहीं सिर धड़ से अलग हुआ। बिस्तर में से उसने एक पतली-सी चादर निकाली, अपना वह कातिलाना इनाम उसके केन्द्र में रखा, चारों सिरे कसकर बाँधे और उन्हें उठाकर अपनी कमर-पट्टी के नीचे बाँध

लिया। उसने लैम्प बुझा दिया और सियोव व लियेव के पीछे-पीछे चलकर आँगन के पिछवाड़े के दरवाजे से झटपट रफूचक्कर हो गया।

जब वे बाँध पर पहुँचे तो उन्होंने रुक कर दम लिया। जिनलुंग ने नोटों की गड्डियाँ बराबर-बराबर तीन जगह रख दीं।

"मुझे और लियेव को एक-एक अंगूठी क्यों नहीं देते?" सियोव ने खुशामद करते हुए कहा। "जंजीर तुम अपने लिये रख लो।"

जिनलुंग ने एक करारा झापड़ उसके मुँह पर जमाया। "निकल जा सुसरे यहाँ से! हमारी बिल्ली और हम ही से म्याऊँ! मैंने तुझसे कहा उसे मार डाल तो तेरा बदन काँपने लगा, अपनी जगह से हिला तक नहीं! अब तुझे क्या हक़ है कि यह माँगे और वह माँगे!"

सियोव भयभीत हो गया, लेकिन लियेव, जो उससे कहीं अधिक चालाक था, जिनलुंग को पटाना जानता था।

"अरे बाबा तो इतने गरम क्यों होते हो?" उसने शान्त करना चाहा। "दिखाओ तो सही क्या-क्या लाये हो?"

"तुम इस साले कुत्ते के भौंकने पर मत जाओ," जिनलुंग बोला। "मेरे पास सिर्फ दो अंगूठियाँ हैं। लो, एक तुम ले लो।" लियेव ने वह ले ली और सन्तुष्ट हो गया। जिनलुंग खड़ा हो गया। आओ अब वापस चलें। जरा तुम्हारे चूतड़ रूमाल से ढँक लो ताकि छेद न दिखाई दें! यह बात एक रहस्य ही रहना चाहिए। देखो किसी को अपनी लूट का पता न चले!"

पौ फटने तक जब देश-रक्षक सैनिक बिस्तरों से उठ रहे थे ये लोग जिला-प्रधान दफ्तर में पहुँचे। "कल्लू कहाँ है?" जिनलुंग ने पूछा।

श्वाँग ने उसके रक्त-रंजित कपड़ों की ओर देखा। "रात वह यहाँ नहीं सोया," उसने उत्तर दिया। "तुम कहाँ चले गये थे?"

जिनलुंग कुछ नहीं बोला बल्कि खामोशी के साथ अपनी कमर का बण्डल उसने खोला। जब वह भयानक सिर खुलकर फर्श पर गिरा और लुढ़क कर काँग के पाये से टकराया तो आदमी उसे देखते ही आतंकित होगये।

"यह उस गद्दार ल्यू का सिर है," गर्व से फूले हुए वह बोला। "मैंने,

जिसका नाम जिनलुंग है, इसे फूँक से उड़ा दिया हालाँकि तुम लोग जानते हो वह ऐसे गाँव में रहता था जो चारों तरफ से एक गहरी खाई से और ऊँची दीवार से घिरा हुआ है! जिधर देखो जापानी पहरेदार भड़कती हुई मशालें लिये तैनात थे, पर क्या रोका उन्होंने मुझे? दा-श्वी हमेशा डींगें मारता रहता है—जरा उसे भेजकर तो एक सिर मँगवा लो!"

"कौन से ल्यू से तुम्हारा तात्पर्य है?" श्वाँग ने पूछा, उसकी आँखें अब तक फटी हुई थीं।

"वही व्यापारी-संघ के प्रधान का सिर है जो बहुत बड़ा गद्दार है! तुम नहीं जानते क्या?"

श्वाँग ने सोचा कि यह मामला है खराब, पर उस क्षण उसे कुछ सूझी ही नहीं। उसने जिनलुंग को आराम करने के लिए कहा और बताया कि कल्लू अभी ही आने वाला है उसका इन्तजार करे जिनलुंग ने समझा उसने एक बहुत बड़ी सफलता प्राप्त की है।

आत्म-संतुष्टि से उसने खोपड़ी के एक लात जमाई। "तुम अपना इत्मेनान करलो, और कल्लू को भी बता देना यह! कल हम इसे बाजार में लटका देंगे ताकि लोग इसे देख सकें।" खोपड़ी को एक बहुमूल्य हीरे की नाईं दोबारा बाँधते हुए वह शेखीबाज की तरह अकड़ कर चलता हुआ बाहर चला गया।

× × × ×

श्वाँग ने देखा कि सियोव का एक गाल जहाँ जिनलुंग ने तमाँचा मार दिया था, सूजा हुआ था, उसने उसे एक ओर बुला कर कारण पूछा। पहले तो सियोव बोलने से घबराया पर जब श्वाँग ने गारंटी दी कि वह उसे बचायेगा तो उसने बड़े क्षोभ व ग्लानि के साथ सारा किस्सा सुना दिया।

कल्लू के आने पर श्वाँग ने उसे तफसीली रिपोर्ट दी। कल्लू ने कहा कि जिनलुंग के अपराध जितने उसने समझे थे उनसे कहीं अधिक खतरनाक हैं।

उसने उसे फौरन प्राइवेट तौर पर मुलाकात के लिए बुलाया।

जिनलुंग, जो बड़ी हेकड़ी और गुस्ताखी से बातें कर रहा था, हक्का-बक्का रह गया जब कल्लू ने भ्रकुटी चढ़ा कर उससे कहा, "कल तुम और पूछे-गुछे दो आदमियों को लेकर यहाँ से चले गए। यह बिल्कुल गलत तरीका है। किसी आदमी को जान से मार डालना कोई हँसी-ठट्ठा नहीं है। उसके लिए काउण्टी और जिले दोनों सरकारों की अनुमति आवश्यक है। इस प्रकार मनमानी का तुम्हें कोई अधिकार नहीं था।"

एक गद्दार को मार डालने में मैंने कौनसा गुनाह कर दिया?" जिनलुंग ने ज़ख्मी स्वर में पूछा।

"व्यापारी-संघ का प्रधान कोई जरूरी नहीं कि गद्दार ही हो। कम्युनिस्टों की तो नीति यह है कि पहले ऐसे व्यक्ति को समझा-बुझा कर सुधारना चाहिए। हम उन्हें उसी शक्ल में अलग करते हैं जब यह तय हो जाता है कि वे इतने दुष्ट और सड़े-पड़े हैं कि उन्हें सुधारा नहीं जा सकता। हर बात में अच्छाई-बुराई देखी जाती है और कोई फैसला किया जाता है। और कैसी भी सूरत क्यों न हो किसी व्यक्ति को यह हक़ नहीं है कि वह अपने आप इस प्रकार का कदम उठा सके।"

जिनलुंग सामने की ओर घूरता हुआ बैठा रहा और अपनी शेखी पर लगे घावों को मरहम लगाता रहा। कल्लू असन्तोष से उसकी ओर देखता रहा और बोला, "तुमने ऐसा किया ही क्यों? क्या तुमने जापानियों को खतम करने की गरज़ से ऐसा किया था या अपने वैयक्तिक स्वार्थ-पूर्ति के लिए.........? बताओ तुम उस गाँव से क्या लूट कर लाये हो?"

जिनलुंग के चेहरे पर एक रंग आए और एक रंग जाए। "क्या मतलब है तुम्हारा?" उसने बात छिपाने के उद्देश्य से पूछा। "मैंने तो एक बटन तक नहीं छुआ। यह ख्याल भला तुम्हें कैसे हो गया?"

इस प्रकार के भोंडे जवाब से कल्लू को क्षोभ हुआ। उसने बमुश्किल अपना क्रोध दबाये रखा। "जिनलुंग," उसने धैर्य से कहा, "हम इसलिए यह नहीं पूछ रहे हैं कि तुम्हारे उस ख़ज़ाने में से हमें कोई हिस्सा बँटाना है बल्कि

हम तुम्हारे इन उलझे हुए विचारों को साफ करना चाहते हैं। कल मैंने और श्वाँग ने तुमसे घण्टों बातें की पर तुम्हारी समझ में शायद खाक न आया—असल पूछो तो तुम पहले से अब बिगड़ते ही जा रहे हो। यह जो तुम अपनी ही बात करते हो ना यह इन्कलाब के लिए हानिकारक है इससे उसे कोई लाभ नहीं पहुँच सकता। और जहाँ तक तुम्हारी ज़ात का सम्बन्ध है अगर तुम अपनी न्यूनताओं को शीघ्र ही नहीं सुधारते तो वे रोज-ब-रोज बिगड़ती जायेंगी और एक दिन तुम्हें तबाह करके छोड़ेंगी।"

जिनलुंग समझ गया कि भाँडा फूट चुका है। पहला विचार जो उसके मस्तिष्क में आया वह यह था कि दा-श्वी ने उसकी क़लई खोलकर रख दी होगी। अब उसका क्षोभ अपने बचाव की क्रोधपूर्ण दलीलों में परिणत हो गया।

"मेरे कान पक गये!" उसने झटके-से उठते हुए कहा। "मैं तो अपनी जान जोखों में डालूँ और फिर भी कीड़े मुझी में निकलें! जरूर दाल में कुछ काला है और मैं खूब जानता हूँ कि कौन मेरी पीठ पीछे मुझ पर हमला कर रहा है। अगर तुम्हारा ख्याल न होता तो मैं उसको अभी गोली मार देता। चलो अब खिड़की खोल कर सब को एलान कर दो कि या तो दा-श्वी रहेगा या मैं रहूँगा! मुझे भला इस काम की क्या जरूरत है? खैर, वैसे मैं दुश्मन से नहीं जा मिलूँगा, न गद्दारी ही करूँगा—अपने घर जाकर सीधा-सादा नागरिक बन जाऊँगा।"

उसने पिस्तौल मेज पर फेंका और धड़धड़ाता हुआ ऐसे बाहर निकला कि दा-श्वी से जो अन्दर आ रहा था उसकी टक्कर होते-होते बची। जिनलुंग के चेहरे पर खून उतर आया था, उसने दा-श्वी को देखना भी गवारा न किया और क्रोधोन्मत्त चला गया।

वह सीधा अपने दस्ते के कमरे में गया और वहाँ जाकर इस क़दर चीखा और गुर्राया कि उनको भी यह अहसास हुआ कि यह हमारी प्रतिष्ठा का 'अपमान' है और उसके विरुद्ध उनमें भी विद्रोह की ज्वाला धधक उठी। लियेव की अगुआई में वे गिरोह बना कर इस्तीफा देने कल्लू के पास पहुँचे। कल्लू और कमेटी के अन्य सदस्यों ने बड़ी देर तक उन्हें समझाया और यक़ीन दिलाया

कि जिलु ंग की जो नुक्ताचीनी की गई है वह बिल्कुल न्यायोचित है और उसका कोई असर दस्ते के सदस्यों पर नहीं पड़ता ।

अन्त में लियेव ने ही इस्तीफे पर ज़िद की । "मैं यह चावल नहीं खा सकता," वह बोला । "जो यहाँ रहना चाहते हैं वे रहें !" उसने अपनी बन्दूक घुमाई और चला गया ।

मे घर पर अपने बीमार बालक की सुश्रूषा कर रही थी । वह उसे गोद में लिये पुचकारती और गीत गाती हुई ऊपर नीचे टहल रही थी और उसके नन्हे-से जिस्म को थपथपा रही थी । बच्चा कमजोरी और पीड़ा से रोये जा रहा था ।

आईने के सामने रुककर वह बोली, "देख तो, वह कौन है ?"

अपने नन्हे सिकुड़े हुए चेहरे का अक्स आईने में देखते ही बच्चा खिलखिला उठा । मे की आँखों से आँसुओं की नदी बहने लगी ।

वह बच्चे को उबला हुआ अण्डा खिला रही थी कि इतने में जिनलु ंग वही क्रोधपूर्ण आकृति लिये आ धमका । "मे," वह चीखा । "अगर तुम मेरी बीवी हो तो बिस्तर लपेटो और चलो मेरे साथ अभी । वरना आज से हम और तुम हमेशा के लिए अलग !"

मे चौंक पड़ी, उसकी आँखें सिकुड़ कर ज़रा-सी हो गईं । "तुम क्या करोगे ?" उसने पूछा ।

जिनलु ंग रूखी हँसी हँस दिया । "वे मुझे न तो इंसान समझते हैं और न ही भूत-प्रेत । मैं उन्हें छोड़ रहा हूँ । अगर वे मुझे नहीं चाहते तो क्या हुआ सैकड़ों ऐसे हैं जो मुझे बुलाते हैं । नौकरी से इस्तीफा दो और चलो मेरे साथ, वर्ना हम-तुम आज से जुदा !"

"ये गीदड़ भभकियाँ मुझे मत दो, जिनलु ंग," मे ने उसकी आँखों में आँखें डालकर तिरस्कारपूर्ण स्वर में कहा । "अगर हमें जुदा ही होना है तो यों ही सही । तुम्हारे लिए मैं इन्कलाब से मुँह मोड़ लूँ इसकी कतई कोई उम्मीद नहीं है । तुम अपनी राह जाओ मैं अपनी, हमारा तुम्हारा कोई वास्ता नहीं !"

"ठीक है!" जिनलुंग ने क्रोध से कहा। "अगर तुम मुझे अपना पति नहीं मानतीं तो इस बालक पर भी तुम्हारा कोई अधिकार नहीं है!" उसने बच्चे को अपनी बाहों में पकड़ कर मे से छीनना चाहा।

मे ने बच्चे को कसकर पकड़ लिया, बच्चा भय से बिलबिला उठा। मे ने क्रोधित हो कहा, "ऐसा बीमार तो है वह! उसे तंग न करो।"

जिनलुंग ने पाशविक शक्ति से बच्चे को छीना और मे को ऐसा धक्का दिया कि वह लुढ़कती हुई फर्श पर जा गिरी। घृणा से उसका चेहरा सिकुड़ा उसने क्रूरता से कई लातें उसके मारीं फिर घूमकर बाहर आया और दरवाजे में ताला लगा कर भाग गया। सिसकियाँ भरते हुए मे सरककर दरवाजे तक आई और जोर से उसे धड़धड़ाने लगी। बच्चे के रोने की आवाजें फासले के साथ-साथ मन्द पड़ती गईं।

कुछ दिनों पश्चात् काउण्टी सरकार को जिनलुंग का एक पत्र मिला जिसमें लिखा था कि पत्नी को अपने पति के साथ रहना चाहिए और यदि मे घर नहीं लौटना चाहती तो मैं उसे तलाक़ देना चाहता हूँ। अधिकारियों ने इस विषय पर मे की राय पूछी।

"उसने मेरा कलेजा छलनी कर दिया है," उसने कटुता से कहा। "वह आदमी अव्वल दर्जे का बदमाश और नीच है। इन्कलाब के लिए काम करने से वह इन्कार करता है। मैं उसके साथ नहीं रह सकती तलाक़ हो या न हो! मैं तो सिर्फ इतना चाहती हूँ कि वह मुझे मेरा बच्चा लौटा दे। मैं जानती हूँ वह बच्चे को भी दुःख ही पहुँचायेगा।"

तलाक़ मंजूर हो गई पर बच्चे के बारे में कोई कार्यवाही न की गई। जिस दिन जिनलुंग उसे लेकर भागा था रास्ते में बच्चे को सख्त जुकाम हो गया और कुछ दिन बाद वह चल बसा।

: ८ :

अंगद का पैर—ग्रीष्म, १९४२

मई के अंतिम दिनों में जापानियों ने वा लू और केन्द्रीय होपी की दिशा में काम करने वाले तमाम फौजी दस्तों को घेरने और परास्त करने के लिए एक विकट अभियान आरम्भ कर दिया। इस बार जापानियों को हराना टेढ़ी खीर थी। प्रधान वा लू अड्डों के विध्वंस के लिए वे चारों ओर से टूट पड़े। कम्युनिस्टों की नियमित सेना दूसरे प्रदेशों को प्रस्थान कर गई। स्थानीय कम्युनिस्ट प्रशासन तथा छापेमार संगठनों को रूपोश होने का आदेश दे दिया गया।

काउण्टी-स्तर पर हर जगह पार्टी-मेम्बरों की बैठकें हुईं। कम्युनिस्टों ने प्रण किया कि ये न तो डिगेंगे और न ही शत्रु के आगे समर्पण करेंगे बल्कि अंत तक जनता का साथ देंगे। यह सबने माना कि आने वाला काल अत्यंत कठिन व दुष्कर है परन्तु यदि सम्भल कर काम किया गया तो विजय निश्चित है। समस्त प्रदेश में गंभीर व शांत मुद्रा लिये समुदायों ने अपनी वफादारी का अहद किया।

जापानियों की चढ़ाई अब छोटे-छोटे गाँवों तक पहुँच चुकी थी। जन-सेनाओं की सुरक्षा, छिपाव और चालान को संगठित करने के लिए झटपट काडरों के गिरोह बना लिये गये। ऐसे ही एक गिरोह में दा-श्वी, श्वाँग और मे थी। वे तीनों ज़िला-प्रधान दफ्तर को वापस गये और वहाँ उन्होंने उपयोगी सामग्री छिपाने और भूमिगत गये हुए स्त्री-पुरुषों के नाम व हुलिये गुप्त रखने के लिए लोगों को सेना-बद्ध किया। जनता और काडरों ने मिलकर जल्दी-जल्दी आवश्यक तैयारियाँ कीं।

शत्रु समीपतर आगया। बोगदे खोदने का विचार रद्द कर दिया गया क्योंकि बयाँग झील वाले भाग में ऐसा कोई स्थान न था जहाँ पानी काटे बिना गहरे गढ़े खोदे जा सकते। गुप्त गढ़ों का भी प्रस्ताव पेश हुआ लेकिन उन पर लोगों को विश्वास न था। अंतिम क्षण पर काडरों ने यह निश्चय किया कि वे ग़रीब किसानों के-से मामूली कपड़े पहन लें और उन किसानों के झुण्डों में जा मिलें जो सुरक्षित स्थान की तलाश में एक देहात से दूसरे देहातों को जारहे थे।

दुश्मन की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि होती गई। किसी को पता न था कि वे कितने हैं और कहाँ से आरहे हैं। लेकिन झीलों, नदियों, बाँधों वगैरह पर से यातायात के तमाम साधन जापानी पहरेदारों ने नष्ट-भ्रष्ट कर दिये थे। जब जापानियों ने निर्दयता के साथ हर हिलती-डुलती चीज़ पर गोलियाँ बरसाईं और गाँवों को घेर लिया तो देहाती लोग गेहूँ के खेतों में छिपने की कोशिश करने लगे।

एक दिन तीसरे पहर को जापानियों ने लगभग दस मील की परिधि का एक जाल बनाया और उसके केन्द्र की ओर मार्च करते हुए बढ़े। जब लोग पूर्व की ओर भागे तो पैदल सेना का सामना हुआ; और उधर से लौट कर जो पश्चिम की ओर लपके तो घुड़सवार चढ़े चले आ रहे थे—जिधर देखिए जापानी ही जापानी थे। स्त्रियाँ और बच्चे भयभीत हो रोने-पीटने लगे, गाँव पर गाँव आग की लपटों की भेंट चढ़ाया जा रहा था और जापानियों की बंदूकों की आवाज दम-ब-दम बुलंद होती जा रही थी।

दा-श्वी और अन्य काडरों ने अपनी कटुता पर काबू किया और अपनी पिस्तौलें खेतों में गाड़ कर उन स्थानों पर पत्थर या मिट्टी के ढेलों से निशान बना दिए। कुछ क्षण बाद दुश्मन की घुड़सवार सेना ने गेहूँ के खेतों में छिपे हुए लोगों को घेर कर बुरी तरह कस लिया। इस्पाती टोप पहने, चमड़े के जूते चढ़ाये जापानी पैदल सेना और हरी वर्दी में सजे हुए कठपुतली दस्तों ने चमकती हुई बंदूकें लिये किसानों को खदेड़ कर सड़क पर ले गये। मर्दों को औरतों से अलग कर दिया गया और मशीनगन चलाने वाले हर ओर से अपने शस्त्रों पर झुक गए।

एक 'दुभाषिया' और गैरफौजी पोशाक में एक गद्दार कैदियों की पंक्तियों में फिरते रहे और पूछते रहे, "वा लू कौन है? कम्युनिस्ट कौन है? बतलाओ हमें!"

कोई उत्तर नहीं।

"काडर कौन है? छापेमार कौन है?"

तब भी कोई उत्तर नहीं।

"हम जानते हैं यह जगह जापान-विरोधियों का अड्डा है!" सफेद कमीज पहने हुए एक गद्दार ने कहा, "और हम उन्हें ढूँढ कर छोड़ेंगे!"

अधीर हो एक जापानी अफ़सर ने किसी कठपुतली सैनिक को अपने साथ लिया और स्वयं पुरुष-कैदियों को एक-एक करके जाँचने लगा। उसने उनके हाथ देखे, टाँगों की पेशियाँ देखीं और पंक्ति में से अनेक किसानों को खींच कर बाहर निकाल लिया। मे उनमें से कुछ को पहचान गई पर दूसरों को वह न जान सकी। कुछ ही देर में त्सुर, बूढ़ा मंचूरियन कप्तान और दा-श्वी सबको आगे खींच लिया गया। मे का दिल दहल गया।

फिर 'मनोरंजन' के लिए औरतें छाँटी जाने लगीं। जब मे की बारी आई तो एक ग़द्दार ने कहा, "आय हाय, क्या पटाखा है! पर कहीं इसके गंदे चेहरे पर मोहित न हो जाना, इसने इसे तवे की स्याही से काला कर लिया है!" उन्होंने उसे धकेलकर उन लड़कियों में मिला दिया जिन्हें एक साथ ठूँस दिया गया था।

सूर्य अस्त हो रहा था। जापानियों ने पकड़े हुए कैदियों में से पाँच को, जिनमें त्सुर और बूढ़ा कप्तान भी था उनके हाथ बड़े कसकर उनकी पीठ पर बाँधे और उन्हें खेतों में धक्का देकर फेंक दिया। ग़द्दारों ने फावड़े निकाले और किसानों को हुक्म दिया कि वे गढ़े खोदें। जब उन्होंने इन्कार किया तो उनको सोटों से पीटा गया और ऐसी बेदर्दी के साथ कि आखिरकार उन्हें हुक्म मानना ही पड़ा।

पहला शिकार जिसे घसीटकर गढ़े के किनारे ले जाया गया अभी लड़का ही था, मृत्यु के भय से उसका खून सूख गया था और वह रो-चीखकर अपनी रस्सियाँ खोलने का प्रयत्न कर रहा था।

किसान बेचारे विपदा के मारे जोर-जोर से सिसकियाँ भरने लगे। "यह तो अभी बच्चा है!" उन्होंने फरियाद की। "इसे तो छोड़ दो!"

जापानियों ने उसके एक लात मारी और गढ़े में धकेल दिया।

अगली बारी बूढ़े कप्तान की थी। वह अपने दाँत पीस रहा था और एक तिरस्कृत दृष्टि से जापानियों को घूर रहा था। वह खामोशी के साथ गढ़े की ओर गया। गढ़े के किनारे पहुँचा ही चाहता था कि वह घूमा और अपनी भरपूर शक्ति से उसने एक जापानी सैनिक के अण्डकोश पर करारी लात

जमाई। कष्ट से कराहते हुए सैनिक की पुतलियाँ फिर गईं वह धड़ाम से नीचे आ गिरा। दूसरे दुश्मन-सैनिक बूढ़े कप्तान की ओर लपके और उन्होंने अपनी बन्दूकों के कुन्दों से प्रहार करके उसे अधमुआ कर दिया और खुली हुई क़ब्र में धकेल दिया।

क्रोध में दाँत पीसते हुए जापानियों और ग़द्दारों ने दो और आदमियों को गढ़े में धकेल दिया। फिर पाँचवें और अन्तिम व्यक्ति त्सुर को उन्होंने घसीटा। लातें मारकर और हाथ पाँव पटककर वह दुश्मन पर गालियाँ बरसा रहा था।

"तुम्हारी मा को—! चीनियों को तुम थोड़े ही मार सकते हो! आज नहीं तो कल तुम्हारा जनाज़ा निकलने वाला है!......" उन्होंने दूसरों के साथ उसे भी घसीटा पर वह भी गालियों से बाज़ न आया। लोगों में हलचल मच गई।

ग़द्दारों ने फौरन किसानों को गढ़े पाटने का हुक्म दिया लेकिन किसी ने उनका हुक्म न माना। उन्होंनें फावड़े छीने और खुद उन बलि के बकरों की चिल्ल-पों व कराहट को मिट्टी के ढेर तले दबा दिया। लोगों की आह व फरियाद उन्होंने सुनी-अनसुनी कर दी और उस भयानक क़ब्र पर मिट्टी डालकर उसे खूब ठोकने लगे।

बिगुल की आवाज सुनते ही जापानी बाकी कैदियों को लिये आगे को बढ़ गए।

ज्योंही वे नजरों से ओझल हुए कि लोगों ने हाथों से ही गढ़े की मिट्टी हटाना शुरू कर दी। पहला आदमी जो निकला मर चुका था; दूसरा—वह भी खतम हो चुका था......पाँचों दम घुट जाने से ऐड़ी से चोटी तक नीले पड़ गये थे।

फिर जो हृदय-विदारक रोना और मातम हुआ उसकी न पूछिए! घबराहट में झटपट उन्होंने अपनी उंगलियों से उनके मुँह और नथुनों की मिट्टी निकाली।

श्वाँग की आँखों से टप-टप आँसू गिर रहे थे। उसने बड़े धीरज के

साथ त्सुर की बाहें सहलाईं और उसे धीरे-धीरे साँस बहाल होने लगी।

दो और बच गये लेकिन वह लड़का और कप्तान न बच सके।

× × × ×

क़ैदियों को सड़क पर ले जाया गया, मर्द आगे औरतें पीछे। छः-छः के गिरोहों में उन्हें बाँध दिया गया था और हर गिरोह के दरम्यान जापानी सैनिक और ग़द्दार चल रहे थे। आदमी उनकी पीठ पर बँधे हुए थे और जापानियों द्वारा उनकी पीठ पर लादे गये चमड़े के थैलों के बोझ तले दबे वे लड़खड़ा कर चल रहे थे। थैलों की पट्टियाँ क़ैदियों की गर्दनों में लटक रही थीं जिनसे उनका दम घुँटा जा रहा था।

दा-श्वी कारतूसों की थैलियों से लदा हुआ था और एक भारी चमड़े का थैला अलग उसे दबा रहा था जिनसे उसके कण्ठ पर ऐसा दबाव पड़ रहा था कि साँस लेना भी दूभर होगया था। धीरे-धीरे वह थैले की पट्टी को सरका कर ठोड़ी तक ले आया, फिर उसे मुँह में रख लिया और कसकर दाँतों से दबा दिया। ज्यों-ज्यों वह चलता जाता था उसे त्सुर और बूढ़े कप्तान का ख्याल आता जाता था। गर्म आंसुओं से उसकी आँखें मिच गई थीं। उसने अपना सिर घुमाकर मे को देखना चाहा पर उसी क्षण जापानी सैनिक ने बड़ी कारी लात उसके मारी और आगे धकेला।

आगे जाती हुई घुड़सवार-सेना ने ऐसी धूल उड़ाई कि कैदियों की आँखों में भर गई। अब अपना रिसता हुआ पसीना और बहती हुई नाक पोंछने का एक ही तरीका रह गया था कि आगे को झुकें और अपने घुटने से मुँह पोंछ लें।

उफ! दा-श्वी ने सोचा। अब तो ये हमारी गर्दन पर आ बैठे जो जी में आ गया करेंगे। यह सुसरी कैसी ज़ालिम दुनिया है! चेयरमेन माओ ने कहा है कि जापान-विरोधी युद्ध तीन मंजिलों से गुज़रेगा तब जाकर हमें विजय प्राप्त होगी। लेकिन हमें ये दुख कब तक झेलना पड़ेंगे? जापानी तो ऐसे निकल

पड़े जैसे टिड्डियों के दल।...... मैं जानता हूँ विजय अन्त में हमारी ही होगी।......
पर रंज तो यह है कि उसे देखने के लिए मैं जिन्दा न रहूँगा !

जब वे एक छोटे गाँव में से गुजरे तो उन्हें नंगी स्त्रियों का एक समूह दीख पड़ा जो बेद वृक्षों की आड़ में दुबक रहा था। उनसे पचास गज की दूरी पर एक जापानी सिपाही टीले पर खड़ा दो पाजामे अपनी बन्दूक पर लटकाये लहरा रहा था। वह कुछ बक रहा था और अपना हाथ हिला रहा था। स्त्रियाँ सब-की-सब उसकी ओर दौड़ीं और पाजामे झपट कर पकड़ने लगीं पर उसने उन्हें और ऊपर कर दिया और खूब जोर-जोर से हँसने लगा।

एक दूसरे गाँव में पहले से भी अधिक नंगी स्त्रियाँ जापानियों के एक बड़े-से घेरे में घिरी हुई थीं। केन्द्र में एक गद्दार खड़ा था जिसके कंधे पर कुछ जोड़ी कपड़े लटक रहे थे। वह कुछ मुर्गियाँ पकड़े हुए था। कैदी उसकी बुलंद बाँग चिल्लाहट सुन रहे थे, "जो कोई भी इन मुर्गियों को पकड़ लेगा उसे कपड़े मिल जायेंगे !" उसने मुर्गियाँ फेंक दीं और जब नंगी स्त्रियाँ उन्हें पकड़ने के लिये परेशान हो इधर-उधर दौड़ीं तो जापानी सैनिक खुशी के मारे बेदम हो गये।

मे अपमान के इन बाणों से बेधित मन-ही-मन जल रही थी। उसने अपना मुँह दूसरी ओर को कर लिया। गाँव के अन्दर रोती-दहाड़ती स्त्रियों की आवाजें उसे सुनाई दे रही थीं जिन्हें सुनकर उसके रोंगटे खड़े हो रहे थे। उसके शरीर में आतंक की ऐसी झुरझुरी पैदा हुई कि उसने तय कर लिया कि मुझे इस भयंकर नरक-कुण्ड से किसी-न-किसी तरह निकल भागना है। लेकिन किस तरह ? जब उसने अपनी कलाइयों का जोर रस्सियों पर लगाया तो उसे यह महसूस करके अचरज हुआ कि वे ढीली पड़ गईं। उसने खूब खींचा-तानी की और आखिरकार वे इतनी खुल गईं कि आसानी से नीचे खिसक जायें, लेकिन उसने हाथ पीछे ही बाँधे रखे और अपने चेहरे की भंगिमा में कोई परिवर्तन न आने दिया।

रात हुई तो वे एक छोटे गाँव की सकरी घुमावदार गली से गुजर रहे थे। मे के गिरोह की निगरानी रखने वाले गद्दार ने अभी-अभी ज़रा सिर घुमाया

था। दूसरे कैदियों का गिरोह पीछे रह गया था और आँखों से ओझल था। मे ने झटका देकर अपने हाथ छुड़ा लिये और सड़क पर दौड़ती हुई एक सार्वजनिक शौचगृह में जा घुसी। वहाँ वह एक कोने में जाकर दुबक गई पर भय से उसकी कनपटियाँ अब भी काँप रही थीं।

बंदियों का जुलूस गुजर गया पर वह उसके बाद भी घण्टों वहाँ से न निकली क्योंकि उसे अब तक जापानियों की चीखें और ठहाके तथा उनके बूटों की मंद ठप-ठप सुनाई दे रही थी। उसे डर यह था कि कहीं सिपाही गाँव में ही न ठहर गये हों पर वह यह भी जानती थी शौचगृह में अनिश्चित समय के लिए रहना भी मुश्किल था। जब तक सारी चीजें कुछ शांत न हो गईं वह वहीं रुकी रही; फिर साहस बटोरते हुए वह चुपके से निकल कर गली में आ गई। दीवार से चिपके-चिपके और आहिस्ता-आहिस्ता छाँव में चलकर वह गाँव से निकल आई और अंधियारे विशाल खेतों में विलीन हो गई।

कुछ देर बाद जब वह थककर चूर हो गई तो बैठ गई और आराम करने लगी। उस घनी अंधियारी काली रात्रि में वह कहाँ थी इसका उसे भान ही न था। अकेली वह भयभीत थी और उसी भय के कारण वह रोने लगी। दा-श्वी और जिन्दा गड़े हुए साथियों की याद होते ही उसका हृदय खून के आँसू बहाने लगा।······

रात-भर और दूसरे दिन दिन-भर मे उन सुनसान खेतों में बिना खाये-पिये भटकती रही। भूख के मारे उसकी अंतरियाँ कल-कल कर रही थीं। तीसरे पहर के बाद वह एक गाँव में पहुँची। पहले बड़ी सावधानी से चारों ओर घूम लेने पर जब उसे विश्वास होगया कि वहाँ शांति है तो वह चुपके से घुस गई। गाँव की बड़ी गली खाली डिब्बों, सूअर की हड्डियों और मुर्गियों से भरी पड़ी थी। नोंचे हुए पर ग्रीष्म की सर्द हवा में बड़े नाज़ व अदा के साथ उड़ रहे थे। चारों ओर घर झुलस चुके थे या टूट-टूट कर गिर रहे थे। कुछ घरों में से अब भी धुँए के बादल उठ रहे थे। लकड़ी व अन्य चीजों के जलने की तीखी दुर्गन्ध नथौड़ों में घुसकर जी मतला रही थी। यत्र-तत्र रक्त के छोटे-छोटे तालाब दिखाई दे रहे थे जो बिल्कुल सूखे न थे।······उस क़त्लेआम के भयानक

दृश्य को देखकर मे का कलेजा मुँह को आ गया और वहाँ से झट हटकर पास की एक गली में चली गई। गली में पहला ही साबित मकान जो उसे मिला वहीं दरवाजे पर उसने हल्की दस्तक दी।

चालीस वर्षीय एक वृद्ध स्त्री ने दरवाजे की दरार में से झाँका। देखा कि एक अकेली लड़की है तो उसने उसे अन्दर बुला लिया। स्त्री ने कुछ रोटियाँ और उबला हुआ पानी मे को दिया। मे ने महसूस किया कि उसने ऐसी स्वादु चीजें कभी चखी ही न थीं। उन्हें बड़ी रुचि से चबाते हुए उसने जापानियों के बारे में मालूम किया।

स्त्री ने सर हिला दिया। "आज सुबह ही वे आये थे," उसने आह भरते हुए कहा। "और तीसरे पहर तक यहीं रहे। बड़ा भयानक दृश्य था। उन्होंने हम सबको घेर लिया और कहा कि जिस परिवार ने भी किसी बा लू को शरण दे रखी है वह फौरन उसे हमारे हवाले कर दे वरना हम एक-एक का सिर उतार लेंगे और सारे घरों में आग लगा देंगे। अइ हय! तीन के तो वहीं सड़क पर सिर काट दिये गये और उससे कुछ दूर दो को और मौत के घाट उतार दिया गया! फिर हमारे पड़ोसी का बच्चा—दो साल का होगा कितना प्यारा बच्चा था वह! पर एक हमारे जापानी ने उसे छीन लिया और टाँग पर टाँग रख कर उसके दो कर दिये! कितना खून-खराबा किया है उन्होंने! मेरी तो अक्ल काम नहीं करती! कोई ऐसी जगह नहीं जहाँ भाग कर शरण लें और यहाँ रहते मेरा खून सूखा जा रहा है!"

मे बहुत भूखी थी पर इन अत्याचारों को सुनते ही उसका हृदय विदीर्ण हो गया, भूख मर गई। और दो स्त्रियाँ खामोश बैठी थीं, भय और लाचारी ने उन्हें दबोच रखा था। फिर मे ने अपनी वह शोकग्रस्त मुद्रा जबरन बदल दी।

"अपन इसका भी हल निकाल लेंगे," उसने दूसरी स्त्री को सान्त्वना दिलाते हुए कहा। "एक बार यह विपत्ति जरा टल जाय फिर अच्छे दिन लाज़मी आ जायेंगे।"

स्त्री एकदम ताड़ गई कि यह लड़की हो-न-हो कोई काडर है। भय से उसका चेहरा पीला पड़ गया। "यह जगह तुम्हारे लिए सुरक्षित नहीं है।" वह

रो कर बोली। "झटपट रोटी खालो और चल दो।"

"लेकिन दुश्मन तो सब तरफ मौजूद है," मे ने प्रार्थना की। "कहाँ जाऊँगी मैं? जब तक मैं यहाँ हूँ कम-से-कम रात भर तो मुझे यहीं रहने दो। हम तो सब कुछ जनता के लिए करते हैं—तुम जैसे लोगों के लिए! अगर कोई आये तो उससे कह देना कि मैं तुम्हारी भांजी हूँ और दूसरे गाँव से आई हूँ। मैं विश्वास दिलाती हूँ कुछ नहीं होगा।"

स्त्री का हृदय पसीजा पर वह बुरी तरह भयभीत थी। कुछ क्षण वह दुविधा में रही।

"हम लड़ाके और आम लोग सब एक ही परिवार के सदस्य हैं।" मे की आँखों में आँसू आ गये। "फिर भला तुम मुझे दुश्मन के पंजे में कैसे फँसा दोगी?"

"ऐसा न कहो, बेटी!" स्त्री ने मे के कंधों पर स्नेहपूर्वक हाथ रखते हुए कहा। "मुझ से यह नहीं सुना जाता। रहो, तुम आराम से यहीं रहो।" स्त्री ने उसे बताया कि उसका बेटा कहीं बाहर गया हुआ है, बहू अपने पीहर गई हुई है और उसका पति पड़ौस में है। वे घर में बिलकुल अकेले हैं।

सहसा अनेकों पैरों की एक साथ थप-थप और सड़क पर भारी पहियों के चलने की आवाज़ें उनके कानों पर पड़ीं। स्त्री ने दौड़ कर कम्पाउण्ड का फाटक बन्द कर दिया। जब लौटी तो उसका चेहरा पीला था और भय के मारे उसका दिल धड़क रहा था।

"जापानी फिर आ गये हैं!" उसने हाँपते हुए कहा। "उस कमरे में, ज़रा फुर्ती करो।"

स्त्री ने मे को अगले कमरे में धकेल दिया, उससे कहा काँग पर लेट जा और एक जीर्ण-शीर्ण पुराना लिहाफ उस पर ढँक दिया। फिर वह आश्चर्य-जनक गति से अपने छोटे-छोटे पैरों पर चल कर फौरन कमरे के बाहर आ गई और एक डोंगा गंदा पानी लेने के लिए गई। पानी लाकर उसने काँग के पास के फर्श पर छिड़क दिया। फिर मुट्ठी-भर राख पोखरी में बिखेर दी। उसने मे के तकिये के पास एक टूटी-फूटी चाय की केतली और गद्देदार लोटा रख दिया।

और पलंग की पाँती के पास बदबूदार जूते पटक दिये।

पड़ोसी के दरवाजे पर धड़धड़ और जापानियों की चीखों व गालियों की आवाज़ें उन्हें सुनाई दे रही थीं। स्त्री का पति जो अब तक पड़ौसी के यहाँ था शोर-गुल सुनकर दीवार फाँद कर घर वापस आ गया।

"वे घर-घर जाकर जाँच-पड़ताल कर रहे हैं।" उसने शयन-कक्ष में प्रवेश करते हुए हाँफकर सूचना दी। फिर उसकी मे पर नजर पड़ी और उसके पैरों तले की ज़मीन खिसक गई। "तुम यहाँ क्या कर रही हो?" और जब मे ने कोई उत्तर न दिया तो उसने व्याकुल हो अपने पैर जमीन पर पटके। "निकल जाओ यहाँ से, जल्दी करो! क्या हम पर मुसीबत डालने की बद आई हो?" वह फुसफुसाया। "वे सब कुछ जलाकर खाक करदेंगे, क़त्लेआम मचायेंगे—जानतीं नहीं?"

मे उठ बैठी, उसकी आँखों में आँसू भर आये। पूर्व इसके कि वह कोई जवाब दे गालियों और भारी जूतों की आँगन के फाटक पर पड़ती हुई भाट-भाट की आवाजें सुनाई पड़ीं और रोना-पीटना पड़ गया। "इनकी मा का भड़वा—किसने साले ने इसे ताला लगा दिया? अबे मरना चाहते हो क्या?" किसी की बुलन्द कर्कश ध्वनि सुनाई दी।

स्त्री ने अपने पति को धक्का देकर अलग किया। मे को जबरन काँग पर लिटाया और उसे उसी पुराने लिहाफ से पैर तक ढँक दिया।

दरवाजे पर धड़-धड़ जारी रही और फिर चरँखचूँ के बाद धड़ाम की आवाज हुई और दरवाजा टूट कर गिर पड़ा। आठ जापानी और गद्दार धड़-धड़ाते हुए अन्दर घुस आए और जोर-जोर से पति-पत्नी को वा लू को शरण देने का अपराध लगाने लगे। मे को लिहाफ हटा कर देखने का साहस न हुआ पर फर्नीचर के टूटने की आवाज उसे सुनाई दी थी। वह भय से काँपने लगी। उसे शक हुआ कि कहीं स्त्री का पति भेद न खोल दे और उसे उन हत्यारों के हवाले न कर दे। अरे पर हिलती डुलती क्यों है? अगर तुझे मरना ही है तो मर जायगी! मे ने डरते हुए अपने आपसे कहा और फौरन वह शांत व स्थिर हो गई।

"हम तो किसान हैं। हम क्या जानें कौन है बा लू ?" पति ने विरोध-स्वरूप कहा। जो मे को भी सुनाई दिया।

जापानियों ने उससे पैसे माँगे और जब वह न दे सका तो उन्होंने उसे पीटा। फिर "बा लू, बा लू!" चीखते हुए वे काँग की ओर बढ़े।

स्त्री ने बहाना बनाया कि वह बहरी है। "मैं तुम्हारी बात नहीं समझती," वह चिल्लाई। "क्या चाहते हो तुम ?"

जापानी सरदार ने उन बदबूदार जूतों को और काँग के इर्द-गिर्द पड़ी गन्दगी को देखा। "वह क्या चीज है ?" उसने उस लिपटी हुई पोटली की ओर जिसमें मे थी इशारा करते हुए पूछा।

"मेरी भांजी है," स्त्री ने गरज कर कहा। "बीमार है······कई दिन से उसने कुछ भी नहीं खाया ·····बस दवाओं पर ज़िन्दा है!"

"बा लू कहाँ है ?" जापानियों ने ज़ोर देकर कहा। उसने अपनी बंदूक के कुन्दे से लिहाफ उठाना चाहा पर मे ने उसे अन्दर से सख्ती से पकड़ रखा। एक गद्दार आगे बढ़ा और उसने लिहाफ उतार कर अलग फेंक दिया।

"ढँक दो उसे!" स्त्री ने आग्रह किया। "उसने अभी दवा पी है! उसे सर्दी हो जायगी!"

गद्दार ने ज़ोर से मे का तकिया खींचा और उसे फर्श पर फेंक दिया। मे ने अपने पर काबू रखा, कमजोरी से खाँसी और अपनी आँखें मूँदलीं मानो अर्धमूर्छित हो।

"धीरज रखो, बेटी!" स्त्री ने सिसकी लेते हुए कहा और उसका माथा थपथपाया। "मैं अभी तेरे लिए थोड़ा पानी उबाल दूँगी!"

जब पति ने यह बड़बड़ाते हुए कि उसकी भांजी बहुत बीमार है लिहाफ उठा कर उस पर ढँका तो जापानी सरदार ने प्रश्नसूचक दृष्टि से उसे घूरा।

"स्त्री-संस्था!" जापानी चिल्लाया पर अब भी जाँच करता रहा।

"क्या कह रहे हो तुम ?" 'बहरी' स्त्री ने पूछा। "तुम्हें राशन चाहिए ? हमारे घर में तो है नहीं, फिर भी देखती हूँ शायद कुछ हो!"

"आओ चलें!" एक गद्दार ने झुंझलाकर कहा। "यहाँ समय नष्ट

करना बेकार है। दूसरे यहाँ बदबू कैसी आ रही है, जी मचलाता है।"

चली गई धाड़ जापानी भाषा में बड़बड़ाती हुई। पति ने जाते ही चटपट द्वार बन्द कर दिया।

"मैं तो समझा था हम सब गये!" स्त्री ने चैन की साँस लेते हुए कहा।

मे काँग से उठकर आई और उसने स्त्री के गले में बाँहें डाल दीं। "मैं यह कभी न भूलूँगी," उसने आभार-प्रदर्शन करते हुए कहा। "तुम मेरी दूसरी मा हो!"

"माफ करना कामरेड, मैं पहले बात समझा न था।" पति ने क्षमा-याचना की।

"ऐसा न कहिए चाचा जी!" मे ने उत्साहित होकर कहा। "मैंने ही आप को इतना कष्ट दिया और आपके लिए खतरा पैदा किया.........असल में तो आप मुझे क्षमा करें! ज़माना नाज़ुक है पर जब दिन पलटेंगे तो मैं यहाँ अक्सर आया करूँगी और आप दोनों का ढंग से शुक्रिया अदा करूँगी।"

मे ने रात वहाँ काटने का निश्चय किया पर जब सुबह हुई तो उन्हें पता चला कि जापानी अभी तक गाँव में ही मौजूद हैं। फिर भी उसने खतरा मोल लेने का ही संकल्प किया। पति ने उसको बड़े सुरक्षित रास्ते पर लाकर छोड़ दिया और उधर जापानी अपने नाश्ते में व्यस्त रहे इधर वह देहात की ओर भाग गई।

खेत गेहुओं से लदे हुए थे। बालियाँ मन्द वायु के झोंकों में लहलहा रही थीं। अनाज के पौधों और उन्नत काओलियाँग के आस-पास चारा उग रहा था, पर उसे खोदने वाला कोई न था। मे ऐसे सैकड़ों किसानों से मिली जो भयभीत थे और अनाज के खेतों में छिपे हुए थे। औरतों ने अपने स्तन बच्चों के मुँह में दे रखे थे ताकि वे रोयें नहीं। और उनकी आँखों से बहे आँसुओं के मोती उन शिशुओं के गालों पर गिर रहे थे। दुश्मन के अश्वारोही और उनकी गाड़ियाँ इधर-उधर सड़कों पर फिर रही थीं और उधर शरणार्थी निश्चल और साँस रोके हुए भयभीत निगाहों से उन्हें देख रहे थे।

दोपहर होने तक आस-पड़ौस में बन्दूक की गोलियों की आवाज़ गूँजती

सुनाई पड़ी। मै ने गेहूँ की बालियों के ऊपर से झाँक कर देखा कि कुछ जापानियों की एक टोली कल्लू ऱ्से का पीछा कर रही है और कुछ आदमी सड़क पर चल रहे हैं। वे दौड़ते जाते थे और सड़क के दोनों तरफ गोलियाँ बरसाते जाते थे। अब एक मशीनगन भी कड़कड़ाने लगी और मे का हृदय शरीर से अलग होकर अपने साथियों पर छाये अँधाधुँध भय व आतंक में जा पहुँचा। लेकिन जब कल्लू ने चिल्लाकर हुक्म दिया और अपना हाथ हिलाया तो उसके साथी कटकर सड़क के सामने के खेतों में जा घुसे। वह पीछे रह गया। उसके दोनों हाथों में पिस्तौलें चल रही थीं और वह उन्हें भगा कर बचाना चाह रहा था।

यकबयक तोप का एक गोला फटा और वायुमण्डल उसके धमाके से छिन्न-भिन्न हो गया। कल्लू के ठीक पीछे खड़ा एक छोटा वृक्ष धमाके के साथ ही आकाश की ओर उड़ गया। मे भयभीत और आतंकित हो देख रही थी कि उसके कपड़ों में आग लग गई है और वह कूद रहा है। वह टेढ़े-मेढ़े ढंग से भागता रहा और अपने धुआँग्रस्त, जले-फटे कपड़ों के टुकड़े उतार-उतार कर फेंकता गया। कपड़े उतारने पर उसकी गर्दन और कंधों के घाव दीख पड़े जिनमें से रक्त बह रहा था। अन्य छापेमार पहले ही निकल चुके थे और अब कोई दो सौ से भी अधिक जापानी अकेले कल्लू के पीछे पड़े हुए थे। अन्तिम बार जो मे ने उसे देखा तो वह ज़ोर-शोर से काओलियाँग के ऊँचे-ऊँचे पौधों में कूदा और ग़ायब हो गया जबकि जापानी पागलों की भाँति चीखते-चिल्लाते उसका पीछा करते रहे और सिर पर तोप के गोले फटते रहे।

असंख्य शरणार्थी निरुद्देश्य इधर-उधर भटकते फिरे। एक बार मे संयोगवश निउर से टकरा गई और वे दोनों लड़कियाँ एक-दूसरे से लिपट कर खूब रोईं। कुछ समय तक वे साथ-साथ रहीं और जब भी उन्हें भूख लगी माँग कर उन्होंने काम चला लिया। फिर जब एक बार वे दोनों अयाचित जापानियों की टोली के सामने पड़ीं तो भागने में एक दूसरे से बिछुड़ गईं।

कुछ देर बाद मे जब करीब-करीब थक चुकी थी तो उसे एक बूढ़ी स्त्री मिली जो जड़ी-बूटी तोड़ रही थी। "मा," उसने मिन्नत की, "मुझे शरण दो। मेरा इस संसार में अब कोई नहीं रहा। मुझे अपने घर ले चलो और अपनी बेटी बना लो।"

स्त्री को उस पर दया आ गई। वह मे को एक तबाह व बरबाद छोटे-से गाँव की एक जीर्ण-शीर्ण इमारत में ले गई।

दो दिन बाद बातचीत के द्वारा स्त्री को पता चल गया कि मे काडर है। भयभीत हो उसने मे को चले जाने की आज्ञा दी।

"देखो न बाहर कैसा घना अंधकार है," मे ने करुणाजनक स्वर में कहा, "और कितनी मूसलाधार बारिश होरही है। कहाँ निकाले देती हो मुझे ऐसे में?"

वृद्धा भय से कंपित हो उठी। "तुम्हें जाना ही पड़ेगा! अभी परसों एक औरत ने किसी बा लू को आश्रय दिया था और उसके सारे परिवार के लोगों के सिर काट लिये गए थे। उसकी—उसकी बहू की छातियाँ काट दी गई थीं··· उसके आंतरिक अवयव सब जमीन पर बिखेर दिये गए थे······अगर तुम न गईं तो मुझसे वह भयावना दृश्य न देखा जायेगा।"

मे ने विनती की कि उसे सुबह तक ठहरने दिया जाय पर स्त्री ने एक न सुनी।

"इन जापानियों से······मेरी रूह काँपती है उन ज़ालिमों से······यह न समझो मैं निष्ठुर हूँ······" नेत्रों में अश्रु-धारा लिये उसने मे को विवश हो दरवाजे के बाहर कर दिया।

मूसलाधार वर्षा में सिर से पैर तक भीगी हुई और घोर अंधकार में डूबी मे वायु के प्रचण्ड झोकों का सामना करती हुई निर्जन गली में चल पड़ी। जिस-जिस दरवाजे पर उसने दस्तक दी वह बन्द, कहीं चिड़िया का पूत तक न था। ठण्ड और मेंह से परास्त आखिरकार उसने गाँव के सिरे पर स्थित एक मन्दिर में शरण ली। अभी वह दाखिल हुई ही थी कि बिजली के एक प्रचण्ड कड़ाके ने कमरे की एक-एक जगह प्रकाशित कर दी। एक विशाल हरे मुख की मूर्ति

जिसका भारी मुँह भयंकर रूप से खुला हुआ था, ऐसा लगा जैसे अपनी चमकीली आँखों से ठीक उसी को घूर रहा हो। उसके मोटे-से दाहिने हाथ में एक बड़ी लोहे की चाबुक थी जो मारने के लिये उठी हुई थी। उसी क्षण अपने बचपन की तमाम भयंकर, अंधविश्वासपूर्ण कथायें उसके मस्तिष्क में घूम गई और उसके रोंगटे खड़े होगये। भयानक चीत्कार के साथ वह वहाँ से भागी।

बुरी तरह त्रस्त और दुखी हो मे मंदिर के आँगन के एक कोने में जा छिपी और खूब रोई। जापानी चारों ओर फैले हुए थे। उन्हें क्योंकर परास्त किया जा सकता था? उसके साथी—दा-श्वी, श्वाँग, कल्लू त्से सब बिछुड़ चुके थे, संभव है मर गये हों। अब वह अकेली बची थी। जापानी आधी रात को अगर निकल पड़ें और उसे पकड़ कर मार डालें तो कौन गवाही देगा कि उसने प्रतिकार आंदोलन में अपना जीवन न्यौछावर कर दिया था। फिर भला वह अपना प्रण कि वह दृढ़ और अडिग रहेगी, कैसे पूरा कर पायगी?

उसे अपनी मा का ख्याल आया जिसे वह देख ही न पाई थी और दो वर्ष पहले उसका देहान्त होगया था। उसे अपना बच्चा याद आया जो जिनलुंग की लापरवाही और क्रूरता की भेंट चढ़ गया। वर्षा की बूँद अपनी सतत गति से ऐसे गिर रही थीं मानो त्रस्त व दुखी जनता की आँखों से आँसू बह रहे हों। क्रोध, कटुता और वेदना ने उसे दबोच लिया था। दुख के अथाह समुद्र में डूबी वह बैठी थी कि उसे आँगन की दूसरी ओर एक चर्खी दिखाई दी। वह समझ गई कि उसके नीचे अवश्य कोई कुँवा होगा। बिलख-बिलख कर रोती हुई वह उस कुएँ की ओर रेंगती हुई चली इस निश्चय के साथ कि उसमें डूबकर प्राण दे देगी।

बिजली कहीं अधिक भयावह रूप लिये कड़की। वह भय से काँप उठी फिर अपने हृदय की आसाधारण धड़कन को शांत करने की ग़रज़ से वह क्षण भर के लिए रुकी।

प्रबल विचार जिन्हें दबाना दूभर था उसके चैतन्य पर आ-आकर टकराने लगे और जमने लगे। वह कम्युनिस्ट थी और चेयरमेन माओ के चित्र के सम्मुख प्रण कर चुकी थी।......उसके नेताओं ने उसे आदेश दिया था

कि वह दृढ़ व अटल रहे और नैराश्य के सम्मुख घुटने न टेके। आत्मघात जैसी निष्फल और निरर्थक मृत्यु से क्या लाभ? उसे कल्लू के सुनाये हुए वे किस्से स्मरण हो आये कि किस प्रकार लाल सेना ने हिमाच्छादित पहाड़ों और धूप से तपते हुए मैदानों को पार किया था और किस प्रकार उन सैनिकों ने भारी आपत-काल में भी जीवट न छोड़ा था और अटल रहे थे। मे को वह घटना भी याद हो आई जब कुछ ही दिन पहले कल्लू लहू-लुहान अपने से कहीं अधिक, सैकड़ों जापानियों से अकेला जूझे जा रहा था।

कितनी लज्जास्पद बात होगी यदि मैंने आत्महत्या कर ली तो, उसे अनुभव हुआ। यदि मुझे मरना ही है तो मेरी मृत्यु का कुछ मूल्य होना चाहिए! वह अपने भाइयों के हित के लिए होनी चाहिए।

व्यग्र व निर्बल हो वह बड़ी देर तक कुएँ की जगत पर झुकी खड़ी रही। उसे तो तब होश हुआ जब सरसराती हुई ठण्डी हवा उसके वर्षा में भीगे हुए कपड़ों में से शरीर में प्रविष्ट हुई और वह जोर से काँपने लगी। वह रेंगती-सरकती फिर उसी कोने में जा पहुँची और थकावट से चूर कुछ देर में उसकी आँख लग गई।

× × × ×

प्रभात होते-होते बारिश थम गई थी। मे की आँख खुली, उसके गीले कपड़े उसके बदन से बुरी तरह चिपक गये थे। जापानी संतरियों के डर से वह गाँव से चल पड़ी और चलते-चलते एक भग्न, ग्रामीण स्थान पर जाकर रुकी। बगीचे में एक छोटी सी झोंपड़ी के दरवाजे पर निउर और काडरों के स्कूल की उसकी सहपाठिनी—तियेन और अध्यापिका मिस चेन खड़ी हुई थीं! वर्षों से बिछुड़े हुए कुटुम्बियों की नाईं। स्त्रियों ने आँखों में आनन्द के आँसू लिये एक-दूसरे का आलिंगन किया।

"आप लोग कितनी बदल गई हैं!" मे ने उदास हो कहा।

"और तुम भी तो," उन्होंने उत्तर दिया।

उन्होंने उसके गीले कपड़े उतरवाये और उन्हें निचोड़ कर सूखने के लिए डाल दिया। और तब तक के लिए उसे कुछ चीजें पहनने को दे दीं। उन्होंने उसे बताया कि मिस चेन जब एक बार जापानियों से बचकर भागना चाहती थीं तो एक दीवार पर चढ़ने से उनकी टाँग टूट गई थी; तियेन को उदर-संबन्धी कुछ ऐसी पीड़ा हुई और ऐसी दुहरी हो गई थी कि कुछ दिनों तक अपनी कमर भी सीधी न कर सकती थी। लेकिन इन कष्टों के बावजूद वे जोश व खरोश से पूर्ण थीं।

"अगर मेरी पुटलिया यहाँ होती तो क्या कहने थे," निउर ने शरारत से कहा। "मे तुम्हें याद है उस दिन जब हम जापानियों से बचकर भागे थे और बिछुड़ गये थे? मैंने तो अपनी पुटलिया वहीं एक घास के मैदान में फेंक दी थी, मेरी सारी चीज़ें उसी में रह गईं। दो दिन और दो रातें इधर-उधर भटकने के बाद मैं फिर उसी जगह पहुँच गई—किस तरह यह न पूछो—और क्या देखती हूँ कि पुटलिया वहीं पड़ी हुई है! अब जब फिर हमें भागना पड़ा तो वही चीज कमबख्त फिर गुम हो गई!"

लड़कियाँ खिला-खिला पड़ीं।

"अरे, इतनी जोर से नहीं," मिस चेन ने उन्हें सावधान किया। "सड़क के हम बहुत करीब हैं। आओ अब यहाँ से चल दें।"

मे और निउर ने अध्यापिका को सहारा दिया और वे निकल पड़ीं। तियेन अपने दोनों हाथ पेट पर रखे आगे को झुककर चल रही थी।

"यह मेरी पीठ भी दर्देसर ही है!" उसने कराहते हुए कहा। "कुछ भी क्यों न करना हो यह मरी सीधी ही नहीं होती! वाक़ई अब तो बस!"

गैरजिम्मेदार निउर भी फौरन उसका उपहास करती हुई ऐसी कराही और ऐसे-ऐसे अतिरंजनात्मक मुँह उसने बनाये कि वे सब-के-सब अन्दर-ही-अन्दर हँसते-हँसते बेदम हो गये। पर ठीक उसी समय मिस चेन और वे दोनों लड़कियाँ जिनके सहारे वह चल रही थीं यकायक गीले खेत में चली गईं और ऐसी फिसली कि कीचड़ में लथपथ हो गईं और कीचड़ का एक लोंदा निउर की नाक पर उड़ कर लगा। अब जब उठना दुश्वार होगया तो सब-की-सब जोर

जोर से क़हक़हे लगाने लगीं।

"अच्छा बदला मिला!" तियेन ने आनन्दित हो कहा और निउर के शरीर पर लगी पीली कीचड़ की ओर संकेत किया। "मुझे चिढ़ाने का कैसा मज़ा चखा! जानती हो बच्चे क्या कहते हैं: 'हमको चिढ़ायगा तो मुँह सड़ जायगा; हमारी चाल चलेगा तो कुत्ता बन जायगा!' तो तुम अब तो काफी पीली हो गईं ना!"

हँसी के मारे लोट-पोट उन्होंने मिस चेन को उठाया। निउर ने उनकी बांहें लीं और मे ने उनके पैर थामे। शत्रु से आँख बचाते-बचाते वे झूमती हुई गेहूँ के खेतों में चलती रहीं।

"मुझे तो लगता है मैं उस नाटक की नायिका बन गई हूँ जो बादल के साथ उड़ी जा रही थी," मिस चेन ने झूठा आराम प्रकट करते हुए कहा।

अगले कुछ दिनों तक वे इसी प्रकार देहाती इलाकों में घूमती रहीं लेकिन किसी गाँव में दाखिल होने का उन्हें साहस न हुआ। लेकिन उधर खाने-पीने की समस्या भी थी, उनके पास तो नाम को भी कुछ न था। जब कभी उन्हें कोई किसान मिल जाता वे उससे रोटी माँग लेतीं और उसी के चार हिस्से कर लेतीं, हर एक ज्यादा-से-ज्यादा दूसरे पर लादने को सचेष्ट रहती। बाकी दिन तक वे मीठा सोया, जंगली प्याज—या कोई भी और चीज जिसमें जरा भी तत्व होता तो खा लेती थीं। उनकी आँखों के नीचे गहरी झुर्रियाँ पड़ गईं; उनके पेट ऐसे लगते थे जैसे उनमें मरोड़े दिये जा रहे हों।

गीले फर्श पर अपने वही बारीक कपड़े पहने वे सो जाती थीं, ढँकने के लिए सिवाय आकाश के उन पर कुछ न होता था। भूख कभी उनका पीछा छोड़ती ही न थी। मिस चेन को जुकाम होगया जो तेजी से बढ़ा और उनकी हालत बड़ी नाजुक हो गई। बुखार से उनका सारा शरीर तप रहा था। लड़कियों ने उन्हें अपनी बाँहों में सम्हाले रखा और उनके इलाज की कोई युक्ति सोचने लगीं।

"यह नहीं हो सकता," मे बोली। "एक स्वस्थ व्यक्ति भी इस प्रकार का जीवन अधिक दिनों तक नहीं बिता सकता। और बीमार का तो कहना ही क्या?

हमें इन्हें किसी गाँव में ले जाना चाहिए जहाँ यह जरा आराम कर सकें और कुछ ढंग की खुराक इन्हें मिल सके।"

मिस चेन ने इस सुझाव का विरोध किया। "नहीं, नहीं वह जोखों का काम है!" उन्होंने निर्बल स्वर में आदेश दिया। "मेरी तो स्थिति शायद किसी तरह भी न सुधर सके। न मैं चल-फिर सकती हूँ, न ही खड़ी रह सकती हूँ, मैं तो आप लोगों पर एक खासा बोझ बनी हुई हूँ। यदि हम गाँव में चले गये तो हम सभी का सफाया हो जायगा। मेरे ख्याल में तो तुम लोग मुझे छोड़ दो और अकेली ही चली जाओ!"

"ऐसी बातें न कीजिए!" लड़कियाँ कष्ट से चिल्लाईं। अगर हम मरीं तो सब साथ ही मरेंगी!"

मिस चेन के विरोधों पर ध्यान न देकर वे उन्हें उसी रात करीब के एक गाँव में ले गईं। गाँव की सरहद पर जाकर वे रुक गईं; मे और निउर स्थिति आँकने के उद्देश्य से आगे गईं। फिर लड़कियाँ इस खुशखबरी के साथ लौटीं कि दुश्मन अभी-अभी गया है। उन्होंने एक किसान स्त्री तलाश कर ली जो उन्हें अपने यहाँ रहने देने को तैयार हो गई!

मिस चेन को उठाये हुए उन्होंने चुपचाप गाँव में प्रवेश किया और एक छोटे-से छप्पर वाली झोंपड़ी में गईं। एक चालीस वर्षीय स्त्री ने दरवाजे में से अपना सिर निकाला। और बड़ी सतर्कता से अपने इर्द-गिर्द देखा।

"झटपट अन्दर आ जाओ और शोर-गुल न करो!" वह फुसफुसाई।

उसने अपनी पुत्री को दरवाजे पर खड़ा कर दिया ताकि देखती रहे और उन चारों को एक अंदरूनी कमरे में ले गई। उसने मिस चेन को एक गरम काँग पर लिटा दिया, उन्हें एक लिहाफ ओढ़ा दिया और फिर दिया गुल कर दिया।

"हम सब एक ही परिवार के सदस्य हैं—मैं भी प्रतिकार आंदोलन में ही हूँ," स्त्री ने मंद स्वर में कहा। "जब तक तुम्हारी इच्छा हो तुम ठहर सकती हो। अगर जापानी फिर आगये तो हम तुम्हें वापस खेतों में ले जायेंगे। आराम से बैठ जाओ, मैं अभी तुम्हारे लिए पानी उबाल लाती हूँ।"

मिस चेन के अलावा तीनों लड़कियों ने बड़े आराम के साथ अपनी थकी-हारी हड्डियाँ सीधी करने के लिए खूब खुलकर लेट लगाई। फौरन उनकी आँख लग गई। कुछ क्षण बाद स्त्री ने आ कर उन्हें गहरी तंद्रा से जगाया। दिया बड़ा उल्लसित हो जगमगा रहा था और खिड़की एक पुराने लबादे से से ढँकी हुई थी।

"उठिये कामरेड, हम लोग खाना खालें," उसने धीमे स्वर में कहा। "कई दिन से मैं यह खाना छिपाती आई हूँ—डर यह था कि कहीं जापानी इसे हड़प न करलें। आज मुझे इससे ज्यादा कोई खुशी नहीं कि आप लोग इसे खायेंगी!"

उसने शोरबे के चार गरम-गरम प्याले काँग पर रख दिये थे। अब उसने प्रत्येक स्त्री को दो-दो चॉपस्टिक्स थमा दीं। उन्होंने जो प्याले उठाये तो आटे की बनी हुई 'नूडल' और सुगन्धित प्याज को उनमें तैरती हुई देखकर उन्हें महान आश्चर्य हुआ। नूडल गरीब किसानों के ऐश व इशरत की चीज थी, उन्हें पाकर अचंभा होना स्वाभाविक ही था। आय हाय! इतने दिनों तक अल्लम-गल्लम खाने के बाद उन्हें यह स्वादिष्ट भोजन नसीब हुआ था। वे हँसते-हँसते लोट-पोट हो गईं और आनन्द-मिश्रित अश्रु-धारा उनके नेत्रों से प्रवाहित हो गई।

"मा जी," निउर ने सिसकते हुए कहा। "अगर तुम हमें मामूली-सी रोटियाँ ही दे देतीं तो भी बहुत होता! लेकिन आटे के—आटे के नूडल बनाने में......"

लड़कियाँ और मिस चेन के कलेजे पसीज गये। और जब उस शालिनी स्त्री ने उनसे खाने के लिए आग्रह किया तो उसकी भी आँखें डबडबा गईं।

× × × ×

रात के भोजन के बाद मिस चेन के अलावा वे सब गेहूँ के खेतों में गईं और वहाँ उन्होंने एक गहरी और चौड़ी गुफा खोदी जिसमें एक सूराख

किया। काम में उनकी सारी रात लग गई क्योंकि उन्हें रात के अँधेरे में काम करना पड़ा और खोदी हुई मिट्टी लेजाकर गुफा से कहीं दूर फेंकनी पड़ी। स्त्री जाकर घर से सूखा ईंधन ले आई जिससे उन्होंने फ़र्श घेर दिया।

उन्होंने अपना सारा समय गुफा में लगाने का निश्चय किया क्योंकि जापानी निरंतर धावे मार रहे थे और किसी भी समय आ धमकते थे। दिन में दो बार स्त्री और उसकी बेटी चुकन्दर उखाड़ने के बहाने वहाँ आतीं और उन्हें खाना दे जातीं तथा जापानियों के हमले की खबर दे देतीं। स्थिति उत्साहजनक न थी। गाँव में एक कठपुतली सरकार स्थापित कर दी गई थी। पास-पड़ौस के बड़े-बड़े क़स्बों और गाँवों में जापानी और कठपुतली दस्ते किले निर्माण कर रहे थे और उनमें रह रहे थे।

कई दिन तक उस अँधियारी, नम गुफा में रहते-रहते उनका हुलिया बिगड़ गया था, सारे शरीर में फफोले और फुंसियाँ हो गई थीं और वैसे भी उनकी दशा शोचनीय थी। चारों इस प्रकार ठँसकर, गेंडुरी बना कर बैठी थीं कि पैर फैलाने की भी गुंजाइश न थी। छत इतनी नीची थी कि उन्हें अपने सिर कंधों में ही दबाये बैठना पड़ता था। "ठीक उसी तरह जैसे कसाई की दूकान पर मुर्गों को वस्त्र पहना कर रख देते हैं," मे ने उदासी से कहा।

"यहाँ इस तरह छिपे रहने से तो मेरा दम घुटता है," निउर ने कराहते हुए कहा। "मुझसे कोई कुछ भी लेले अगर मुझे बाहर जाकर घूमने-फिरने को मिल जाय।"

"चुपचाप इसे सहन करती रहो, इसी में खैर है।" तियेन ने कहा। "बेकार मुसीबत मत मोल लो।"

"अगर हमें पता चल जाय कि हमारे साथी कहाँ हैं तो हम उनसे मिल लें," मिस चेन बोलीं।

"गुफा हम चारों के लिए छोटी है। यदि इसमें दो ही रहें तो बड़ी सुविधा हो जाय। यदि मैं और निउर जाकर कुछ सम्बन्ध स्थापित करें तो क्या ख्याल है आपका?" मे ने मिस चेन को सुझाव दिया। "तियेन यहाँ रहेगी और आपकी देख-भाल करेगी। यदि हम सफल होगये तो हम आपको ले जाने

के लिए आदमी भेज देंगे। कहिये क्या कहती हैं?"

और यही निश्चित हो गया।

उसी रात दोनों लड़कियाँ गुफा में से रेंगकर बाहर आईं और ह्वाँग हा गाँव की ओर चल पड़ीं। वे अपने साथ एक पुरानी टोकरी ले गईं जिसमें उस स्त्री ने मीठे उबले हुए आलू और रोटियाँ भर दी थीं। इतने दिनों तक गुफा रूपी कैद में बन्द रहने के बाद अब जो वे नर्म ग्रीष्म रात्रि में खुली सड़क पर चल रही थीं तो उन्हें अपार आनन्द अनुभव हो रहा था। निउर खूब गहरी साँसें ले रही थी, वह कहती थी कि डैफोडिल फूल की सुगंध आ रही है।

"नहीं, नहीं।" मे बोली, "यह तो हरे गेहुँओं की सुगंध है। अब हम फिर अपनी सरगर्मियाँ जारी कर सकते हैं क्योंकि खेत ऊँचे, हरे-हरे पत्तों से ढँक गये हैं।"

वे गाँव के किनारे पहुँचीं और कुछ सुनने के लिए छाया में खड़ी हो गईं। गाँव सन्नाटे में डूबा हुआ था। कुछ खुसर-पुसर के बाद वे गाँव में दाखिल हुईं और सकरी गलियों में होती हुई चलीं। कोई भी न दिखाई देता था। किसानों के घरों के दरवाजे पूरी तरह बन्द थे और उनमें सरिये लगे हुए थे। उन्हें दस्तक देने का साहस न हुआ। व्यग्रता और घबराहट में वे सकुचाने लगीं। एक विदेशी रेकार्ड की जो फोनोग्राफ पर बज रहा था आवाज और किसी की अस्पष्ट बड़बड़ाहट उन्हें साफ सुनाई दे रही थी।

मे ने निउर की बाँह जोर से पकड़ ली। "हम ठीक उनके मुँह में आ पहुँचे हैं!" वह भुनभुनाई।

सशंक हो निउर ने अपना सिर गली के एक कोने में से निकाल कर आम सड़क की ओर निगाह डाली। किले का एक ऊँचा मीनार उसकी नजरों के सामने चमक रहा था। वह फौरन पीछे को हट गई।

"कैसी फूटी तकदीर है हमारी!" वह बुदबुदाई। "चलो यहाँ से भाग चलें!"

घूमकर ज्यों ही वे चलने लगे कि एक दरवाजा खुला और एक आदमी उसमें से बाहर निकला, लड़कियों की भय से घिग्घी बंध गई! "खड़ी रहो वहीं!"

वह गरजा। "क्या कर रही हो यहाँ ?"

"हम तो भिखारिन हैं," निउर ने झटपट कह दिया।

"आधी रात में यहाँ तुम क्या माँग रही हो ?" आदमी ने शंकित हो पूछा। "कुछ दाल में जरूर काला मालूम होता है !" मे ने जब उसके हाथ में पिस्तौल देखी तो उसका दिल दहल गया। "मेरे साथ आओ !" उसने आज्ञा दी। उसने उन दोनों को आगे धकेल कर दरवाजे के अन्दर कर दिया।

जब वे घर के अन्दर पहुँचे तो आदमी ने निउर की टोकरी छीन ली और दिये के प्रकाश में उसमें रखी हुई चीजें देखीं। उसमें अब भी दो मीठे आलू और कई रोटियाँ रखी हुई थीं।

उसने अपना सिर हिलाया। "तुम लोग झूठ बोलती हो ! भिखारी तो घर-घर और दर-दर माँगता फिरता है तब जाकर उसे कुछ मिलता है। फिर ये रोटियाँ सारी एक ही आकार की और एक ही रंग की तुम्हारे पास कैसे आ गईं ? जाहिर है वे एक ही जगह की हैं। भला चाहती हो तो सब कुछ सच-सच बता दो !" उसने उन्हें धमकाया।

लड़कियों ने महसूस किया कि अब तो उन्हें मौका बदलना ही पड़ेगा।

"हम लोग असल में भिखारिन तो नहीं हैं," मे ने स्वीकार किया। "हम तो अपने रिश्तेदारों से मिलने आई हैं। हम लोग गलत जगह मुड़ गईं और अंधेरे में रास्ता भूल गईं," निउर की ओर संकेत करते हुए वह कहती गई, "यह मेरी ममेरी बहन है। यह है जवान पर जरा बुद्ध-सी है। इसने जो कहा वह गलत है, पर आप इसकी बात पर ध्यान न दें।"

आदमी गैरफौजी पोशाक पहने हुए था और उम्र में कोई बीस वर्ष से ज्यादा का न था। उसने दोनों लड़कियों की ओर बारी-बारी से घूरकर देखा। और इतनी देर तक उन्हें घूरता रहा कि वे सिर झुकाये बैठी रहीं और उनका शरीर थर-थर काँपने लगा।

सहसा वह चिल्ला पड़ा, "तुम दोनों निश्चित रूप से काडर हो ! कौन-से जिले में काम करती हो तुम ? बोलो, बताओ !"

"हम तो किसी काडर को जानती तक नहीं !" निउर ने झट इन्कार कर

दिया। "हम तो मामूली-से किसान हैं।"

आदमी ने एक क्षण उनकी ओर देखा फिर झट एक और सवाल पूछ लिया, "कल्लू त्से को जानती हो या नहीं?"

"नहीं, हम नहीं जानतीं!" दोनों ने एक स्वर से कहा, उनका भय बढ़ै जारहा था।

"सच नहीं बताओगी तो मैं तुम्हें किले में भेज दूँगा!" आदमी चिल्लाया और जब उनके चेहरे की रंगत उड़ गई तो वह ठहाका मारकर हँस पड़ा। "घबराओ नहीं," उसने उन्हें आश्वासन दिया। "हम भी आन्दोलन ही में हैं। काउण्टी देश-रक्षक सेना का यह प्रधान दफ्तर है। मैं तुमसे बातचीत करने के लिए किसी को बुलाकर लाता हूँ।"

ज्योंही उन्होंने दरवाजा बन्द होने की आहट सुनी कि झटपट खुसर-पुसर करने लगीं।

"वह क्या समझता है, हमें बेवक़ूफ़ बना लेगा?" मे ने उपहास किया। "यह भी भला कोई तुक की बात है कि जापानी किले के नीचे ही काउण्टी देश-रक्षक सेना अपना प्रधान दफ्तर बना लेगी! अब हम कोई और किस्सा गढ़े लेते हैं और मरते दम तक उससे न फिरेंगे।"

लड़कियाँ काँग पर एक दूसरे से सट कर बैठ गईं और काना-फूसी करने लगीं कि अब उन्हें क्या कहना चाहिए।

कुछ मिनटों बाद उनसे प्रश्न करने वाला एक काले, झबरी दाढ़ी वाले मुस्कराते हुए आदमी को लेकर वापस आ गया। यह कल्लू त्से था। लड़कियाँ उसे देखते ही आनन्द-विभोर हो गईं और काँग से उछल पड़ीं।

"ओ हो इतनी मुसीबतों के बाद, आख़िर तुम मिल ही गये!" उन्होंने सुख की सांस लेते हुए जोर से कहा।

"तुमने तो हमें डराकर मार ही डाला था!" जिउर ने कल्लू का बड़ा हाथ सहलाते हुए कहा।

कल्लू की गर्दन के घाव अभी तक नहीं भरे थे और जब वह हँसता था तो उसका सिर एक ओर को झुक जाता था। "यह भिखारियों का बहरूप भर कर

तुम दोनों क्या कर रही हो? हमारे काडर तो कहते थे तुम गद्दार हो गई हो।"

"मैं तो समझी यह गद्दार है," निउर ने नवयुवक की ओर संकेत करते हुए कहा।

"पर तुमने यह क्या किया कि यहाँ किले के बिल्कुल सामने आकर ठहर गये?" मे ने पूछा।

"हमने यही तय किया कि हम दुश्मन से जितने नजदीक होंगे उतना ही उन्हें कम शक होगा।" कल्लू ने हँसकर कहा। "हम अगर अपने काडरों और जनता से फिर सम्बन्ध स्थापित कर सके तो फिर कोई काम मुश्किल न होगा। हो पी के इलाके में कई पहाड़ होंगे लेकिन हम तो जनता का एक ऐसा पहाड़ बना लेंगे जो चट्टान से भी कहीं सख्त और कठोर होगा।"

वह उन्हें एक किसान के घर ले गया जहाँ उन्होंने नहा-धोकर कुछ खाया। ऐसा लगा मानो वर्षों बाहर रहने के बाद आखिरकार वे अपने घर लौट आई हैं। घण्टों वे प्रमुदित व उल्लसित हो बातें करती रहीं। अपने संगठन में लौट आने के बाद उन लड़कियों को यह अनुभव होने लगा कि हम दुश्मन को हरा सकते हैं; अब वे आस्था व चरमोत्साह के सागर में डूबने-उतराने लगीं।

कल्लू ने उन्हें अपने कई साथियों की खबर दी कि वे कहाँ हैं पर दा-श्वी के बारे में तो मुहासिरे के बाद से वह खुद भी कुछ न जानता था। उसने मिस चेन और तियेन को ले आने के लिए एक आदमी भेजा और लड़कियों को आराम करने के लिए कहा।

जब वे कुछ दिन तक विश्राम कर चुकीं तो कल्लू ने मे और निउर को बुलाया।

"आज से हम फिर साथ-साथ काम करेंगे," वह बोला। "हमने जिला प्रशासन दफ्तर पहले से ही स्थापित कर दिये हैं; अपने पास बहुत काम है करने को। मैं चाहता हूँ तुम दोनों शी यू गाँव जाकर श्वाँग को सूचना दे दो।"

उन दोनों को उपर्युक्त स्थान तक ले जाने के लिए उसने एक काडर को साथ कर दिया।

: ६ :

जाँच-पड़ताल—ग्रीष्म, १६४२

जिस रोज दा-श्वी पकड़ा गया, उसी दिन रात को कैदी एक बड़े गाँव से कुछ सौ गज की दूरी पर रोक दिए गये। गाँव के छोर पर घर अब तक जल रहे थे। उसी आग के प्रकाश में जापानी सैनिक इधर-उधर दौड़ रहे थे। चीनी ग़द्दार जो गाँव से निकल कर आये तो उन्होंने सूचना दी कि गाँव ठसा-ठस भरा हुआ है। फिर भी स्त्री-कैदियों को उसी गाँव की ओर ले जाया गया।

दा-श्वी ने उन्हें जाते हुए देखा तो उसका दिल बैठ गया। कुछ स्त्रियाँ सिर झुकाये चल रही थीं; कुछ रो रही थीं; कुछ भयभीत दृष्टि से आस-पास तक रही थीं और अन्य अपने बच्चे गोद में लिये जा रही थीं। लेकिन कैदियों के इस गिरोह में दा-श्वी को मे का कहीं पता न चला। क्या हो गया होगा उसे? उसने चिंतित हो सोचा। कहीं इन ज़ालिमों ने उसे पहले ही तो नहीं मार डाला? फिर जापानी लट्ठ का उसके सिर पर प्रहार हुआ और उसका सिर भन्ना गया और कैदियों को पीटकर आगे धकेला गया।

जापानी कैदियों को एक बड़े-से खुले मैदान में ले गये। चारों ओर जलते हुए घरों की ज्वालाएँ नृत्य करती दीख रही थीं। जापानी दरवाजे, खिड़कियों की चौखटें और फर्नीचर आग में फेंक रहे थे। जिन थैलों से कैदियों को लाद दिया गया था वे अब उतार दिये गये थे और कैदी कुछ क्षण के लिए हल्का महसूस करने लगे। जापानी ऊँकड़ूँ बैठ गये और शाम का भोजन करने लगे ज़ाहिर है कि कैदियों को किसी खाने के मिलने की क़तई उम्मीद न थी। बल्कि सबसे ज्यादा जरूरत उन्हें अपने सूखे हुए हलक़ों के लिए थोड़े पानी की थी।

एक बूढ़ा आदमी पानी की बाल्टी लिये आया। आते ही लोगों ने उसे घेर लिया। और ऊँचे स्वर में उन्होंने पानी माँगा। सफेद घोड़े पर सवार एक जापानी अफसर ने वहीं बैठे-बैठे कसकर एक लात कैदियों के मारी और उन्हें

बाल्टी से अलग हटा दिया। घोड़े ने बाल्टी का सारा पानी पी लिया और उसका पेट तरबूज की भाँति फूल गया। जापानी के चले जाने के बाद कुछ आदमी जमीन पर जहाँ बाल्टी रखी थी, गिरे और वहाँ की गीली कीचड़ चाटने लगे उधर बाकी कैदी क्रोध व ग्लानिपूर्ण दृष्टि से उस अफसर की ओर देखते रहे।

उस रात वे बंदी-जन सिर से सिर सटाकर एक खुले मैदान में सोये। सिपाहियों की पंक्तियों ने उन्हें घेर लिया था ताकि यदि कोई भागने की चेष्टा करे तो सोये हुए जापानियों पर से गुज़रे और वे जाग जायें।

दा-श्वी को रात भर नींद नहीं आई। कुछ क़ैदी कराहते और आहें भरते रहे। लेकिन संतरियों ने उन्हें बुरा-भला कहकर शांत कर दिया।

प्रातःकाल जब जापानी और कठपुतली दस्तों ने अपना नाश्ता किया तो कैदियों को एक पंक्ति में खड़ा कर दिया। उनमें से छः कैदी जिनमें दा-श्वी भी शामिल था चुनकर अलग कर दिये गये। बाकी को किला निर्माण करने के लिए गाँव में भेज दिया गया। दा-श्वी और उसके साथियों को बताया गया कि वे जापानियों द्वारा कब्जाये हुए शहर में ले जाये जा रहे हैं।

शहर को जाने वाले कैदी दिन भर चलते रहे। शाम होने पर वे एक गाँव में जाकर रुक गये। उन्हें एक गंदे मैदान में ले जाया गया जो एक मंजिला इमारतों से घिरा हुआ था। जापानियों ने तो उसमें जो स्वच्छतम भाग उत्तरी विंग में था वह कब्जा लिया और कठपुतली सैनिकों ने पूर्वी विंग पर अधिकार कर लिया। कैदियों को जो अब तक बँधे हुए थे एक कच्ची ईंटों की बनी हुई छोटी-सी कोठरी में धकेल दिया जो पश्चिमी विंग में स्थित थी।

कैदियों ने दो दिन तक कुछ खाया-पिया न था। वे इतने भूखे थे कि उनके पेट, मालूम होता था रीढ़ की हड्डियों से चिपक गये हैं और हलक़ में आग की तरह जलन हो रही थी। धूप में झुलसे हुए, थके-माँदे व भूख से परेशान वे आदमी आते ही जमीन पर गिर पड़े। लेकिन उनका कोई पुरसाने-हाल न था। यहाँ तक कि अगर कोई विकल हो कराहने की चेष्टा भी करता तो जापानी बंदूक उसके सिर पर पड़ती थी और वे बेबस हो चुप हो जाता था।

जापानियों ने अपने दो पिट्ठू सैनिक कैदियों की कोठरी के दरवाजे पर

तैनात कर दिये, अपना खाना खाया और सो गये।

दा-श्वी के अतिरिक्त क़ैदियों में एक देहाती काडर और एक देश-रक्षक सैनिक भी था। शेष सब किसान थे। किसानों में एक लड़का जो कोई सत्रह वर्ष का होगा प्यास के मारे तड़प रहा था।

"मेरा तो प्यास के मारे दम निकल रहा है," उसने रुआँसे होकर कहा। "मुझे तो इस वक्त अगर पेशाब भी मिल जाता तो मैं वही पी जाता लेकिन मुझे अब पेशाब भी नहीं आता!" रोते-कराहते उसने अपना सिर दीवार से ऐसे जोर से देकर मारा कि उसमें से मिट्टी के कुछ कण नीचे जमीन पर आ गिरे।

दा-श्वी का चेहरा बड़ा दयनीय बना हुआ था पर धीरे-धीरे वही दुख उत्साहपूर्ण मुस्कान में परिणत हो गया। वह बड़ी व्याकुलता से यह विचार कर रहा था कि कम्युनिस्ट होने के नाते अपना कर्त्तव्य किस प्रकार पूरा करे। लोगों को उस विकट परिस्थिति और विपत्ति से कैसे उबारे। अब उस मिट्टी की दीवार से जो धूल के कण गिरे तो सहसा उसे एक बात सूझी।

"घबराओ नहीं भैया," उसने लड़के को सान्त्वना दी। "हम जल्दी ही इस मुसीबत से निकल आयेंगे!"

जब दा-श्वी घुटनों के बल घसिटता हुआ खिड़की तक पहुँचा तो उसका सिर चकराने लगा। वह तब तक रुका रहा जब तक कि दूसरे संतरी ने आकर पहरा न बदल दिया और खिड़की में से झाँक कर कैदियों को देख न लिया। दा-श्वी ने उस पिट्ठू सैनिक को समझा-बुझा कर पानी लाने पर राज़ी कर लिया।

ज्योंही कैदियों को खबर हुई कि पानी आने वाला है तो वे हड़बडा कर उठ बैठे। दा-श्वी उनके बीच ऊँकड़ूँ बैठ गया और वे एक-दूसरे से सट कर उसे घेर कर बैठ गये।

"मुसीबत में हम सब एक दूसरे के साथ हैं," वह बह बोला, "और इसी पर हमें आज बातचीत करनी है। मुझे पक्का भरोसा है कि कल जब हमें शहर ले जाया जायगा तो या तो हमें गोली मार दी जायगी या फिर हमें कत्ल कर दिया जायगा। कुछ भी हो हमारी मृत्यु निश्चित है। यदि आप लोग इस वक्त निकल

भागने की जोखिम लेने को तैयार हो तो यह पानी हमारी जानें बचा सकता है।"

उसने उन्हें अपनी योजना बताई। कुछ देर सबने खुसर-पुसर की और योजना स्वीकृत हो गई।

जब पिट्ठू सैनिक एक घड़िया में उनके लिए पानी लाया तो सब कैदियों ने उसे खूब धन्यवाद दिया। उसने असमंज में बड़बड़ाकर कहा कि आखिर हम सब चीनी ही तो हैं और दरवाजे पर ताला लगा कर बाहर निकल गया। दा-श्वी ने लोगों से कहा कि सब दो-दो घूँट पानी पीलें और एक कम्युनिस्ट होने के नाते उसने बिना पिये रह कर एक आदर्श स्थापित किया।

बड़ी सख्त कोशिशों के बाद कैदियों ने आखिरकार अपने हाथ जो पीछे कमर से बंधे हुए थे खोल लिये। फिर लोगों ने अपनी आस्तीनें और सिर से बँधे हुए रूमाल उस बहुमूल्य पानी में भिगोये और अपने गीले कपड़े उस दीवार से रगड़े ताकि वह कुछ नर्म पड़ जाय। एक आदमी तो खिड़की पर ताकने के लिए खड़ा कर दिया गया और बाकी पाँच अपनी उङ्गलियों से उस नम दीवार को कुरेदने लगे।

अभी उन्होंने दीवार में छोटा-सा छेद ही किया था कि खिड़की पर खड़े व्यक्ति ने दबी आवाज में फुसफुसा कर कहा, "वह आ रहा है! वह आ रहा है!"

कैदियों ने झट रस्सी पकड़ कर अपने हाथ पीछे बाँध लिए और पूर्ववत् खड़े हो गये। दा-श्वी अपनी चौड़ी कमर दीवार के सहारे टेक कर बैठ गया। किसी ने साँस तक न ली।

पिट्ठू सैनिक दरवाजे में से दाखिल हुआ। "तुम लोगों को काफी पानी मिल गया ना?" उसने मालूम किया।

"बहुत-सा! बहुत-सा!" कैदियों ने प्रसन्न व उत्साहित हो उत्तर दिया। "और था भी बड़ा उम्दा पानी!"

मुस्कराते हुए उसने घड़िया उठाई और फिर दरवाजे में ताला लगा दिया।

कुछ कैदी तो भय व उत्तेजना से काँप रहे थे।

"डरो नहीं," दा-श्वी ने उनसे आग्रह किया। "बस, जरा-सा काम और है और हम समझो बाहर।"

दीवार की खुदाई जारी रही। अपनी भूख-प्यास सब को भुलाकर और जो कुछ ताकत बाकी थी सब लगाकर कैदियों ने दीवार खोदी और सूराख इतना बड़ा कर लिया कि उसमें से आदमी गुज़र सके। दा-श्वी ने अपना सिर उसमें से निकाला, बड़े चौकन्ने हो इधर-उधर देखा, और फिर सरककर बाहर निकल आया। फिर एक-एक करके बाकी भी खिसक गये। दा-श्वी उन्हें लुकते-छिपते गाँव के बाहर एक मैदानों में ले गया और वहाँ पहुँचकर वे अलग हो गये।

× × × ×

देहाती प्रदेश में कुछ दिन भटकने के बाद दा-श्वी ने महसूस किया कि वह अकेला कुछ नहीं कर सकता। इसलिए उसने कुछ समय एक भूमिगत 'दुर्ग' में व्यतीत करने का निश्चय किया। ये 'दुर्ग' उन किसानों के घरों या खेतों में बने हुए गुप्त स्थान थे जो खुद भी भूमिगत आंदोलन के सदस्य थे। जब जापानियों का 'घेरने' का अभियान अपनी चरम सीमा पर था उस समय इन 'किलों' में कम्युनिस्टों को छिपने और विश्राम करने की व्यवस्था की गई थी और आपसी विचार-विनिमय व मुलाकात के साधन भी जुटाये गये थे!

उस रात दा-श्वी ने एक गाँव में प्रवेश किया और 'चाचा' यिन के कम्पाउण्ड की दीवार फाँदकर घर में पहुँच गया। जब दा-श्वी अन्दर पहुँचा तो यिन, लाल मुँह वाला बूढ़ा जिसके साफ सफेद दाढ़ी थी अपने पोते के साथ बैठा भोजन कर रहा था।

"अरे, दा-श्वी तुम!" उन्होंने प्रमुदित व चकित हो कहा। "हमारे लोगों में तुम ही पहले व्यक्ति हो जिसे मैंने इतने दिनों में आज देखा है! हमारी तो सारी आशाएँ व उमंगें ही ठण्डी हो गई थीं। और मुझे बड़ा डर महसूस होता था!" उसने दा-श्वी से आग्रह किया कि वह भी काँग पर बैठकर उनके साथ खाना खाये।

खाते समय चाचा ने बताया कि उन्होंने एक 'मुर्गियों का दरबा' खोद कर बनाया है। असल में उन्होंने चूल्हे के नीचे एक गहरा गढ़ा खोदा था। और उनका विचार था कि कोई-न-कोई आकर उसको काम में ले आयगा। कुछ देर गप-शप करने के बाद चाचा ने मच्छरों को धूप देने के लिए एक रसायनिक रस्सी जलाई। दा-श्वी से कहा कि वह शांतिपूर्वक काँग पर सो जाय और वह और उनका पोता जापानियों की टोह में रहेंगे।

"मेरे यहाँ रहने पर कोई फिक्र की बात नहीं है," चाचा ने कहा। "मैं बूढ़ा हो गया हूँ लेकिन कान मेरे साँपों के-से तेज हैं।"

एक फटा-पुराना कम्बल लेकर अपने पोते के साथ वह छत पर चला गया। चचा रात भर जागते रहे और दुश्मन की आमद का एलान करने वाली आवाज़ें सुनते रहे।

पौ फटते समय उन्हें वे आवाज़ें सुनाई पड़ीं। जापानी गाँव में प्रवेश कर रहे थे। बूढ़े व्यक्ति ने दा-श्वी को जगा दिया और चूल्हे पर रखी बड़ी कढ़ाई को अलग कर दिया। राख के नीचे एक बहुत बड़ी लोहे की पट्टी रखी थी जो एक भूमिगत सूराख के ढक्कन का काम दे रही थी। जब दा-श्वी उसमें दाखिल हो कर नज़रों से ओझल हो गया तो बूढ़े ने फिर सूराख को पट्टी से ढँक दिया, उस पर कढ़ाई रखी और आग जलाई।

जरा-सी देर में जापानियों की टोली ढूंढती-तलाश करती चाचा के घर आ धमकी। बूढ़ा चूल्हे के सामने ऊँकड़ू बैठा हुआ था। एक गद्दार ने उसके एक लात जमाई।

"ओ बे! कोई बा लू छिपा हुआ है क्या यहाँ?"

चाचा आहिस्ता से उठा और अपने हाथ कानों पर रखकर पूछा, "क्या कहा तुमने?"

"मैं पूछता हूँ तुमने किसी बा लू को देखा है?" गद्दार ने कड़क कर कहा।

"ओह बा लू! हाँ, हाँ मैंने उन्हें देखा है। सफेद वर्दी पहनते हैं ना वे? बन्दूकें भी रखते हैं!"

"हाँ, हाँ ठीक है।" गद्दार ने अधीर हो कहा। "कहाँ देखा है तुमने ? बोलो, जल्दी फूटो।"

"अरे बाप रे ! वे तो बहुत-से थे ! सारी रात वह गाँव में रहे !"

"आये कब थे वे ? अब कहाँ हैं ?" गद्दार ने उत्तेजित हो पूछा।

"अधीर मत होओ। ज़रा सोचने दो मुझे। उस दिन मैं बाजार से वापस आ रहा था। नये साल के कुछ चित्र खरीदने वहाँ गया था। उसी दिन जिस दिन अन्न देवता स्वर्ग में जाकर रिपोर्ट देते हैं......।"

गद्दार ने क्रोधित हो बूढ़े के मुँह पर तमाँचा मारा। "तुम्हारी मा का—! अबे तुझसे गये साल की बात कौन पूछ रहा है ? साले बुड्ढे मरदूद !"

"बिल, बिल !" एक जापानी चिल्लाया।

"वह पूछते हैं कि बिल कहाँ है ?" गद्दार ने चाचा के कान में चिल्ला कर कहा।

बूढ़े ने असमंजस से अपनी आँखें तरेरीं। "जब से वह बिल्ली पाली है यहाँ कोई बिल नहीं रहा। चूहों की तो उसे देख कर नानी मरती है ! महीनों से चूहों का कोई बिल नहीं है यहाँ !"

"अबे तेरी मा का—!" गद्दार गुर्राया। छोटे बिल नहीं ! बड़े वाले—वह जो जमीन में खोदे जाते हैं।"

बूढ़े ने एक-एक शब्द गौर से सुना तो उसका सिर एक ही ओर झुक गया। आनन्द से उसकी बाछें खिल गईं। "अच्छा, तो यह मतलब है तुम्हारा ! पहले ही कह दिया होता ! आओ मेरे साथ !"

अपने घर के पिछवाड़े जहाँ खाद पड़ा सड़ रहा था वह उन्हें ले गया। "यह है वह बिल !" उसने विजय-गर्व से बताते हुए कहा। "अभी तीन महीने हुए हैं जो इसे शुरू किया है। अभी बहुत मजबूत नहीं हुआ है। देखो—" उसने एक लकड़ी का गंदगी-भरा करछुल उठाकर उनकी नाकों तले लगाया।

खाँसते-खाँसते बेदम हो मुतलाशी पीछे को हटे। "रख दो इसे, रख दो इसे !" गद्दार ने फौरन कहा। बूढ़े को खूब गंदी-गंदी गालियाँ देते हुए वे लोग वहाँ से ताबड़तोड़ चले गये।

ज्योंही वे गये चाचा ने दा-श्वी को बाहर निकाल लिया और वे दोनों हँसी के मारे लोट-पोट हो गये। ज़माना नाज़ुक था और छोटी-सी विजय भी उनका दिल बढ़ाने के लिए काफी थी।

× × × ×

कुछ दिन शांतिपूर्वक बिताने के बाद दा-श्वी विचलित हो उठा। वह अपने मित्रों के पते जानने का इच्छुक था और काम पर लौटना चाहता था। एक रात वह चाचा की शरण को छोड़कर खेतों को लौट गया और अपनी गाड़ी हुई बंदूक तलाश करने लगा।

चन्द्रमा की उज्ज्वल चंद्रिका वातावरण को शीतल कर रही थी। दा-श्वी ने संतप्त दृष्टि से काओलियांग के आस-पास उगे हुए चारे और घास को देखा। उसने आपसे कहा, यह तो खुद जाना चाहिए।

वृक्षों के एक झुरमुट में जो वह दाखिल हुआ तो होशाँग और मछुए जोव से उसकी मुठभेड़ हो गई। वे दोनों तो एक-दूसरे से मिलकर बहुत आनन्दित हुए लेकिन होशाँग शांत व गम्भीर रहा।

"दा-श्वी," उसने उसकी बाँह पकड़कर कहा। "मुझे तुमसे कुछ कहना है। देखना, बुरा न मानना। जापानियों ने तुम्हारे पिता को पकड़ लिया था और उन्हें खूब मारा-पीटा, लेकिन वह कुछ बोल न सके। जब उन्होंने उन्हें छोड़ दिया तो वह केवल दो दिन ही जिये!"

यह सुन कर दा-श्वी के कलेजे पर पत्थर गिर पड़ा, चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं और वह धीरे-धीरे एक कब्र पर बैठ गया। जब लोग उसे समझाने-बुझाने लगे तो उसकी आँखों से अश्रुधारा प्रवाहित हो चली। और फिर वह इतने जोर-जोर से रोने-पीटने लगा कि सिसकियों से उसका कलेजा हिल गया। अंततः उसने रोना बंद किया और क्रोधित हो आँखें मलीं।

"अरे, जापानियो और गद्दारो!" उसने दाँत पीसते हुए कहा। "तुमने

बीमार बूढ़े आदमी को अपने क़ातिल हाथों से मार डाला ! मैं तुमसे हर कीमत पर उनका बदला लूँगा। चाहे मुझे अपनी जान की ही बाज़ी क्यों न लगानी पड़े !"

जोव ने कहा मुझे पता चला है कि तुम्हारा भाई रू श्वाँग के साथ काम कर रहा है। और श्वाँग ने सारी गड़ी हुई बंदूकें भी खोद निकाली हैं। त्सुर को जिंदा गाड़ दिया गया था पर उसे भी बचा लिया गया और मे जापानियों के पंजे से निकल भागी है। इस खुशखबरी ने दा-श्वी को कुछ सान्त्वना दी।

दा-श्वी ने श्वाँग और कल्लू का पता पूछा। होशाँग ने कहा कि मैं अभी-अभी कल्लू ही के पास से आ रहा हूँ उसका आदेश है कि सब पुराने काडर श्वाँग से मिल लें और अपना संगठन पुनः ठीक करें। कल्लू ने यह भी जता दिया था कि पार्टी-मेम्बरों को चाहिए कि हर कीमत पर एक-दूसरे से सम्बन्ध कायम रखें। अपने शस्त्रों को कभी न त्यागें और जब भी आवश्यक हो उसका प्रयोग करें, जनता में अपने काम को और गहरा और व्यापक बनायें। जब जापानी अपना वर्तमान अभिमान ढीला करें तो काडरों को चाहिए कि वे पुनः जन-शक्ति संगठित करें और शत्रु के प्रच्छन्न अड्डों को तलाश करें।

"कल्लू ने श्वाँग से पहले ही कह दिया है कि वह अपने इलाके में इस प्रकार के कार्यों का संगठन करले," होशाँग ने कहा। "श्वाँग ने शी यू गाँव में किसी किसान के भूमिगत 'दुर्ग' में काम भी आरम्भ कर दिया है। हम सब साथ ही चल सकते हैं।"

जब वे गाँव में पहुँचे तो ऐसा हुआ कि होशाँग पता ही भूल गया। लोगों की व्याकुलता उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही थी और वे रात भर गाँव की तंग गलियों में भटकते रहे यहाँ तक कि भोर का तारा क्षितिज पर निकल आया लेकिन अंधेरे में होशाँग सही मकान का पता न लगा सका। फिलहाल उन्होंने अपनी तलाश रोक दी और खुले मैदानों को लौट गये। हर आदमी पारी-पारी से संतरी का काम करता रहा और वे भूसे के एक ढेर के नीचे सो गये।

प्रभात का समय था, चारों ओर कुहरा पड़ रहा था। ऊँचे-ऊँचे काओलियांग पौधों में घूमते हुए लोगों की आवाजों से दा-श्वी की आँख खुल

गई। संतरी होशाँग घोड़े बेच कर सो रहा था! दा-श्वी ने उसे और जोव को जगा दिया।

"उठ बैठो!" वह फुसफुसाया। "कोई आ रहा है!"

वह और होशाँग तो भूसे के ढेर के पीछे छिप गये लेकिन जोव के पास बन्दूक थी और वह खुल्लम खुला खड़ा उनकी प्रतीक्षा करने लगा। पाँच ग़द्दार काओलियांग में से बाहर निकले। वे जापानियों की एक हमलावर टोली की जो गाँव पर धावा बोलने आ रही थी अगुआई कर रहे थे। जोव ने दो गोलियाँ चलाईं और एक को वहीं सुला दिया। फिर वह फौरन वहाँ से भाग खड़ा हुआ और ग़द्दार उसका पीछा करते हुए भागे।

दा-श्वी और होशाँग दूसरी दिशा में भागे और जापानियों के एक जत्थे के हत्थे पड़ गये। होशाँग तो अपने शत्रु से लड़कर छूट भागा लेकिन दा-श्वी कई जापानियों से घिर गया।

× × × ×

जापानी अपने बन्दी को घसीट कर गाँव में ले गये और वहाँ एक बड़े बेद वृक्ष से उसे बाँध दिया। ई नो जो उनकी छोटी पल्टन का सरदार था थोड़ी-बहुत चीनी भाषा जानता था।

"तुम काम करते हो किस किसम का?"

"मैं तरबूज़ उगाता हूँ।"

पल्टन के सरदार को उस पर विश्वास न आया और उसने अपनी बैंजनी, बालदार नाक सिकोड़ी। उसने दा-श्वी की जाँघ और पिण्डलियों की पेशियों को नोचा और उसके बलशाली कंधे छू कर देखे।

"बा लू सज्जन है!" जापानी ने ग्लानिपूर्वक कहा। दो-चार सैनिकों ने दा-श्वी के मुँह पर तमाँचे मारे और अपने भारी बूटों से उसे लातें भी मारीं। और जब जापानियों का एक और दस्ता किसी और कैदी को जिसका सिर लहू-लुहान था लेकर आया तो वे कुछ रुक गए। यह होशाँग था! आखिरकार उन्होंने

उसे पकड़ ही लिया।

उन्होंने उसे दा-श्वी के सामने धकेल दिया। "इस आदमी को जानते हो?" एक गद्दार ने हाथ में भारी चमड़े का पट्टा लिये होशाँग से पूछा।

"जब मैं ही उसे नहीं जानता तो वह मुझे कैसे जान लेगा," दा-श्वी बीच में बोला।

गद्दार ने अपना पट्टा दा-श्वी के मुँह पर मारा। "तुझ से कौन मादर—पूछ रहा है!" उसने होशाँग को फिर कोंचा। "बोलो! जानते हो उसे या नहीं?"

"मैं—नहीं, मैं इसे नहीं जानता," होशांग ने उत्तर दिया।

दो जापानियों ने उसे जमीन पर फेंक दिया और लाठियों से निर्दयता-पूर्वक प्रहार किये। होशाँग खूब चीखा, रोया लेकिन लाठियों के प्रहार जारी रहे। वह बुरी तरह ज़ख्मी हुआ था और उसका सारा शरीर पीड़ा से फटा जा रहा था फिर भी किसी तरह वह उठा और लड़खड़ाता, गिरता-पड़ता खेतों की ओर चला।

"दो बा लू दोनों मुर्दा मर गया!" पल्टन के सरदार ने क्रोधित हो कहा। उसने होशाँग के सिर में गोली मार दी।

दा-श्वी ने अपनी आंखें बन्द करलीं और अन्त की प्रतीक्षा करने लगा पर दूसरी गोली नहीं आई। उसने होशाँग के निश्चल, दयनीय शरीर को देखा और उसके हृदय में क्रोध की ज्वाला भड़क उठी।

"मुझे भी क्यों नहीं मार डालते?" वह चिल्लाया।

"क्या तुम भी बा लू हो?" एक गद्दार ने पूछा।

"हाँ, मैं भी बा लू हूँ! लो चलाओ गोली!"

पल्टन का सरदार संतोष से मुस्करा दिया और जापानी भाषा में गद्दार से कुछ बड़बड़ाया।

एक और कैदी जो सुन्दर वस्त्र पहने हुए था और कोई व्यापारी था आगे खींचा गया। उसने बड़े ज़ोर से कहा कि मैं बा लू नहीं हूँ। जापानियों ने उसे पीटना शुरू कर दिया।

"ठहरो ! ठहरो !" वह चिल्लाया। "मैं तुम से कहना चाहता हूँ कि— मेरा एक भाई है जो तुम्हारा बड़ा दोस्त है। कम से कम उसकी खातिर तो मुझे बचाओ।"

"कौन है तुम्हारा भाई ?" एक गद्दार ने पूछा।

व्यापारी ने अपनी टाँग की पट्टी खोली और उसमें से कुछ सिक्के निकाल कर उन्हें दे दिये। "यह है मेरा भाई !" उसने चाटुकारितापूर्ण मुस्कान से कहा। "क्या यह तुम लोगों का गहरा दोस्त नहीं है ?"

"तुम तो वास्तव में बड़े पक्के व्यापारी निकले," गद्दार ने उसकी प्रशंसा की।

जापानी पल्टन के सरदार ने अपनी कुब्बेदार नाक सिकोड़ी और अपने पीले दाँत निकालते हुए आँखें तरेरीं और खुश होकर कहा। "पैसा, पैसा !" उसने सिर हिलाया। "व्यापारी, तुम अच्छा !" और हाथ का संकेत करके कहा, "जाओ, जाओ !"

व्यापारी भी सिर पर पैर रख कर वहाँ से भागा।

सारे देहाती एक लम्बी क़तार में खड़े कर दिये गये। जापानियों ने दा-श्वी के हाथ-पैर खोल दिये और उसे आज्ञा दी कि उनमें से बा लू अलग कर दे। काँपते-धूजते मर्द-औरतें, जवान-बूढ़े सब भयभीत दृष्टि से उसे देखने लगे।

जब दा-श्वी को उस क़तार पर धकेला तो उसे श्वाँग को उन किसानों में देखकर बड़ा धक्का लगा। श्वाँग ने उसकी ओर देखा मानो कह रहा हो, "तुम कम्युनिस्ट हो, देखें तुममें कितने हौसले हैं।"

बन्दूक का कुंदा दा-श्वी के सीने पर रखते हुए जापानी पल्टन के सरदार ने पूछा, "बा लू इनमें है ?"

"नहीं।"

ई नो ने अपनी शूकरी आँखें मींचीं और बंदूक और आगे धकेल दी।

"इनमें कोई नहीं है।" दा-श्वी ने दाँत पीस कर कहा। "घुसेड़ दो !" जापानी गुर्राया और उसने उसे आगे को धकेला। लोगों का भय से

खून सूख रहा था। बहुत-सी स्त्रियाँ रो रही थीं। दा-श्वी ने अपने भाई रू, कुदाक मा और देश-रक्षक सेना के कई आदमियों को पहचान लिया। वे भयातुर हो उसकी ओर घूर रहे थे पर उसने बगैर किसी को पहचाने ही अपनी जाँच पूरी कर दी।

ई नो क्रोध से लाल-पीला हो गया। उसके आदेश पर सैनिकों ने तीन भयंकर कुत्ते छोड़ दिये—उनकी कमर कसकर बँधी हुई थी और उनकी लाल जीभें दाँतों से बाहर निकलतीं और अन्दर चली जाती थीं। ई नो ने एक हुक्म दिया और दा-श्वी की टाँगें थपथपाईं। कुत्ते कैदी की जाँघ पर जा कूदे और उन्होंने अपने क्रूर दाँतों से उसका मांस निकाल लिया। जब उसका खून पैरों पर ऐसा गिरकर जमा मानो नाले बह रहे हों तो दा-श्वी पशु की भाँति चिंघाड़ा। कुत्तों को फिर खींच लिया गया।

दा-श्वी छटपटाने लगा। पसीने की बूँदें उसके माथे पर उभर आईं। जापानी ने उसकी बाँह पर थपकी दी और फिर चीखा और फिर एक बार उन भेड़ियों-जैसे कुत्तों के चमकते हुए दाँतों ने इन्सान का गोश्त फाड़ लिया। दा-श्वी चिल्लाया और बेहोश हो गया।

आंतकित दर्शकों में से एक सफेद बालों वाली बूढ़ी किसान औरत आगे को बढ़ी। वह उसके जमीन पर पड़े सपाट बदन पर जा गिरी। "इतनी यातनाएँ तुम उसे कैसे दे रहे हो! मेरे बेटे! तुम तो उसे जान से ही मार डालोगे!"

सारे किसान अब खुले रूप में रो रहे थे और सिसकियाँ भर रहे थे। "वह बड़ा अच्छा किसान बच्चा है!" वे चिल्लाये। "उस पर तरस खाओ!"

जापानी अब कुछ परेशान हो गये क्योंकि वे न जानते थे कि यह जन-प्रतिक्रिया क्या रूप धारण कर लेगी। उन्होंने बुढ़िया को लात मारकर हटा दिया और दा-श्वी को ले गये।

× × × ×

जब दा-श्वी को होश आया तो उसने अपने आपको देहाती फौजी पुलिस की चौकी के पिछवाड़े आँगन में एक लकड़ी के बड़े पिंजरे में बंद पाया। सूर्यास्त के बाद वहाँ का बूढ़ा जेलर उसके पास आया।

"तुम्हारी मा तुमसे मिलने आई है। अपना रोना-धोना ज़रा बन्द करो।" बूढ़ा फुसफुसाया। छाया में खड़ी एक स्त्री को उसने टार्च से रास्ता बता कर बुलाया।

मेरी मा को तो मरे हुए भी मुद्दत हो गई। यह कौन स्त्री हो सकती है? दा-श्वी ने सोचा। उसने बड़ी सतर्कता से अपनी मुलाकाती की ओर देखा। वह लगभग ६० वर्ष की होगी, बाल सारे सफेद हो गये थे और वह हाथ में एक टोकरी लिये हुए थी। उसने उसे पहचान लिया। यह उस लड़के शुगेन की मा थी जिसे जापानियों ने अपने अंतिम 'घेरकर मारो' वाले अभियान में जीवित गाड़ दिया था।

वृद्ध महिला ने जेलर से कुछ कहा और वह वहाँ से चला गया।

पिंजरे के सींखचे पकड़कर वृद्धा झुक गई और अपना सिर लेटे हुए कैदी के समीप ले गई। "दा-श्वी," उसने मंद स्वर में कहा, "मैं तुम्हें जानती हूँ। आज से तुम अपने को शुगेन समझो। श्वाँग ने कहा है कि तुम अपने पर क़ाबू रखो, कोई कुविचार अपने मस्तिष्क में न आने दो। गाँव का एक-एक आदमी तुम्हारे साथ है! ओह बेटा, आज सुबह हम सबको तुम्हारे साथ ही बड़ी यातना सहनी पड़ी। दिन भर कोई कुछ न खा सका! हम लोग अब तुम्हारे लिए कुछ चंदा जमा कर रहे हैं।"

इन स्नेह-युक्त शब्दों और सान्त्वना से दा-श्वी का दिल भर आया और आँखों से आँसू रवाँ हो गये। "मा जी, अपना दिल हल्का न करो," उसने रुँधे हुए कंठ से कहा। "श्वाँग से कह देना कि जिंदा रहूँ या मर जाऊँ अपने संगठन की नाक नीची नहीं होने दूँगा। वे मेरे बारे में कोई चिंता न करें।"

वृद्धा ने अपनी फटी-लटी जाकेट के कोने से अपने आँसू पोंछे, फिर अपनी टोकरी में से बहुत-सा खाना निकाला जो सींखचों में से उसे दे दिया। उसने नोटों का एक छोटा-सा बण्डल निकाला और दा-श्वी के हाथ में थमा दिया।

"यह मेरी अपनी तरफ से है," वह बोली। "बहुत ज्यादा तो नहीं हैं पर तुम्हारे काम आयेंगे।" वह अधिक देर वहाँ न रुकी। कुछ और बातों के बाद वृद्ध महिला चली गई।

दो दिन पश्चात् दा-श्वी जापानी कमाण्डर के पास और पूछ-ताछ के लिए लाया गया। खुले दरवाजे के बाहर जो किसान खड़े थे उनमें दा-श्वी ने देखा कि वह बूढ़ी महिला भी है जो उससे जेल में मिलने आई थी।

जापानी कमाण्डर एक पीला-सा आदमी था, छोटा-सा चश्मा लगाये एक लम्बी मेज के पीछे बैठा हुआ था। उसके पास ही एक दुभाषिया और स्थानीय कठपुतली सेना का नेता बैठा हुआ था। दुभाषिये ने दाश्वी से उसका नाम, निवास और धन्धा मालूम किया। दाश्वी ने दबंग अंदाज़ में कहा कि मेरा नाम शुगेन है और मैं इसी गाँव का एक किसान हूँ।

कठपुतली सरदार ने मेज पर मुक्का मारा। "बा लू हो या नहीं?" वह गरजा।

"जब साल भर हल चलाना, घास खोदना और फसल काटना होता है तो बा लू बनने का मुझे कहाँ से समय मिल सकता है?" दाश्वी ने कटु स्वर में कहा।

"अगर तुम बा लू नहीं हो तो फिर तुमने उस दिन क्यों कह दिया था कि तुम बा लू हो?"

उन्होंने मुझे इतना पीटा था कि मैं क्या कह रहा हूँ इसका मुझे होश ही न था?"

कठपुतली सरदार ने जापानी के कान में कुछ कहा और उसने सिर हिलाकर एक कागज की स्लिप पर 'कम्युनिस्ट पार्टी' लिख लिया। जापानी ने दा-श्वी से पूछा :

"तुम कम्युनिस्ट पार्टी?" दा-श्वी का चेहरा फ़क हो गया पर जापानी ने उन शब्दों के आगे × लिख दिया और कहा, "तुम—नहीं!"

इसी प्रकार उसने 'बा लू' और 'भूमिगत-कार्यकर्ता' के लिए भी पूछा और दा-श्वी को हर बार यह महसूस हुआ कि उसको प्राण-दण्ड सुनाया जा रहा है अंततः जापानी ने 'नागरिक' शब्द लिख लिया।

"तुम—नागरिक हो, अच्छा-अच्छा ! जा सकते हो !" कमाण्डर बोला

"हिज़ एक्सिलेंसी तुम्हें माफ़ करते हैं," कठपुतली सरदार ने विनम्र मुस्कान से कहा। "जाओ अपने घर और एक अच्छे आदमी की तरह खेतों व खलियान की देखभाल करो !" उसने आज्ञा दी कि दा-श्वी की रस्सी खोल दी जाय।

जब प्रश्नकर्त्ता कमरे से चले तो जापानी ने कठपुतली सरदार से कहा, "मेरे ख्याल से इस काम में तुम्हारी खूब चाँदी होती होगी। धनवान बन जाओगे तुम ?"

"अगर मैं चाँदी बना रहा हूँ," कठपुतली ने विरोध किया, "तो आप भी बना सकते हैं।" उसने अपना हाथ गले पर फेरा।

जापानी केवल खिलखिला पड़ा।

जब दा-श्वी ने सड़क पर कदम रखा तो दर्जनों किसानों ने उसे घेर लिया। उन्होंने उसके घावों पर मरहम लगाया, उसे साफ-सुथरे कपड़े दिये और उसे गाँव के बाहर तक छोड़ कर आये। उन्होंने कहा कि श्ये ल्यू उसके लिए सुरक्षित नहीं है इसीलिए वे उसे ऐसे गाँव में ले गये जहाँ जापानी इतने सरगम न थे !

अभी कुछ मील ही गये होंगे कि उन्हें सड़क से एक तरफ हट जाना पड़ा क्योंकि घुड़सवारों का एक जत्था उधर से धीरे-धीरे चला आ रहा था। दा-श्वी ने सोचा कि आगे जो मोटा-सा आदमी है वह डाकू हो ही होगा।

"शहर में जो जापानी हैं उनमें तो यह मोटिया बड़ा आदमी है," किसानों ने घबराते हुए कहा। "आओ चलते चलें !"

उसी समय अश्वारोहियों में से एक आदमी जिसके पास पिस्तौल थी अपने घोड़े को लौटाकर दौड़ाता हुआ आया। "जहाँ हो वहीं खड़े हो जाओ !" उसने हुक्म दिया। "क्या कर रहे हो तुम ?"

यह जिनलुंग था, बदमाश, जमींदार का कुत्ता ! जब जापानियों ने देहाती इलाक़ों में अपनी वबा फैलानी शुरू की तो वह अपने पुराने मालिक हो से मिल गया और गद्दार बन गया। अब वह अपने घोड़े पर झुका और उसने

गौर से दा-श्वी की ओर देखा।

"ओह! मैं भी यही समझा था कि तुम हो।" उसने प्रमुदित हो कहा। पिस्तौल निकाली और घोड़े से उतर पड़ा। "तुम्हारे पीछे दौड़ आना कितना सौभाग्यशाली साबित हुआ। आओ मेरे साथ चलो!"

"क्या कह रहे हो तुम?" दा-श्वी की बूढ़ी 'मा' ने रोकर कहा। "अभी तो जापानियों ने उसे रिहा किया है! हम सब चीनी हैं......।"

जिनलुंग ने एक घूंसा बुढ़िया के मुँह पर मारा और वह जमीन पर गिर पड़ी। दा-श्वी को उसने पिस्तौल से धकेला। "तुम बहुत बड़े हीरो हो, क्यों कप्तान साहिब?" उसने तिरस्कार से कहा। "अभी तुम्हें ले चलकर कमाण्डर हो को तुम्हारी बहादुरी के दो-चार नमूने बतायेंगे!"

दो और घुड़सवार भी लौटकर आ गये थे। वे किसानों को पकड़े हुए थे जो यों ही अपना क्रोध प्रकट कर रहे थे।

"मैं जानता था तुम यही करोगे!" दा-श्वी भड़क उठा। "हीरो हूँ-आ न हूँ मैं कोई ग़द्दार तो नहीं हूँ! चलो चलें, मुझे जो चाहे गाली देना अगर मैं किसी दिन तुम से बेहतर आदमी साबित न होऊँ तो।"

जिनलुंग ने अपना घोड़ा दो अन्य कठपुतलियों को दे दिया। कसकर दा-श्वी के हाथ उसकी पीठ पर बाँध दिये और सड़क पर उसे धक्का देते हुए चले।

× × × ×

१९४० में जब हो भागकर जापानियों से जा मिला था जो होज्वाँग में किसानों ने वह जमीन जो उसने कब्जाली थी उसके असली स्वामियों को लौटा दी। जो अनाज उन किसानों ने अपना खून-पसीना एक करके उगाया था और जो अपने आँगन में गाड़ दिया था उसे खोद कर निकाला गया और अकाल-पीड़ितों में बाँट दिया गया।

फिर १९४२ में वह प्रतिकार-आन्दोलन के विरुद्ध जापानियों की मुहिम

का नेता बनकर आया। उसने जमीन पर पुनः अधिकार कर लिया और घर-घर जाकर अनाज छीना, लूट-मार की, ढोर-डंगर भटका दिये और काडरों की तलाश करने लगा। सौभाग्यवश, दोस्तों और कुटुम्बियों की सहायता से काडर और उनके परिवार सब-के-सब फरार हो गये। निराश होकर हो ने उनके घरों को आग लगाकर अपना क्रोध शांत किया। इसी व्यक्ति का होज्वाँग में बड़ा आलीशान बँगला था और वहीं दा-श्वी को ले जाकर पीछे के एक कमरे में कैद कर दिया गया।

उस दिन शाम को जापानी जनरल त्रामासिका उसी गाँव से गुजर रहा था और वह अपने पुराने दोस्त से मिलने के लिए वहाँ रुका। हो ने उसे बड़ा शानदार भोज दिया, श्रेष्ठ मदिरा-पान कराया और उसकी प्रशंसा के पुल बाँधे तथा खूब चापलूसी की।

जापानी जनरल का लम्बा, पतला-सा चेहरा था, ऊँची कपोल-पलकें थीं और बड़ी लम्बी धुमाऊ मूछें थीं जिन्हें वह बार-बार ताव देता था। वह अपनी चीनी भाषा की योग्यता का रोब डालना चाहता था। चीनी उसे भली भाँति आती थी। अपनी ठोढ़ी उठाकर उसने अपनी आँखें हो पर गड़ा दीं और ऊँची ज़नानी आवाज में उससे सम्बोधित हुआ :

"जापान संसार भर में सर्वाधिक शक्तिशाली देश है," उसने साफ-साफ शब्दों में और दृढ़ता से कहा। "जापान की शाही सेना ने प्रशान्त महासागर में अमरीका को पूर्ण रूप से परास्त कर दिया है। यह कमज़ोर ज़रा-सा चीन हमारे साथ क्यों लड़ता है, इसे हथियार डाल देना चाहिए!"

त्रामासिका ने 'चीनी-जापानी सहयोग' और वांग-चिंग-वी की योग्यता व सद्गुणों के बारे में बहुत बातें कीं। उसने कहा कि चांग काई-शेक भी ऐसा बुरा आदमी नहीं है बल्कि वह तो चोरी-छिपे 'शाही सेना' का हाथ बँटा रहा है। वास्तविक खतरा और हमारी जानी दुश्मन तो कम्युनिस्ट पार्टी है; हरेक को चाहिए कि उसका सफाया करने में हमारा साथ दे! अपनी इस बात पर तो वह जापानी इतना रोमांचित व उत्तेजित हुआ कि उसके माथे की नसें उभर आईं।

"कम्युनिज्म का नाश करना तो जंगल को समतल बनाने के समान है।" वह बुलंद बाँग तरीके से चिल्लाया। "यदि आपने केवल शाखाएँ ही काटीं तो वृक्ष तो फिर भी बाकी रहेंगे। असल में आप लोगों को उनके भूमिगत संगठनों को खोद निकालना चाहिए जो कि उनकी जड़ें हैं। तभी कम्युनिस्ट खत्म हो सकते हैं!"

जापानी जनरल के चले जाने के बाद हो ने दा-श्वी को अपने सामने बुलवाया। जिस कमरे में 'इएटरव्यू' होने वाला था वह दो बड़ी बत्तियों की चमकीली रोशनी से जगमगा रहा था।

हो के क्रोधित अत्याचारी पिट्ठू अपने मुँह बाये खड़े थे। कमरे की एक दीवार के सहारे लाठियाँ, छुरे, रस्सियां और एक खास भारी लट्ठा पड़ा था जिसके दबाव से हड्डियाँ तोड़ी जाती थीं। तपे हुए लोहे और धातु की सण्डासियाँ जो स्टोव पर खूब गर्म कर ली गई थीं, तैयार रक्खी थीं। दा-श्वी ने महसूस किया मानो वह नरक-कुण्ड में पहुँच गया हो।

"हमने तुम्हारे लिए हर एक चीज़ तैयार कर ली है," हो शैतानी हँसी हँसा। "बस तुम्हारे कहने की देर है कि तुम्हें कौन-सा खाना सबसे ज्यादा पसन्द है और वह तुम्हें मिल जायगा!"

जल्लादों में से एक ने दा-श्वी को आगे धकेला। "झुक जाओ!" उसने आज्ञा दी।

"काहे के लिए?" दा-श्वी ने पूछा। "मैं कोई अपराधी थोड़े ही हूँ!"

"झुक बे कुतिया के पिल्ले!" हो भौंका।

दा-श्वी के होंठ तिरस्कार से भिंचे। "नमकहराम गद्दार के सामने?"

"चखाओ मज़ा इसे ज़रा", हो लाल पीला होकर चीखा।

दो आदमियों ने दा-श्वी की बाहें पकड़ लीं, एक ने उसका माथा कपड़े से कस कर बांध दिया और दूसरे ने चंदन की सख्त लकड़ी से उसके गालों पर आघात किया। एक दर्जन बार उन्होंने उसे पीटा। मुँह से खून बहने लगा और उसकी जीभ सूझ कर स्थिर हो गई। जब पिटाई रुकी तो उसकी एक आँख बन्द हो गई और उससे खून बहने लगा।

हो ने अपने प्रश्न जारी किये। "श्वाँग और कल्लू त्से कहाँ हैं?"

"मुझे नहीं मालूम!"

"उस रात तुम और श्वाँग मुझे गिरफ्तार करने यहाँ आये थे—किसने तुम्हें खबर दी थी?"

दा-श्वी ने अपनी साबित आँख से उसे घूरा। "मुझसे मत पूछो। इससे तुम्हें कोई लाभ न होगा।"

हो रूखी हँसी हँसा। "अभी इसे भर पेट नहीं मिला है खाने को! ज़रा इसे सूप का प्याला तो चखाओ।"

उन्होंने दा-श्वी को खींचकर सीधा लिटा दिया और कोई एक बाल्टी भर के गंदा तरल पदार्थ उसके नथौड़ों में डाला। हो कह रहा था, "यह खाना तुम्हें तुरन्त पसंद आयेगा!" वह गन्दगी उसके दिमाग में भर गई और वह अचेत हो गया। फिर भुलसा हुआ खुरदरा कागज जलाकर उसकी तीखी गंध से उसे होश में लाया गया।

हो ने गंभीर मुद्रा से उसकी ओर ताका, "तो तुम बहुत मज़बूत हो, एँ? देखो मैं तुम्हें जताये देता हूँ—अगर तुम्हारा लोहे का मुँह, तांबे के दाँत और देवदार की लकड़ी जैसी सख्त जीभ हो ना तब भी तुम मुझसे बचकर नहीं जा सकते।

"झटपट बतादो और खतम करो इसे," जिनलुंग ने दोस्ताना मशविरा देते हुए कहा। मुँह में उसके सिगरेट लटक रही थी। तुम पार्टी-मेम्बर हो। तुम तो ज़रूर जानते होगे क्या काम-काज हो रहा है। जिला-सरकार के तुम बड़े अफसर हो; कल्लू त्से तुम्हारा ममेरा भाई है; तुम श्वाँग के दाहिने हाथ हो। तुम्हीं ने अधिकतर जन-संगठन कायम किये हैं। बता दोगे तो हम भी तुमसे ठीक व्यवहार करेंगे। वरना तो तुम यहाँ से जिंदा निकल नहीं सकते! मैं भी तुम्हारा जैसा ही काम करता था, तुम्हीं जैसा था। अब मैं इस तरफ आ गया हूँ और मेरा बड़ा अच्छा काम चल रहा है।"

दा-श्वी क्रोध से काँपने लगा। उसने मुँह भरकर रक्तमिश्रित थूक जिनलुंग के मुँह पर थूका। "हरामज़ादे गद्दार! हम दोनों एक ही जैसे कब

थे वे ?"

जिनलुंग ने रेशमी रूमाल से अपना चेहरा पोंछा। घृणा से उसकी आँखें लाल-पीली हो गईं। "साले छिनाल के जने! क्या अब भी तेरा घमण्ड बाकी है ?"

गर्म लाल-लाल करछा उठाकर उसने उसे दा-श्वी की नंगी कमर पर चिपका दिया। सी-सी की मांस जलने की आवाज़ दा-श्वी के क्रोधपूर्ण रोने की ध्वनि में मिल गई। वह शुद्ध खून के आँसू रोया। अस्थायी रूप से सन्तुष्ट हो जिनलुंग ने वह भयंकर लोहा फेंक दिया।

हो ने ढँकी हुई नजरों से वह अत्याचार देखा और धीरे-धीरे अपना सिगरेट पीता रहा। अचानक उसने सिगरेट का टुकड़ा फेंका और मुस्करा कर कहा, "दा-श्वी इतने ज़िद्दी न बनो," उसने कृत्रिम हँसी हँसते हुए कहा। "तुम भला अण्डे से चट्टान फोड़ने चले हो! क्यों कष्ट भुगतते हो ? कल्लू त्से और श्वाँग के लिए क्यों अपना जीवन नष्ट करते हो ? अगर तुम ज़िद्दी बने रहे तो मर जाओगे और कोई तुम पर आँसू भी न बहायेगा।"

उसने अनुचरों को आज्ञा दी कि दा-श्वी की रस्सी खोल दी जाय और उसे एक स्टूल पर बैठा दिया जाय। "यह सब मेरे मत्थे न मढ़ देना, मैं ज़रा नशे में हूँ। इन लौंडों ने तुम्हारे साथ काफी ज्यादती की है और मैं तुमसे माफी माँगता हूँ। लेकिन इसमें हमारा कोई उद्देश्य नहीं था, तुम इनका बुरा भी न मानना। जिनलुंग को लेलो, हमारे साथ वह बहुत खुश है। बेहतरीन खाना खाता है, अच्छे वस्त्र पहनता है और पैसे भी उसके पास बहुत हैं! अगर तुम भी ठीक से बातें करो तो मैं तुम्हें अफसर बना दूँगा और तुम भी धनवान बन जाओगे!"

बातें करते समय हो की नज़रें दा-श्वी पर ही गड़ी हुई थीं। और चूंकि दा-श्वी सिर्फ सिर झुकाये खड़ा रहा और कुछ बोला नहीं तो हो ने अनुमान लगाया कि वह राज़ी हो गया है। उसने जिनलुंग को आँख मारी और वह बाहर चला गया।

"जहाँ तक प्रतिकार-आंदोलन का सम्बन्ध है," हो ने नरमी से अपनी बातें

जारी करते हुए कहा, "तो मैं तो अब भी उसी में हूँ और आज भी जापानियों के खिलाफ हूँ। वैसे मैं अब उतनी सक्रियता से काम नहीं कर रहा, लेकिन युद्ध अभी बहुत समय तक चलेगा। जल्दी काहे की है?"

जिनलुंग एक आदमी को साथ लेकर लौटा जिसके हाथ में खाने और शराब की एक ट्रे थी जो दा-श्वी के सामने एक छोटी-सी मेज पर रख दी गई। हो ने हाथ से इशारा किया।

"खाइए, कामरेड दा-श्वी और ज़रा स्वस्थ हो जाइए! आप वाक़ई बड़े उम्दा आदमी हैं—और आज से हम और आप दोस्त हो गये।"

दा-श्वी ने उत्तेजित हो गाढ़े सूप का प्याला उठाया और जोर से हो के साटन के लबादे पर दे मारा। गद्दारों ने आतंकित हो झट उस हाथ-पाँव मारने वाले कैदी को पकड़ लिया। हो का चेहरा क्रोध से तमतमा उठा।

"यह शख्स नहीं जानता कि इसके लिए क्या बेहतर है?" वह गरजा। "मैंने इसे एक हल बताया और वह समझता ही नहीं है। देखें हमारे सामने कैसे टिकता है यह!"

क्रूर और हिंसक पशुओं की नाईं वे उस पर पिल पड़े। कई घण्टे वे उस पर तरह-तरह के घातक प्रहार करते रहे। प्रभात होने तक भी उसने एक शब्द तक न बताया और तब उनकी यातनाएँ बन्द हुईं।

हो ने अपनी चमकती हुई चँदिया पर से पसीना पोंछा। "यह इन्सान नहीं है!" एक गद्दार ने ऊबकर कहा। "बाहर ले जाओ और उड़ा दो इसका सिर! लाश कुत्तों को खिला दो।"

कुछ कठपुतली सैनिक दा-श्वी के रक्त-रंजित और अचेत शरीर को उठा कर गाँव की सीमा की ओर ले चले। जिनलुंग हाथ में दुधारी तलवार लिये इतराता हुआ आगे-आगे चला जा रहा था। पीछे जल्लादों का जत्था हो के कई कुत्ते लेकर आ रहा था। कुत्ते अपने शिकार की आशा में दुमें हिला रहे थे।

श्वेताकाश में चन्द्रमा अब भी अपना मंद प्रकाश लिये चमक रहा था। सारा गाँव पौ फटने के पहले गहरी नींद में डूबा हुआ था। जब दा-श्वी को होश आया तो उसने देखा कि वह एक खजूर के विशाल वृक्ष के नीचे खड़ा हुआ है

और बहुत-से बड़े-बड़े कुत्ते उसे घेरे हुए उसकी ओर ललचाई हुई दृष्टि से निहार रहे हैं। जिनलुंग एक सपाट पत्थर पर अपनी तलवार तेज कर रहा था जो दा-श्वी के विचलित मस्तिष्क को बलि की वेदी-सा लग रहा था। छुरा चाँदनी में कैसा चमक रहा था!

दा-श्वी को जबरन घुटनों के बल खड़ा कर दिया गया। जिनलुंग अपनी भारी तलवार उठाने लगा। तब दा-श्वी के मस्तिष्क ने उसे फिर अंधकार में डुबो दिया।

: १० :

हिम-शय्या—हेमंत और शरद, १६४२

"ठहरो! ठहरो!" गाँव से एक कठपुतली सिपाही दौड़ता हुआ आया। उसने जिनलुंग की बाँह पकड़ ली। "कमाण्डर ने कहा है इसे मारो मत बल्कि फौरन वापस आकर रिपोर्ट दो!"

दा-श्वी ने अचेत अवस्था में अनुभव किया कहीं वह मर तो नहीं गया है। और अगर मर गया है तो वह सिर उसके धड़ पर क्यों रखा हुआ है? उसे कुछ-कुछ भान था कि उसे हो के मकान पर ले जाया जा रहा है और वहाँ ले जाकर पिछवाड़े की एक छोटी-सी कोठरी में उसे बंद कर दिया गया है।

हाथ में तलवार लिये और असमंजस में जिनलुंग हो से मिलने गया। उसने देखा कि हो के बूढ़े मा-बाप और अन्य कुटुम्बी उसे घेरे बैठे हैं और ज़ोर-ज़ोर से रो रहे हैं। हो अपने शरीर-रक्षक की ओर देखकर दाँत पीस रहा था।

जिनलुंग को प्रश्न करने का साहस न हुआ और वह बाज़ू में बैठकर सुनने लगा। उसने सुना कि जब हो का शरीर-रक्षक उसके पुत्र गूपी को परकोटे से घिरे हुए गाँव से लेकर आ रहा था उन दोनों को श्वाँग के छापेमारों

ने रास्ते में पकड़ लिया। शरीर-रक्षक को इस सन्देह के साथ छोड़ दिया गया कि अगर गूपी को वापस लेना है तो दा-श्वी को हमारे हवाले कर दो। एक मिलने का स्थान निश्चित किया गया और दो को एक दिन का समय इस तबादले के लिए दे दिया गया। श्वाँग ने यह चेतावनी दे दी थी कि यदि दा-श्वी उन्हें वापस न दिया गया तो वे गूपी के टुकड़े-टुकड़े कर देंगे।

उस छोटी-सी कोठरी में दा-श्वी ने आँखें खोलीं। उसके घावों से निकले हुए घनीभूत रक्त ने उसके शरीर पर कई स्थानों में कपड़ा घावों से चिपका दिया था। उस सख्त पत्थर पर लेटना बड़ा त्रासदायक था लेकिन जब वह बैठने लगा तो उसे और भी पीड़ा हुई। उसे महसूस हुआ जैसे उसे सैकड़ों चाकू भौंके जा रहे हैं, अब तो उसे उस समय से भी अधिक पीड़ा हो रही थी जब कि उस पर भारी प्रहार किये जा रहे थे। दीवार के सहारे सिर टिकाये वह दुखी हो रोने लगा।

इस गड़बड़ में मैं पड़ ही कैसे गया, उसने दुखी हो सोचा। यदि मैं आंदोलन में न भरती होता और बड़े-बड़े लोगों को नाराज़ न करता तो यह दिन ही क्यों देखना पड़ता। यह तो नरक से भी बढ़कर दुखदाई स्थान है! किसी को मेरी परवाह नहीं! कोई जानता भी नहीं मुझ पर क्या बीत रही है!

उसका सारा शरीर पीड़ा से विदीर्ण हो रहा था। मैं कैसे सहूँ यह सब? वह उस नरक-कुण्ड से निकल जाना चाहता था। काश मैं मर जाता और यह सब खतम हो जाता! उसने यों ही अँधाधुँध अपने आत्मघात के साधन सोचे पर वहाँ एक ही चारा था कि जमीन से सिर फोड़े और आत्महत्या कर ले और ऐसा करना भी उसके लिए दुर्गम था, उसमें हिलने-डुलने की भी शक्ति न थी।

दा-श्वी ने जबरन अपनी एक आँख खोली और जाज्वल्यमान सूर्य की किरणों को निहारा। वे खिड़की की चौखट पर पड़ रही थीं। जहाँ कुछ चिड़ियाँ बैठी आनन्दगान गा रही थीं। न जाने क्यों सूर्य की धूप को देखकर उसे कल्लू और मे तथा अन्य साथियों की याद हो आई। उसे क्या मालूम उन पर क्या गुज़री पर यह वह जरूर जानता था कि यदि वे जीवित होंगे तो दृढ़ होंगे। उसने उस दिन का स्मरण किया जब उसने अपना हाथ उठा कर प्रण किया था कि

चाहे कैसी ही परिस्थिति क्यों न हो वह न डिगेगा और न घुटने टेकेगा।

यह मैं क्या अला-बला सोच रहा था? उसने अपने आपको झिड़का। मैं भी कोई कम्युनिस्ट हूँ! मैं जनता के नेता बनने के योग्य नहीं! जनता जापानी-आतंक के विरुद्ध दृढ़ता से खड़ी है और एक मैं हूँ कि ज़रा-सी पीड़ा दी और मैं मौत को बुलाने लगा! मैं भी इसकी मा का—क्या बताऊँ मेरा भी दिमाग़ खराब है! ज्यों-ज्यों उसे क्रोध की गर्मी पहुँचती गई उसके घावों की तकलीफ भी कम होने लगी।

उसे उस वृद्ध महिला का ध्यान आया जिसने उसे उन जापानी कुत्तों से बचाया था, 'चाचा' यिन उसे याद आये जिन्होंने उसे अपने 'किले' में छिपाया था और वे सारे बूढ़े आदमी स्मरण हो आये जिन्होंने अपनी जानें खतरे में डालकर उसकी रक्षा की थी। अब मर जाना उनके साथ विश्वासघात करना है। जितना-जितना वह अपने भाग्य की जनता से तुलना करता गया उतनी ही उसे अपनी वक्ती कमजोरी पर शर्म आने लगी।

अगर मैं आंदोलन में शामिल न होता तो मुझे मरे हुए भी मुद्दत हो चुकी होती! उसने अनुभव किया। भला उन गरीब किसानों का क्या हुआ जो मार डाले गये—या जीवित दफना दिये गये! यह सब उन हरामी जापानी और गद्दारों के कारण हुआ! इनकी मा का—! मैं जिंदा रहूँगा—और बदला लूँगा!

उस दिन दा-श्वी कुछ देर को सोता फिर उठ जाता! जब रात हुई तो उसे अनुभव हुआ कि वह झूम रहा है और डाँडों के चलने की ध्वनि भी उसे सुनाई पड़ी। शायद मैं नाव में हूँ, उसने सोचा। ये लोग शायद मुझे नदी में फेंक कर डुबो देना चाहते हैं!

उसने उठकर बैठना चाहा लेकिन उसमें अपना सिर हिलाने की भी शक्ति न थी। उसका प्रयास फिर विफल रहा।

पिट्ठू रुके और एक नहर के पास जो नरकटों के झुरमुट के करीब थी, किसी की प्रतीक्षा करने लगे। तनिक देर में एक छोटी नौका निकली और उनकी ओर आती हुई दिखाई दी। उसके अगले भाग में एक बूढ़ा बैठा था जिसकी सफेद दाढ़ी चाँदनी में चाँदी की भाँति चमक रही थी। उसने इनको अभिवादन

किया और बोर्ड पर आ गया। हो के पिता ने नम्रता से उसे सलाम किया और बैटने का आग्रह किया।

"दूसरे लोगों ने मुझे मध्यस्थ बनाकर भेजा है," वृद्ध पुरुष ने कहा। "क्या दा-श्वी यहाँ है?"

हो के पिता ने नाव की डेक पर पड़े एक अँधियारे शरीर की ओर संकेत किया। बूढ़े ने फटा हुआ कम्बल उठाया और चौंककर पीछे हटा। उसने दा-श्वी के दिल की धड़कन सुनी और उसे पुनः ढँक दिया। उसने आँखें झपकाईं और खड़ा हो गया, बोलने की उसमें शक्ति ही न थी।

बूढ़े बदमाश हो के बाप ने ताबड़तोड़ सफाई पेश की और कहा कि यह सब जापानियों की करतूतें हैं कि दा-श्वी को उन्होंने इस प्रकार यंत्रणाएँ दीं। और यह भी कहा कि ज्योंही गूपी को वापस दे दिया जायगा दा-श्वी भी रिहा कर दिया जायेगा।

"मुझे अंदेशा है कि हम लोग ऐसा तबादला नहीं कर सकेंगे," वृद्ध व्यक्ति बोला। "मैंने आपके लड़के को देखा है, उन्होंने उसका बाल भी बाँका नहीं किया। और इधर उनके आदमी की यह हालत है, मैं तो इस समय कुछ कह नहीं सकता। मैं एक हाथ से आकाश को और दूसरे से पृथ्वी को नहीं ढँक सकता हूँ। न ही मैं असम्भव को सम्भव करने की शक्ति रखता हूँ। उनका विचार है कि आप पहले दा-श्वी को लौटा दें और अगर आप इस पर राज़ी न हों तो फिर मैं मजबूर हूँ।"

अन्त में जब बूढ़े व्यक्ति ने व्यक्तिगत रूप से यह आश्वासन दिया कि गूपी लौटा दिया जायगा तो उन्होंने दा-श्वी को छोड़ दिया। वह छोटी नौका अचेत दा-श्वी को लेकर डाँडों की खर-खर करती हुई काफी घुमाव-फिराव के बाद नहरों के जाल में पहुँची। बड़ी देर के बाद वह नरकटों की एक और भूल-भुलैयों में दाखिल हुई। बूढ़े आदमी ने कर्कस ध्वनि से सीटी बजाई। दो छोटी-छोटी नावें धीरे-धीरे चलकर अपने गुप्त स्थानों से आईं। त्सुर, श्वाँग और दा-श्वी के भाई रू बूढ़े की नाव में दाखिल हुए और उन्होंने उस निश्चल पुटलिया को खोला। उसे देखकर उनके रोंगटे खड़े हो गये।

"क्या कहते हैं वे इसे ?" त्सुर दाँत पीसते हुए गरजा। "हमारे आदमी को तो जालिमों ने अधमरा करके भेजा है और हमसे चाहते हैं हम गूपी के साथ मेहमान की तरह व्यवहार करें !"

"यह हम उनसे बाद में निपट लेंगे," श्वाँग बोला। खैर दा-श्वी तो हमें मिल गया। बूढ़े बाबा को मुसीबत में न फँसाओ।"

वे सब-के-सब भौचक्के रह गये जब रू दौड़ कर अपनी नाव में कूदा, झट चाकू निकाला और उसने गूपी की नाक काट ली। गूपी दहाड़ने लगा और अपने प्राणों की भीख माँगने लगा।

"तुम में से और कोई भी साला झाँका तो," रू ने गरज कर कहा, "जान से मार डालूँगा !"

श्वाँग भी फौरन कूद कर आया और उसने क्रोधित लड़के को पकड़ लिया। "बहुत हो गया, बस कर," उसने आज्ञा दी। "इससे कोई सवाल हल न होगा।"

रू ने गालियाँ देते हुए अपना रक्त-रंजित चाकू जूते के तले से पोंछा और झटके के साथ म्यान में घुसेड़ लिया। जब दा-श्वी को बड़ी सावधानी के साथ उठाकर छापेमारों की नाव में रख दिया गया तो बूढ़े आदमी ने गूपी को उसके परिवार वालों को लौटा दिया।

आधी रात से अधिक समय बीत चुका था कि काडरों की नाव झील के एक छोटे-से टापू में पहुँची। मे और अनेक स्त्रियाँ उत्सुकता से अँधेरे में नज़रें लगाये बैठी थीं कि छापेमार लौटकर आये। स्त्रियों ने पहले से ही एक किसान का मकान साफ़ कर लिया था, काँग गर्मा दिया था और उनके आने की तैयारी में पानी भी उबाल कर रख लिया था। जब उन्होंने देखा कि दा-श्वी को उठा कर लाया जा रहा है और फिर बड़ी आहिस्तगी से नीचे रखा गया तो वे भयभीत हो गईं। उन्होंने लैम्प जलाया और फटा-पुराना कम्बल हटाकर देखा। दा-श्वी के कुचले हुए शरीर को देखकर वे रो पड़ीं।

"दा-श्वी ! दा-श्वी ! उन हत्यारों ने तुम जैसे स्वस्थ, हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति का क्या हाल कर दिया ?" माथा सूझा हुआ और विकृत था, खुले घावों में कीड़े

किलबिला रहे थे, नाखून निकाल दिये गये थे, कुहनी से हाथों तक बाँहें काली और नीली थीं—जिस्म के किसी भी भाग पर पूरा मांस न था। अचेतावस्था में दा-श्वी यदि जीवित था तो बस अपनी साँस से जो बराबर चल रही थी।

देश-रक्षक सेना के अस्पताल के एक कम्पाउण्डर ने उसे इन्जेक्शन लगाया और उसे धीरे-धीरे होश आने लगा। अपनी बाईं आँख खोलकर उसने श्वाँग को देखा, फिर मे को, फिर त्सुर को। सब कुछ पहचान गया और उठने के लिए सचेष्ट हुआ।

"क्या?" उसने शंकित, मन्द स्वर में कहा, "तुम यहाँ?"

मे की आँखों से आँसू बह रहे थे, उसने बड़ी कोमलता से उसे सहारा दिया। "दा-श्वी," उसने सिसककर कहा, "तुम वापस आ गये······अब सब ठीक हो जायगा।"

उसका सूजा हुआ चेहरा चुहल में परिणत हो गया और वह मुस्करा दिया। "मैं वापस आ गया हूँ," वह रुक-रुक कर बोला। "हम सब फिर मिल गये अह ऽ हः हः!······" दा-श्वी बड़े ज़ोर-जोर से हँसा, चिल्लाया, बड़बड़ाया और अन्त में थका-हारा सो गया।

उसके दुखी मित्र द्रवित हृदय लिये उसे तकते रहे।

उस पतझड़ में शत्रु उत्तरी चीन के पठारों में बुरी तरह घिर गया था। हर मील पर एक दुर्ग था और हर आधे मील पर एक लूट-घर बना हुआ था। बयाँग झील के इलाके में जापानियों ने बड़े-बड़े गाँवों में किले बनाये और निरन्तर छोटों पर आक्रमण करते रहे। उन्होंने भारी भूमि-कर लाद दिया था, अनाज जब्त कर लिया, खुद सूअर का मांस, सफेद आटा, मुर्गी के अण्डे थूरे······जबकि किसानों ने घास, बीज, छालें और जंगली-बूटियाँ खा-खाकर दिन बिताये। शीघ्र ही अधिकांश जंगली बूटियाँ भी समाप्त हो गईं और अनेकों गरीब लोग भूखों मर गये।

इन दुर्लभ दिनों में कल्लू त्से और श्वाँग ने अपने काडरों की सफों को सुधारा। उन्होंने जनता से और घनिष्ट सम्बन्ध स्थापित किया और शत्रु के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया।

काडरों को तो इधर-उधर जाने ही का काम दिया गया था। उधर दा-श्वी पूर्णरूपेण किसानों की सुश्रुषा में ही धीरे-धीरे चंगा हो रहा था। वे उसे कभी किसी गढ़े में छिपा देते, कभी नाव में, या स्ट्रेचर पर लिटाकर उसे नरकटों में किसी गुप्त स्थान को ले जाते। कुछ ही महीनों में उसके घाव बिल्कुल भर गये लेकिन कमजोरी अब भी बहुत थी।

जाड़े आये और झीलों व सोतों का पानी जम गया। उन पर जमे उज्ज्वल बर्फ में आकाश का सुन्दर नीला वर्ण प्रतिबिंबित होने लगा। अब जापानी स्लेड* पर बैठकर बड़ी आसानी से एक गाँव से दूसरे गाँव को जाने लगे और किसानों को निरंतर धावों और तलाशों से तंग करने लगे। दुश्मन खूब जानता था कि बा लू वाले फिर सक्रिय हो गये हैं पर उन्हें पकड़ना टेढ़ी खीर साबित हो रहा था।

प्रतिकार-आंदोलन को जड़ से नष्ट करने का संकल्प करके जापानियों ने अपने फौजी दस्तों की मदद के लिए स्पेशल 'दण्ड देने वाली सेना' भेज दी। तब तो जरा-जरा से गाँवों पर भी दुश्मन के शत्रु मण्डराने लगे—तलाशें, गुण्डागर्दी, पूछ-ताछ किसानों के लिए रोजमर्रा का सवाल बन गया। श्वाँग का गिरोह और गांव के अन्य अनेक अधिकारी जिन्हें अत्यधिक 'लाल' समझा जाता था जनता की सहायता से नरकटों के झुरमुट में भाग गये। हालाँकि किसानों को पैसों की सख्त जरूरत थी फिर भी उन्होंने उस साल सारे नरकट न काटे सिर्फ बीच के कुछ काट डाले ताकि काडरों के लिए शरणस्थान बन सकें।

रोज़ाना किसान अपने अपर्याप्त खाने में से कुछ खाना उन काडरों को भेजते थे। जब प्यास लगती तो काडर बर्फ के टुकड़े चूस लेते। उनका सबसे अच्छा खाना दा-श्वी को दे दिया जाता था।

अपना बँधा हुआ सिर खुर के विशाल वक्ष पर टिकाये वह इन्कार करता, "मैं बिल्कुल चंगा हो गया हूँ। मुझे दूसरों से बेहतर भोजन देने की क्या जरूरत?" दा-श्वी अपनी रोटी या केक तोड़ता और लोगों से हठ करता

*बर्फ पर सरकने वाली गाड़ी।

कि वे भी बराबर का हिस्सा लें।

मे रुई-भरी हुई जाकेट जो किसानों ने उसे दी थी पहने हुए थी। घुटनों के नीचे कपड़ा फट गया था और पछुआ हवा के झोंको से वह खूब सड़-सड़ करता था।

सुन्दरी निउर इसका मजा लेती थी। "अहा!" वह प्रमुदित हो कहती। "तुम्हारे पाजामे पर तो पर्दे लगे हुए हैं!"

"क्यों बेकार में चिढ़ाती है और तमाशा बनाती है मेरा!" मे हँसकर धुड़क देती।

दिन के समय बर्फ की चमक काडरों की आँखों को चौंधिया देती थी। वे एक साथ मिलकर बैठ जाते और बहस के साथ-साथ अपनी बंदूकों पर पालिश करते रहते थे।

रात्रि के समय निर्मल चाँदनी में छापेमार निकलते और गाँवों में जाकर दुश्मन को तंग करते थे। पीछे रहे हुए काडर कटे हुए नरकटों का बिस्तर बनाते और तीन या चार मिलकर एक ही लिहाफ में सो जाते थे। उनकी शारीरिक गर्मी से एक-दूसरे को गरमी पहुँचती थी लेकिन उससे बर्फ भी पिघलता था और गढ़े बन जाते थे।

"एक-न-एक दिन देखना हम सब भी पिघलकर झील की धरातल में पहुँच जायेंगे!" मे ने छेड़खानी करते हुए कहा।

"चलो हटो!" दा-श्वी ने उत्तर दिया। "यह बर्फ तो इतना मोटा है कि गर्म स्टोव भी इसे नहीं जला सकता!"

झील पर रहते-रहते हरेक की आँखें सूझ गईं। काडरों का शरीर दुखने लगा लेकिन उन्होंने धैर्य और साहस का दामन न छोड़ा।

एक रात भारी सर्दी ने उन्हें दबोच लिया और हवा के झोंकों ने काडरों पर बर्फ के ढेले बरसाये। वे ऐसे ठिठुरे कि किसी को नींद न आई। कोई 'चीन के नवयुवक' नामक गीत गाने लगा; धीरे-धीरे और भी आ मिले और उन सबने इतने जोर से गाना शुरू किया मानो तीव्र वायु का सामना करते हुए विजय-गीत गा रहे हैं :

"आगे बढ़ो ! चीन के जवान ! सामना करें आज के खतरे का
लड़ते रहो ! चीन के जवान ! और रहें दृढ़ अपनी शक्ति के साथ
चीन है मिस्ल तूफ़ान में जहाज़ ! कल की विजय पर !

: ११ :

मेघ दुर्ग—शरद, १९४२

सात दिन और सात रातें काडरों ने बर्फ पर सो कर गुज़ारीं। उधर जापानियों की 'दण्ड देने वाली सेना' गाँवों में आ लू की तलाश करती फिरी और किसानों से सवाल करती रही। परन्तु विफल हो शत्रु छोटे गाँवों को छोड़कर अपने गढ़ों—शहरों और परकोटों वाले गाँवों की ओर लौट गये। काडर अपने गुप्त स्थानों से निकलकर फिर जापानियों द्वारा छोड़े हुए छोटे गाँवों में आ गये।

एक रात कल्लू ल्से, श्वाँग और काडर-स्कूल के डीन चेंग तीनों काउण्टी नेताओं की एक बैठक में गये। रिपोटों से मालूम हुआ कि जापानियों ने जो हाल ही में कुछ स्थानों पर क़ब्ज़ा किया है उन्हें बचाने के लिए उनके पास पर्याप्त सेना नहीं है। वे पहले से ही कई गाँवों से जाने लगे थे और कठपुतली दस्तों द्वारा क़ब्ज़ाये हुए दुर्गों को भी छोड़ रहे थे। पार्टी के नेताओं ने यह निश्चय किया कि वे एक-एक करके उन गाँवों को पुनः लेलें।

बैठक समाप्त होने पर श्वाँग अपने ज़िले को लौट गया। काडरों से विचार-विनिमय करके उसने पार्टी के आदेश का पालन करने की योजना तैयार की।

पहला क़िला जिस पर आक्रमण करने का उन्होंने फैसला किया 'भैंगा' नामक एक नरपिशाच कप्तान के अधीन था। किसानों से ऐसी कोई चीज़ ही न थी जो वह न माँगता हो और यदि उसकी माँग पूरी न होती तो वह उन

को बड़ी निष्ठुरता से पीटता था । एक बार जब उसने उसे गेहूँ का आटा देने का आदेश दिया तो वे उसके लिए बड़ा मूल्यवान आटा लेकर आये । क्रोध से लाल-पीला होकर उसने वह आटा ज़मीन पर बिखेर दिया और गरज कर कहा कि वह काफी नहीं है ।

"जब तक तुम्हारी मा को न—तुम दियेह नहीं कहते एँ !" भैंगा चिल्लाया ।

उसकी दुष्टता का पार न था और इसीलिए लोग उससे बहुत घृणा करते थे । भैंगे के लिए दुराचार कोई चीज ही नहीं थी । उसने एक चौदह वर्षीय बालिका से बलात्कार भी किया था । जब एक काडर उसके हत्थे पड़ गया तो उसे मार डालने से उसे सन्तोष न हुआ, उसने उसके आठ टुकड़े कर दिये ।

"कौन कहता है मैं बा लू से सद्व्यवहार नहीं करता ?" भैंगे ने पूछा । "मैं तो इसे हिम-प्रासाद में सुलाऊँ ।" उसने वह विकृत लाश जमी हुई झील के एक छेद में फिंकवा दी ।

उनका सौदा पट गया । उन्होंने दो स्लेड माँगीं और उन्हें लौटाने के लिए ड्रायवर भी तलब किये ।

उनकी प्रार्थना स्वीकार करली गई और दो स्लेड कुछ ही देर में झील की सतह पर दौड़ती हुई नज़र आईं ।

एक दिन भैंगा और उसके पिट्ठू सिपाही झील के किनारे स्थित किसी गाँव में बलात् पैसा लेने गये । किनारे का चक्कर लगाते हुए वे नरकटों के झुण्ड और नहर में प्रविष्ट हुए जिन्हें भैंगा न पहचान सका ।

"ऐ !" उसने ड्रायवर की ओर मुड़कर कहा । "यह ग़लत रास्ता है ! यहाँ क्या कर रहे हो तुम ?"

नाटा, मोटा किसान भैंगे की ओर देखकर पुनर्आश्वसान के भाव से मुस्कराया । घबराइए नहीं कप्तान साहब ! मैं यह झील साल में ३६० बार पार करता हूँ । यहाँ का चप्पा-चप्पा मैं आँख मींचे हुए भी बता सकता हूँ ।"

"यह ज़रा छोटा रास्ता है," दूसरे ड्रायवर ने जो काफी भारी-भरकम आदमी था कहा । "इस रास्ते से हम आपको जल्दी घर पहुँचा देंगे ।"

कुछ मिनट बाद भैंगा फिर पूछने वाला था कि उसे अचानक महसूस हुआ कि कोई बर्फ जैसी ठण्डी चीज़ उसकी गर्दन पर रखी जा रही है और ड्रायवर कह रहा है, "हिलिये नहीं !" एक हाथ आगे को बढ़ा और उसने उस की पिस्तौल निकाल ली। यही दूसरी स्लेड पर भी हुआ।

पिट्ठुओं को हुक्म दिया गया कि स्लेड से उतरकर नरकटों के झुण्ड में चले जायें। बड़े किसान त्सुर ने भैंगे को उठाकर दूसरे कैदी से कोई बीस गज़ दूर फेंक दिया।

"ग़द्दार कुत्ते !" त्सुर ने भयंकर आवाज़ में कहा। "तू हमारे किसानों को खून में नहलाता है और बा लू को मारता है ! हमारी काउण्टी सरकार ने मुझे आदेश दिया है कि आज ही तेरा खात्मा-बिलख़ैर करदूँ। पीठ कर अपनी मेरी ओर !"

भैंगे के चेहरे की रंगत उड़ गई। उसने कुछ कहने के लिए अपना मुँह खोला पर उसके पहले कि वह ज़बान से कोई शब्द निकाले त्सुर ने गोली उसके दिमाग़ में पैवस्त कर दी।

दूसरा कठपुतली सिपाही भय से काँप रहा था।

"तुम्हें घबराने की ज़रूरत नहीं है," श्वाँग ने कहा। यही वह ठिगनासा मोटा 'ड्रायवर' था "हम तो केवल बदतरीन आदमियों को मारते हैं। अगर तुम वादा करो कि आइन्दा दुश्मन का साथ न दोगे तो हम तुम्हें छोड़ देंगे।"

कठपुतली ने वचन दिया कि बस उसकी अंतिम अभिलाषा घर लौटकर एक मामूली नागरिक बनने की है। श्वाँग और त्सुर ने उसे कुछ देर लेक्चर पिलाया और कहा कि अगर तुम हमारी मदद करो और अपनी सचाई सिद्ध करो तो तुम्हारी अर्ज मंजूर करली जायगी।

उसी रात हाथों में रायफलें लिये छापेमारों ने क़िला घेर लिया। भैंगे की वर्दी पहने और पकड़े हुए कठपुतली को साथ लिये श्वाँग बड़े साहस के साथ किले के अन्दर घुस गया।

"पुल गिरा दो," कठपुतली ने पुकारकर कहा। "कप्तान साहब वापस आ गये हैं !"

पुल नीचे कर दिया गया और श्वाँग चुपचाप उसे पार करके अन्दर गया। बिना एक शब्द कहे उसने पिस्तौल निकाली और भयभीत सिपाहियों को जाँच लिया। त्सुर और छापेमार पीछे थे ही उन्होंने ताबड़तोड़ भयभीत कठपुतलियों के शस्त्र छीन लिये। पूरा किला क़ब्जे में कर लिया गया और एक भी गोली की आवश्यकता न पड़ी।

कठपुतलियों से सारी सैनिक सामग्री व अस्त्र-शस्त्र ले चुकने के बाद छापेमारों ने उन्हें घर लौटने की आज्ञा दी। किला आग की भेंट कर दिया गया।

× × × ×

एक दिन दोपहर के समय चार छापेमार मछुओं के वस्त्र पहनकर कुछ स्लेड लेकर जो कि सींक की टोकरियों और बर्फ़ काटने की छेनियों से लदी हुई थीं निकल पड़े। आदमियों के कपड़ों में काँटे लगे हुये थे। और जूते चमड़े के तस्मों से बँधे हुये थे ताकि उनमें नमी न पहुँच सके। दा-श्वी और त्सुर दोनों के हाथों में पँचधारे बल्लम थे और वे अपनी-अपनी नाव के ठीक सामने खड़े हुये थे। पीठ टिकाये हुए और पाँव फैलाये श्वाँग और जोव मछुए ने सामने बर्फ़ पर चलती हुई स्लेड़ों को अपने लम्बे-लम्बे बाँसों की आवाजों के साथ गोली का निशाना बनाया।

झील के किनारे-किनारे चलकर वे छोटी खाड़ी के गाँव से लगभग ५० गज इधर पहुँच गये। गाँव के किले के द्वार पर पहरे पर बैठे कठपुतली सैनिक ने उन्हें देख लिया। त्सुर के भाले के ऊपर जो मछली अब तक तड़फड़ा रही थी उससे वह धोखे में आ गया। छापेमारों ने उसकी उत्सुक निगाहों के सामने ही अपनी स्लेड बड़े आराम से रोक दी।

"ए मछुए, यहाँ आना तो!" वह चिल्लाया।

"हम लोग काम में लगे हैं," त्सुर ने चीखकर कहा। "क्या काम है तुम्हें?"

कटपुतली सैनिक ने किनारे-किनारे दौड़कर उनका पीछा किया। "तुम्हारी मा का—चलो आओ इधर को! क्या है तुम्हारे पास मैं देखना चाहता हूँ!"

दोनों स्लेडें किले से काफी दूर किनारे पर एक बड़े वेद वृक्ष के पास खींच कर लाई गईं। कटपुतली सैनिक हाँपता हुआ आया और उसने त्युर की मछली की ओर इशारा किया।

"वह चीज मुझे दो," वह बोला। "मेरे कमाण्डर को मछली बहुत भाती है। मैं तुम्हें इसके पैसे बाद में दे दूँगा।"

"अरे यार छोड़ो भी इसे," त्युर ने उत्तर दिया। "हमने तो अगले किले वालों के लिए यह मछली रखी है। अबके जो बड़ी-सी मछली पकड़ेंगे ना वह तुम्हें दे देंगे!"

"ये और जो मछलियाँ हमारे पास हैं, शायद इनमें से तुम्हें कोई पसंद आ जाय!" श्वाँग ने अपनी सींक की टोकरी की ओर इशारा करते हुए कहा। "ये देखो, चाहिए क्या इनमें से कोई!"

"मुझे तो बड़ी वाली चाहिए," कठपुतली सैनिक ने कहा और टोकरी देखने के लिए झुका।

श्वाँग ने पिस्तौल उसकी पसली में भोंक दी। "खबरदार जो शोर मचाया!" कठपुतली सैनिक का मुँह खुला का खुला रह गया और त्युर ने उसकी रायफल छीन ली।

अगर तुम हमें सब कुछ बता दोगे तो तुम्हारी जान बच जायगी," श्वाँग ने कहा। "हम चीनी हैं और चीनियों को नहीं मारते। अब बताओ कि किले में लोग कहाँ ठहरे हैं?

कठपुतली के दाँत जोर-जोर से कटकटा रहे थे। "मैं—मैं—बताता हूँ! मेरी जान बख्श दो। सारे आदमी उत्तरी विंग में फर्श पर ही ठहरे हुए हैं! कमाण्डर को डर है कहीं हम उसे दगा न दे दें इसलिए उसने बंदूकें पूर्वी······ क—कमरे में बंद कर रखी हैं!"

छापेमारों से लदी हुई और भी कई स्लेड आ पहुँची और श्वाँग ने उनका स्वागत किया। "आ जाओ! थोड़ी मछलियाँ बाँट आयें।"

कठपुतली के लिए एक आदमी वहाँ छोड़कर वे किनारे-किनारे गये और किले के भीतर चले गये। दा-श्वी और त्सुर के बायें हाथों में मछलियाँ थीं और उनके भारी भरे हुए लबादों की बाहें ऊपर चढ़ी हुई थीं जिनमें पिस्तौल छिपे हुए थे। दूसरे लोगों ने जो उनके पीछे थे अपनी बन्दूकें छाती पर जाकेटों के नीचे घुरस ली थीं।

छापेमार दरवाजे से दाखिल हुए जहाँ पर पकड़ा हुआ संतरी पहरा दे रहा था, और सीधे उत्तरी विंग की ओर गये। कठपुतली सिपाही कमर तक नंगे एक स्टोव के इर्द-गिर्द बैठे हुए कपड़ों में से जुएँ निकाल-निकालकर मार रहे थे।

दा-श्वी और त्सुर पूर्वी कमरे में दाखिल हुए तो क्या देखते हैं कि एक सफेद तौलिया गर्दन में डाले कमाण्डर बैठा है और नाई उसका सिर घोट रहा है?

कमाण्डर ने कनखियों से उनकी ओर देखा। "अच्छा, तुम मछलियाँ लेकर आये हो!"

त्सुर ने अपनी आस्तीन उतार ली और अपनी चमकती हुई पिस्तौल कमाण्डर के माथे पर रख दी। "हाँ, और हम यह भी लाये हैं!"

कमाण्डर का अभी आधा सिर ही मुँडा था, वह मूर्खों की नाई उन्हें घूरने लगा। भय से नाई का उस्तरा हाथ में से छूट पड़ा। दूसरे छापेमारों ने आकर अल्मारियों में से कठपुतली सैनिकों की बंदूकें उठा लीं। दा-श्वी और त्सुर ने कठपुतली सरदार को बाँध लिया।

"तुझे इससे क्या काम?" उन्होंने नाई से कहा। "घर क्यों नहीं जाता?" नापित उनके स्वर और आवाज से भाँप गया कि वे बा लू हैं। उसने अपना उस्तरा मशीन आदि उठाया और मुस्कराते हुए घर की राह ली।

दा-श्वी के भाई रू और मछुए जोव ने बहुत से कठपुतली सिपाहियों को देखा जो वर्दियों पर लबादे पहने हुए पश्चिमी कमरे से खिसकने की कोशिश कर रहे थे।

"खबरदार जो यहाँ से कोई हिला, गोली मार देंगे हम!" रू ने उन्हें सावधान किया।

कुछ ही देर में कमाण्डर और उसके सैनिक किले के सामने झील के किनारे लाकर खड़े कर दिये गये। कुछ किसान जो वैसे ही गाँव से चले आये थे यह दृश्य देखकर बड़े खुश हुए। वे बड़े बेद वृत्त में से स्लेड ले आये और कैदियों तथा विजय-चिन्हों को उन पर लादने में छापेमारों की सहायता करने लगे।

एक स्लेड दा-श्वी और त्सुर के लिए खाली छोड़ दी गई। वे किले को आग लगाने के लिए वहीं रुक गये। किसान नरकटों की पुरानी चटाइयाँ और सूखे चारे के ढेर ले आये ताकि आग जल्दी भड़क सके। फौरन आग लगा दी गई और इमारतों के लकड़ी के फर्शों में से कुछ दस्ती बम जिन्हें वे भूल आये थे फट पड़े और उनके जोर के धमाके से आकाश गूँज उठा। उसे सुनकर और भी किसान घटना स्थल पर आ गये।

"यहाँ बा लू कब आये?" उनमें से एक ने मुस्कराकर पूछा। "मैंने तो उन्हें देखा भी नहीं और किला सुसरा खतम भी हो गया!"

उसी दिन कल्लू त्से छापेमारों के प्रधान-दफ्तर में पहुँचा। बहुत-से काउण्टी अफसरों को जिला सरकार के स्तरों पर आदेश दिया गया था कि वे शत्रु के विरुद्ध संघर्ष का नेतृत्व करें। कल्लू को श्वाँग के संगठन के साथ काम करने के लिए भेजा गया था।

संध्या के समय बैठक में छापेमारों के स्थानीय कार्य पर समीक्षा करते हुए कल्लू ने सुझाव दिया कि बड़े चिनार वाले गाँव के किले पर हमला किया जाय। कठपुतली सैनिकों का यह दुर्ग प्रतिकार-आंदोलन के रास्ते में बहुत बड़ा काँटा था और उसका नाश ही उपयुक्त था। छापेमार तो इस कार्य के लिए झट राजी हो गये क्योंकि सेनापति वही गद्दार, घृणित जिनलुंग था और लियेव उसका दाहिना हाथ बना हुआ था। उन्होंने कहा कि अगर जिनलुंग पकड़ लिया गया तो दा-श्वी का बदला उससे ले लिया जायगा!

लेकिन धूर्त जिनलुंग बड़े चिनार से कभी टलता ही न था और उसका

किला बड़ी अच्छी तरह सुरक्षित रहता था। इमारतें बड़ी मजबूत थीं और आस-पास कंटीले तारों की दो पंक्तियों की मुंडेर बनी हुई थी, जिसके अंदर कठपुतली सिपाही दिन के समय निरन्तर पहरा देते रहते थे। रात्रि के समय ऊंची दीवार वाले कम्पाउण्ड का फाटक बड़ी सावधानी से बंद किया जाता था और बाहर की ओर आँगन में भयंकर कुत्ते छोड़ दिये जाते थे। किले की प्रत्येक छत पर संतरी तैनात थे। जिनलुंग देहातियों पर गहरी नजर रखता था। छापेमारों को कोई ऐसा व्यक्ति सुझाई न देता था जो उनकी मदद कर सकता। ऐसी स्थिति में कोई योजना भी दूभर थी।

"मेरी माँ के कुछ सम्बन्धी बड़े चिनार वाले गाँव में रहते हैं," मे ने कहा। "अगर मैं जाकर देखूँ तो कैसा रहे?"

दा-श्वी को शक था। "मैं नहीं कह सकता······सुना है तुम्हारे चचा किले में नौकर हैं। अगर उन्होंने तुम्हारी खबर उन्हें दे दी तो?"

और भी कुछ छापेमार इसके विरुद्ध थे लेकिन मे ज़िद कर रही थी। अगर कुछ न भी मिला तो क्या हुआ हमें कोई हानि भी नहीं होगी। उसने कहा। अंत में कल्लू ने उसे जाने की आज्ञा दे दी।

उसी रात में कुछ छापेमारों की रक्षा में बड़े चिनार वाले गाँव की सीमा तक गई और वहाँ से दबे पाँव वह गाँव में दाखिल हुई।

तीन दिन हो गये पर मे अब तक न लौटी। लोगों को चिन्ता होने लगी। निउर तो इतनी घबराई कि रोने लगी। कल्लू को भी डर हुआ कि कहीं कुछ गड़बड़ हो गई मालूम होता है।

"अगर वह आज रात तक लौट कर नहीं आती," उसने कहा, "तो हमें उसके लिए गाँव में जाना पड़ेगा।

प्रधान दफ्तर की छोटी-सी कोठरी में छापेमार आधी रात गये तक मे की प्रतीक्षा करते रहे, तब कहीं जाकर मे लौटी।

उसके गाल ठण्डे चमकीले सुर्ख सेबों की नाईं थे और बाल जो उसके सिर के रूमाल के बाहर निकल आये थे कोहरे से सफेद हो गये थे लेकिन जब उसने अपने दोस्तों को देखा तो हर्ष से उसके नेत्र नृत्य करने लगे।

ज़रा कैंची लाना तो," उसने निउर से कहा और अपने भारी भरे हुए लबादे के बटन खोले।

"चाल क्या सूझी है तुम्हें?" निउर ने हँसकर पूछा।

"मेरे हाथ ठिठुर गये हैं," मे बोली। "आँचल का यह कोना काटो इसमें एक काग़ज़ है। वह कल्लू को दे देना।"

निउर ने वैसा ही किया। लोग कल्लू के इर्द-गिर्द इकट्ठे हो गये और एक खुरदरे-से काग़ज़ पर बने व्यास, वर्ग और रेखायें देख कर असमंजस में पड़ गये।

"यह किस प्रकार का खेल है?" एक छापेमार ने हँसकर कहा।

"इस ज़रा-से खेल से अपन किले को जीत लेंगे!" मे ने मुस्कराते हुए कहा। उङ्गली से संकेत करते हुए उसने समझाया, "दक्षिण से उत्तर तक वाली झील तो यह है। यह है उसका बाँध, फिर यह सपाट भूमि, यहाँ है गहरी खाई। आप इस पुल को पार करके दूसरे टुकड़े पर पहुँच जाइए। ये जो टेढ़ी लकीरें हैं ये हैं कंटीले तार जो क़द्दे आदम से भी ऊँचे हैं। यहाँ तारों की एक मेंड़ है जिसके फाटक पर एक बड़ा ताला लटका हुआ है। फाटक के अन्दर जो ये पाँच चक्कर बने हुए हैं ये हैं पाँच कुत्ते। अगर इनसे निकल जायें तो कम्पाउण्ड की एक पत्थर की दीवार है। यह उसका दरवाज़ा है। उसकी चाबी जिनलुंग अपने पास रखता है। दरवाजे में से घुसकर आप पहले आँगन में आयेंगे। इसके उत्तर में कठपुतली सैनिकों का दस्ता रहता है। छत पर जो यह त्रिकोण बना हुआ है वह किले का शरण-स्थान है। इस पर दिन-रात एक आदमी पहरा देता रहता है। उत्तर की ओर अगर आगे बढ़ेंगे तो आपको दूसरा आँगन मिलेगा। बीच में जो यह बड़ा व्यास बना हुआ है किले का मीनार है। यह तीस फीट ऊँचा तिमंज़िला मीनार है। इसकी छत पर चौबीस घण्टे एक संतरी पहरा देता है। लियेव तीसरी मंज़िल पर रहता है। एक दस्ता दूसरी मंज़िल पर रहता है। उत्तर में और आगे जाकर तीसरा आँगन है। उसमें पूर्वी इमारत में जिनलुंग रहता है। उसका रक्षक दरवाजे के बाहर ही सोता है। पश्चिमी विंग बिल्कुल खाली है। उत्तरी दीवार की ओर एक दुमंजिला इमारत है। उसी के

ऊपर एक और दस्ता रहता है। सारा कम्पाउण्ड एक ऊँची दीवार से घिरा हुआ है जिसकी मोटाई १० फीट है······।"

"ऐ अब कौतूहल में न रखो हमें!" निउर ने अधीर हो उसे टोका। "यह तुमने हमें बताया ही नहीं कि हम दाख़िल क्योंकर होंगे!"

"वह बड़ी टेढ़ी खीर है बीबी जी!" दा-श्वी ने कहा।

"घबराओ नहीं!" मे हँस दी। मुझे बात पूरी करने दो। अभी तो चौथा आँगन और है जो पहले तीसरे से बिल्कुल मिला हुआ था पर अब उस में दीवार खड़ी कर दी गई है। नम्बर तीन आँगन के उत्तर में जो दुमंज़िला इमारत है उसमें किसी ज़माने में ऊपर की मंज़िल में दो खिड़कियाँ थीं जो चौथे नम्बर के आँगन में खुलती थीं लेकिन उन पर अब ईंटें रख दी गई हैं······।"

"तुम तो बोले ही जाती हो, यह बताती नहीं कि हम उसमें दाखि कैसे होंगे?" निउर ने जलकर कहा।

"वही कहने वाली हूँ," मे ने कहा। "इन्हीं में से एक खिड़की में से हम दाख़िल हो सकते हैं। जो ईंटें लगी हैं उनमें सीमेंट नहीं लगा है—सो उन्हें निकाला जा सकता है।"

"उसकी मंज़िल में जो दस्ता तुमने बताया, उसका क्या होगा?" श्वाँग ने पूछा।

"उनका कमरा उस मंज़िल में पश्चिमी कोने में है और यह जो खिड़की है वह पूर्वी कोने पर है और वहीं पर ज़ीना भी है।"

"यह जो चौथा आँगन है यह कैसा है?" दा-श्वी ने पूछा। "यह कैसी जगह है?"

"वह तो क़रीब-क़रीब खाली है, हाँ एक निगराँ रहता है। उसके उत्तरी कोने पर ही प्रवेश-द्वार है। उसके फाटक से निकलकर अगर हम दीवार से चिपके-चिपके चलें तो इमारत के ठीक पीछे उन बन्द खिड़कियों तक पहुँच सकते हैं और सन्तरी हमें देख भी नहीं सकता है।"

"अरे वाह! तब तो फिर अगर हम किला जीतेंगे तो विजय का सेहरा तुम्हारे सिर बंधेगा।" कल्लू ने प्रशंसा के भाव से कहा। "तुमने तो बड़ा ज़ोरदार

काम किया है।

"मुझे यह सारा विवरण मेरे चाचा ने दिया है जो किले में नौकर हैं! उनसे बातें उगलवाने में मुझे बड़ा समय लगा!" मे ने हँसकर कहा।

वे सुबह तक बैठे आक्रमण का नक्शा बनाते रहे। रू और निउर को कुछ और छापेमार घेरने के लिए भेज दिया गया।

रात तक तो सब तैयारियाँ कर ली गईं। रात ऐसी अँधियारी थी कि हाथ को हाथ न सूझता था। एक सीढ़ी और छोटी-सी करवत लेकर जिसमें एक पतली सी छुरी लगी हुई थी, छापेमारों का समूह बड़े चिनार के पश्चिम में स्थित मुश्कबेंतों के झुरमुट की ओर रवाना हुआ।

मे के पास तेल की एक छोटी शीशी थी। "मैं जाती हूँ। तुम सब यहीं ठहरो!" वह बोली।

"अकेली कर लोगी?" श्वाँग ने पूछा। "मैं तुम्हारे साथ न चलूँ?"

"नहीं। मैं अकेले इसे बेहतर कर लूँगी," मे ने जिद की।

वह बड़ी सावधानी से गाँव में दाखिल हुई और चौथे आँगन के उत्तरी फाटक की ओर चली। फाटक खुला हुआ था। चुपचाप वह घुसी और लावारिस बागीचे के कोने में उगे चारे में छिप गई। उसके चाचा ने बता दिया था कि निगराँ हर रात खाना खाने के बाद फाटक बंद कर देता है और चला जाता है। और वास्तव में हुआ भी ऐसा ही। कोई आधा घण्टे बाद एक बूढ़ा कमरे से निकला जिसमें कि एक दिया जल रहा था, उसने आँगन पार किया और चरँख-चूँ करते हुए फाटक को बंद कर दिया और सींखचे उस पर लगा कर वापस अपने कमरे में चला गया। दिया बुझ गया।

मे कुछ क्षण और रुकी रही, फिर दबे पाँव जाकर उसने दरवाजे की चूलों को अपने तेल से भिगो दिया। उसने सींखचे हटा दिये, फाटक खोल दिया और गाँव के बाहर स्थित सरकंडों के झुरमुट को लौट आई।

"फाटक खुला हुआ है," वह बोली। "अब हम चल सकते हैं।"

उस काली अँधियारी रात में फुर्ती से कदम बढ़ाते हुए मैं छापेमारों को चौथे आँगन तक पहुँचाने गई। सीढ़ी निकालने के लिए उन्होंने फाटक और खोल लिया। वह बिना आवाज किये ही खुल गया। आँगन की पूर्वी दीवार से लगे-लगे, चारों ओर घास में रेंगते हुए जो कि उनके सिरों से भी ऊँची थी वे इमारत के पिछवाड़े की ओर गये। इमारत के पूर्वी भाग में स्थित ईंटों से बंद खिड़की पर उन्होंने सीढ़ी लगा दी।

ईंटों में हालाँकि सीमेण्ट नहीं लगा था पर वे बड़ी सटाकर रखी गई थीं। पहले उन्होंने आरी पर लहसुन मल लिया ताकि वह आवाज न करे फिर उन लोगों ने खिड़की की चौखट का ऊपरी भाग काट डाला। बस फिर क्या था, उन्होंने एक-एक करके ईंट सरकाई और सीढ़ी पर से दूसरों को थमाते गये।

श्वाँग स्थिति समझने के लिए खिड़की में से अंदर गया। वह ज़ीने में पहुँचा जो बरामदे को जाता था। वह दबे पाँव हाल के नीचे कमरे में गया जहाँ कठपुतली सैनिकों का एक दस्ता सो रहा था और वह बाहर खड़ा होकर सुनने लगा। वे सब शान्तिपूर्वक खुर्राटे ले रहे थे। हल्के कदमों से चलकर वह ज़ीने से उतरा और तीसरे आँगन में पहुँच गया। पूर्वी विंग में जिनलुंग का कमरा अँधियारा था; श्वाँग दूसरे आँगन की ओर बढ़ा। वहाँ मीनार की दूसरी मंजिल पर रोशनियाँ जल रही थीं। अगर आवाज आ रही थी तो छत वाले संतरी की जो आनन्द-मग्न कुछ गुनगुना रहा था।

श्वाँग पहले आँगन में जा पहुँचा। उत्तरी भाग वाली एकमंज़िला इमारत में सिपाहियों का दस्ता घोड़े बेचकर सो रहा था। छत वाले शरण स्थान में भी कोई क्रिया न दिखाई दी। श्वाँग लौट कर छापेमारों के पास आया और उन्हें उसने जो-जो देखा था बताया।

वे पाँच-पाँच के चार गिरोहों में बट गये। पहला गिरोह तो मछुए जोव के साथ पहले आँगन में गया। दूसरा कल्लू त्से और श्वाँग के नेतृत्व में दूसरे आँगन में मीनार के ठीक नीचे जा खड़ा हुआ। दा-श्वी तीसरे गिरोह को लिये तीसरे आँगन के पूर्वी विंग में जिनलुंग के कमरे के मुक़ाबिल जा पहुँचा। चौथा

गिरोह जिसमें दा-श्वी का भाई रू भी था। इमारत के दूसरे माले पर ही जहाँ से वे दाखिल हुए थे रुक गये। हरेक को आदेश था कि जब तक कल्लू मीनार के ऊपर वाले संतरी का खात्मा न करदे, रुका रहे और उसके बाद उसके एक साथ धावा बोल दें।

श्वाँग, कल्लू और उनके साथी मीनार की सुप्रकाशित दूसरी मंजिल में दाखिल हुए मुर्दे सुअरों की भाँति सोये हुए कठपुतली सिपाही कमरे में करवटें बदल रहे थे। तीन आदमियों को पीछे छोड़ कर श्वाँग और कल्लू एक दिया लेकर तीसरी मज़िल पर चढ़ गये। सारी दीवारों पर खूंटियों में हाथियार लटक रहे थे। एक ओर को ठोढ़ी ऊपर को किये और मुँह फाड़े लियेव जोर-जोर से खुर्राटे भर रहा था। श्वाँग उसके पास रुका और कल्लू हाथ में पिस्तौल लिये ज़ीने के ऊपर चढ़ता गया।

"कौन है?" संतरी ने पुकारा।

"मैं हूँ," कल्लू दो-दो सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर गया।

"कौन हो तुम?"

"मैं हूँ मैं, तुम क्या समझे?" कल्लू हँस दिया।

"मेरी गश्त बदलने वाले?"

कल्लू ज़ीने के ऊपर पहुँचा और उस घने अंधकार में संतरी के सिगरेट की चमक की ओर बढ़ा। कठपुतली के पास एक बड़ी दुनाली बन्दूक थी और वह हाथ बाँहों में घुसेड़े हुए सर्दी से ठिठुर रहा था। पूर्व इसके कि संतरी को पता चले क्या होने वाला है कल्लू ने झपट कर उसकी बन्दूक छीन ली और पिस्तौल उस पर टिका दिया।

"हिलना मत," कल्लू ने चीख कर कहा। "चूँ-चरा मत करना तो बच जायगा!"

मानो उसकी आज्ञा-पालन के लिए ही 'हिलना मत' की आवाज सारे आँगनों में गूँज उठी।

संतरी कल्लू के आगे-आगे आज्ञाकारिता के साथ उतर कर नीचे तीसरे मंजिल पर आया। श्वाँग रायफल से लियेव को ठोक रहा था, "उठ! उठ!"

लियेव की आँखों में अभी भी नींद भरी हुई थी। "इतना शोर-गुल क्यों मचाते हो बेकार में?" वह बड़बड़ाया! "जरा देर का तो आराम मिलता है!"

श्वाँग ने उसके कान खींचकर उसे उठाकर बैठा दिया। जब लियेव ने दो छापेमार सरदारों को देखा तो भयभीत हो गया, उसे अपनी आँखों पर विश्वास न आया। अब उसकी नींद उड़ चुकी थी और वह उनकी आज्ञा के अनुसार दूसरी मंजिल तक गया।

कमरे के एक ओर कठपुतली सैनिक एक क़तार में खड़े हुए थे। ऐसा लगता था मानो उन्होंने बड़ी जल्दी में कपड़े पहने हैं। उनकी बन्दूकें पहले से ही छापेमारों के कंधों पर लटक रही थी। कुछ कठपुतली फौजी जो श्वाँग और कल्लू को पहचानते थे अभिवादनार्थ झुके।

"कमाण्डर! जिला-नेता! हम तो आप ही के शुभागमन की प्रतीक्षा में थे!"

"अच्छा!" कल्लू हँस दिया। "अपना बिस्तर-बोरिया बाँध लो और चलो हमारे साथ बाहर!"

उसी दम दा-श्वी और त्सुर क्रोधी और व्यग्र दौड़े हुए ज़ीने के ऊपर आये।

"क्या जिनलुंग यहाँ है?" उन्होंने पूछा।

"क्या मतलब है तुम्हारा?" कल्लू ने चौंक कर पूछा। "अपने कमरे में नहीं है क्या वह?"

"हमें तो एक छोकरा मिला जो उसका शरीर-रक्षक है," दा-श्वी ने उत्तर दिया। "हमने तो सारे आँगन ऊपर से नीचे तक खूँद मारे पर जिनलुंग का कहीं पता नहीं!"

"यह कैसे हो सकता है?" त्सुर ने झल्लाते हुए अपना पैर जमीन पर ठोंका। "वह जरा-सा शरीर-रक्षक भी कहता है उसे कुछ नहीं मालूम!"

श्वाँग लियेव को एक तरफ ले गया और उसने दोस्ताना लहजे में उससे पूछा। "लियेव," उसने धीरे से कहा, "तुम्हें तो जरूर पता होगा। कहाँ है जिनलुंग?"

लियेव ने सिर खुजाया और मूर्खों की तरह उन्हें घूरा। "मुझे तो ठीक पता नहीं।"

त्सुर ने गुस्से में उसका गला दबा दिया। "साले हरामी!" वह चिल्लाया। "अब भी गद्दारी करता है? बता जल्दी वरना गला घोंट दूँगा।

"छोड़ दो मुझे," लियेव ने रुआँसे हो कहा, उसकी आँखें भय से सफेद हो गईं। "मैं बताता हूँ! मैं बताता हूँ!"

त्सुर ने तिरस्कार से उसे छोड़ दिया।

"मैं समझता हूँ वह औरत के साथ होगा पर कौनसी के साथ यह नहीं कह सकता," लियेव फुसफुसाया। "उसके छोटे शरीर-रक्षक से ही पूछो। वह छोकरा ही उसे जहाँ कहीं भी वह जाये ले जाता है और वही उसे बुलाकर वापस भी लाता है। बस उसी को पता होगा।"

कल्लू ने हुक्म दिया कि क़ैदी और क़ब्ज़ाये हुए अस्त्र-शस्त्र सब तीसरे आँगन में इकट्ठे किये जायें। दा-श्वी, त्सुर और लियेव को लेकर वह उस छोकरे से पूछने के लिए गया।

सिर झुकाये और रोते हुए, लड़के ने यही कहा कि उसे नहीं मालूम जिनलुंग कहाँ है। कल्लू ताड़ गया कि छोकरा डर रहा है। वह उसके पास बैठा और उसने अपना बड़ा हाथ लड़के के कंधे पर रख दिया।

"तुम यहाँ कैसे आये, भैया?"

सिर उठाये बगैर होंठ हिलाकर लड़के ने उत्तर दिया। "मैं तो यहाँ अपने बाप की जगह कुछ दिन काम करने आया था। लेकिन जिनलुंग मुझे जाने ही नहीं देता।"

"ओह, तो इस तरह फँस गये तुम! वह गद्दार हरामज़ादा जिनलुंग जापानियों का-सा ही है—वह तो हमें चीनियों को मारता है! मुझे बता दो कहाँ है वह साला और हम उसे पकड़ लायेंगे! तुम्हें छोड़ दिया जायगा और एक गद्दार से हम सब बच जायेंगे। क्या कहते हो फिर?"

लड़के ने अपना आँसुओं से भरा हुआ चेहरा कल्लू की ओर कर दिया। "मुझे—मु—झे हिम्मत नहीं होती," वह रोते हुए बोला। "अगर उसे पता

चल गया तो वह मुझे मार डालेगा !"

"आज से तुम हमारे साथ रहो। हम तुम्हारी रक्षा करेंगे।" कल्लू ने उसे आश्वासन दिया। "डरने की कोई बात नहीं है।"

यही वह छोकरा चाहता भी था। उसने लरज़ते हाथ से आँसू पोंछे। "अच्छा ठीक है," उसने वीरता से कहा। "मैं आपको उसके पास ले चलता हूँ।"

× × × ×

किले को श्वाँग की रखवाली में छोड़कर लगभग आधे छापेमारों को लिये कल्लू उस लड़के के साथ एक विधवा के घर गया जहाँ जिनलुंग रात बिताने गया था। जोव और रू को छोटे-से कम्पाउण्ड के सामने वाले फाटक पर तैनात कर दिया; दा-श्वी और त्सुर पीछे के दरवाजे पर डँट गये, कल्लू और बाकी आदमी लड़के के साथ घर की दीवार पर चढ़ गये।

जिनलुंग बिस्तर पर पड़ा विधवा से अठखेलियाँ कर रहा था कि उसने छत पर आहट सुनी। वह फौरन ताड़ गया कि कुछ गड़बड़ हो गई।

"वे हमें पकड़ने के लिए आ गये।" वह उत्तेजित हो फुसफुसायाः "झटपट कपड़े पहन लो। मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा और हम भाग निकलेंगे।"

युवती विधवा भय से काँप गई। उन दोनों ने ताबड़तोड़ अपने कपड़े पहने। पिस्तौल सम्हाले हुए जिनलुंग ने स्त्री को दरवाजे की ओर धकेला।

कम्पाउण्ड साधारणतया बने हुए एकमंज़िला इमारतों से घिरा हुआ पोला स्क्वेयर था। जिस इमारत में था उसी के सामने वाली छत पर खड़े लोग अपनी बंदूकें लिये तैयार थे। जिनलुंग ने आहिस्ता से ताला खोला। दरवाज़ा खुला और एक ही गति से उसने छापेमारों पर गोलियाँ चलाईं और विधवा को आँगन में धकेल दिया। अँधेरे में वे स्त्री को ही जिनलुंग समझे। उन्होंने भी गोलियाँ दनदनाईं और विधवा का शरीर छिद गया। बिना किसी आवाज़ के वह लुढ़क गई और उसके प्राण-पक्षी उड़ गये।

जिनलुंग आँगन से निकला और सामने के फाटक से भागा। ज्योंही जोव ने उसे मारने के लिए बन्दूक साधी कि रू ने उसे जीवित पकड़ने के उद्देश्य से उसकी बन्दूक गिरा दी और उस ग़द्दार को पकड़े के लिए उछला। जिनलुंग ने उसे एक ही घूँसे में नीचे गिरा दिया और अँधेरे में भागा। जोव ने उसका पीछा किया। वे दोनों बगैर साँस लिये सकरी गलियों में कई बार घूमे, मुड़े और चक्कर काटते हुए भागते गये। जोव ने एक गोली चलाई जो जिनलुंग के सिर के ऊपर से निकल गई। ग़द्दार ने जवाब में गोलियाँ चलाईं पर उसके निशाने अँधाधुँध पड़े। दोनों बुरी तरह हाँपते-हाँपते गाँव छोड़कर बर्फाच्छादित झील पर पहुँचे। जिनलुंग बर्फ पर दौड़ता गया और जोव उसका पीछा करता गया।

"रुक जा! जिनलुंग!" छापेमार चिल्लाया। "तू चीनी है—समर्पण करदे और जान बचा ले।"

"मुझे जाने दे जोव!" जिनलुंग भागते हुए चिल्लाया। "मैं भी तुझे इसका इनाम दूँगा, पीछा न कर!"

घृणा से दाँत पीसते हुए जोव का घुटना टिक गया और उसने उस अँधेरी परछाईं को ही निशाना बनाकर गोली चलाई। जिनलुंग के बायें कंधे में ग़ज़ब की पीड़ा हुई, कुछ लड़खड़ाया पर दौड़ता ही रहा। पूर्व इसके कि जोव दूसरी गोली चलाये जिनलुंग ने एक ही गोली में उसे समाप्त कर दिया······।

गोलियों की आवाज़ सुनते-सुनते कल्लू और अन्य छापेमार झील की ओर दौड़े। उस घने अंधकार में उन्हें कुछ न दीखता था और वे बड़ी सावधानी से बर्फ पर चले जा रहे थे। एक छापेमार ने किसी स्थिर शरीर को देखा जो कुछ गज़ आगे पड़ा हुआ था, रायफलें टिकाकर सारे आदमी झठ नीचे झुक गये। पर जब वह शरीर न हिला और न उसने उनकी बातों का उत्तर दिया तो वे उसके समीप गये और देखा कि वह जोव था।

दा-श्वी ने एक टूथ ब्रश का हत्था जलाया। उसकी ज्वाला के प्रकाश में उन्होंने उस तरुण मछुए के शरीर का परीक्षण किया। दुबले-पतले जोव की एक आँख मिची हुई थी मानो वह अब भी शत्रु की ओर निशाना साध रहा

हो। वह कभी का स्थिर हो चुका था और जो खून उसके दिल से बहा था वह उसके सीने के नीचे आकर एकत्र हो गया था और उसी से वह लाल बर्फ से चिपक गया था।

"जोव बड़ा बढ़िया आदमी था," कल्लू ने उदास हो कहा।

दा-श्वी अपने परम मित्र की मृत्यु पर खुलकर रोया और कई छापेमारों की आँखों से आँसू निकलकर झील की जमी हुई सतह पर गिरे। प्रत्येक व्यक्ति ने पूरे क्रोध के साथ यह प्रण किया कि हम मछुए जोव का बदला लेकर ही दम लेंगे।

बड़े चिनार के ऊपर आकाश पर उड़ती हुई आग की विशाल लपटों का प्रतिबिंब झील में दिखाई दे रहा था। श्वाँग का दस्ता और किसान किला नष्ट कर रहे थे।

क्षितिज पर पूर्वी भाग के गाँवों में आग के ज़र्रे जलते हुए स्तम्भों पर जम रहे थे। बयाँग झील के पूर्वी किनारे पर दुश्मन के गढ़ आग की भेंट चढ़ाये जा रहे थे।

: १२ :

रक्त की अंतिम बूँद—वसन्त-हेमन्त, १९४३

फरार होने के बाद जिनलुंग शेंज्या गाँव को चला गया जो जापानियों और कठपुतलियों के अधिकार में था। उसने अपने घाव का इलाज करवाया और अपने मित्र ग्वो के साथ एक सप्ताह तक किले में वह आराम करता रहा। वहाँ से वह जापानियों के कब्जाये हुए बड़े परकोटे वाले कस्बे में चला गया।

छापेमारों ने तीन दिन तक कठपुतलियों को सिखाने-पढ़ाने के बाद लियेव सहित रिहा कर दिया।

जब वसन्त की गड़गड़ाती हुई हवायें चलने लगीं तो बयाँग झील का बर्फ पिघलने लगा। छापेमारों की सरगरमी और बढ़ गई; बहुत से किले और जीते गये और नष्ट कर दिये गये। दुश्मन ने भी लगातार किसानों को बेगार में पकड़ा और अपने ध्वस्त गढ़ों के पुर्ननिर्माण के प्रयत्न किये; लेकिन जनता और वा लू अपने उद्देश्य पर अटल थे। कुछ ऐसा हुआ कि मरम्मत या दुबारा बनाई गई चीज़ें कभी पूरी न हो सकीं—क्योंकि दिन को किसान जो कुछ बनाते थे वही वे रात को नष्ट कर देते थे। जापानी इसका कुछ कर ही न सकते थे।

धीरे-धीरे वा लू ने बैयाँग झील के इलाके में अधिकांश गाँवों पर अपना नियन्त्रण कर लिया। यहाँ तक कि उन स्थानों पर भी जो अभी जीते नहीं गये थे। यहाँ भी कठपुतली सैनिक छापेमारों के आदेशानुसार गुप्त रूप से कार्य-वाही कर रहे थे।

उनके लिए सबसे बड़ी कठिनाई शहरों, परकोटे वाले गाँवों और एक या दो शेंज्या जैसे गाँवों की थी जहाँ जापानियों का सीधा अधिकार था। इन स्थानों में शत्रु निकलकर देहाती इलाकों पर हमला करता था और किसानों से अन्न धन आदि लूटता खसोटता था।

जनता की सुरक्षा के लिए कम्युनिस्ट पार्टी ने प्रत्येक गाँव के कुछ आदमी जापानियों से वार्ता करने के लिए 'मध्यस्थ' बनाकर भेजे। उन्होंने स्थानीय अधिकारियों का रूप भरा और सहयोग का वचन दिया। कठपुतली गैर-सैनिक शासन-दफ्तर गाँव के प्रगतिशीलों से ठसाठस भरे हुए थे। जापानियों को पता ही न था कि जिन लोगों से वे वार्ता कर रहे हैं उनमें कितनों की कम्युनिस्ट हड्डियाँ हैं!

प्रतिकार-नीति यह थी : जब कभी भी कोई दुश्मन कोई चीज माँगे उसे मत दो; या यदि दो तो बहुत देर करके, या जितनी माँगे उससे कम दो। किसानों के पास दुश्मन को बेवकूफ बनाने और उसके आँख-कान बन्द करने के अनेक साधन थे।

पतझड़ के मौसम में फसलों की कटाई के बाद ग्वो के कठपुतली सैनिक

अनेक गाँवों में गये और उन्होंने वहाँ २ टन सफेद आटा और २ टन मछली प्रत्येक गाँव से माँगीं। 'सहयोगी' अफसरों ने शिकायत करते हुए कहा कि इतनी मात्रा में ये दोनों वस्तुएँ वे नहीं दे सकते और उसके देने में काफी देर कर दी। अन्त में ग्वो ने एक फर्मान लिखकर भेज दिया कि यदि माँगी हुई वस्तुएँ २४ घण्टे में न दे दी गईं तो उसके आदमी गाँव की एक-एक चीज का सफाया कर देंगे और कुत्ते बिल्ली तक बाकी न रहने देंगे।

जब यह अन्तिम तिथि भी निकल गई और सप्लाई न हुई तो कठपुतली सैनिक और जापानी नावों में बैठकर शेंज्या से उन विद्रोही गाँवों की ओर चल पड़े। झील में कोई आधा रास्ता चले होंगे कि उन्हें तीन नावें मछली और आटे से लदी हुई आती नजर आईं।

"कहाँ जा रहे हो तुम लोग?" सिपाहियों ने पूछा।

"हम बड़े चिनार से आ रहे हैं," एक नाटे-से बूढ़े ने जवाब दिया। "यह रसद हम आपके किले के लिए ले जा रहे हैं।"

ग्वो ने असन्तोष से सामग्री पर नजर डाली। "इतनी कम क्यों है यह?" उसने पूछा।

बूढ़े ने आँखें तरेरीं। "अरे बाबा एक साथ इतना इकट्ठा करना भी हँसी-खेल नहीं था! झील वाले प्रदेश में मुश्किल से ही कोई गेहूँ का खेत हो। इस वर्ष हरेक तो भूखा है—मछली कौन पकड़ेगा? गाँव के अफसर लोग बेचारे दिन-रात इसी के जमा करने में लगे रहे। गलियों-कूचों में वे ढिंढोरा पीटते फिरे और चिल्लाकर लोगों से माँगते फिरे। आप जाकर देखिए अपने आप, वे अब भी इकट्ठा कर रहे हैं।"

जापानियों ने धुआँधार गालियाँ दीं और ग्वो ने बूढ़े की ओर घूर कर देखा। "तुम्हारी मा का—! समय नष्ट न करो! जाओ जल्दी जाकर दे आओ!"

"हाँ, हाँ बिल्कुल कमाण्डर!" किसान ने सिर हिलाकर कहा। "जा ही तो रहे हैं!" नाविकों ने डाँड चलाये और शेंज्या की ओर बढ़े। लेकिन ज्योंही वे दुश्मन की आँखों से ओझल हुए कि उन्होंने राह बदल दी और सरकण्डों

के एक घने झुरमुट में चले गये। वहाँ वे आराम से बैठे और फिर सो गये।

ग्वो और उसके आदमी जब बड़े चिनार में पहुँचे तो वहाँ कुहराम मचा हुआ था। लोग घर-घर जाकर चीज़ें एकत्र कर रहे थे। दो अफसर बड़ी सींक की टोकरी में पुराने गद्दे, बच्चों के पाजामे, बुढ़ियों के हैट और बहुत-सी चीज़ें भरे हुए धीरे-धीरे जा रहे थे।

दुश्मन ने आश्चर्यचकित हो यह गतिविधि देखी एक घर में से एक अफसर एक टूटा हुआ खुरपा लेकर निकला। उसके बिलकुल पीछे एक बूढ़ा घुटनों तक झुका हुआ अफसर के पैरों पर गिरकर रो रहा था।

"मेहरबानी करो," बूढ़े ने प्रार्थना की, "मेरा खुरपा भगवान के लिए न लो! यह मुझे मेरे बाप ने दिया था और मैं इतने दिनों से इसे इस्तेमाल करता आ रहा हूँ ....। इसके बिना मैं खेती न कर सकूँगा और भूखों मर जाऊँगा।"

"यह कूड़ा-कचरा लेकर क्या करोगे?" ग्वो ने उस अफसर से पूछा जिसका नाम मी था।

"क्यों, आप नहीं जानते, कमाण्डर?" अफसर ने झल्ला कर कहा। "इस गाँव में एक भी कुनबा ऐसा नहीं है जिसके पास कोई अच्छी चीज़ हो। क्या करें यही कचरा लेना पड़ रहा है। इसे बाज़ार में औने-पौने बेचेंगे और जो भी दाम मिलेंगे उसका आपके लिए आटा खरीदेंगे।"

ये लोग अभी बातें ही कर रहे थे कि गली में एक और उपद्रव मच गया। एक कलेक्टर और एक बुढ़िया में एक पुरानी कढ़ाई को लेकर झगड़ा हो रहा था। आदमी ने बुढ़िया के एक ज़ोर का तमाँचा मारा और वह रोती-चीखती ज़मीन पर लुढ़क गई।

मी ने गाँव की दरिद्रता का वर्णन करते-करते नोटों का एक बुक्कट ग्वो के हाथों में थमा दिया।

"दुनिया जानती है कि हमारे कमाण्डर जनता के हित के लिए कितना परिश्रम करते हैं?" वह फुसफुसाया। "हमने आपके लिए थोड़ा-सा रुपया-पैसा भी उगाया है।"

भोलेपन के भाव से ग्वो ने बुक्कट जेब में ठूँस लिया। उसने कुछ बात जापानियों से की और उन्होंने असमंजस से सिर हिला दिया। किसानों को कर्त्तव्यपरायणता पर एक संक्षिप्त भाषण दिया गया और उसके बाद शत्रु चला गया।

जब वे शेंज्या के किले में वापस पहुँचे तो मालूम हुआ कि उन तीन नावों वालों ने कोई सामग्री लाकर नहीं दी है। जापानी क्रोध से तमतमा उठे, उन्होंने प्रण किया कि अगले ही दिन वे बड़े चिनार का सफाया कर देंगे। लेकिन अगले दिन अलस्सुबह मी ग्लानिपूर्ण भंगिमा लिये वहाँ आया।

"आपने हमारा गाँव तो देख ही लिया ना अब मैं क्या कहूँ आपसे कि हम किन कठिनाइयों का सामना वहाँ कर रहे हैं?" उसने ग्वो से रोना रोया। "अगर आपको वह आटा और मछली जो हमने भेजी थीं काफी न थीं तो आपने हमसे क्यों नहीं कहा? भला आदमियों और नावों को रोकने से क्या फायदा? मैं गाँव वालों को ये बातें कैसे समझाऊँ?"

"आय हाय! फूट गई तकदीर।" ग्वो ने बुझे दिल से कहा। "वह रसद यहाँ पहुँची ही नहीं। बा लू वाले उसे छीन भागे होंगे।"

मी ने ठण्डी आह भरी और ऐसा दुखी भाव प्रकट किया कि जापानियों ने भी उस पर विश्वास कर लिया और उसे तसल्ली दी।

"बा लू वाले ही तंग करते हैं हमें! गाँव वाला अच्छा आदमी है! कल हमारा शाही फौज बा लू को खोजेगा और सब को मुर्दा-मुर्दा करके मार डालेगा।"

मी ने जापानी को फर्शी सलाम ठोंका। "हाँ, हाँ! सब को मुर्दा-मुर्दा मार डालो।" वह चल पड़ा, हँसी उसके मुँह से निकली पड़ रही थी।

जापानी 'दण्ड देने वाली सेना' को प्रहार पर प्रहार करके अधमुआ कर दिया गया। एक बार चावल, चटाई, बत्तख के अण्डों से लदी हुई तीन

फौजी नावें दुश्मन द्वारा निमंत्रित नगर से चलीं। उनकी अंतिम मंज़िलेमक्सूद ताइनत्सीन थी। श्याँग झील पार करने के पहले ही वे छापेमारों के हत्थे पड़ गईं। कोई बीस जापानी कुछ मरे हुए और कुछ घायल कैदी उनके हिस्से में आये। उसके अतिरिक्त छापेमारों ने दो चेक टाइप की हल्की मशीनगनें और एक भारी मैक्सिन मशीनगन भी हथियाली। उसके बाद से जापानियों ने झील में से निकलना ही बन्द कर दिया।

हेमन्त ऋतु के त्यौहार के दिन कठपुतली ग्राम्य शासन अधिकारियों ने अन्न एकत्र करने के हेतु से तमाम गाँवों के पटेलों की शेंज्या में एक मीटिंग की। बड़े चिनार का पटेल जो दीखने में कठपुतलियों का समर्थक लगता था पर असल में वा लू का कार्यकर्त्ता था मीटिंग वाली रात के बाद तक न लौटा था। कल्लू और बहुत-से छापेमार एक वा लू किसान के आँगन में उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

पूर्णिमा का स्वर्णिम चन्द्रमा दीवार के परे वृक्षों के ऊपर से धीरे-धीरे निकलता हुआ कम्पाउण्ड को अपने मंद प्रकाश से जगमगा रहा था। मे और निउर ने अंगूर, नाशपाती, मटर की फलियाँ और खजूरें जो किसानों ने भेजी थीं लाकर दे दीं। श्वाँग और त्सुर ने किसी हास्य-प्रधान नाटिका का एक दृश्य अभिनीत किया और तमाम लोग हँसते-हँसते लोट-पोट हो गये।

केवल दा-श्वी ऐसा था जो साये में देहलीज़ पर उदास और निश्चल बना बैठा हुआ था। श्वाँग ने उसे भी खींचा और गाने के लिए कहा लेकिन उसने कहा मेरा गला खराब हो रहा है और इसी प्रकार कई बहाने बनाये और अन्त में उसे छोड़ दिया गया।

इधर कुछ समय से दा-श्वी बहुत परेशान रहता था। भयंकर यातनाएँ भुगतने के बाद अभी वह पूरी तरह चंगा न हुआ था, कमज़ोरी बाकी थी और अगर वह ज्यादा मेहनत करता तो खून की उलटी हो जाती थी। इधर और लोग आनन्द-मंगल मना रहे थे और वह एक तरफ गुड़मुड़ी-सा बैठा अपने पिता की हत्या के बारे में सोच रहा था।

मे उसकी बग़ल में आ बैठी और उसने उसका हाथ पकड़ लिया।

"क्या बात है ?" वह विनम्रता से फ़ुसफ़ुसाई। "क्या कोई तकलीफ़ हो रही है ?"

"नहीं, नहीं वैसा कुछ नहीं।"

त्युर ने उन्हें साथ-साथ बैठे देख लिया। "जानते हो मैं क्या समझ रहा हूँ ?" उसने ज़ोर की बुलन्द आवाज़ में पूछा। "मैं समझता हूँ दा-श्वी व्याह करना चाहता है।"

दा-श्वी ने कुछ असमंजसपूर्ण नकारात्मक आवाज़ की।

कल्लू जानता था कि दा-श्वी कुछ दिन से बहुत परेशान है और वह खुद भी इसी कारण चिंतित था। अब जो त्युर ने मज़ाक किया तो उसे वह बात बहुत जँची।

"क्या कहते हो तुम ?" कल्लू ने दा-श्वी से मुस्कराकर पूछा। "क्या तुम्हारे लिए एक प्रेमिका ढूँढ दें ?"

श्वाँग हाथ हिलाता हुआ दौड़ा। "ढूँढने की क्या ज़रूरत ?" उसने प्रफुल्लित हो विरोध किया। "तुम्हारी आँखों के सामने एक तैयार बैठी है।"

सहसा सभी की दृष्टि मे की ओर घूम गई। वह व्यग्र हो उठी और अपनी झेंप मिटाने की खातिर मटर की फलियाँ निकालने में लग गई।

निउर ने उसे सामने की ओर खींचा। "मेरे ख्याल में यही है जो वह ! तो हम सब इसे स्वीकार करते हैं !"

"तुम्हारा क्या ख्याल है, मे ?" कल्लू ने चुटकी ली।

मे का दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा और चेहरा तमतमा उठा। अपनी स्वीकृति देने में उसे शर्म आती थी लेकिन साथ ही वह यह भी नहीं कह सकती थी कि उसे स्वीकार नहीं है। मे ने हँसकर सवाल को टाल दिया।

"वह मुझे चाहते तो हैं ही नहीं !"

रू ने अपने भाई को खींचकर सामने ला बैठाया। "तुम इन्हें चाहते हो या नहीं ?" उसने पूछा। चारों ओर से मित्रों ने वही सवाल दुहराया और दा-श्वी को घेरकर बैठ गये।

दा-श्वी के लिए कोई चारा ही न था और उसने झेंपते हुए हाँ कह दिया। "मैं तो उसे मुद्दत से चाहता आया हूँ !" और दूसरे सबने हँसकर

उसका समर्थन किया।

कल्लू ने सोचा कि यह जोड़ा बड़ा उम्दा रहेगा। मुझे इनकी शादी में मदद करनी चाहिए।

ठीक उसी क्षण एक किसान ने जो आकर खबर दी तो छापेमारों के सारे हर्ष व उल्लास पर पानी फिर गया। उसने सूचना दी कि जितने भी पटेल मीटिंग के लिए बुलाये गये थे गिरफ्तार कर लिये गये हैं। कठपुतली सरकार ने यह एलान कर दिया था कि यदि गाँवों ने अपनी रसद का कोटा दस दिन के अंदर-अंदर न पूरा किया तो पटेलों को गोली मार दी जायगी।

खबर सुनते ही सब-के-सब सकते में आगये। अंत में कल्लू बोला।

"मेरी समझ में हम इस मसले को एक ही तरीके से हल कर सकते हैं और वह है कठपुतली सरकार के लोगों के जरिये।"

लेकिन यह वे सब जानते थे कि इस तरीके से सफलता मिलना संदिग्ध है। जापानियों ने शेंज्या में एक विशाल दुर्ग खड़ा कर लिया था और कठोरतम सैनिक शक्ति के साथ उसकी रक्षा की जा रही थी। भूतपूर्व पटेल शेन का भी दफ्तर उसी गाँव में था और वह ग्राम्य प्रशासन अधिकारी के सर्वोच्च पद पर था। उसे फोड़ना बड़ा दूभर था क्योंकि वह महत्वाकांक्षी था और अत्यधिक भावुक था। युद्ध में पैंतरे बदलना उसके लिए बड़ा सरल था। जब जापानियों से उसे लाभ दिखाई देता तो भूमिगत लोगों से उसका दूर का भी सम्बन्ध न रह जाता। हाल ही में हो का बेटा गूपी किले का कमाण्डर ग्वो की सहायता के लिए शेंज्या गया और ग्वो के खुफिया संगठन का सरदार बन गया। यह नीति जापानियों के गाँवों में से बा लू को समाप्त करने के अभियान का ही एक हिस्सा थी। गूपी ने अपना कार्य इस निष्ठुर योग्यता के साथ किया कि अब किसी का शेंज्या में प्रवेश करना भी दुर्लभ हो गया।

"गिरफ्तार किये पटेलों को तो छुड़ाना ही पड़ेगा," कल्लू ने कहा। "अगर जापानियों ने उन्हें मार डाला तो भविष्य में काम करना हमारे लिए और भी दूभर हो जायगा। हमें चाहिए किसी आदमी को शेन के पास भेजें और उससे पुछवायें कि आया वह पटेलों को बचाने में हमारी कोई मदद कर

सकता है या इस प्रदेश में शत्रु के गढ़ नष्ट करने में हमारी सहायता कर सकता है। उनकी यह गिरफ्त तो तोड़नी ही है।"

फौरन कोई एक दर्जन आदमी शेंज्या जाने का खतरा लेने को तैयार हो गये।

"अगर छुरों का पहाड़ भी बना लेंगे तो भी मैं वहाँ पहुँच जाऊँगा!" त्सुर ने चिल्ला कर कहा।

"मेरे लिए तो वह स्थान एक उपवन की भाँति है।" दा-श्वी बोला। "जब हमने पहले उस पर कब्जा किया था तो मेरे ही हाथों वह जन्मा था और मैंने ही उन्हें सींचा था। अब मैं ही उसे जीतूँगा भी!"

"मैं समझता हूँ मुझे वहाँ पहले जाना चाहिए। अगर मैं नाकाम हो जाऊँ तब दूसरों को मौका मिलना चाहिए।"

उस सुझाव पर ग़ौर करने के बाद कल्लू ने श्वाँग को ही पहला मौका देने का निश्चय किया। अगले दिन रात को वह नाटा जुलाहा चुपके से शेंज्या में घुस गया।

× × × ×

जब वह बड़ी सावधानी से सड़क पर चलता हुआ गाँव से आ रहा था तो श्वाँग को गूपी और उसके गुप्तचर उसी की ओर आते हुए दिखाई दिये। श्वाँग बन्दर की नाईं फुर्तीला था फट से पास वाली गली में खिसक गया लेकिन चन्द्रमा की उज्ज्वल चाँदनी में गूपी ने उसकी भागती हुई परछाईं की झलक देख ली थी। शोर मचाते हुए गुप्तचरों की टोली ने उसका पीछा किया।

श्वाँग उन सकरी गलियों में घूमता-चक्कर खाता हुआ गया। उसने यह चाल चली कि उन्हें खूब लम्बा-सा चक्कर लगवाकर उसी रास्ते से गाँव से निकल जाय जिधर से आया था लेकिन दुर्भाग्य की बात कि वह एक गली में जो गया तो देखा कि वह कहीं निकलती ही नहीं। वह अपने पीछा करने वालों के आने की आहट सुन रहा था वे उसी गली में धब-धब करते हुए दाखिल हुए थे। इस

प्रकार वह घिर गया और जब उसने झटपट किसी किसान का घर शरण के लिए ढूँढा तो सारे दरवाजों पर ताले पड़े हुए थे। उसे एक कम्पाउण्ड दिखाई पड़ा जो जला दिया गया था पर उसका फाटक अपनी चूलों पर झुका हुआ था। श्वाँग बेधड़क उसमें घुस गया और आँगन की पश्चिमी बाजू में स्थित एक इमारत के पीछे जो अब भी शेष थी जाकर छिप गया। मकान की छत और खिड़कियाँ जलकर खाक हो गईं थीं लेकिन मिट्टी की दीवारों ने कुछ आश्रय दिया। हाँपते हुए उसने अपनी पिस्तौल निकाल ली और इन्तज़ार करने लगा। उसे गूपी की आवाज सुनाई दे रही थी, "यहाँ गली खत्म हो जाती है। एक-एक घर की तलाशी लो! वह कुतिया का बच्चा बचकर नहीं जा सकता!"

कठपुतली सैनिक दरवाजे धड़धड़ा रहे थे, इधर-उधर दौड़ रहे थे और गालियाँ बक रहे थे—उनकी आवाजें गली में गूँज रही थीं। किसी की जानी-पहचानी आवाज आई, "मैं वहाँ जाकर देखता हूँ!" और कोई उस भग्न कम्पाउण्ड में आया। खिड़की में से झाँक कर श्वाँग ने देखा कि चाँदनी में लियेव उसकी ओर बढ़ा आ रहा है।

लियेव ने अपनी बैटरी जलाकर आँगन का एक-एक कोना देखा। श्वाँग दरवाजे के पास ही दीवार से चिपककर खड़ा हो गया। ज्योंही लियेव उस भग्न इमारत में प्रविष्ट हुआ श्वाँग ने अपनी बाँह गद्दार के गले में डाली और अपनी पिस्तौल उसकी पसलियों में घुसेड़ दी।

"खबरदार जो आवाज की है!" श्वाँग फुसफुसाया। "पिछली बार हमने तुम्हारे साथ भलाई की थी पर फिर से तुम यह नीच काम करने लगे! मैं तुम्हें एक बार और बख्श दूँगा पर मेरी मदद करनी पड़ेगी।"

"यह मैं दिल से नहीं कर रहा हूँ," लियेव ने भय से काँपते हुए कहा। "उन्होंने मुझे यह काम करने पर मजबूर कर दिया।"

"घबराओ मत," श्वाँग ने गम्भीरता से कहा। "मैं अगर तुम्हें मारना ही चाहता तो अब तक तुम कभी के मर चुके होते! हम दोनों चीनी हैं और मैं अपनी गोलियाँ जापानियों के लिए बचा रखना चाहता हूँ! मैं तुम्हें छोड़े देता हूँ! अगर तुम्हारे पास चीनियों का-सा आधा भी दिल है तो जाकर उनसे

कह दो कि यहाँ कोई नहीं है! अगर तुम बता दोगे कि मैं यहाँ हूँ तो मैं मारा जाऊँगा पर याद रखना तुम भी जिन्दा न रह सकोगे। मैं तो चीनी जनता के लिए बलि हो जाऊँगा। तुम किसकी खातिर जान दोगे? सोच लो!"

"मुझे छोड़ दो। मैं कसम खाता हूँ मैं तुम्हें धोखा न दूँगा!" लियेव ने ईमानदारी से आश्वासन दिया। जब श्वाँग ने उसे छोड़ दिया तो वह खरगोश की नाईं उछलता हुआ भागा।

"मामला तो बिगड़ गया!" श्वाँग अपने आपसे बुदबुदाया। उसने अपनी पिस्तौल आँगन के प्रवेशद्वार पर खिड़की से निकाली।

बाहर गली में लियेव दौड़ा हुआ गुलू के पास पहुँचा। गुलू भी ग़द्दारों से जा मिला था और गुप्तचरों की टोली का सदस्य बन गया था।

"मिलता ही नहीं है! अजीब बात है!" गुलू बोला। "वहाँ कम्पाउण्ड में है क्या कोई?"

"कोई भी नहीं!" लियेव ने जवाब दिया। "मैंने सब तरफ देख लिया।"

गूपी के आदमियों ने तमाम किसानों के घर खूँद मारे पर उस अजनबी का कहीं निशान न मिला। बस वह नष्ट-भ्रष्ट आँगन ही बचा था।

"उस जगह भी ढूँढ लिया या नहीं?" गूपी ने पूछा। किसी ने कहा वह जगह भी ढूँढ ली गई है पर गूपी ने अपने लोगों को पिस्तौल से इशारा करके उस ओर भेजा। "फिर से ढूँढो! दुबारा ढूँढो! मुझे विश्वास नहीं होता कि वह पर लगाकर इतने में उड़ कैसे गया!"

हाथों में बन्दूकें लिये तीन कठपुतली फौजी आँगन में दाखिल हुए।

अब तो इस स्थान से निकलना ही मुश्किल है! श्वाँग ने सोचा। मैं भी उन्हें जो कुछ है सभी दे दूँगा! उसने सावधानी से निशाना साधा और गोली चला दी। एक कठपुतली फौजी तो वहीं ढेर हो गया; दूसरे दो भी दुम दबा कर भागे।

"अच्छा हुआ!" गूपी चिल्लाया। "कहाँ है वह! सब-के-सब एक साथ उस पर टूट पड़ो और जिंदा पकड़ लो!"

लेकिन एक भी ग़द्दार आँगन में जाने को तैयार न हुआ।

श्वाँग खिड़की के पीछे दुबका हुआ खड़ा था और वास्तव में बड़ी विकट स्थिति में था पर जब उसने गूपी के व्यर्थ उपदेश व प्रोत्साहन सुने तो वैसी परिस्थिति में भी वह मुस्करा दिया। अहा! वह प्रमुदित हो बोला, यह हरामी तो बड़ी-बड़ी बातें करता है। मुझे जिंदा पकड़वाता है, ऐं! यह तो वे कभी करेंगे ही नहीं! अभी जो एक को सुलाया है उसने मेरी जान की कीमत चुका दी है पर अगर मैंने सीधी गोलियाँ चलाईं तो इन सुसरों का कुछ और 'धन' छीन लूँगा।

निर्भीक हो और आत्मविश्वास के साथ श्वाँग ने कम्पाउण्ड के प्रवेश-द्वार की ओर निरन्तर निशाना साधा।

गूपी समझ गया कि उसके आदमी अपनी इतनी डींगों के बावजूद आतंकित हो गये हैं। वह आपे से बाहर हो गया और उन पर खूब झल्लाया लेकिन वे थे कि हिलने का नाम न लेते थे। क्रोध से पागल हो उसने बेदर्दी से अपनी रायफल से उन्हें धकेला।

"जाओ घेरलो उसे! टूट पड़ो सब! जाते क्यों नहीं?" वह गरजा।

"उससे कुछ लाभ न होगा, कमाण्डर," एक कठपुतली फौजी ने दुर्बल स्वर में कहा। "हम तो उसे देख नहीं सकते पर चाँदनी में वह उस खुले आँगन में से हमें खूब छाँट-छाँट कर मार सकता है! वहाँ जाना तो हमारे लिए घातक है।"

गूपी खुद वहाँ जाने से डरता था। उसने एक आदमी को सेना के दस्ते लाने के लिए किले में भेजा।

लगभग अस्सी जापानी और कठपुतली सैनिक आ पहुँचे और उन्होंने आँगन के आस-पास की इमारतों की छतों पर चढ़कर अपनी जगहें लेलीं। जिन भग्नावशेषों में श्वाँग छिपा हुआ था उसके ठीक सामने वाली इमारत पर एक मशीनगन लगा दी गई। उस सुविधाजनक स्थान से ग्वो के आदेशानुसार

गुलू और दो चार अन्य कठपुतली सैनिक प्रलोभन देने लगे।

"झटपट बाहर निकल आओ। तुम घिर गये हो! अब भाग कर कहाँ जाओगे?"

"बन्दूक फेंक दो और आ जाओ बाहर! समर्पण करदो और शाही फौज में आ मिलो! उस सड़ी बा लू से यह कहीं बेहतर है!"

गुलू ने तो एक लम्बी-चौड़ी तक़रीर कर डाली। "ओ ए! अरे ओ कहाँ छिपे हुए हो—सुनो! तुम्हारे सिर पर मशीनगन लगी हुई है। अब तुम्हारे पास ऐसी कौन-सी ताक़त है जो तुम्हें वहीं चिपकाये हुये है? मैंने बा लू का खाना खाया है। उसमें ऐसी कौन-सी स्वादिष्ट या सुगंधित चीज़ रखी है? वे तुम्हारे साथ बड़ा सख्ती का बर्ताव करते हैं और पैसा-कौड़ी कुछ नहीं देते। उनके लिए क्यों अपनी जान देते हो? अब जो मैं इस तरफ आ गया हूँ तो मेरे पास हमेशा नोटों का बड़ा सा बुक्कट रहता है; मैं खाता हूँ, शराब पीता हूँ, और मौज करता हूँ—यह बड़ी अच्छी जिंदगी है। तुम्हारे लिए तो बेहतरीन चीज़ है समर्पण!"

दस मिनट तक चीखने-चिल्लाने के बाद भी भग्न इमारत से कोई आवाज़ न आई। एक कठपुतली सैनिक रेंगता हुआ सामने वाली इमारत की छत पर पहुँचा और वहाँ से मुण्डेर पर झुककर उसने कम्पाउण्ड में झाँका। श्वाँग मुस्कराया, उसने निशाना साधा और घोड़ा दबा दिया। ज़ोर के शोर के साथ गोली कठपुतली सैनिक के दिमाग़ में घुस गई। उसका जिस्म लोट-पोट हुआ और बाहर गली में धड़ाम से गिर पड़ा।

यह आदमी तो तगड़ा दीखता है, कठपुतली सैनिकों ने सोचा। उनका साहस ग़ायब हो गया और वे निश्चल हो पेट के बल छत पर लेट गये।

क्रोधित हो जापानियों ने मशीनगन का दहाना खोल दिया। धुआँधार गोलियों ने मिट्टी की दीवारों को चकनाचूर कर दिया, लकड़ी के परखचे खिड़की की चौखट से उड़े। अन्दर सूखी मिट्टी के ढेले ज़मीन पर गिर पड़े। श्वाँग समझ गया कि दीवार जल्दी ही ढह जायगी। फिर उड़ते हुए सीसे ने उसका दाहिना जबड़ा तोड़ दिया और उसके कंधे में दो छेद कर दिये। घावों में से

छल-छल खून बहने लगा; उसकी नज़रों के सामने चिंगारियाँ नाच रही थीं और वह खिड़की के नीचे ढेर हो गया। उत्तेजना और थकावट ने उसके पुराने रोग को ताज़ा कर दिया—उसके मुँह में कुछ नमकीन-सा जायका आया और उसे खून की उल्टी हुई।

श्वाँग जानता था कि दुश्मन उसे फौरन पकड़ लेगा। उसने अपनी शिथिल शक्ति एकत्रित की, किसी तरह घुटनों के बल खड़ा हुआ और अपने पट्टे में बँधे हुए दो छोटे-से गोल दस्ती बम खोले। खुले हुए द्वार की ओर सरक कर उसने अपनी भारी आँखों से आँगन की ओर देखा।

मशीनगन खामोश थी। फिर आशानुसार ही जापानियों का एक गिरोह कम्पाउण्ड में दौड़ा हुआ आया। श्वाँग के पहले बम ने दो जापानियों को तो वहीं सुला दिया और बाकी चकराते हुए, घायल हो गिरे। वे फिर उसकी तरफ दौड़े और उसके दूसरे बम ने उन्हें फिर कम्पाउण्ड से भगा दिया।

अब श्वाँग के पास यदि बचा था तो केवल एक गोली।

दुश्मन झल्ला उठा। इतने सारे आदमी एक बा लू से न निपट सके। दस से भी अधिक लोग जान गवाँ चुके थे—कुछ घायल, कुछ मुर्दा। उन्होंने अँधाधुँध गोलियाँ चलाईं पर फिर भी वे हारते ही गये। झटपट युद्ध-कौंसिल मिली और उन्होंने एक कुटिल 'जापानी चाल' चली। लोग अपार मात्रा में झाडुएँ और लकड़ी छत पर ले आये। उन्होंने उसे आग लगाने और कम्पाउण्ड में फेंक कर मकान और आदमी सब को राख कर देने का मंसूबा बाँधा।

श्वाँग के कपड़े खून-पसीने से तर-बतर थे, ढहती हुई दीवार के सामने टेढ़ा झुककर खड़ा हो गया। कमज़ोरी उसे उत्तरोत्तर दबाये जा रही थी और वह अपने कर्त्तव्य-पालन में असफल हो अपने को कोस रहा था।

छत से गूपी उसे बड़े गुस्से में गालियाँ दे रहा था। "तेरी अठारह पुश्तों की—! बाहर निकलता है या नहीं? एक मिनट में हम तुझे भूनकर रख देंगे! और अगर अब भी समर्पण कर देगा तो तेरी कुत्ते की-सी जिंदगी तुझे बख्श देंगे।"

श्वाँग क्रोध से तमतमा रहा था। उसने अपनी आखिरी गोली उनके

जवाब में छोड़ी। "अपनी मा के—मुझे तंग न करो! मैं कम्युनिस्ट हूँ ···· मर जाऊँगा पर समर्पण नहीं करूँगा! मरने में मुझे कोई डर नहीं! आज ······ तुमने तो बहुत सी कीमत चुका दी ····· !"

अपने उस टूटे-फूटे और विकृत मुँह से वह फिर हँसा। वह उन्हें कुछ देर और पदाना चाहता था पर उसका जबड़ा बन्द हो गया और जीभ लकड़ी की भाँति सख्त हो गई। मुँह में से शब्द ही न निकले। उसका होश उड़ने लगा।

फिर उसने सोचा—मैं अपनी बन्दूक दुश्मन के हाथ क्यों पड़ने दूँ? वह अब भी स्पष्टता से सोच सकता था और सहसा उसे याद आया कि यदि बन्दूक का मुँह गोली चलाते समय भर जाय तो उसकी पिछली नली फट जाती है। बड़ी सख्त कोशिश से उसने अपनी पिस्तौल मुँह तक उठाई और अपनी जीभ उसकी ठण्डी नली के मुँह पर लगा दी। श्वाँग ने सोचा कि इस प्रकार मैं पार्टी के लिए चेयरमेन माओ के लिए और जनता के लिए सही काम कर सकता हूँ·········

एक क्षण भी झिझके बिना उसने घोड़ा खींच दिया।

: १३ :

चीते की माँद में—हेमन्त, १९४३

जब श्वाँग के प्राण-बलिदान की खबर बड़े चिनार में हुई तो छापेमारों को भारी शोक व रंज हुआ। बहुत-से किसान भी उस हल्के-फुल्के नाटे जुलाहे से प्रेम करते थे और वे भी फूट-फूट कर रोये। लाश को वापस लाना असम्भव था क्योंकि दुश्मन ने उसका चित्र खिंचवाने के लिए उसे शहर भेज दिया था ताकि प्रचारादि के लिए उसका प्रयोग हो सके।

अपने परम मित्र के शहीद हो जाने का कल्लू को बड़ा मलाल था, उसे भारी सदमा पहुँचा था और इसलिए अपने उच्चाधिकारियों के आदेशों का—शँज्या और अन्य क़ब्ज़ाये हुए इलाकों की पुर्नप्राप्ति—पालन करने को वह और अधिक तत्पर हो गया।

"हम कम्युनिस्टों को वीर और दृढ़ होना चाहिए और मृत्यु से नहीं डरना चाहिए," उसने दा-श्वी से कहा। "यदि एक विफल हो जाय तो दूसरे को जाकर फिर प्रयत्न करना चाहिए। आज नहीं तो कल हम सफल होंगे ही! तुम तो शँज्या के चप्पे-चप्पे से परिचित हो; मैं तुम्हें अब के भेजना चाहता हूँ। क्या ख्याल है तुम्हारा—वहाँ पहुँचने की हिम्मत है तुममें?"

वास्तव में दा-श्वी को अपनी योग्यता पर बहुत संदेह था और विशेषकर ऐसी स्थिति में जबकि श्वाँव जैसा चतुर व्यक्ति वैसे कठिन कार्य में विफल रहा था। लेकिन कल्लू ने तो यह बात साहस और हौसले के आधार पर कही थी और वह उसका 'हाँ' में उत्तर चाहता था।

"तुम्हें मुझे 'उकसाने' की जरूरत नहीं है, कल्लू!" वह गुर्राया। "मैं जानता हूँ पार्टी की जिम्मेवारी कैसे स्वीकार की जाती है! अगर मैं मर भी जाऊँगा तो वह भी गौरव की बात है!"

त्सुर ने माँग पेश की कि उसे जाने की इजाजत दी जाय। और उसके लिए वह दलीलें भी देने लगा।

"आप मर्द साथी भी बड़े-बड़े निशाने लगाते हैं," मे ने टोका। "तुम तो जरा देर में पहचाने जाओगे। मैं समझती हूँ कि इस बार भी अगर किसी स्त्री को यह भार सौंपा जाय तो बेहतर होगा। दुश्मन की नजर हम पर अपेक्षाकृत कम पड़ेगी।"

"मेरे पास तो पहले से ही आर्डर रखा हुआ है," दा-श्वी ने हँसकर कहा। अब इसे कोई नहीं छीन सकता!"

"ठीक ही कहा," कल्लू बोला। "झगड़ो मत। हरेक को वही काम करना चाहिए जिसके लिए वह उपयुक्त है। हरेक के लिए काम है कोई बेकार नहीं रहेगा।"

सुझाव पर बहस होने के बाद यह तय पाया कि मे संगठनात्मक मामलों की देखभाल के लिए बड़े चिनार में ही रहेगी। दूसरों को विभिन्न गाँवों में जाकर वहाँ के कठपुतली गैर-फौजी नेताओं से सम्बन्ध बनाने के आदेश दिये गये। प्रत्येक को तीन दिन के बाद लौटकर रिपोर्ट देनी थी।

उस रात छापेमार जापानियों द्वारा कब्ज़ाये हुए गाँवों के लिए चल पड़े। श्वाँग के तजुर्बे से लाभ उठाते हुए दा-श्वी ने कुछ देर से चलने का निश्चय किया ताकि शत्रु के गुप्तचरों से बचकर न भागना पड़े। वह आधी रात को चलने के लिए तैयार था पर जो किसान उसे नाव में शेंञ्या तक ले जाने वाला था अब तक आया ही नहीं। दा-श्वी बेचैन हो उस पर झुँझलाने लगा।

"अब अधिक उसकी प्रतीक्षा न करो," मे ने कहा। "सैकड़ों नावें हैं, सभी कोई सोया हुआ है और इस समय नाविक तलाश करना भी मुहाल है चलो मैं तुम्हें पहुँचा आती हूँ।"

"जी नहीं, शुक्रिया! मुझे ले जाते वक़्त तो मैं तुम्हें रास्ते बता दूँगा पर वापसी में अकेली कैसे आओगी? बयाँग झील में रास्ता भूल जाना वैसे ही आसान है?"

"हुँह! अगर किसी दरार से किसी व्यक्ति को देखो तो वह चपटा ही दिखाई देता है! इतने पक्षपाती न बनो। मैं भी यहीं जन्मी और पली-बढ़ी हूँ। पता नहीं कितनी बार मैंने नाव में झील पार की होगी। रास्ता कैसे भूल जाऊँगी भला?"

दा-श्वी ने अनमने से उसे इजाज़त दे दी। वे पानी के तीर तक गए और वहाँ नाव बाँधने के स्थान से एक छोटी-सी शिकारी-नाव खोल ली।

"तुम आगे की तरफ बैठो," मे ने आदेश दिया।

"मैं डाँड चलाऊँगा," दा-श्वी ने कहा। "तुम्हें नहीं चलाने दूँगा····"

"नहीं," मे ने उसे काटा। "तुम अपनी शक्ति काम के लिए बचा रखो।"

दा-श्वी विनयशीलता से अपनी जगह पर बैठ गया। मे उसके सामने खड़ी हुई और उसने अपनी आस्तीनें चढ़ा लीं। एक क़दम आगे और दूसरा पीछे रखकर उसने लम्बे-लम्बे डाँड सँभाले और बड़ी दक्षता के साथ छोटी

नाव को हल्के-हल्के आगे बढ़ाने लगी। पानी की सतह पर डाँडों के प्रहारों से पूर्णिमा के चाँद का शांत प्रतिबिम्ब विचलित हो उठा कभी वह कूदता, कभी नाचता और कभी छिन्न-भिन्न होकर रुपहली झलक में परिणत होता।

कुछ ही देर में वे झील के विशाल विस्तार में पहुँच गये। डाँडों की तालमय मंद छप-छप के अतिरिक्त कोई ध्वनि सुनाई न देती थी। वहाँ की शांतिमय स्तब्धता में घिरे हुए वे दोनों बड़ी देर तक एक-दूसरे से न बोले।

अंत में मे बोली, "वहाँ पहुँचने के बाद पहले कहाँ जाओगे?"

"मैं तो 'चचा ली' के यहाँ जाने का इरादा कर रहा था जिनका मेरे पुराने घर के पास ही मकान है। तुम्हारा क्या ख्याल है?"

"हुम, मैं जानती हूँ उन बूढ़े बाबा को! बा लू के वह हमेशा मित्र व समर्थक रहे हैं। पता नहीं अब उनका क्या हाल है......जब तुम शेन के यहाँ जाओगे तो अगर जापानियों या कठपुतलियों से घिर गये तो क्या करोगे?"

"अंदर जाने के पहले मैं बड़ी सतर्कता से देख लूँगा। कल्लू ने मुझे पहले ही बता दिया है कि जब तक शेन परले दर्जे का गद्दार और विश्वासघाती न बन जाय उसे मारना मत। बस उसी सूरत में मैं उसे गोली मारकर भाग लूँगा! अगर जापानी या गद्दार मुझ पर टूट पड़े तो मैं भी गोलियाँ चलाने की कोशिश करूँगा! अगर मैं न भी भाग सका तो वीर गति को प्राप्त हो जाऊँगा। 'गाड़ी के पहिये अपने चिन्ह पीछे छोड़ते जाते हैं'—श्वाँग ही मेरा आदर्श होगा।"

दा-श्वी के शब्दों ने मे का हृदय बर्फीली उँगलियों से नोच लिया। वह खामोशी के साथ नाव खेहती रही और अपनी बड़ी चमकदार आँखों से उसकी ओर तकती रही। वह उससे न जाने क्या-क्या कहना चाहती थी लेकिन शब्द उसके कण्ठ में अटक गये थे। कुछ क्षण तक दोनों अपने-अपने विचारों में लीन रहे।

मे ने माथे से पसीने की बूँदे पोंछने के लिए डाँड रोके। "दा-श्वी," उसने आहिस्ता से कहा, "इस बार तुम चीते के मुँह से दाँत निकालने जा रहे हो। बड़े चौकन्ने रहना। कुछ भी हो अपने को उनके हाथों न पड़ने देना। अपने कान व आँखें सतर्क रखना। अगर कहीं फँस जाओ तो अपने पर काबू

रखना मैं जो कुछ तुमसे कह रही हूँ उसे याद रखना।''''''जब अपना कार्य समाप्त कर चुको तो सीधे वापस आजाना। हमें अपने न आने से परेशान न करना!"

जब दा-श्वी ने देखा कि मे को उसका इतना ख्याल है तो वह पुलकित हो उठा। उसने भी सीधे उसकी सुन्दर आँखों की ओर देखा और मुस्करा दिया।

"मैं यह काम करके ही रहूँगा!" उसने दृढ़ता व विश्वास से कहा। "मैं सिद्ध करूँगा कि इतने वर्ष से जो मैं जनता का दिया हुआ खा रहा हूँ वह व्यर्थ न जायगा! कल्लू ने मुझे बहुत-से नक्शे बता दिये हैं; और जो कुछ तुमने मुझे बताया वह भी मैं हरगिज़ न भूलूँगा—मैं भटकूँगा नहीं! इन्तेज़ार करो मैं खुशखबरी लेकर ही लौटूँगा!"

अब शैंज्या में शत्रु के दुर्ग में जलती हुई रोशनियाँ उन्हें दिखाई देने लगी थीं। जापानियों और कठपुतलियों का शोर-गुल पानी में भी सुनाई दे रहा था; उन दोनों ने अपनी बातें बंद कर दीं।

मे ने चुपचाप छोटी नाव को सरकण्डों के एक झुरमुट में से निकाल कर बाँध के किनारे की ओर जो गाँव से कुछ ही अन्तर पर था धकेल दिया। दा-श्वी आहिस्ता से किनारे पर कूदा, अपना लम्बा सिर घुमा कर मुस्कराया और सरगोशी के अंदाज़ में बोला, "अब लौट जाओ!" और फिर अंधकार ने उसे निगल लिया।

जब तक उसकी पद-चाप सुनाई दी मे वहीं बैठी रही। धीरे-धीरे उसने नाव लौटाई और खेहती हुई घर की ओर चली।

× × × ×

गलियों की दीवारों से चिपकता हुआ दा-श्वी गाँव में दाखिल हो गया। दबे पाँव वह चाचा ली के छोटे-से कम्पाउण्ड में घुसा और झटपट उसने दीवार फाँद ली। उसने बहुत ही धीरे से खिड़की में से पुकारा पर कोई जवाब न मिला। पास ही से एक सूखा राड़ा उठाकर उसने अँधेरे में जहाँ तक उसका

हाथ गया चलाया अन्दर कोई खाँसा पर किसी ने उत्तर न दिया।

"मैं हूँ चाचा ली," दा-श्वी फुसफुसाया। "दरवाजा खोलो।"

ज्यों ही चाचा जी ने जानी-पहचानी आवाज़ सुनी उन्होंने किवाड़ खोल कर दा-श्वी को अंदर ले लिया। खिड़की एक कम्बल से ढँककर उन्होंने लैम्प जला दिया।

"अरे बाप रे। तुम यहाँ क्या कर रहे हो?" बूढ़े ने पूछा।

"मैं आप ही से मिलने आया हूँ चाचा जी। कहिए वह जो क़िला हम लोगों ने खोदा था ढह गया या बाकी है?"

"बाकी है। आओ खुद ही देखलो," बूढ़े ने लैम्प उठाकर उत्तर दिया।

दा-श्वी ने कुछ ढीली ईंटें काँग के सामने से हटाईं और सूराख में से झाँककर देखा। वह अभी बरकरार था—उस सुरंग में से पड़ोसी के काँग को रास्ता जाता था।

अब जब उसे पूरा विश्वास हो गया तो दा-श्वी ने बूढ़े से काफी तफसीली बातें कीं और पूछा कि जब से वह गया था शेंज्या में क्या-क्या हुआ। चाचा ली ने भी पूरे ब्यौरे के साथ दियेह की मृत्यु से लेकर श्वाँग के वैभव-शाली अंत तक की सारी घटनाएँ बयान कीं। गाँव की वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि दुश्मन गाँव के किसानों के घरों की निरंतर तलाशी लेते रहते हैं।

"इन हरामी पिल्लों ने तो यहाँ मेरा नाक में दम कर दिया है!" बूढ़े ने थूककर कहा। "मैं तुम लोगों का हरवक्त ख्याल करता रहता हूँ। तुम्हें तलाश करते-करते मेरी आँखें पथरा गईं हैं।" उसने स्नेहपूर्वक कहा। "लेकिन आज तुम आखिर आ ही गये, दाश्वी। जब तक तुम्हारा जी चाहे यहाँ रहो। यहाँ सब कुछ तुम्हारा ही है।"

चाचा ली का पुत्र और बहू अन्दर आई और उन्होंने दा-श्वी की तपाक से अभिवादन किया। वे प्रभात तक बातें करते रहे और तब दा-श्वी एक कम्बल और तकिया लेकर सुरंग में गया। वहाँ उसने नाश्ता किया और सो गया।

दा-श्वी उस दिन शाम तक सोता रहा फिर वहाँ से निकल कर ऊपर

आ गया।

"मैं शेन से मिलने जा रहा हूँ," उसने चाचा ली से गुप्त रूप से कहा।

"क्या तुम उसी की तलाश में आये हो?" बूढ़े ने आश्चर्य से पूछा। "वह अब बड़ा अफसर हो गया है—पहले से कहीं बदतर हो गया है!"

"उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं उससे निपटना जानता हूँ। खैर फिर भी अगर कोई गड़बड हो गई तो मैं तुम्हें उनके हवाले करने के पहले अपनी जान न्यौछावर कर दूँगा।"

बूढ़े ने अपने नीली नसों वाले हाथ से दा-श्वी का हाथ जोर से दबाया। "ऐसी बातें न करो बेटे!" वह बोला, "तुम लोग हम लोगों की खातिर ही अपनी जान जोखो में डालते हो! मुझ जैसे गरीब बुड्ढे को क्या डर है?·····तुम उसे कहाँ तलाश करोगे?"

"मैं उसके घर जा रहा हूँ।"

"ठहरो, जरा मैं इधर-उधर देख लूँ, फिर चले जाना।"

एक खाली बोतल लिये चाचा ली बाहर गया जैसे मीठा तेल लेने जा रहा हो। कोई बीस मिनट बाद वह लौटकर आया।

"शेन घर पर ही है। अभी तुम्हारा मौका है!" उसने सूचना दी और फिर कहा, "ऐसा क्यों नहीं करते? मैं पहले चला जाता हूँ। तुम मुझसे कुछ फासले पर आओ और तुम्हारे पीछे मेरा बेटा आयेगा। अगर किसी तरफ से भी कोई खतरा हुआ तो हम खँखार देंगे। बस उस खँखार के सुनते ही तुम उड़नछू हो जाना। ठीक है ना?"

"यह बड़ी बढ़िया बात है!" दा-श्वी ने प्रसन्न होकर कहा। "चलिये, ऐसा ही करें! अगर मुझ पर मुसीबत आ पड़े तो तुम बड़े चिनार में खबर कर देना······"

"तुम्हें ऐसी बातें नहीं कहनी चाहिएँ!" बूढ़े व्यक्ति ने समझाया। "भगवान तुम्हारी रक्षा करेंगे! तुम्हारा कोई कुछ न बिगाड़ेगा!"

"अच्छा, अच्छा!" दा-श्वी ने हँसकर कहा। "आओ चलें!"

तीनों आदमी सकरी गलियों में एक टेढ़े-मेढ़े रास्ते से होकर शेन

के घर पहुँचे। रास्ते में कोई दुर्घटना न घटी। कम्पाउण्ड के बड़े-बड़े काले फाटक खुले हुए थे। अपनी पिस्तौल निकालकर दा-श्वी ने इधर-उधर नजर दौड़ाई। उसने पिस्तौल का घोड़ा तैयार कर लिया और अन्दर पहुँच गया।

× × × ×

पहला आँगन अँधियारा और खाली था। वहाँ से दूर अंदरूनी आँगन में खुलने वाला चन्द्र-द्वार था जिसमें से दा-श्वी अंदर प्रविष्ट हुआ। स्क्वयर की पूर्वी व पश्चिमी दिशा में बनी इमारतों की खिड़कियों से प्रकाश आ रहा था। उत्तर में स्थित अँधियारी इमारत के दरवाजे पर खड़े होकर दा-श्वी ने कान लगाकर सुना। वातावरण निस्तब्ध था। वह भी दबे पाँव अन्दर चला गया।

हालाँकि पिछला कमरा अन्धकारमय था, दूर दाहिनी ओर एक परदे वाले दरवाजे में से रोशनी झाँक रही थी; अफीम के धुँए की दुर्गन्ध नथोड़ों में घुस रही थी। दा-श्वी ने मन-ही-मन गालियाँ दीं। उनकी मा का —! शेन ने किसी कठपुतली नेता को अफीम के दौरे के लिए बुलाया होगा। पर ये बातें क्यों नहीं कर रहे हैं? अगर वह अपने शरीर-रक्षकों के साथ आया तो मैं पहले उसे अपनी गोली का निशाना बनाऊँगा, फिर काँग पर बैठे पियक्कड़ों की खबर लूँगा।

दा-श्वी ने अपनी पिस्तौल से परदा हटाया और कमरे में प्रविष्ट हो गया।

शेन एक छोटी-सी मेज के पीछे झुका हुआ बैठा था जहाँ एक अफीम का दिया जल रहा था। सामने उसकी रखेल बैठी उसका पाइप भर रही थी। दा-श्वी के प्रवेश की आवाज सुनते ही दोनों ने चौंककर देखा। शेन का चेहरा फक हो गया और एक कुहनी केवल सिर पर रख वह लेट गया।

"कमाण्डर!" उसने धूजते हुए कहा। "आप यहाँ क्या कर रहे हैं?"

दा-श्वी ने उसे न उठने का संकेत किया। "पाइप पी लो फिर बातें होंगी!"

"नहीं, नहीं मैं तो पी चुका हूँ।" शेन ने उसे विश्वास दिलाया और ताबड़तोड़ काँग से उठ बैठा। "पधारिए, बैठ जाइए! क्षमा कीजियेगा। मैं जानता हूँ कि मुझे इस व्यर्थ के व्यसन में न पड़ना चाहिए पर क्या किया जाय!"

शेन को निहत्था देखकर दा-श्वी ने अपनी पिस्तौल का घोड़ा दबा दिया और उसे बन्द कर लिया।

कमरा बड़ी सुन्दरता से सजाया गया था। काली पालिश की हुई लकड़ी के फर्नीचर का प्रतिबिम्ब कई आईनों में पड़ रहा था और दा-श्वी के फटे-पुराने कपड़े उस ललित वातावरण में अपवाद सिद्ध हो रहे थे। उसने एक कुर्सी खींची और उस पर बैठ गया। अपनी पिस्तौल उसने पास की मेज पर रख दी।

शेन की रखेल का भय व उत्तेजना से पाजामा गीला हो गया था। वह लरज़ते कदमों से अपने स्वामी की आज्ञा-पालन के लिए—चाय लाने के लिए—जाने लगी कि दा-श्वी ने उसे रोका।

"अन्दर न जाओ! मुझे पीने को कुछ नहीं चाहिए!"

उसी ऐंठे हुए जिस्म के साथ वह फिर बैठ गई। दा-श्वी ने शेन को भी बैठने का हुक्म दिया और उससे प्रश्न करने लगा।

"पूर्वी और पश्चिमी इमारतों में कौन रहता है?"

"मेरी बहू तो पूर्वी विंग में रहती है। पश्चिमी विंग में मेरी मा और पत्नी हैं। उनके अलावा कोई नहीं है।"

"चलो उन सब को यहाँ ले आओ, मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ।"

वे आँगन में गये। प्रधान फाटक बन्द करने के बाद उन्होंने शेन-परिवार के सदस्यों को घेरा और उन्हें उत्तरी इमारत में ले आये। स्त्रियाँ भय से काँप रही थीं।

"आपने खाना तो खा लिया है?" उन्होंने दा-श्वी से प्रश्न किया।

"जी, मैं खा चुका हूँ और मुझे इस समय प्यास भी नहीं लग रही है।" उसने उत्तर दिया। "मैं तो आप लोगों से दो बातें करने आया हूँ। बा लू योंही अकारण लोगों को नहीं मार डालते। डरिये नहीं!"

उसके आग्रह पर स्त्रियाँ बैठ गईं। दा-श्वी ने, मानो कोई कक्षा पढ़ा रहा हो, उनको राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति एवं संयुक्त मोर्चे पर भाषण दिया। वह उनकी समझ में आया हो या न आया हो लेकिन समयोचित अवकाश के बाद उन्होंने सम्मत्यर्थ अपने सिर हिलाये। जब भाषण समाप्त हो गया तो दा-श्वी अपने मेज़बान से सम्बोधित हुआ।

"मैं ठीक कह रहा हूँ ना, शेन बाबा ?"

"तुम्हारा एक-एक शब्द बिल्कुल सही है !" शेन ने उत्सुकता से कहा।

"बहुत अच्छे ! हम सब चीनी हैं और हमें एक होकर जापानियों से लड़ना है। तुम कठपुतली-शासन में अफ़सर हो। मैं जानना चाहता हूँ कि दुर्ग में क्या स्थिति है। क्या मुझे बताने का तुम में साहस है ?"

शेन की आँखें बिल्ली जैसी थीं; वह जानता था कि समय बदल रहा है। "हम सब चीनी हैं और मुझे बोलने में काहे का डर हो सकता है ?" उसने सख्ती से जवाब दिया। "कठपुतलियों का खाना खाने के लिए तो अच्छा है लेकिन उसे हज़म करना मुश्किल है। भला एक चीनी जापानियों की तरह कैसे महसूस कर सकता है।

उसने किले के आदमियों की संख्या, शस्त्रों की संख्या, अफसरों के नाम गुप्तचरों द्वारा प्रयोग की गईं पद्धतियाँ—सब कुछ ही तो बता दिया।

"और भी कोई चीज है ?" उसने पूछा।

"बस यही सब कुछ है," दा-श्वी ने सिर हिलाया। "मैं तुम्हें साफ-साफ बता दूँगा—यह जो काम तुम कर रहे हो नितान्त भयानक है। बा लू ने समझा था कि तुम यह भूल गये हो कि तुम चीनी हो और मेरे पहले किसी को भेजने की उन्होंने योजना बनाई थी······"

"कमाण्डर," शेन ने फौरन उसे टोका, "मैं दिल से हमेशा चीनी रहा हूँ !"

"यह तो बड़ी अच्छी बात है ! बा लू की नीति उदार है। जब तक तुम अपनी ग़लतियों का प्रायश्चित करने को तैयार हो विजय के बाद तुम्हें समाज में रहने का अधिकार होगा। जिला-कठपुतली ग्राम्य प्रशासन के अफसर होने के नाते

अनेक गाँवों में हज़ारों किसानों पर तुम्हारा नियन्त्रण है। तुम्हें जापानियों से सहयोग करने का तो केवल ढोंग रचना चाहिए लेकिन जनता के लिए जो कुछ भी सम्भव हो करना चाहिए।"

"हाँ, हाँ!" शेन ने कहा। "जो कुछ भी मेरे बस में है उसे करने से तो मुझे इन्कार है नहीं।"

दा-श्वी ने उससे पूछा कि क्या कोई ऐसी तरकीब है कि क़ैद हुए पटेलों को छुड़वा लिया जाय। शेन ने उलझन में पड़कर अपना सिर खुजाया।

"जापानियों ने उसकी आज्ञा जारी की थी," उसने सोचते हुए कहा। "मैं इसे उलट सकता हूँ......अब भी क्योंकि तुम ऐसा चाहते हो। वैसे यह है बड़ा मुश्किल का काम लेकिन मैं ज़रूर कोई उपाय सोच निकालूँगा कि वे रिहा हो जायँ।"

"तो इसे झटपट कर डालो।"

"कल सुबह पहला काम यही करूँगा।"

कुछ देर और बातें करने के बाद दा-श्वी ने कहा, "बहुत रात हो गई चलो, अब सो जायें।"

"तुम कहाँ ठहरे हुए हो?" शेन ने पूछा।

"आज रात तो मैं यहीं सोऊँगा। हम दोनों साथ-साथ सोयेंगे।"

शेन ने क्षण भर सोचा। "मुझे शक है कहीं रात को कोई किले में से न आ जाय। आओ उस अन्दर की कोठरी में सो जाते हैं।"

"अच्छा, ठीक है," दा-श्वी ने जवाब दिया। "मैं चाहता हूँ तुम्हारा परिवार यहाँ बाहर सोये। कोई यहाँ से जाये नहीं। यदि दुश्मनों में से कोई आये तो उन्हें कह देना चाहिए कि तुम घर पर नहीं हो।"

उस रात स्त्रियाँ बाहर के कमरे में पड़े बड़े काँग पर सोईं। जिस काँग पर शेन और दा-श्वी अन्दर की कोठरी में सोये उस पर एक लाल कम्बल बिछा हुआ था। झालरदार तकिये और एक चिकनी-सी साटन की चादर लगी हुई थी। लेकिन दा-श्वी वहाँ सो न सका। वह रात भर योजनाएँ बनाता और अनुमान लगाता रहा। दूसरे उसे शक यह था कि कहीं शेन रात को खिसककर

दुश्मन को बुलाकर उसे पकड़वा न दे। उसने अपनी बन्दूक तकिये के नीचे खिसकाई और सोने का अभिनय किया। असल में वह ज़रा-ज़रा सी आहट भी ध्यान से सुन रहा था।

शेन को भी नींद न आई। उसके मस्तिष्क में भविष्य की कार्यवाही की अच्छाइयाँ और बुराइयाँ बड़ी और छोटी तराजुओं में तुल रही थीं। जब मुर्गे ने बाँग दी तो उसकी आँख लग गई थी पर दा-श्वी तब भी जाग रहा था।

× × × ×

ज्योंही भगवान भुवन भास्कर ने अपनी रश्मियाँ बरसाई दा-श्वी उठ बैठा और उसने शेन को भी चौंका दिया। शेन झट काँग छोड़ बाहर की ओर चला।

"कहाँ चले ?" दा-श्वी ने पूछा।

"शौच के लिए ;"

"मुझे भी वहाँ जाना है," दा-श्वी बोला। वह शेन के साथ-साथ गया।

कुछ ही देर में सारा परिवार जाग गया और नाश्ता तैयार करने में व्यस्त हो गया। शेन अपने मेहमान के हाथ-मुँह धोने के लिए पानी लाया।

"तुम पहले धो लो और जाओ," दाश्वी ने कहा।

शेन ने उसकी आज्ञा का पालन किया—एक लम्बा चोग़ा और बढ़िया-सा हैट लगाया। जब वह जाने लगा तो दा-श्वी ने उसे रोककर समझाया।

"सफल होकर लौटना। मैं यहाँ तुम्हारे सन्देश की प्रतीक्षा करूँगा। तुम्हारा समस्त परिवार ही मेरे जीवन की सुरक्षा का मात्र साधन होगा। अगर दुश्मन मुझे पकड़ने के लिए यहाँ आयेगा तो हो सकता है मैं मारा जाऊँ लेकिन तुम्हारे परिवार का एक आदमी भी यहाँ से जा नहीं सकेगा!"

"आखिरकार मैं हूँ तो चीनी ही," शेन ने जवाब दिया। "तुम देख लेना!" यह कहते हुए वह दरवाजे के बाहर हो गया।

"तुम अन्दर के किसी कमरे में क्यों नहीं छिप जाते ?" शेन की मा ने

दा-श्वी को सुझाव दिया।

उसने सोचा यह चीज तो मैं करने से रहा। "मैं तुम्हारे लिए आँगन में झाड़ू दे दूँगा," उसने जवाब दिया।

उसने अन्दर एक बड़ा कमरा देखा और भारी-भरकम क़दमों से उसके अन्दर चला गया और झाड़ू देने लगा। जब उसने झाड़ना ख़त्म किया तो वह सामने के आँगन में चला गया और बैल व घोड़े को घास खिलाने लगा।

जब दा-श्वी ने स्नेहपूर्वक उस लम्बे-चौड़े पीले बैल को घास चबाते देखा तो ऐसे ही पशु को प्राप्त करने की प्रबल इच्छा उसके हृदय में जागृत हुई। उसने उनकी पीठ थपथपाई और सोचा कि हल के लिए ऐसा बैल यदि हो तो कितना अच्छा हो!

सामने वाले आँगन को देखकर दा-श्वी ने सोचा बड़ी अच्छी यह जगह है। मैं फाटक बन्द कर दूँगा और फिर कोई भी बाहर न जा सकेगा। यदि शेन मुझे गिरफ्तार करवाने के लिए सिपाही लेकर आयेगा तो वह तो यही समझेगा कि मैं अब तक पीछे वाले आँगन में हूँ और उन्हें सीधा वहीं ले जायगा। उससे मुझे भागने या अपने को बचाने का मौका मिल जायगा।

उसने फाटक पर ख़ास साँखचा लगा दिया, फिर दक्षिणी कमरे में बैठ गया। वहाँ से बैठकर वह बखूबी देख सकता था कि कौन जा रहा है। कुछ मिनट के बाद एक बूढ़ी नौकरानी एक ट्रे में अण्डे और गेहूँ के आटे के बने हुए कई पकवान लेकर अन्दर आई।

"वापस ले जाओ इन्हें," दा-श्वी ने आज्ञा दी। "क्या अपने यहाँ काम करने वालों को हमेशा ऐसा ही खाना खिलाती हो?"

"अब तो ये बन ही गई," बूढ़ी औरत ने दुखी-भाव से कहा। "क्या आपके लिए कुछ और पका कर लाऊँ?"

बजाय इसके कि वह उस बूढ़ी मामा को कष्ट देता उसने जो कुछ भी लाया गया था वही खा लिया। लेकिन जब दोपहर को वह फिर रकाबी में ऐसा खाना लेकर आई जिसे यदि औसत दर्जे का किसान साल भर में एक बार भी खा ले तो अपने को सौभाग्यशाली समझे, तो वह बिगड़ गया।

"हम वा लू दिन में दो वक्त भोजन करने के आदी हैं," वह बोला। "अभी तो मुझे बिल्कुल भूख ही नहीं है।"

कोई तीन बजे शेन ने फाटक पर दस्तक दी। एक नौकर ने उसे दरवाजा खोल दिया और वह अन्दर आ गया। वह अकेला ही था, साथ में दो बड़ी-बड़ी कार्प मछलियाँ थीं और वह आते ही पीछे के आँगन में चला गया। ज्योंही वह आँखों से ओझल हुआ दा-श्वी जो अब तक खिड़की में बैठा देख रहा था झट लेट गया और सोने का अभिनय करने लगा। कुछ ही मिनट में उसके मेज़बान ने आकर उसे झँझोड़ा।

"तुम बड़े शूरवीर हो, ऐसे नाजुक वक्त भी सो रहे हो," शेन ने प्रशंसा करते हुए कहा।

दा-श्वी उठ बैठा और हँसने लगा। मुझे तुम पर विश्वास है फिर मैं जानता हूँ कि यह स्थान सुरक्षित है।"

"तुम यार वास्तव में सच्चे मित्र हो," शेन ने पुलकित हो कहा। "आओ अन्दर चलकर कुछ बातें करें!"

"किले से तो तुम्हारे लिए कोई आदमी नहीं आने वाला?"

"कोई मौका नहीं है उनके यहाँ आने का! वे तो ताश खेलने में व्यस्त हैं!"

जब वे दोनों आराम से मेहमानों के कमरे में बैठ गये तो शेन ने अपनी रिपोर्ट दी। "मैंने काम बस यों चुटकियों में कर लिया!" उसने अपनी मूँछों पर ताव देते हुए आत्म-संतुष्टि के स्वर में कहा। जापानी कमाण्डर से मैंने कहा: 'महाराज! सात दिन हो चुके हैं। अगर हम सारे पटेलों को प्राणदण्ड दे देंगे तो जन-साधारण में हमारी सख्त बदनामी होगी। इससे तो कहीं बेहतर यह होगा कि पटेलों को छोड़ दिया जाय और उन्हें हमारे लिए अनाज इकट्ठा करने का मौका दिया जाय। पहला फायदा तो इससे यह होगा कि हरेक कोई कहेगा कि शाही सेना बड़ी उदार है और दूसरे यह कि देहातों में हमारे ऐसे जिम्मेदार आदमी पहुँच जायेंगे जिनके द्वारा हम काम करवा सकेंगे!' मुझे उससे बहुत ज्यादा देर बातें भी नहीं करनी पड़ीं और वह मेरी बात से पूरी तरह सहमत हो

गया। उसने पटेलों को कल रिहा करने का वादा किया है! हाँ तो, कप्तान साहब, क्या ख्याल है तुम्हारा मेरी इस तरकीब के बारे में?"

दा-श्वी ने बड़ी गर्मजोशी से उसकी बड़ाई की और शेन की बाछें खिल गईं। फिर यकायक एक विचार ने उसे आ घेरा।

"इस संकट से तो हम निकल आये अब यह बताओ कि अगर उन्होंने फिर अनाज माँगा तो हम क्या करेंगे?"

"एक बार में एक ही काम करना चाहिए," दा-श्वी ने मुस्कराकर कहा। "पहले तो हम उन्हें झुल देंगे और टालमटोल करेंगे और अगर उससे काम न चला तो कोई और उपाय सोचेंगे।"

शेन ने क्षण भर सोचा। "बहुत अच्छा," उसने अपनी हँसी रोकते हुए कहा। "तो योंही काम करना चाहिए!"

"ईमानदारी से काम करना। लोगों की हालत तो तुम जानते ही हो।"

उस दिन शाम शेन ने बड़ा स्वादिष्ट और महँगा भोजन कराया। जब वे पकवान उसके सामने परोसे गये तो दा-श्वी की भृकुटी चढ़ गई।

"अरे बापरे! यह—यह तो बड़ी बुरी बात है! यह सारा खाना जनता के खून-पसीने से ही तो आता है!"

शेन हक्का-बक्का रह गया। "खैर यह खाना तो खा ही लो," उसने आग्रह किया। "तुम्हें तो ऐसा खाना छठे-छमासे ही मिलता होगा। यही समझ लो कि यह मेरी बा लू के प्रति श्रद्धा का प्रतीक है।"

कुछ संकोच के बाद दा-श्वी राज़ी हो गया। खाते समय उसने शेन को शत्रु से मुकाबला करने के सिद्धान्त समझाये और भविष्य में शेन से रब्त-ज़ब्त क़ायम रखने का प्रबन्ध भी कर लिया।

खाना खाने के बाद दा-श्वी मेज पर से उठ गया। "अब मुझे वापस जाना है। कुछ रास्ते मेरे साथ चलो।"

"अच्छा," शेन बोला। "अगर कोई मिले तो कुछ कहना मत। मुझे बोलने देना बस।"

लेकिन वे चलते-चलते गाँव की सीमा तक पहुँच गये और कोई घटना

न घटी। शेन ने दा-श्वी को वहीं छोड़ दिया और घर लौट आया। चाँदनी में दा-श्वी बाँध के सहारे चलता-चलता किसी बेद वृक्ष तक गया और वहाँ जाकर उसने जोर की सीटी बजाई। एक छोटी-सी नौका जिसे एक अठारह वर्षीय लड़का खेह रहा था किनारे के सरसराते सरकण्डों में से चमकती हुई दिखाई दी।

"कामयाब होकर आये भैया?" लड़के ने मुस्कराते हुए पूछा।

"हाँ, कामयाब होकर!" दा-श्वी ने नौका में कूदते हुए जवाब दिया।

लड़के ने नौका को तुरन्त किनारे से भगाया और क्याँग झील के शान्त वक्ष पर उसे चलाता हुआ ले चला। किनारे से कोई दर्शक नाव के चिन्ह और उसमें बैठे हुए आदमियों को शनैः शनैः एक काले धब्बे में जो रात के कुहरे में छिपता जा रहा था विलीन होते देख सकता था।

: १४ :

विवाहोत्सव—हेमन्त, १९४३

जब दा-श्वी बड़े चिनार में पहुँचा तो हमारे काडर भी जिन्हें कठपुतली-शासित देहातों को भेजा गया था अपना कार्य पूरा करके लौट आये थे। क़रीब-करीब हरेक काडर ने यही रिपोर्ट दी कि वह कठपुतली नेताओं को आ लू रे से सहयोग करने के लिए वचन-बद्ध कर आया है।

अगले दिन शेन के वचनानुसार बन्दी पटेलों को घर लौटने की आज्ञा दे दी गई। शाम को एक बैठक हुई जिसमें इस प्रश्न पर बहस की गई कि पार्टी के आदेशों—उन चीनी अफसरों से जो बज़ाहिर जापानियों का साथ दे रहे हैं किस तरह काम लिया जाय और जनता का संगठन-कार्य और बढ़ाया जाय—का पालन किया जाय। सब काडरों को नये काम दिये गये। दा-श्वी को शोंज्या जाने का आदेश दिया गया जहाँ जाकर उसे गुप्तरूप से उन जन-संगठनों को पुनर्जीवित करना था, जो जापानियों के अन्तिम अभियान में छिन्न-भिन्न हो गये थे।

दा-श्वी को अपनी भूमिगत सर्गर्मियाँ शुरू किये हुए अभी एक सप्ताह ही बीता था कि गूपी और उसके गुप्तचरों ने अपने खूनी हाथ फैला लिये। शेंज्या के लोगों के लिए नकटा गूपी जंगली कुत्ता बना हुआ था जो जहाँ जाता था अपनी दुर्गन्ध छोड़ जाता था। इस बार उसके आदेशानुसार उसके गुप्तचरों ने आधी रात को त्सुर की मा के घर में आग लगा दी। अन्त में जब किसानों ने बुढ़िया को खींचकर निकाला तो उसका सारा शरीर बुरी तरह झुलस गया था और ऐसा ऐंठ गया था कि पहचानना मुश्किल था।

दा-श्वी ने फौरन इस अपराध की रिपोर्ट कल्लू त्से को भेज दी जो बड़े चिनार में था। कल्लू के क्रोध का पारावार न रहा।

"हमारी नीति तो उदार है," उसने तन कर कहा, "लेकिन गूपी जैसे सूअर के साथ हमें कोई रिआयत न बरतनी चाहिए!"

छापेमार गूपी को समाप्त करने पर सहमत हो गये। त्सुर अपनी छाती पीट रहा था, और क्रोध व संताप से पैर जमीन पर देकर मार रहा था। उसने माँग की कि अपनी मा का बदला लेने के लिए उसे जाने की आज्ञा दी जाय। कल्लू ने इस सुझाव पर दूसरों से सलाह-मशवरा किया और यह तय पाया कि वह काम त्सुर और दा-श्वी को संयुक्त रूप से सौंपा जाय। उन्हें गूपी को पकड़ने के उपाय सोचने थे और फिर उसे मार देना था ताकि अन्य गद्दारों को जिन्हें अपने कृत्यों का पश्चाताप नहीं है सबक मिले।

वे शीघ्र ही वहाँ से चल पड़े और उसी रात शेंज्या में पहुँच गये। पूछ-ताछ से पता चला कि गूपी और लियेव एक कोरियाई वारांगनागृह में बैठे अपनी वासना-तृप्ति कर रहे हैं। दोनों छापेमार लम्बे डग भरते हुए उस नाजायज़ कम्पाउण्ड में पहुँचे। उन्होंने दीवार फाँदी और उत्तरी इमारत में कूद पड़े जहाँ गूपी और लियेव एक काँग पर बैठे ऐंठ रहे थे। वेश्या-गृह का कोरियाई मालिक उनके लिए पाइप भर ही रहा था। शरीर-रक्षक कोने में पड़ा खुर्राटे ले रहा था। त्सुर कूदकर अन्दर पहुँचा और उसने गूपी को काँग पर से घसीटा। दूसरों को दा-श्वी ने अपनी पिस्तौल से दबा लिया।

"किसी ने भी अगर शोर किया तो गोली मार दूँगा!" उसने धमकाते

हुए कहा। और कठपुतली सैनिकों से उनकी बन्दूकें ले लीं।

त्सुर ने उन्हें और कोरियाई को बाँध लिया और उनके मुँह में रूई ठूँस दी।

"मैं देखता हूँ तुम अभी तक गद्दारी किये जा रहे हो!" उसने लियेव को बाँधते हुए गुर्राकर कहा।

भयभीत और फटी आँखों से नकटा गूपी छापेमारों की हर हरकत को समझता गया। त्सुर और दा-श्वी ने फुसफुसाकर फौरन यह तय किया कि गूपी की मौत लियेव को भी दिखाई जाय ताकि उसे इससे सबक मिले।

"इससे तुम्हारा कोई वास्ता नहीं है," दा-श्वी ने शरीर-रक्षक और कोरियाई से कहा। "तुम यहाँ चुपचाप ठहरे रहो।"

कैदियों को अपनी पिस्तौल से आगे धकेलते हुए छापेमार कम्पाउण्ड से निकले और खामोशी से गाँव की सरहद पर पहुँचे। ग़द्दार अपने ही रूमालों से बाँधे गये थे जो चिकने और फिसलवाँ थे। दा-श्वी और त्सुर एक-एक कैदी के रूमालों का एक सिरा अपने हाथों से पकड़े हुए थे।

गूपी जानता था कि उसके कुकर्मों का दण्ड दया नहीं हो सकती। ज्योंही उसने देखा कि त्सुर का हाथ कुछ ढीला है उसने जोर से झटका देकर अपने को छुड़ाया और बेतहाशा जोर से भागा। त्सुर भी उल्टे पाँव उसके पीछे पड़ गया।

"गोली क्यों नहीं मार देते?" दा-श्वी चिल्लाया।

त्सुर ने झटपट गोली मारी पर निशाना चूक गया। लियेव ने देखा कि उसका भी मौका है, उसने भी झटका दिया और दाहिनी ओर खेतों में भागा। दा-श्वी उसके पीछे लग गया और उसने दौड़ते ही गोली चलाई। हालाँकि वह उसे घायल ही करना चाहता था पर पहली गोली ही लियेव की खोपड़ी के पार थी। जब दा-श्वी लाश तक पहुँचा तो लियेव के माथे से खून की नदी बह रही थी।

त्सुर भागता गया पर गूपी जरा-सी देर में ही अन्धकार में विलीन हो गया। उस कटु निराशा और विफलता में सिर ठोकता हुआ वह दा-श्वी के पास लौटा।

"मुझे तो मर जाना चाहिए," उसने क्रोध में कहा। "मैंने उसे अपनी आँखों के सामने हाथ से निकाल दिया!" वह भीमकाय नवयुवक ऊँकड़ूँ बैठकर रोने लगा।

"हमने यह तो वास्तव में बड़ी गड़बड़ कर दी!" दा-श्वी ने पछताकर कहा। लियेव भी छूटकर भागा और जल्दी में मैंने उसे मार डाला! अपनी भी क्या फूटी तक़दीर है। जिसे नहीं मारना था उसे मार दिया और जिसे मारने जा रहे थे वह हमें तड़ी दे गया।"

ठीक उसी क्षण किले के कठपुतली सैनिकों ने उसी दिशा में जहाँ से गोलियाँ चलने की आवाज आ रही थी मशीनगन चला दी। गोलियाँ छापेमारों के बिल्कुल पास ही से निकलीं। वे ताबड़तोड़ उस दिशा से हट गये।

जब वे बड़े चिनार में पहुँचे तो दोनों की बड़ी सख्त नुक्ताचीनी हुई। गूपी को शेंज्या में रहने का साहस न हुआ। उसके रोम-रोम में भय समा गया था, परकोटे वाले गाँव में अपने बाप के घर की ओर भागा और वहाँ पहुँच कर कई दिन तक वह बिस्तर से न उठा।

× × × ×

कुछ सप्ताह बाद बा लू की रोज-ब-रोज बढ़ती हुई शक्ति से घबराकर जापानी सैनिक शेंज्या से किसी दूसरे कस्बे को प्रस्थान कर गये। उन्होंने किले वालों की सहायता के लिए कठपुतली दस्ते वहीं छोड़ दिये। किले की फौज का कमाण्डर गो स्थिति के इस परिवर्तन से बड़ा बुरी तरह भयभीत हो गया था। बीमारी का बहाना करके वह भी 'स्वास्थ्य-प्राप्ति' के लिए कस्बे को भाग गया।

कल्लू ने किले के ग़द्दारों को चेतावनी देते हुए एक संदेश भेजा कि वे किसानों को परेशान करना बन्द कर दें। छापेमारों ने शेंज्या को जापान-विरोधी नारों से रंग दिया और किले पर भी ऐसे आशय के कई पोस्टर चिपकाये जिनमें कठपुतली सैनिकों को प्रतिकार-आन्दोलन में शामिल होने का स्वागत किया था।

एक दिन शाम के समय कल्लू और दा-श्वी शेन के घर बैठे हुए उससे

बातें कर रहे थे कि बाहर आँगन में कोलाहल की आवाज़ें सुनाई पड़ीं। खिड़की से झाँककर जो देखा तो तीन सशस्त्र सिपाही आते दीख पड़े। शेन भय से पीला पड़ गया और उत्तेजित हो उछल पड़ा।

"जल्दी।" उसने आग्रह किया। "अगले कमरे में छिप जाओ।"

"कोई घबराने की बात नहीं है," कल्लू ने शान्ति से कहा। "मैं उनसे निपट लूँगा।" उसने एक छोटी-सी पिस्तौल तो अपनी आस्तीन में छिपा ली और अपनी बड़ी पिस्तौल सामने काँग पर रख दी ताकि वे समझें वे अचानक पकड़े गये। फिर उसने दा-श्वी से कुछ कहा और उसने भी ऐसा ही किया।

कठपुतली सैनिकों ने दरवाजे का परदा हटाया और अन्दर आ गये। काँग पर बैठे हुए दो आदमियों को उन्होंने घूरा। एक मोटा-ताजा काली दाढ़ी वाला नवागंतुक जिसका रंग काला था, आँखें चमकदार थीं, उन्हें चोटी से एड़ी तक जाँच रहा था। उसके पास ही एक बलशाली किसान बैठा हुआ था। जिले के कठपुतली देहाती प्रशासन का नेता शेन एक ओर खड़ा परेशान दिखाई दे रहा था। काँग पर पड़ी पिस्तौलें देखकर कठपुतली फौजी समझे ये अजनबी बालू हैं, आतंकित हो वे जाने के लिए उठे।

"मत जाओ!" बड़े किसान ने हुक्म दिया। "हमारे कमाण्डर साहब तुमसे कुछ कहना चाहते हैं।"

जब उन्होंने शब्द 'कमाण्डर' सुना तब तो उनके दिलों की धड़कन और भी तेज हो गई। झटपट वे अटेंशन खड़े हो गये और कमर तक झुककर उन्होंने अभिवादन किया।

"हम कमाण्डर के आदेश की प्रतीक्षा में हैं!"

"तुम लोग इतनी रात गये कहाँ घूमते फिर रहे हो?" कल्लू ने त्यौरी चढ़ाकर पूछा।

उसके कहने का स्वर बड़ा पैना था और कठपुतलियों के चेहरे पीले पड़ गये। उनके हाथ उनकी जाँघों पर चिपके हुए थे और उन्होंने उसी श्रद्धा भाव से उत्तर दिया, "हम तो सिर्फ घूमने और तम्बाकू पीने के लिए निकल पड़े थे—और कोई बात नहीं थी!"

"बैठ जाओ !" कल्लू ने आज्ञा दी।

"जब कमाण्डर साहब बैठे हैं तो हमें खड़ा ही रहना चाहिए।"

"नहीं, ऐसी बात नहीं है! हम सब चीनी हैं। बैठ जाओ, हम कुछ बातें कर लें तुमसे।"

कठपुतली सिपाही एक साथ एक सख्त बैंच पर बैठ गये और अपनी बाजू से उन्होंने बन्दूकें रख दीं। दस्ते के सरदार ने जिसका अफीमची की भाँति सफेद चेहरा था कल्लू को सिगरेट पेश की पर उसने कहा वह पीता नहीं है। जब दा-श्वी को दिया गया तो उसने भी इन्कार कर दिया।

"हम बा लू वाले सिगरेट पीने की आदत नहीं डाल सकते। बड़े मँहगे पड़ते हैं," दा-श्वी ने अपना पाइप और तम्बाकू की थैलिया निकालते हुए कहा।

दो घुड़कियों के बाद कठपुतली सरदार ने शेन को सिगरेट दिया पर उसे भी पीने का साहस न हुआ। लज्जित हो बेचारे ने पैकेट जेब में रख लिया।

कल्लू ने अपनी भँवें चढ़ा लीं। "तुम लोगों को मुझे कुछ आदेश देना है!" उसने सख्ती से कहा।

उसके स्वर की कठोरता से कठपुतली फौजी डरकर खड़े हो गये। काँपते हुए उन्होंने कल्लू से बड़ी दीनता से कहा।

"आप अपने आदेश हमें दीजिए, कमाण्डर साहब! हम उनका पालन करेंगे।"

"पहले तो यह कि बिना काम के मैं नहीं चाहता कि तुम सड़कों में घूमते फिरो।"

"जी हाँ, साहब!"

"दूसरे, तुम किसानों को त्रास देना बन्द करदो।"

"बहुत अच्छा, कमाण्डर साहब!"

"तीसरे, बन्दूकें जिस तरह से तुम ले जाते हो उसके प्रति सतर्क रहो। वे तुम्हारी पीठ पर लटकनी चाहिएँ और उनकी नली नीचे की ओर होनी चाहिए।

"बहुत बेहतर, साहब!"

"चौथे, अगर आइन्दा तुम्हें किसी चीज की ज़रूरत पड़े तो पटेल के पास जाओ। किसानों से दूर रहो। वे मामूली-से, सीधे-सादे ईमानदार लोग हैं और तुम्हारी शेखियों से परेशान होते हैं। ठीक है ना?"

"जी हाँ, जी हाँ कमाण्डर साहब!"

दा-श्वी ने खँखार कर अपना गला साफ किया और कठपुतलियों की ओर घूरकर देखा। "मैं भी तुम्हारे लिए आदेश लाया हूँ। तुम लोग गेहूँ का आटा माँगने जाना बन्द कर दो। ऐसे विपत्ति-काल में बेचारे किसान तुम्हें खिलाने के लिए आटा कहाँ से लायें? मानते हो ना तुम?"

"जी हाँ, जी हाँ! आप बिल्कुल बजा फरमाते हैं!" कठपुतलियों ने ज़ोर-ज़ोर से सिर हिलाये।

"ऐसे तकल्लुफ की ज़रूरत नहीं है," कल्लू ने मैत्रीपूर्ण स्वर में कहा। "हम सब चीनी हैं और हमवतन हैं। तुमने देखा कि हमने अपने हथियार काँग पर रख दिये हैं क्योंकि हम तुम्हें अपना दुश्मन नहीं समझते। लेकिन तुम्हें हमने जो आज बताया है वह करके दिखलाना है। हम यहाँ अक्सर जाँच-पड़ताल के लिए आते रहेंगे हाँ, भूलना नहीं अच्छा!"

कठपुतलियों ने उन्हें आश्वासन दिया कि वे सब बातें याद रखेंगे और हरेक आदेश का शब्दशः पालन करेंगे।

"अच्छी बात है," कल्लू ने कहा। "अब तुम जा सकते हो। हम देखेंगे तुम भविष्य में कैसा काम करते हो?"

"जी हाँ, कमाण्डर साहब! आप तो जानते ही हैं हम क्या करते हैं, अब आप यह भी देखिए हम किस प्रकार इन आदेशों का पालन करते हैं?" कठपुतलियों ने अपनी रायफलें उठा लीं, झुककर सलाम किया और जाने के लिए मुड़े।

शेन यही सोच रहा था कि कठपुतलियाँ इस घटना की रिपोर्ट देते समय न जाने मेरे बारे में क्या कहेंगे। वह झटपट आगे गया। "चलिये मैं आपको बाहर तक छोड़ आऊँ सरदार साहब! ये दोनों बा लू कामरेड मुझे शिक्षित करने आज यहाँ आये थे।" उसने अपना बचाव करते हुए कहा, "और साथ ही साथ

आप लोगों को पढ़ाने का भी इन्हें अवसर प्राप्त हुआ। बड़ा अच्छा संयोग रहा, हा, हा, हा!"

"इससे हमें बड़ा लाभ पहुँचा है," दस्ते के सरदार ने कहा, "बल्कि अफीम के दौर से कहीं अधिक मज़ा हमें इनकी बातों में आया।"

कठपुतली सैनिक आदरपूर्वक बाहर चले गये। ज्योंही छापेमारों ने देखा कि वे दूर चले गये हैं तो उन्होंने अब तक दबी हुई हँसी का कार्क खोल दिया और विजयोल्लास से गरजने लगे।

"यह भी खूब रहा!" कल्लू ने हँसते हुए कहा। "जैसे हम शिक्षक और वे विद्यार्थी हों।"

× × × ×

छापेमारों और कठपुतलियों की जब और कई मुठभेड़ें हुईं तो कठपुतलियों का व्यवहार व आचरण असाधारण रूप से सुधर गया। लेकिन शेंज्या की दुर्ग-रक्षक सेना का नया कमाण्डर जिसको चिढ़ाने का नाम बड़ा कौवा था अब तक जंगली जंतु की भाँति व्यवहार कर रहा था। वह दूकानों से चीज़ें खरीदता और उन्हें कुछ न देता था बल्कि बा लू के विरुद्ध घृणापूर्ण स्वर में कुछ बड़बड़ाता ही रहता था।

"जापानियों ने तो उन सबका सफाया कर दिया है!" वह उपहास करता था।

गुप्त रूप से पुनर्संगठित किसान सभा के कुछ प्रगतिशील सदस्य और नवजवान लीग वालों ने दा-श्वी से विचार-विनिमय किया। कुछ दिन बाद उन्होंने बड़े कौवे को एक अँधियारी गली में पकड़ लिया।

"क्या तुम अब तक तेंदुए की कलेजी खाते रहे हो जो ऐसे दुम्बे बने हुये हो?" उन्होंने पूछा। तुम तो कहते थे बा लू हैं ही नहीं। अच्छा," दा-श्वी की ओर संकेत करते हुए, "यह है एक बा लू तुम्हारी नज़रों के सामने! क्या अब भी लोगों को तंग करोगे?"

जब दा-श्वी ने उस कठपुतली की एक-एक नीच बात जो उसने कही थी या की थी गिनाई तो बड़ा कौवा भय से काँपने लगा। दा-श्वी के सामने उसने हाथ जोड़े और झुक कर कई बार सलाम किया।

"मेरी आँखें बड़ी जरूर हैं लेकिन उनकी पुतलियाँ नहीं हैं!" बड़ा कौवा हीनता के साथ अटक-अटक कर बोला। "इन्सान की तरह बर्ताव करना तो मुझे आता ही नहीं। आपको तो मेरी हर बात मालूम है, मैं तो दरअसल खीर में नमक की डली के समान हूँ। आज से मैं ठीक व्यवहार करूँगा!"

उन्होंने लगभग एक घण्टे तक उसे लेक्चर पिलाया तब जाकर उसे किले को लौटने की इजाजत दी।

उसके बाद से तो शेंज्या के सारी कठपुतलियाँ—बड़े कौवे से लेकर मामूली सिपाही तक बा लू के आदेशों पर चलने लगे। यदि स्थिति गम्भीर हो और आवश्यकता होती तो कल्लू दुर्ग-रक्षक फौज के कमाण्डर को बुलाता और उसे विशेष आदेश दे देता।

एक-बार बड़े कौवे के शरीर-रक्षक ने किसी स्त्री की चोली चुरा ली। स्त्री ने चोरी की शिकायत स्त्री-संस्था को दी और संस्था ने फौरन दस-बारह सदस्यों को बुलाया और वे किले के सामने वाली इमारत की दीवार फाँदकर छत पर पहुँच गईं।

"कठतुतली देशवासियो!" उन्होंने पुकारा। "क्या आप लोग वे कानून भूल गये हैं जो बा लू ने आपको बताये हैं? जनता के साथ दुर्व्यवहार और अन्याय करने की आपने कैसे छूट दे दी है?"

मीनार के ऊपर से बड़े कौवे ने उन्हें उत्तर दिया। "महिलाओं, आखिर आपके कहने का मक्सद क्या है?"

"आपके शरीर-रक्षक को श्रीमती जोव की चोली चुराने दुस्साहस कैसे हुआ? वह उसे वापस दिलवाई जानी चाहिए। हमारी स्त्री-संस्था इस प्रकार की हरकत बर्दाशत नहीं करेगी!"

दूसरे दिन चुराई हुई चीज उसकी स्वामिन को लौटा दी गई।

अब शेंज्या काबू में आ चुका था इसलिए कल्लू ने दा-श्वी और मे को एक बैठक के लिए बुलाया। उसने दा-श्वी से पूछा कि आया वह होज्वाँग गाँव की स्थिति जानने के लिए तैयार है या नहीं। साथ ही मे से भी पूछा कि आया वह शेंज्या में दा-श्वी का काम सम्हाल लेगी या नहीं। दोनों काडरों ने प्रसन्नता से ये प्रस्तावित जिम्मेदारियाँ स्वीकार कर लीं।

दोनों काडरों को काँग पर एक दूसरे के सामने बैठा हुआ देखकर कल्लू ने सोचा कि यह जोड़ा भी अनुपम है, उनको देखते ही वह प्रफुल्लित हो गया। यह तो जाहिर था ही कि वे एक-दूसरे से असीम प्रेम करते हैं लेकिन वह जानता था कि यदि उसने उन्हें उकसाया नहीं तो वे कभी मुँह भी नहीं खोलेंगे।

"तुम दोनों भी बड़े बढ़िया साथी हो," उसने मुस्कराते हुए कहा। एक की तो शादी ही नहीं हुई और दूसरे की तलाक को भी मुद्दत हो गई है। मेरे ख्याल से तुम एक-दूसरे के लिए बहुत उपयुक्त हो। मैं रस्मी तौर पर यह सुझाव देता हूँ कि तुम दोनों शादी कर लो! पहले एक-दूसरे को भली भाँति समझ लो, फिर इस पर सोच-विचार कर लो। क्यों क्या कहना है तुम्हारा?"

"अहा!" दा-श्वी ने जवाब दिया, उसका दिल धड़कने लगा, "इसके साथ इतने वर्ष काम करता आया हूँ और तुम समझते हो मैं अभी तक इसे समझा ही नहीं?"

मे शर्मा गई और उसने अपने दिल में सोचा—मुझे भी अब कोई और चीज समझना बाकी नहीं है। मैं मुद्दत से उसकी एक-एक भावना और विचार से परिचित हूँ।"

अन्त में दा-श्वी ने वह दीर्घ निस्तब्धता तोड़ी। "मुझे तो असल में कोई आपत्ति है ही नहीं!" वह बोल उठा पर वह था असमंजस में। "मैं कामरेड मे से बहुत प्रभावित हूँ। वह बड़ी मेहनती हैं और सब काडरों से अच्छा व्यवहार करती हैं। उन्होंने जिनछुंग के परिवार का प्रतिकार-आन्दोलन में न आने देने का विरोध किया था……" दा-श्वी हकला गया। "कुछ भी हो वह बहुत अच्छी हैं और मैं क्या कहूँ कुछ कहते नहीं बनता।……"

"तुमने पहले ही काफी कह लिया!" मे ने उसकी बात काटते हुए कहा

और मुस्करा दी। "मुझ में तो अनेक दोष व न्यूनताएँ हैं, तुम तो मुझ से हर बात में बेहतर हो!" कल्लू की ओर घूमकर उसने दा-श्वी के उपचार को पूरा किया। "मैं कामरेड दा-श्वी को पसन्द करती हूँ। मेरे ख्याल में वह अत्यन्त उत्कृष्ट हैं। चट्टान की तरह ठोस व दृढ़ हैं। जब जापानियों ने उन्हें इतनी निर्दयता से यन्त्रणाएँ दी थीं तब भी वे जरा नहीं डिगे थे। सबसे अच्छा वह काम करते हैं और पढ़ने-लिखने में भी मुझसे कहीं बेहतर हैं। मुझे भी कोई आपत्ति नहीं है।"

कल्लू अपने को न रोक सका और ज़ोर-ज़ोर से देर तक हँसता रहा।

"अच्छा है, अच्छा है! पार्टी कमेटी की भी आशा थी कि तुम दोनों यही विचार रखते होंगे! जब स्थिति ज़रा सुधर जायगी तो तुम दोनों शादी कर सकते हो। फिक्र बिलकुल न करो!"

दोनों के चेहरे सुर्ख थे पर अंदर से दोनों के दिल बल्लियों उछल रहे थे और उन्होंने अपनी रज़ामंदी खुसर-पुसर में कर ली।

अगले दिन में चाचा ली के साथ चली और उसने शेंज्या की जनता को संगठित करने की अपनी भूमिगत कार्यवाही आरम्भ करदी। वह रात ही को काम करती थी और वह भी छिपे-छिपे। जब-जब जरूरत होती और उसके साथी उसे आज्ञा देते वह पटेल शेन से भी मिलती थी। शेन आजकल जिले के ग्राम्य कठपुतली शासन का नेता था और खुफिया तौर पर बा लू की सहायता कर रहा था। वह जो भी सूचना उसे देता वह एक 'संदेश वाहक' को देदेती और वह सूचना वहाँ से छापेमारों के प्रधान दफ्तर तक पहुँच जाती थी।

काम करते-करते उसे कई सप्ताह हो चुके थे कि एक रात जब वह शेन से मिलने गई तो कुछ असावधान हो गई। कम्पाउण्ड से आने वाली पद-चापों की ओर उसने कोई ध्यान ही न दिया। संयोगवश ईनो ने जो अब पड़ौस के गाँव श्ये ल्यू के दुर्ग का जापानी कमाण्डर था अपने कठपुतली सहायक ग्वो से यह सुना कि शेन के पास एक बढ़िया हाथी-दाँत का महजोंग सेट है। उस रात वह शेन से उसे 'माँगने' आया था।

ईनो ने अपने शरीर-रक्षक को बाहर ही छोड़ दिया और खुद उस

कमरे में दाखिल हुआ जहाँ मे और शेन बैठे भूमिगत मामलों पर बातें कर रहे थे। जापानी का प्रवेश इतना अचानक और अप्रत्याशित था कि मे घबराकर खड़ी हो गई। लाल-पीली होकर उसने शेन की ओर बड़ी भयंकर नज़रों से घूरा।

शेन भी उत्तेजित हो गया था पर उसने अपनी घबराहट प्रकट न की।

"आह, महाराज आप!" उसने नर्मी से कहा। "आइए, अंदर आइए! तशरीफ़ रखिए!"

जापानी की नज़रें तो मे पर गड़ गईं। "वह······कौन?"

"मेरी भतीजी है!" शेन ने झट उत्तर दिया। "बैठिए ना!"

"मैं जाकर फूफी से पानी उबालने को कहती हूँ," मे ने कहा और वह कमरे के बाहर निकल गई।

ईनो बैठ गया पर अपनी अधखुली आँखें उसी दरवाज़े पर लगाये रहा जिससे मे निकल कर गई थी; ऐसा लगा मानो वह किसी सोच में लीन हो। अंत में जब उसे चेत आया तो वह विचित्र रूप से ठहाका मारकर हँसा।

"तुम्हारी भतीजी," जापानी ने शेन से कहा, "यह!" उसने अपनी मुट्ठी से अंगूठा उस ओर करते हुए कहा और लड़के की तरह हँसा। "बहुत अच्छा, बहुत अच्छा!"

मे का चर्म बहुत सफ़ेद हो गया था क्योंकि उसे दिन भर घर में ही रहना पड़ता था। जब वह ईनो को शेन के यहाँ देखकर सुर्ख हो गई तो बड़ी सुन्दर दिखाई दी। जापानी तो उसके सौंदर्य पर लट्टू हो गया।

शेन ने चोरी से अपने माथे का पसीना पोंछा। वह बड़े आमोद-प्रमोद व प्रोत्साहन के साथ ईनो से दूसरी बातें करने लगा ताकि उसका ध्यान बटाये लेकिन जापानी तो बहुत दूर निकल आया था।

"तुम्हारी भतीजी, क्या उम्र?" उसने पूछा।

शेन ने सोचा यह तो बड़ी बुरी बात है। मुझे तो उसकी उम्र ज्यादा ही बताना चाहिए।

"पच्चीस वर्ष की है! क्या महाराज हमारा किला देखना पसंद करेंगे?"

शून्य में हँसते हुए ईनो ने अपनी विस्की जैसी लाल नाक सिकोड़ी।

"मैं—" उसने अपनी दसों उँगलियाँ उठाईं और तीन बार हाथ हिलाया।

"ओह हो······महाराज तीस वर्ष के हैं," शेन ने सिर हिलाया।

विचार में डूबा हुआ, जापानी कुछ क्षण भौचक्का बैठा रहा। फिर मक्जोंग के सेट के बारे में कुछ कहना बिलकुल भूलते हुए वह उसी तरह अचानक चल दिया जैसे आया था।

दूसरे दिन ईनो का चीनी दुभाषिया शेन से मिलने आया। वह एक घड़ी, एक अंगूठी और साटन के दो थान लेकर आया और बोला कि ज़ापानी कमाण्डर शेन की भतीजी से विवाह करना चाहता है। उसे टालने के लिए शेन ने कहा कि उसकी मँगनी पहले से हो चुकी है। दुभाषिये ने उत्तर दिया कि ईनो ने हुक्म दिया है कि कुछ भी क्यों न हो लड़की उनसे ब्याह दी जाय। परसों उसे श्येल्यू भेज दिया जाना चाहिए वरना शेन और उसका समस्त परिवार गिरफ्तार कर लिया जायगा।

दुभाषिया उपहार वहीं छोड़कर चला गया।

शेन ने दुख में हाथ मले और फर्श पर जल्दी-जल्दी चलने लगा। लेकिन उसका चालाक दिमाग़ भी कोई हल न सोच सका। जब मे को यह पता चला तो वह घबरा गई और फौरन छापेमारों के प्रधान-दफ्तर वापस जाने का विचार करने लगी। शेन उसे जाने देने से डरता था।

"तुम करना क्या चाहते हो?" मे ने क्रोधित हो पूछा। "क्या तुम्हारा इरादा वास्तव में मुझे जापानियों के हवाले करने का है? बा लू उसके लिए तुम्हें कभी माफ नहीं करेंगे!"

शेन ने संताप में अपने पैर जमीन पर मारे। "मैं क्या करूँ? ईनो जिद कर रहा है, और तुम जानती हो वह किस किस्म का आदमी है! अगर वह मुझसे नाराज हो गया तो उसके एक इशारे पर मेरा सिर काट दिया जायगा। यह कोई हँसी-मज़ाक़ नहीं है।"

"अब देखो इतना घबराओ नहीं," मे ने उसे सान्त्वना देते हुए कहा। "मैं प्रधान दफ्तर को वापस जाती हूँ और वहाँ हम कोई तरकीब सोचेंगे। कुछ

भी हो हम तुम पर कोई आर नहीं आने देंगे। ठीक रहेगा ना वह !" वह उसे कोई क्षण भर तक समझाती रही तब जाकर वह राज़ी हुआ और उसने अनमने से उसे जाने की इजाज़त दी।

जब मे बड़े चिनार पहुँची तो छापेमार यह सोच रहे थे कि श्ये ल्यू को जहाँ का भार कल्लू को सौंपा गया था किस प्रकार जीता जाय। गाँव में उसने जन-संगठन को फिर से चालू कर दिया और जायज़ तरीकों से एक भूमिगत कार्यकर्त्ता को पटेल चुने जाने में मदद की थी। दुर्ग में कठपुतली सिपाही सहयोग के लिए तैयार थे लेकिन कुछ दर्जन जापानियों की उन पर सख्त निगाह थी। दो मशीनगनें—जो बहुत भारी शस्त्र हैं—जापानियों को दे गई थीं। इसीलिए छापेमार इस गढ़ को जीतने में असमर्थ थे।

दुर्ग का कमाण्डर मे का प्रशंसक ईनो था। उसी धूर्तता के साथ जैसा कि वह पापी था वह कहा करता था कि, "महान जापान और चीन एक ही परिवार है। शाही सेना गरीब लोगों की रक्षा के लिए आई है!" लेकिन जरा-सी देर में ही वह अपनी क्रूरता की बागें छोड़ देता था। उसने असंख्य चीनियों को मौत के घाट उतरवाया था और उसे स्वयं मार डालने में बड़ा आनन्द आता था। वह किसी सिपाही को झुके हुए कैदी की गर्दन पर पानी डालने के लिए कहता और फिर एक ही वार में अपनी सैमुराय तलवार से उसका सिर धड़ से अलग कर देता था।

"जापान को चीनियों पर बड़ा तरस आता है," वह कहता, "वर्ना तो कहीं पहले मार कर मुर्दा कर देता!"

मे ने अपने साथियों को बताया कि उसकी ईनो से मुटभेड़ हुई और वह उससे शादी करना चाहता है। लोगों में क्रोध की लहर दौड़ गई लेकिन कल्लू ने उन्हें शांत किया और कहा कि वे ठण्डे दिमाग़ से इस स्थिति से पार होने का तरीका सोचें। काफी गरमा-गरम बहस के बाद एक योजना सर्वसम्मिति से मान ली गई।

उन्होंने शेन को बुलाया और वह फौरन आ गया लेकिन जब उसे एक कार्य सौंपा गया तो उसने ऐसी टालमटोल की और इतना भयभीत हुआ कि

छापेमारों ने उसे बिल्कुल अलग रखने का ही निश्चय किया। उन्होंने उसे बड़े चिनार में ही रोक लिया। किसी और आदमी को इस आशय के पत्र के साथ ईनो के पास श्ये ल्यू में भेजा गया कि शेन के परिवार ने विवाह के लिए अनुमति दे दी है और दुल्हन नियत तिथि को वहाँ पहुँच जायगी। इधर काडर अपनी तैयारियाँ करने लगे और कल्लू रसे कुछ प्रबन्ध करने श्ये ल्यू चला गया।

× × × ×

विवाह के दिन अठारह वर्षीय रू ने दुल्हन की पोशाक पहनी। उसने 'विग' लगाये, फूलदार साटन की जाकेट, गुलाबी पाजामा और ऊँची एड़ी के जूते पहने। थोड़ा-सा लिपस्टिक, पावडर और ग़ाज़ा लगाने के बाद वह बड़ा आकर्षक लगने लगा। उसका सिर एक लाल दुपट्टे से घिरा हुआ था और एक छोटी-सी पिस्तौल उसने अपनी कमर पट्टी में घुरस रखी थी।

अध्यापिका मिस चेन ने भी जिन्होंने दुल्हन की नौकरानी बनने की जिम्मेदारी अपने आप ली थी, बड़े सुन्दर वस्त्र पहने। मि० मी जो अब बड़े चिनार के पटेल थे दुल्हन के फुफेरे भाई बन गये। उन्होंने एक नया लबादा और जाकेट पहनी और एक चमकदार टोपी लगा ली। बा ल्यू-काउण्टी देश-रक्षक सेना में से भी चार सज्जन दुल्हन के अन्य सम्बन्धी बनकर गये। इन छः में से हरेक ने अपने जिस्म में हथियार छिपा रखे थे।

दूसरे साथी अपना-अपना फर्ज निभाने कभी के जा चुके थे तीसरे पहर को यह दुल्हन की ओर से जाने वाली मण्डली नाव में सवार होकर झील पार करके वहाँ पहुँची। श्ये ल्यू में बाँध पर उनके स्वागतार्थ नया पटेल वाँग, चार संगीतज्ञ, कई जापानी और कठपुतली सिपाहियों का एक दस्ता मौजूद था। बड़ी सजावट वाली दुल्हन की पालकी और दो छोटी पालकियाँ भी तैयार करवाई गई थीं।

ज्योंही नाव किनारे से लगी है कि दुर्ग में से अनेक कठपुतली सैनिक सुन्दर पोशाक पहने हुए दर्शकों को अच्छी तरह देखने के लिए दौड़े हुए आये।

पास ही नाव में बैठे हुए भुक्कड़ मछुए उत्सुकता से देख रहे थे। "बू! आहर!" की ध्वनि के साथ उन्होंने अपने पत्ती उड़ा दिये, पत्ती हवा में सर्र से उड़े, ऊपर-नीचे आड़े-टेढ़े घूमे और फिर रुपहली मछलियाँ देखते ही पानी में गहरे नीचे पहुँच गये। उन पत्तियों को इसकी शिक्षा दी जाती है कि वे मछलियाँ पकड़ें और अपने स्वामियों की नावों में लाकर रखें।

जब नवागंतुक बाँध से उतरे तो नये पटेल और उसके हम-ओहदा साथी बड़े चिनार के पटेल ने एक-दूसरे को झुककर अभिवादन किया। 'दुल्हन' को बड़ी पालकी में बैठा देने के बाद मिस चेन और मि० मी छोटी-छोटी सवारियों पर सवार हुए। संगीतज्ञों ने बड़ी मंगलकारी तर्ज़ छेड़ी और सिपाहियों के साथ-साथ विवाह-मण्डली गाँव में दाखिल हुई।

किले के ऊपर एक खम्भे में लगा जापानी झण्डा फड़फड़ा रहा था। पास ही एक कम्पाउण्ड में ईनो ने अपना एक सरकारी अस्थायी निवास बना लिया था जिसके सामने सन्तरी तैनात थे। कुलफी और सिगरेट बेचने वाले तथा अन्य उत्सुक दर्शकों की भीड़ मकान के इर्द-गिर्द जमा हो गई।

जब पालकियाँ फाटक पर आकर रुकीं तो ईनो और दो अन्य जापानी स्वागतार्थ निकल कर आये। नाटा, मोटा दूल्हा एक काला पाश्चात्य सूट और कड़े कालर की सफेद कमीज पहने हुए था। उसकी कुब्बेदार विस्की जैसी नाक आज पहले से भी अधिक लाल थी। अपने सारे दाँत बाहर निकालकर वह मुस्कराया और मेहमानों को स्वागत-कक्ष में ले गया।

दुल्हन को देखने की माँग उठ रही थी और अनेक जापानी उसके आस-पास जमा हो गये थे। मि० मी ने आनन्दप्रद मुस्कान के साथ कहा, "महाशयो हमारे चीनी रिवाजों के अनुसार आप घूँघट नहीं उठा सकते!"

श्ये ल्यू के पटेल वाँग ने मि० मी, दुल्हन के फुफेरे भाई का जापानियों से परिचय कराया, उधर मिस चेन ताबड़तोड़ 'लड़की' को दुल्हन के कमरे की ओर ले गई। रू के सिर पर जो भारी घूँघट पड़ा हुआ था उससे वह ठीक से देख भी न सकता था, दूसरे ऊँची एड़ी के जूतों का भी वह आदी न था। दरवाजे की देहलीज़ से टकराकर वह गिरते-गिरते बचा, मिस चेन ने उसे वक़्त

पर सम्हाल लिया उसे कमरे में ले जाते हुए अध्यापिका के घबराहट में पसीने छूट रहे थे।

कमरा ईनो के ऐश्वर्य के अनुसार सजा हुआ था—लोहे का एक पलंग था, जिस पर एक गुलाबी मच्छरदानी तनी हुई थी, एक बड़ा आईना था, सोफा था····· जापानियों की एक टोली अन्दर घुस आई। हँसते हुए उन्होंने 'दुल्हन' को देखा जो बड़ी सज-धज के साथ पलंग के किनारे पर बैठी हुई थी।

"आप लोग फौरन यहाँ से चले जाइए," मिस चेन ने आज्ञा दी। "वह बहुत शर्मीली है!"

"बाहर, बाहर! सब बाहर जाओ!" मि० मी ने जापानियों को दरवाजे से धकेलते हुए कहा।

अँधेरा हो ही चुका था और भोजन का कमरा भड़कीली सफेद रोशनियों से जगमगा रहा था। मेज़ों के पास एकत्र होकर चीनी और जापानी अतिथियों ने विनम्रता में एक-दूसरे की होड़ लगा ली हरेक कोई अच्छी और प्रतिष्ठित जगह पर बैठने से इन्कार करने लगा। जब सब बैठ गए तो खाना परोसा गया। जरा देर में मेज़ें मुर्ग, बत्तख, मछली, विस्की और बियर की भारी मात्रा से कराहने लगीं।

"आप एक चीनी लड़की से विवाह कर रहे हैं इसलिए आपको चीनी रीति-रिवाजों का ही पालन करना पड़ेगा!" मि० मी ने ईनो से कहा। "हम सब को खूब शराब पीना चाहिए आज!"

ईनो इतना हर्षित व पुलकित था कि हँसते-हँसते उसकी आँखें व नाक मिलकर एक हो गई थीं। उसने बार-बार सद्भावना के लिए जाम पिये और श्ये ल्यू के पटेल वाँग ने उसका ग्लास कभी खाली होने ही नहीं दिया। तमाम जापानियों ने धड़ाधड़ जाम पर जाम पिये और बेटर शराब की बोतलें खोलते हुए इधर-उधर दौड़ते रहे। पास के कमरे में बैठे छोटे कठपुतली अफसर भी शराब में धुत्त होकर चीख-चिल्ला रहे थे और उस आम कोलाहल में हँसी और चिल्लपों बढ़ा रहे थे।

जापानी जितनी शराब पीते जाते उतने ही धुत्त और मूर्ख बनते जाते थे।

कुछ ही देर में उन्होंने बोतलों से डुकासना शुरू कर दिया और हास्यास्पद ठिठोलियापन करने लगे। उनमें से एक जिसके चेहरे से आग टपक रही थी लड़खड़ाता हुआ उठा और उसने अपना चोगा उतार फेंका। वह एक सफेद धारीदार कमीज़ पहने हुए था। वह कमरे के बीच में योंही ऊँटपटाँग नृत्य करने लगा, उसकी पट्टी में एक छोटी-सी कपड़े की गुड़िया लगी हुई थी जो उसके झटकों के साथ ऊपर-नीचे हिलती थी। ज़ोर-ज़ोर से गाना गाते हुए उसने अपनी सूअर-जैसी आँखें चश्मे के ऊपर को घुमाईं जोकि उसकी नाक से नीचे खिसक आया था। जापानियों ने चापास्टिकें अपनी व्हिस्की के गिलासों पर बजाकर उसकी ताल-लय बैठाई और उसी के साथ ज़ोर-ज़ोर से गाने लगे।

थोड़ी ही देर में उन्होंने हाथ से मेजें ठोकना शुरू कर दिया, अपना सिर हिलाते और ज़ोर-ज़ोर से हँसते रहे। प्याले और रकाबियाँ मेज़ों के हिलने और बजने से हट हट कर नीचे गिरतीं और फूटती गईं। जापानियों की इस अति-रंजनात्मक भ्रष्टाचारिता को देखकर छापेमारों के हृदय घृणा और तिरस्कार से जल रहे थे।

× × × ×

पटेल वाँग की पत्नी ने जो रसोई में बैठी कुछ पका-रींध रही थी रू और मिस चेन के लिए खाना भेजा। दोनों ने उसे आनन-फानन में थूर लिया। मिस चेन ने लैम्प जलाया पर उसकी बत्ती छोटी करदी।

"वह अब जल्दी ही यहाँ आ जायगा," उन्होंने रू से फुसफुसाकर कहा। "देखना कहीं अपने को उसके सुपुर्द न कर देना!"

"तुम लोग तब तक कुछ न करना जब तक मैं अपना काम पूरा न करलूँ," उसने मन्द स्वर में उन्हें आदेश दिया। "अगर कोई गड़बड़ हो जाय तो मुझे छोड़कर भाग मत जाना!"

"वैसा भला हम कैसे कर देंगे?" मिस चेन ने हँसकर कहा। "बस तुम अपना काम ठीक से कर देना; बाकी सब पास वाले कमरे के लड़के निपट लेंगे।"

कुछ मिनट बाद दो जापानी दाखिल हुए। शराब में धुत्त ईनो को सम्हाल कर वे लाये और उसे पलंग के पास वाले सोफे पर रख दिया। फिर एक मूर्खतापूर्ण मुस्कराहट के साथ उन्होंने अर्थपूर्ण दृष्टि से 'दुल्हन' की ओर देखा और चले गये। मिस चेन उनके पीछे गई और दरवाजा बन्द करके बाहर निकल गई। रू पलंग की पट्टी पर सिर झुकाये हुए टेढ़ा बैठा हुआ था। दीवार से फोनोग्राफ के बजने की मद्धम आवाज़ आ रही थी।

ईनो सोफे पर लेटा कुछ अर्धचेतना की स्थिति में था। मूर्खता से हँसते हुए उसने कामुक दृष्टि से अपनी दुबली-पतली 'दुल्हन' की ओर कनखियों से देखा। उसने आधा सिगरेट पिया, टुकड़ा फेंका और सोफे को थपथपाया।

"आओ, आओ! यहाँ बैठो!

रू का दिल ज़ोर से धड़क रहा था पर उससे जवाब न दिया गया। ईनो समझा कुमारी शर्मा रही है। अपने सारे दाँत बाहर निकालकर उसने नाक सिकोड़ी और गधे की नाईं हँस पड़ा। रू खिसकते-खिसकते और पीछे को हटता गया और चुपके से अपनी पिस्तौल सीने से निकाल कर उसने हाथ में रख ली। ईनो के मुँह से राल टपक रही थी और उसने उसी कामुकता से झुककर रू की टाँग पकड़ ली। रू ने जापानी पर गोली चलाई पर नाजायज़ प्रेम की झड़प से निशाना चूक गया। सहसा ईनो का मुँह खुला-का-खुला रह गया, और ज्योंही उसने नज़रें उठाई रू ने दो गोलियाँ उसके दिमाग़ में पैवस्त करदीं।

गोलियों की आवाज सुनते ही 'विवाह-अतिथियों' ने एकदम अपनी बंदूकें निकाल लीं। मेज़ों को लात मारकर गिरा दिया और हर सशस्त्र शत्रु को सीसा पिलाने लगे। जापानियों को अपनी पिस्तौलें सम्हालने का भी समय न मिला; बीसियों की संख्या में वे भर-भर कर गिरे। कठपुतली आतंकित हो फर्श पर रेंगने लगे लेकिन छापेमारों ने हर दरवाजे पर अपने आदमी तैनात कर दिये थे और जापानियों को मारते हुए उन्होंने गरजकर कहा, "चीनी गद्दारो, समर्पण कर दो और जिन्दा रह जाओ।" लोग झट उनका कहना मान गये।

कम्पाउण्ड में बीसियों जिला और काउण्टी देश-रक्षक सेना के लोग

बहुरूप भरे खड़े थे वे भी दीवारें फाँद-फाँद कर उस युद्ध में आ मिले। जब दो जापानी जो फाटक पर खड़े थे। अपनी रायफलें लेकर वरों को भागने लगे तो दो-चार 'कुलफी बेचने वालों' ने—जो असल में गाँव के काडर थे उन्हें गोली का निशाना बना लिया।

रात भाँय-भाँय कर रही थी। चाँद अभी तक न निकला था और अंधकार के उस पर्दे में भी गाँव के कई हिस्सों में धड़ाधड़ कार्य हो रहे थे। झील के किनारे "भुक्कड़ मछुओं" ने पिस्तौलें निकालीं और बाँध पर चढ़ गये। एक मंदिर में 'मज़दूरों' का एक जत्था उसी प्रकार सशस्त्र हो गया—उनमें से प्रत्येक जिला-देश-रक्षक सेना या स्थानीय देहाती छापेमारों का सदस्य था। कल्लू त्से ने जो किले के कठपुतली सैनिकों के साथ कुछ प्रबन्ध किया था वह सुचारु रूप से चला। जब किले पर अन्दर-बाहर दोनों जगहों से दबाव पड़ा तो एक भी गोली चलाये बिना उन्होंने समर्पण कर दिया।

मकान में गोलीबार बन्द हो गया। जूनियर कठपुतली अफसरों को एक-न-एक बार कल्लू त्से ने 'समझा बुझा' दिया था। ज्यों ही का लू ने अपना प्रहार शुरू किया है कि उन्होंने अपने हथियार समर्पित करने शुरू कर दिये। घायल और मुर्दा जापानी सैनिक फर्श पर लुढ़कते व तड़पते रहे। कुछ घुटनों के बल खड़े प्राणों की भिक्षा माँग रहे थे; कुछ को फर्नीचर के नीचे से खींचा गया था, दूसरे बंद खिड़कियों के शीशों में से निकल कर भागे थे पर आँगन में पकड़ लिये गये थे।

सारे कमरे वधस्थान बने हुए थे—ताश समूचे फर्श पर बिखरे पड़े थे, रकाबियाँ, प्याले टूटे पड़े थे, मेज़-कुर्सियाँ उल्टी पड़ी थीं····· रू भी उन्हीं छापेमारों में जा मिला जो हथियारों की तलाशी कर रहे थे। उसके विग तो कहीं गिर पड़े थे और उसका घुटा हुआ सिर उसके ज़नाने भड़कीले वस्त्रों के सामने कुछ अजीब व भयानक लग रहा था। ऊँची एड़ी वाला एक जूता भी गायब हो गया था, बिना जूतेवाले पैर में एक गुलाबी रंग का मोज़ा घिसट रहा था। अब जबकि वह तमाशा खतम हो चुका था रू उस गुप्त वेश-भूषा में बड़ा अटपटा महसूस कर रहा था। जब उसने एक कोने में खूँटी पर

एक अच्छा सा ओवर कोट टँगा हुआ देखा तो उसने उससे बदलने की ठानी लेकिन ज्योंही वह उसे उतारने के लिए बढ़ा वह कोट स्पष्टतः हिला। रू का कलेजा दहल गया। बड़ी सतर्कता से उसने अपनी बंदूक से वह कोट उतारा। एक ऊँचे खम्भे में एक जापानी सिपाही बंदर की तरह चिपटा हुआ खड़ा था और ज़ोर-ज़ोर से काँप रहा था।

"निकल आओ वहाँ से!" रू चिल्लाया।

बुरी तरह आतंकित हो जापानी अपने साथ वह रैक लेकर आया और रैक वहीं गिर कर चकना चूर हो गया। यह वही फौजी था जो नाच-नाच कर अपनी मूर्खता से औरों को ऊबा दे रहा था।

गलियों में कुहराम मचा हुआ था। टार्चें, टोकरियाँ, फावड़े, गेतियाँ आदि लिये हुए मर्द-औरतें, बूढ़े-बच्चे सब-के-सब किले की ओर लपके चले जा रहे थे। सुबह होने तक वे किले की एक-एक ईंट कवेलू और लकड़ी अपने इस्तेमाल के लिए उठा ले गये। कल तक जहाँ दुर्ग खड़ा था आज वहाँ सपाट मैदान दीख रहा था।

× × × ×

श्ये ल्यू की विजय ने पड़ौस के गाँवों की कठपुतलियों का विश्वास बुरी तरह टूक-टूक कर दिया

"अब बहती गंगा में हाथ धो लो," काडरों ने किसानों से कहा।

"बस अब सुसरे एक ही वार में बाकी किलों का सफाया करदो!"

मे ने कुछ दिन बाद शेंज्या में मज़दूरों व किसानों की यूनियन की शक्तियाँ को युद्धबंद किया, बाल-संस्था, नौजवान-संस्था और स्त्री-संस्था संगठित की। बड़े जोश व खरोश के साथ उन्होंने हर वह चीज़ जमा की जिससे हथियार का काम लिया जा सकता था। दा-श्वी ने जिले की देश-रक्षक सेना का एक भाग और शेंज्या गाँव की देश-रक्षक सेना जो नव संगठित हुई थी इकट्ठी की। जैसे ही शाम हुई कि इन सैकड़ों आदमियों ने किले को बुरी तरह घेर लिया।

कमाण्डर बड़ा कौवा और उसकी फौजें कल्पना ही न कर सकीं कि क्या हो रहा है। वे बहुत भयभीत हो गये थे। बड़े कौवे को तो अपना मुँह दिखाने का भी साहस न होता था इसलिए वह किले की छत पर मुँडेरे के पीछे जाकर छिप गया।

"किसान मित्रो! बा लू साथियो!" वह चिल्लाया। "हम सब एक ही परिवार के सदस्य हैं! अगर आपको हमसे कोई शिकायत है तो कहिए!"

"तुम लोग इस किले के अन्दर बहुत दिनों तक रह लिये!" जनता गरजी। "अब बाहर निकलो! हम किला नष्ट करना चाहते हैं!"

"बड़े कौवे! हमने तय किया है कि अपना आटा खुद ही खायेंगे। तुम सब घर जाओ और फिर से किसान बन जाओ।"

"किले की ईंटें-कवेलू और लकड़ी सब हमारी हैं हम उन्हें वापिस ले जाने के इन्तज़ार में हैं।"

मैं ने अपने दस्ते को जो गीत सिखाया था वह गाना आरम्भ किया :

पक्षी गण उजाले की ओर उड़ते हैं,
इन्सानों को जीवन-पथ चुनना चाहिए!
विदेशियों के दास न बनो,
जापानियों के कुत्ते न बनो,
दिल और दिमाग बदलो; बन जाओ नये इंसान
बंदूक हमें लौटादो! और बनो हमारे दोस्त!

"बड़े कौवे!" जब सगीत समाप्त हुआ तो दा-श्वी ने पुकारा। "तुमने तो सुना होगा कि श्ये ल्यू में जापानियों की दुर्ग-रक्षक सेना का किस तरह सफाया किया गया था सुना है ना? हम अपने देश-वासियों को नहीं मारना चाहते, इसलिए नीचे उतर आओ। अपनी बन्दूकें हमें दे दो और सभी सामग्री लोगों को लौटा दो। हम सब चीनी हैं—चीनियों की तरफ आजाओ।"

"एक क्षण ठहरो," कमाण्डर ने जवाब दिया, "मैं लोगों से बातें करता हूँ। लेकिन कठपुलियाँ पहले से ही अधीर थीं। उनकी आवाजें नीचे गली में स्पष्ट सुनाई दे रही थीं।

"बात करने की क्या जरूरत है ? अगर नीचे चलना है तो चलो । मैं तो अब इससे उकता चुका हूँ ।"

"इस किले में पड़े-पड़े सड़ना भी कोई जिन्दगी है ? क्या तुम चाहते हो मैं उम्र भर यही करता रहूँ ?"

"हमारे पास सब कुछ तैयार है, बस इसी दिन का इन्तज़ार था ।"

फौरन रायफलों, कारतूसों और दस्ती बमों के अच्छी तरह बँधे हुए बण्डल बहुत-से रस्सों द्वारा किले से नीचे उतारे गये । कुछ किसान प्रशंसा करने लगे और उनकी संख्या बढ़ती गई, कुछ देर में कोई एक हजार लोग इकट्ठे हो गये और तालियाँ बजा-बजा कर अपने आनंद का इज़हार करने लगे ।

"तुम्हारा स्वागत है देशवासियो !......हमें खुशी है कि तुम सही रास्ते पर आ गये बड़े कौवे !......आज हम तुम्हें गेहूँ का सफेद आटा खाने के लिए निमंत्रित करते हैं ?"

कुछ ही सप्ताह में ह्वाँग ह्वा, होज्वाँग, दुंग्यू और ऐसे ही असंख्य गाँवों के किलों से कठपुतलियों को नीचे उतार लिया गया ।

: १५ :

अगुआई—शरद, १९४३

आने वाले महीनों में स्थायी कम्युनिस्ट सेना ने जो १९४२ में जापानियों के घेरे से निकल भागी थी अब शत्रु द्वारा नियन्त्रित प्रदेश की बाहरी सीमाओं पर अनेक विजयें प्राप्त कीं । स्थानीय पार्टी इकाइयों ने गुप्त रूप से जनता को संगठित किया और अनेकों सफल संघर्ष किये । शत्रु की शक्ति जा-ब-जा क्षीण होती गईं और परिस्थितियाँ फिर कुछ वैसी ही हो गईं जैसी जापानियों के 'घेरने' के अभियान से पहले थीं । देहाती प्रदेश में मुकाबला करने वाली शक्तियाँ बहुत विशाल थीं; गाँवों में सरकारी अधिकारों पर

जनता का नियन्त्रण दिन-ब-दिन मज़बूत होता जारहा था और सैनिक साज़ो-समान में भी महान् वृद्धि होती जा रही थी।

फिर भी जिस समय जापानियों की शक्ति अपनी चरम सीमा पर थी तो जमींदारों ने उस आपाधापी में बड़े लम्बे-लम्बे हाथ मारे थे। किसानों ने जो जमीन पुनर्प्राप्त कर ली थी वह उन्होंने उनसे फिर हथियाली थी; औरों की जायदाद हड़प कर ली थी, पुराने लगान के जबरन पैसे लिये थे और अन्न ज़ब्त कर लिया था। इन्सान के आगे पेट है ही, और भूखे पेट जापानियों से लड़ना असम्भव था। जब जनवादी सरकार बहाल हुई तो किसानों ने लगान-घटाव कार्यक्रम की माँग की। जिले और काउण्टी शासनों से काडरों को आन्दोलन की अगुआई करने ग्रामीण क्षेत्रों में भेजा गया था। और इसी कार्यक्रम के दौरान में दा-श्वी और मे का झगड़ा हो गया था।

कल्लू उनकी शादी का प्रबन्ध करने का विचार कर रहा था और वे दोनों भी इसके प्रबल इच्छुक थे लेकिन वह इतना व्यस्त था कि समय न निकाल सका। चूँकि दोनों अलग-अलग गाँवों में काम करते थे इसलिए उन युगल प्रेमियों का मिलन भी बहुत कम होता था।

एक दिन मे, जो शेंज्या में काम कर रही थी, कई किसान प्रतिनिधि लेकर शेन के पास गई। शेन की बहुत-सी जमीन थी जिसे उसने पट्टे पर दे रखा था। उसने उनका बड़ी विनम्रता से स्वागत किया और काफी विनीत अभिवादन व झुकने के बाद उन्हें बैठाया और उनके पधारने का मन्तव्य पूछा। उन्होंने उत्तर दिया कि वे लगान में कमी के सिलसिले में बातचीत करने के लिए आये हैं।

शेन विनीत भाव से हँस दिया। "यह बड़ी अच्छी चीज है और मैं पूरी तरह इसके पक्ष में हूँ। असल में मैं तो इसका स्वागत करता हूँ। मुझे पूरा विश्वास है कि हम इस पर बात करके किसी तरह सहमत हो सकते हैं—मुझे पूरा भरोसा है।"

प्रतिनिधि शेन के सहयोगी दृष्टिकोण से बहुत प्रभावित हुए और उन्हें कुछ हल्का महसूस हुआ। ऐसा लगा जैसे यह काम मुश्किल है ही नहीं।

"यह तो बड़ी अच्छी बात है मि० शेन कि आप हमारी बात से सहमत हैं," उन्होंने कहा। "देखें हम आप क्या सूरत निकालते हैं और कैसी योजना बनाते हैं।"

हालाँकि ज़मींदार ने बात तो ऐसी की थी जैसे वह बड़ा कट्टर प्रगतिशील है पर असल में वह चाल चल रहा था। कुछ दिन पहले उसे मालूम हो गया था कि ऊँट किस करवट बैठ रहा है और इसलिए उसने अपनी तैयारियाँ भी कर ली थीं।

नौकर आये और खाना मेज पर रखकर चले गये। शेन बड़ा खुश-खुश उठा और मुस्करा दिया। अपने हाथ के संकेत से उसने उनको मेज की ओर निमन्त्रित किया।

"महाशयो, यदि आप स्वीकार करें तो! आइये मुझे कृतार्थ करिये, आप वर्षों में कभी-कभार तो आते हैं क्यों न मेरा यह श्रद्धाभाव से प्रस्तुत किया हुआ भोजन आप स्वीकार करें!"

उस परिस्थिति में मे ने जमींदार के यहाँ का खाना खाना उचित न समझा। "हमें देर हो रही है," उसने कहा। "इस काम के बाद दूसरे भी कुछ काम हमें करने हैं।"

"कामरेड मे," शेन ने पुलकित हो हँसी करते हुए कहा, "क्या काम के साथ आपको खाना नहीं पड़ता? आप भूखी न हों पर ये सज्जन तो होंगे; और यदि वे भी भूखे नहीं हैं तो मैं तो हूँ! क्या हम खाते-खाते बातें नहीं कर सकते?" मे अब भी हिचकिचा रही थी। कुछ दुखी हो उससे वह फिर आग्रह करने लगा, "अगर आप लोग मेरा खाना खाना गवारा नहीं करते तो उसका अर्थ है आप मुझसे घृणा करते हैं। जब शेंज्या में जापानी थे तब तो आप लोग अक्सर हमारे यहाँ खाना खाते थे। उस समय तो आपने मुझे बाहर का आदमी नहीं समझा। आज आप कहीं और खाना चाहते हैं--भला इससे बड़ी शर्म की क्या बात हो सकती है? मुझे चाहिए चुल्लू भर पानी में डूब मरूँ!"

शेन ने मे के उत्तर की प्रतीक्षा भी न की और बड़ी कोमलता से उसे खींचकर मेज के सिरे पर बिठा दिया। वह उसके आकस्मिक भाषण से कुछ

असमंजस में पड़ गई और उसने फिर कोई आपत्ति नहीं की।

"क्या आपको व्यक्तिगत रूप से आमंत्रित किया जाय महाशयो?" शेन ने प्रतिनिधियों से पूछा। "हम तो एक-दूसरे से भली भाँति परिचित हैं—कुछ आप लोगों में मुझसे भी अधिक वयोवृद्ध हैं कुछ मुझसे छोटे—लेकिन हैं सब हम एक ही परिवार में! आइए बैठिये ना!"

जब मे ने ही पहले से सहमति दे दी थी तो प्रतिनिधि बेचारे क्या इन्कार करते। वे भी मेज के आस-पास जाकर बैठ गये।

उस दिन शेन मामूली किसानों की सी पोशाक पहने हुए था—नमदे की बिना कोर वाली टोपी, रुई भरी हुई। सूती बन्डी और पाजामा। उसका हुलिया और बातचीत का ढंग बिलकुल किसानों का-सा था और ज़मींदारी की उसमें कहीं बू तक न थी। उसने प्रत्येक की सद्भावना के लिए शराब पी और बराबर बोलता ही रहा। खाना खाते समय उसने किसी तरह मे तथा प्रतिनिधियों को बधाई दी और उसने जापानियों के विरुद्ध क्या-क्या काम किया उसका विस्तार भी उन्हें बताया। अतिथियों ने बहुत जल्द यह अनुभव कर लिया कि शेन वास्तव में उन्हीं का अपना आदमी है और अपनी गुप्त बातें भी उस पर प्रकट कर दीं

आज तो शेन पूरा मेज़बान बना हुआ था—कभी इस मेहमान को खाने के लिए कहता तो कभी उसको पीने के लिए और उसने बातचीत का विषय घटाव-कार्यक्रम पर लाकर छोड़ा। उसने अपनी शोचनीय स्थिति की ही शिकायत की।

"आप सब मेरी परिस्थितियों से परिचित हैं। हालाँकि नाम का मैं ज़मींदार हूँ पर आजकल बड़ी विपत्ति में हूँ। हाँ आप लोगों से मेरी हालत कुछ बेहतर ज़रूर है। आप जिस प्रकार उचित समझें लगान घटा दें, मुझे कोई आपत्ति न होगी।"

मे ने लगान-घटती कार्यक्रम की शर्तें शेन को सुनाई और कहा कि वह उनका पालन करे। वह पूर्ण रूप से सहमत हो गया और बोला कल मैं नये पट्टे जारी करवा दूँगा।

प्रतिनिधियों ने सोचा कि शेन तो बड़ा सुलझा हुआ जमींदार है। वे उसके मैत्रीपूर्ण व्यवहार से इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने उस 'पिछले लगान' की बात ही न छेड़ी जो उसने उस समय किसानों से वसूल किया था जब गाँवों पर जापानियों

का क़ब्ज़ा था। आखिर उन्होंने उससे हाथ मिलाया था और उसका नमक जो खाया था। अब भला उससे कठोरता का व्यवहार वे कैसे कर सकते थे?

जब उन्मुक्त क्षेत्रो पर जहाँ लगान-घटाव कार्यक्रम कार्यान्वित हो चुका था जापानियों का कब्ज़ा हो गया था तो वहाँ ज़मींदारों ने किसानों से जोर-दबाव डाल कर पुराने पट्टों के अनुसार लगान वसूल किया था। इसका अर्थ यह था कि पट्टेदारों को घटाये हुए लगान जोकि पहली मुक्ति के दौर में वसूल किया गया था और पुराने पट्टे का बकाया तथा किसी भी लगान की जो ज़मींदार ने नहीं वसूल किया है 'पूरी' रकम अदा करनी चाहिए थी। लगान जिन्स की शक्ल में दिया जाता था और इस प्रकार ज़मींदार फ़सल का ७०% भाग ले लेते थे। वे इकट्ठी रकमें जो किसानो को अदा करना थीं बहुत ज्यादा थीं। वह चलन उस समय तक रहा जब तक गाँवो को पुनर्मुक्त न कर दिया गया। फिर एक लगान-घटाओ कानून बनाया गया जिसके अनुसार किसान को फसल का एक उचित भाग लगान के रूप में देना होता था। जमींदारों ने जापानियो के क़ब्ज़े के समय किसानों से जो पिछले लगान जबरन वसूल कर लिये थे वे अब उन पर दबाव डालकर किसानों को वापस दिलवाये गये।

× × × ×

अगले दिन किसान-सभा की एक बैठक बुलाई गई जिसमें जमींदारों द्वारा किसानों को जारी किये गये पट्टों के निरीक्षणार्थ कुछ निर्णय किये गये। १९३८ में शेन की ७ एकड़ ज़मीन पड़ौस के गाँव श्वुंज्या के शासन के अन्तर्गत हो गई थी क्योंकि उस गाँव में जुताई योग्य जमीन वहाँ की जनसंख्या के लिए बहुत कम थी। उस जमीन का स्वामी शेन ही था। अधिकारियों ने शेन की ओर से वह जमीन श्वुंज्या के कई किसानों को पट्टे पर उस समय के घटे हुए प्रमाणित लगान के अनुसार दे दी थी। लगान जब वसूल हो जाते तो उसे भेज दिये जाते थे। शेन के पास शेंज्या में भी २८ एकड़ भूमि थी लेकिन उसने पट्टे केवल २० एकड़ के ही जारी किये थे।

"यहाँ जितनी मैं समझता था उससे कहीं कम जमीन है," वेय ने जो एक प्रतिनिधि था कहा।

"शु'ज्या में मेरी अब भी ७ एकड़ जमीन है। आप लोग इस गाँव के लोगों के हितों की रक्षा करते हैं—मुझे वह वापस क्यों नहीं दिला देते?" शेन ने अपनी आयदाद की मात्रा से उनका ध्यान हटाते हुए सुझाव दिया। "यहाँ हमारे लिए जमीन कम पड़ रही है और उनके पास इतनी सारी जमीन है कि उसका इस्तेमाल भी नहीं कर सकते!"

वेय कुछ ढुलमुल वृत्ति का आदमी था। ज़रा-सा पानी चढ़ाने की देर थी कि जी-जान से शेन के समर्थन पर तुल पड़ा और उसने अपने साथी प्रतिनिधियों से ज़ोर-शोर से सिफारिश की कि वह ७ एकड़ भूमि शेंज्या के शासन अधिकारियों को वापस दिलवा दी जाय। दूसरे प्रतिनिधियों ने झट उसका सुझाव स्वीकार कर लिया और मे के सामने उसे रख दिया।

"और यदि श्वु ज़ा में उन लोगों के पास काफी जमीन न हुई तो?" मे ने पूछा।

"हूँ!" वी ने प्रत्युत्तर दिया। "उनके पास तो इतनी है कि वे जोत भी नहीं सकते।"

"उनके पास जमीन कम न होगी तब भी वे तो यही कहेंगे कि कम है!" एक और प्रतिनिधि ने वे का अनुमोदन करते हुए कहा। "जब मिल रही है तो कौन ज्यादा जमीन न लेगा?"

"अगर उनके पास पर्याप्त भूमि नहीं है तो वे जानें!" तीसरे ने कहा। "यह हमारा काम तो नहीं है।"

"हमारे खुद के पास कम जमीन है, फिर हम उन्हें अपनी जमीन क्यों जोतने दें?" एक ८० वर्षीय वृद्ध प्रतिनिधि ने जिसको 'दादा' कहते थे, कहा।

"जब लोग भूखों मरते हैं तो उन्हें कोई आटा लाकर तो नहीं दे देता।" एक नवयुवक ने कहा।

यही शास्त्रार्थ चलता रहा यहाँ तक कि मे के कान पक गये। हालाँकि स्थिति का उसे भी पूरा ज्ञान न था फिर भी वह विचार उसे समुचित लगा।

उसने सोचा हम इस काम को आसानी से कर लेंगे क्योंकि दा-श्वी शुंज्या में ही है। ज्योंही दा-श्वी की प्रतिमा उसके मस्तिष्क में आई वह गर्मजोशी से भर गई।

मे ने प्रतिनिधियों से कहा कि वह इस मामले में और पूछताछ करके दो-एक दिन में उन्हें बता देगी। जब सब चले गये तो उसने अपनी नोट-बुक में से एक पन्ना फाड़ा और फूलदार ब्रश निकाल कर बड़ी मेहनत से यह खत लिखा।

कामरेड दा-श्वी,

क्या आप आजकल बहुत व्यस्त हैं? आप अच्छी तरह से हैं? क्या आपका काम सन्तोषप्रद ढंग से हो रहा है? मुझे विश्वास है कि आपका काम अवश्य सफल होगा! आप अपनी ट्रेनिंग और अनुभव के बारे में मुझे लिखकर मेरी सहायता कीजिए और मुझे शिक्षित बनाइए। मैं आपको यह पत्र आज इसलिए लिख रही हूँ क्योंकि मुझे एक प्रश्न पर आप से बहस करनी है। और वह यह है कि यहाँ हमारे पास गाँव में ज़मीन की कमी है और किसान-सभा के प्रतिनिधि चाहते हैं कि वह जो ७ एकड़ जमीन पहले शुंज्या वालों को दे दी गई थी अब वापस ले ली जाय। हमें वास्तव में जमीन कम पड़ रही है। कृपया आप इस मामले पर सोच-विचार करके मुझे लिखें। आशा है आप मुझे सहमति का पत्र ही लिखेंगे! मेरा काम सन्तोषजनक है और मैं अच्छी तरह हूँ, मेरी ओर से निश्चिन्त रहें! अधिक क्या लिखूँ? आशा है आपसे शीघ्र ही मुलाक़ात होगी।

मैं आपको सलाम करती हूँ और कामना करती हूँ कि आप अपने कर्त्तव्यों में सफल हों।

मे ने अपने पूरे हस्ताक्षर किये, पत्र को स्वयं दुबारा पढ़ा और फिर अपने हस्ताक्षर के नीचे अण्डाकार मुहर लगादी। उसने एक लिफाफे पर पता लिखा और उसमें अपना पत्र रखकर एक किसान को श्वुंज्या पहुँचाने के लिए दिया।

जब दा-श्वी को पत्र मिला तो उसे खोलने के पहले ही वह मे का लेखन

पहचान गया और उसके हृदय में गुदगुदी होने लगी। उसने पत्र दो बार पढ़ा, फिर अपना काले रंग का ब्रश लेकर उत्तर लिने बैठा :

कामरेड मे,

तुम्हारा पत्र मिला, पढ़कर ज्ञात हुआ कि तुम्हारा कार्य संतोष-जनक है और तुम्हारा स्वास्थ्य भी अच्छा है। इस समाचार से मुझे परम हर्ष हुआ। जहाँ तक मेरे तुम्हें पढ़ाने का सम्बन्ध है तो भई उसके लिए मैं तुमसे क्षमा चाहता हूँ क्योंकि रोज़ाना मैं तुमसे मिलने तुम्हारे गाँव आने का इरादा करता हूँ लेकिन व्यस्तता के कारण आ नहीं पाता। शायद यह इसलिए हो कि मैं दैनिक कार्यक्रम में बहुत अधिक गुँथा रहता हूँ और मुझे इस पर शर्म भी आती है। भविष्य में हमें चाहिए कि हम अधिकाधिक मिलते रहें और पढ़ाई, काम, संस्कृति और राजनीति के समझने में एक दूसरे की सहायता करें। यही मेरी हार्दिक अभिलाषा है। तुमने जो प्रश्न उठाया है उसके बारे में मैं कुछ भी नहीं जानता बेहतर यह होगा कि तुम सब लोग यहाँ आ जाओ और आमने-सामने उस पर हम बात करलें। शीघ्र ही आओ! निश्चित रूप से आओ! मुझे अभी तुम से बहुत-सी बातें करनी हैं।

तुम्हारे स्वास्थ्य और कार्य के लिये मेरी हार्दिक मनोकामनाएँ हैं।

दा-श्वी ने भी अपने पूरे दस्तखत किये और उनके नीचे सावधानी से अपनी औपचारिक वर्गाकार मुहर लगा दी। पत्र उसने उसी वाहक को दे दिया जो मे का पत्र लेकर आया था।

जिस दिन दा-श्वी का पत्र पहुँचा उसके दूसरे दिन सुबह मे बड़ी प्रमुदित व पुलकित हो किसान प्रतिनिधियों को साथ लेकर शुंज्या के लिए रवाना हुई। दादा जो बहुत खुश था अभी तक उन सात एकड़ों के बारे में ही सोच रहा था। अपनी लकड़ी टेकते हुए वह भी उन प्रतिनिधियों के साथ चला।

× × × ×

जब प्रतिनिधि वहाँ पहुँचे तो दा-श्वी और शु ज्या के प्रतिनिधि अपनी भूमि-समस्या पर तर्क-वितर्क कर रहे थे। दो गाँवों के काडरों और किसान प्रतिनिधियों ने एक-दूसरे को सविनय अभिवादन किया। आम मैत्रीपूर्ण बातचीत के बाद शेंज्या वालों ने ७ एकड़ का सवाल उठाया। माँग सुनते ही मेज़बानों ने क्षण भर के लिए सीधे अपने सामने देखा और फिर दा-श्वी से कुछ खुसर-पुसर के सलाह मशविरे के लिए उसे अलग कमरे में बुलाया। कुछ मिनट बाद शु ज्या के प्रतिनिधि कुछ असमंजस-भरी आकृतियाँ लिये बाहर निकले। उन्होंने दा-श्वी को बोलने की इजाज़त दी।

"अरे अरे, कामरेड मे!" उसने हँस कर कहा। "अफसोस है, हम आपके मसले के बारे में अधिक कुछ नहीं कर सकते। क्या आपके पास शेंज्या में काफी जमीन नहीं है? ७ एकड़ ज़मीन आप क्यों लेना चाहती हैं?"

पहले तो मे अकड़ गई फिर वह भी मजबूरन हँस पड़ी। "यह आप कैसी बातें करते हैं?" आपको तो मालूम है हमारे पास जुताई योग्य ज़मीन बहुत कम है।"

"क्यों, वह काफी नहीं है?"

"अगर काफी होती तो क्या आप समझते हैं हम और माँगने यहाँ चले आते?"

ज्यों-ज्यों मे और दा-श्वी बोलते गये उनकी मुस्कान धीरे-धीरे गायब होती गई। सुनते-सुनते दोनों गाँवों के प्रतिनिधियों को क्रोध आने लगा और जब उन का धैर्य समाप्त हो गया तो वे भी झगड़े में कूद पड़े।

"कुछ भी हो जमीन शेंज्या की है और हमें वापस मिलनी चाहिए।"

"वह शु ज्या वालों के सुपुर्द करदी गई है। हमारा इस पर पहला अधिकार है।"

"हम जमीन युद्ध छिड़ने के पहले से जोतते आ रहे हैं इसलिए तरजीही हक़ हमारा ही है!"

"१९३८ के लगान-घटती कानून तक कोई 'तरजीह' नहीं थी और यह जमीन हमें उसी समय दी गई थी!"

"हम शेंज्या के किसानों के हितों का प्रतिनिधित्व करते हैं। यदि आप वैसा रुख इख्तियार करेंगे तो हम उन्हें जाकर क्या जवाब देंगे ?"

"और शेंज्या की जनता के प्रति हमारे जो कर्त्तव्य हैं, उनका क्या होगा ?"

प्रतिनिधि आपस में झगड़ने लगे और मे तथा दा-श्वी एक-दूसरे पर चिल्लाते रहे।

"इसमें बहस की कोई बात ही नहीं है !" "दा-श्वी चिंघाड़ा। "बात बिल्कुल साफ है !"

"मैं तुमसे बात करना नहीं चाहती," मे क्रोधित हो चीखी। "तुम तो बस अपने गाँव की तरफदारी करते हो और हमें कुछ नहीं समझते !"

"कोई तुम नेता हो ! जनता की दुम ही तो हो !"

"हूँ ! और तुम तो जनता की दुम का भी सिरा ही हो !"

एक काडर दूसरे का विरोध कर रहा था, एक प्रतिनिधि दूसरे के विरुद्ध था। ह्वीक का चेहरा लाल था, गले की नसें उभड़ी हुई थीं और किसान कानों के पर्दे फाड़ने वाला अपना कोलाहल मचाये हुए थे। जरा देर में किसी की आवाज बैठ गई, कोई हाँपने लगा, दा-श्वी का सिर चकरा गया, मे के पेट में दर्द होने लगा और दादा एक कमरे में निर्बलता से बैठ गये। उन्हें साँस लेने में दुश्वारी हो रही थी और उनकी आँखें बाहर निकली पड़ रहीं थीं।

जब गड़बड़ अपनी पराकाष्ठा को पहुँच चुकी थी तो सहसा कल्लू त्से काउण्टी सरकार से अपने सामयिक दौरे पर आ पहुँचा।

"यह अच्छा हुआ !" प्रतिस्पर्धियों ने कहा। "अब कल्लू आ गये हैं हम उनसे फैसला करवाये लेते हैं !"

दा-श्वी ने अपने पक्ष की बात सुनाई; मे ने अपनी वकालात की; शेंज्या के प्रतिनिधियों ने अपनी स्थिति समझाई; शुंज्या वालों ने अपने मामले की सफाई पेश की। अगर कोई उनकी दलीलें सुनता तो उसे यह समझने में जरा झिझक न होती कि वे सही बात कह रहे हैं। लेकिन जब सब अपनी पैरवी कर चुके तो कल्लू ने एक जोरदार ठहाका मारकर उन सबको चौंका दिया।

उसने उन सबको बैठा दिया और जरा आराम करने को कहा। फिर उसने उनसे सवाल पूछने शुरू किये।

"शेन ने जो 'पिछले लगान' वसूल कर लिये थे, तुमने वापस ले लिये या नहीं?"

"वह······अरे····· वह तो अभी नहीं लिये," मे के गिरोह ने रुक-रुक कर कहा।

"हमें समय ही नहीं मिला," शेंज्या के प्रतिनिधि बुदबुदाये। "हम तो अपनी मुर्गियों के परों और प्याज के छिलके जैसे हल्के-फुल्के मामलों में बहुत ही व्यस्त रहे।"

"आप लोगों ने क्या यह जाँच कर ली कि शेन ने कुछ जमीन छिपाई तो नहीं?"

किसान एक-दूसरे की ओर देखने लगे। "अरे बाप रे······कौन जाने छिपाई हो तो?"

कल्लू मुस्करा दिया। "तुम लोग जमीन को लेकर झगड़ रहे हो और तुम्हें यह भी मालूम नहीं कि वह है कितनी? तो फिर झगड़ किसलिए रहे हो?" उसे उनके झेंपू हाव-भावों पर बरबस हँसी आगई और उसने अपने सवाल जारी रखे। "तुम किसान जमींदारों से निपटना चाहते हो या किसान-किसान आपस में लड़ना चाहते हो?"

प्रतिनिधि तो बड़े सिटपिटाये। "जाहिर है, यही तो नुक्ता है!" उनमें से एक बड़बड़ाया, "और हम भूल ही गये!"

दादा ने अपनी लकड़ी फर्श पर ठोकी। "अरे, शेन के पास अभी बहुत जमीन है! अगर तलाश करें तो हमें मालूम हो जायगा!"

"वह टुकड़े-टुकड़े करके उसे लोगों को पट्टे पर दे रहा है ताकि हमारे लिए मालूम करना मुश्किल हो जाय।" एक प्रतिनिधि चिल्लाया।

"हूँ!" दूसरे ने अपने हाथ पर मुक्का मारते हुए कहा। "गोश्त ज़बान के आगे रखा है और हम अपनी ज़बान चबा रहे हैं।"

प्रतिनिधि उठ खड़ा हुआ। "हमें बेवकूफ बनाया गया है। उसकी मा

का—। यह सब मेरी ग़लती है। मैं ही शेन की बातों में आ गया और यह एकड़ का किस्सा छेड़ बैठा। साले ने मिल के दग़ा दी।"

"नहीं दोष मेरा ही है," मे ने शर्माते हुए कहा। "उस दिन उसके मकान पर मुझे चाहिए था मैं खाना खाने पर राज़ी न होती। उसने अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों से हम सबको मोह लिया था।"

किसानों ने बैठकर हिसाब लगाया—शेन के पास कम-से-कम ३५ एकड़ जमीन थी; वह निश्चित रूप से कई एकड़ जमीन छिपा रहा था और उन्हें गुप्त रूप से पट्टे पर देने का विचार कर रहा था। अगर उस पर दबाव डाला जाय और बाकी जमीन कानूनी पट्टे पर शँज्या के उन किसानों को दिलवा दी जाय जिन्हें उसकी सख्त जरूरत है तो फिर कोई कमी रहती ही नहीं। अगर उसे मजबूर करके वह अनाज जो उसने 'पिछले लगान' की एवज़ किसानों से लिया था, उन्हीं किसानों को लौटा दिया जाय तो कोई भूखों न मरेगा।

अब जो वे सुलझकर बातें करने लगे तो प्रत्येक के चेहरे पर फिर मुस्कान नाच गई। दोनों गाँवों के प्रतिनिधियों ने अपनी-अपनी उजबुता के लिए क्षमा माँगी; मे और दा-श्वी दोनों ने पश्चाताप करते हुए यह स्वीकार किया कि वे अपना वर्ग-अस्तित्व भूल गये थे। कल्लू ने उन्हें वक्र दृष्टि से देखा और खिलखिला पड़ा।

"बस, बस!" प्रतिनिधि चिल्लाया! हम सब एक ही परिवार के सदस्य हैं—इतने तकल्लुफ की क्या जरूरत है। आओ सब साथ चलें।"

"बहुत अच्छे। तुम दोनों भी साथ-साथ जाओ। जितने ज्यादा लोग होंगे उतनी ही हमारी शक्ति बढ़ेगी," कल्लू ने मे और दा-श्वी से कहा लेकिन उसने सबों को यह जता दिया। "देखो, यह न भूल जाना—एक तरफ तो हम जमींदारों के खिलाफ 'संघर्ष कर रहे हैं पर दूसरी तरफ उनका सहयोग भी चाहते हैं। उस संघर्ष के बिना, लोगों की जीविका को बेहतर बनाये बिना हम जापानियों को किसी नक्शे पर नहीं हरा सकते। सहयोग व संयुक्त मोर्चे के बगैर हम अतिरिक्त शक्ति जिसकी हमें आवश्यकता है नहीं जुटा सकते। चेयरमेन माओ ने कहा है कि हमें संघर्ष करना चाहिए। ताकि हममें एकता पैदा हो और एकजूट होकर हमें

जापानियों का मुकाबिला करना चाहिए। हम दक्षिणपंथी नहीं बनना चाहते पर साथ ही अत्यधिक वामपक्षी होना भी नहीं चाहते। हरेक को ये सिद्धान्त दिमाग में रखने चाहिएँ।

"ठीक है ठीक है।" किसानों ने उत्तर दिया। "हम शेन से माकूल बर्ताव करेंगे।" वे बड़े प्रफुल्लित व प्रमुदित एक साथ निकल पड़े, दा-श्वी और मे उनके साथ थे और दादा अपनी लकड़ी टेकते हुए पीछे आ रहे थे।

× × × ×

जब लोग शेंज्या को वापस जारहे थे तो वातावरण बड़ा ही मैत्रीपूर्ण और सुखद था। दा-श्वी और मे साथ-साथ चल रहे थे।

"कल्लू बड़े अच्छे वक्त पर आगया!" दा-श्वी बोला। "अगर वह अपने दौरे पर न आता तो कौन जाने हमारा झगड़ा कहाँ खतम होता?"

मे हँस दी। "और तुमने तो वाकई हद कर दी थी—सीधे मेरी नाक पर उँगली किये जारहे थे और गालियाँ दे रहे थे। और मैंने भी कोई कसर नहीं छोड़ी—जो कुछ तुम कहते मैं उससे भी बढ़कर तुम्हें कह रही थी!"

"मैंने अपनी कमर में एक आईना लगा रखा था उसमें दूसरे का चेहरा तो दीखता था पर मुझे अपना न दीखता था! मैं भी असल में तुम पर पागलों की तरह ही भौंक रहा था!"

"और मैं भी आपे से बाहर थी! मैं सोच रही थी कि यह शख्स इतना नामाकूल कैसे बना जा रहा है? गुस्सा इसका ऐसा है जैसे बैल का! आज से मेरी इसकी निभ चुकी!"

"तुम ऐसा चाहती तो नहीं थीं ना?"

"यह भी कोई पूछने की बात है?" मे ने जवाब दिया, उसका चेहरा सुर्ख हो गया था।

हरेक जानता था कि उनकी शीघ्र ही शादी होने वाली है और इसलिए कंधे से कंधा मिलाकर चलने में उन्हें डर था कहीं चिढ़ाया न जाय। वे

असमंजस में पड़ गये और फिर अलग होकर किसान प्रतिनिधियों में जा मिले।

"वह कल्लू बड़ा सुलझा हुआ आदमी है!" दादा कह रहे थे। "हम कितने उलझ गये थे पर उसने पहले ने दो-तीन शब्दों में सारा झगड़ा निपटा कर रख दिया।"

"अगर कम्युनिस्ट पार्टी और चेयरमेन माओ की अगुआई न होती तो," प्रतिनिधि वी ने उत्साहित होकर कहा, "हम अब तक उसी जगह पर जमे हुए होते!"

कोई चेयरमेन माओ का गीत गाने लगा और ऊँची, नीची और तीखी आवाज़ें मार्चिंग की ताल के साथ गूँजने लगीं।

पूर्वी आकाश लाल हो जाता है
जब सूरज ऊपर चढ़ता है,
और चीन में पैदा होते हैं
माओ त्से-तुंग!………

: १६ :

प्रेम और घृणा——वसन्त और ग्रीष्म, १६४४

तगान-घटती कार्यक्रम पूरी तरह सफल हुआ और लोगों को मालूम होने के पहले ही मौसमे बाहर आ गया। चूँकि दा-श्वी और मे दोनों कम्युनिस्ट थे इसलिए कल्लू ने उनके प्रस्तावित विवाह का प्रश्न काउण्टी पार्टी कमेटी में उठाया। न सिर्फ यह कि प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत हो गया, बल्कि साथियों ने कहा कि उन दोनों को बहुत पहले शादी कर लेनी चाहिए थी।

अब दा-श्वी अपने जिले का पार्टी सेक्रेटरी हो गया था और मे काउण्टी स्त्री-संस्था में काम कर रही थी। उन्होंने ८ मार्च जो स्त्री-दिवस था अपने शुभ विवाह

के लिए चुना और जिले तथा काउण्टी के पार्टी संगठनों ने उन्हें तैयारियाँ करने के के लिए कुछ पैसे भी दिये।

आखिरकार वह शुभ दिन आ ही गया। केवल विभिन्न सरकारों के सदस्यों को ही निमन्त्रित किया गया था क्योंकि उन्हें भय था कि यदि किसानों को खबर हो गई तो वे उपहारादि खरीदने में पैसे खर्च कर देंगे। संस्कार दा-श्वी के घर में जो कि जिले का दफ्तर भी था, होने वाला था। सभी ने सवेरे तैयारियों में बड़ी जल्दी-जल्दी हाथ बटाया। जब मे और उसके साथी काउण्टी से वहाँ पहुँचे तो खुर और देश-रक्षक सैनिक झाड़ने-पोंछने में ही लगे हुए थे। कमर में एक कपड़ा लपेटे जिले का नेता ज्योव स्वयं भोजन तैयार कर रहा था।

"क्या 'नया कमरा' तैयार है?" तियेन ने उत्तेजित हो पूछा।

"यह यहाँ है वह!" निउर ने पश्चिमी विंग में से आवाज देते हुए कहा।

नवागंतुक झटपट अन्दर घुस आये और क्या देखते हैं कि जिले की स्त्री-संस्था की तीन लड़कियाँ हँसी-खुशी दुल्हन का कमरा सजाने में लगी हुई हैं। नया कागज खिड़कियों पर रखा हुआ था और कटी हुई लाल डिज़ाइन कागज पर चिपकी हुई थीं। काँग सफेद चादर और लाल लिहाफ से ढँका हुआ था—पार्टी जिलों और काउण्टी कमेटियों से आये हुए तोहफे उस पर रखे हुए थे। निउर मेज पर खड़ी काँग के सामने वाली दीवार पर एक तस्वीर टाँग रही थी। वह पानी के रंगों से बने हुए दो कमल के फूलों का चित्र था जिसके आस-पास हरे पत्ते बने हुए थे।

जब मे दाखिल हुई तो निउर ने झट मेज हटा दी और उससे हाथ मिलाया। "हाँ तो, दुल्हन," उसने हँस कर कहा, "हमने जिस तरह तुम्हारा 'नया कमरा' सजाया है उस पर तुम्हें कोई नुक्ताचीनी तो नहीं करनी है?"

मे की झेंप और फूलों का रंग मिल गया। "तुम्हारी भी तो जल्दी ही शादी होने वाली है और तुम अब तक इतनी शरीर हो।" उसने सख्ती से कहा।

तियेन ने जो तकिये काढ़े थे उन्हें काँग पर रख दिया। अन्य काडरों ने भी अपने उपहार—रूमाल, साबुन, दाँत के ब्रश, दन्तमंजन, नोट बुकें आदि

वहीं रख दीं......डीन चैंग आ न सके पर उन्होंने बधाईस्वरूप दो कागज के मुट्ठे भेजे जिन्हें चित्र के दोनों ओर लटका दिया गया। लाल कागज पर काली स्याही से लिखे हुए अक्षर बड़े चमक रहे थे और उनके द्वारा अभिव्यंजित भाव ऐसे आधुनिक थे कि जैसे साहित्यिक शैली :

नये इन्सान पुरानी व्यवस्था को उलट देते हैं,
और पुराने साथी नया जोड़ा बन जाते हैं।

ऐसे ही और भी कई पुर्जे थे जिनका विषय विवाह और क्रान्ति था। कुछ और गम्भीर थे कुछ मनोरंजनात्मक लेकिन सबके सब बड़े कोलाहल और हा-हू के साथ लिये गये और दीवारों पर उचित स्थानों पर लटका दिये गये।

× × × ×

मण्डली उत्तरोत्तर अमोद-प्रमोद में डूबती जा रही थी और किसानों के बड़े खुले हुए मज़ाकों का दौर-दौरा था। कल्लू पहला व्यक्ति था जिसने यह महसूस किया कि विवाह के अवसर पर होने वाली परम्परागत रसिकता वहाँ मौजूद न थी।

"अरे, अपना दा-श्वी कहाँ है ?"

"मैं ढूँढ कर लाती हूँ उसे !" निउर ने कहा और वह कमरों में उसे तलाश करने लगी।

दा-श्वी पूर्वी विंग में छिपा हुआ था और उसका सिर चकरा रहा था। जब उसने सुना कि मे आ पहुँची है तो उसका हृदय ज़ोर-जोर से धड़कने लगा और चेहरा जलने लगा। वह जानता था कि यदि उसे उस हालत में देख लिया तो उसकी हँसी बनेगी इसलिए वह एक कॉंग पर लेट गया और उदासीन भाव-भंगिमा लिये अखबार पढ़ने लगा। पर अखबार का एक शब्द भी वह न पहचान सका! निउर उसे ढूँढते-ढूँढते वहाँ आ पहुँची और हँसकर तालियाँ बजाने लगी।

"चलो, जरा सब आकर तो देखो!" उसने उन्हें बुलाया। "दूल्हा यहाँ बैठा

अखबार पढ़ रहा है ।"

अखबार उससे छीनकर अलग करते हुए निउर ने उसे फाँग से घसीटा। काडर खुशी में जोर-जोर से हँसने लगे और सबने आकर सुर्ख चेहरे वाले दा-श्वी को घेर लिया। उसके चेहरे पर एक असमंजसपूर्ण हँसी आ गई।

हाल के अन्दर तीन वर्गाकार मेजें एक साथ रखी गई थीं। भाप छोड़ती हुई मिठाइयों और पकवानों की रकाबियाँ आई और सब खाने के लिए बैठे। जिले और काउण्टी के काडरों ने अपने ओहदों का ख्याल किये बिना ही वेटरों का काम किया। गोश्त, मछली, तरकारियाँ और चावल परोसे गये। खाना स्वादु था और मेहमानों ने धाप कर खाया। मेज़बान होने के नाते दा-श्वी खाने में *कुछ तकल्लुफ कर रहा था लेकिन काडरों ने उसे ऐसा न करने दिया।*

"पेट भर कर नहीं खाओगे तो हम शादी न होने देंगे तुम्हारी!" उन्होंने उसे सावधान किया।

हालाँकि किसानों को सूचित नहीं किया गया था फिर भी रात होने तक उन्हें खबर हो ही गई; पड़ौस के सभी गाँवों से वे दूल्हा-दुल्हन को बधाई देने आये। सैंकड़ों की संख्या में मेहमानों व दर्शकों के लिए मकान बहुत छोटा था इसलिए मेहमान बाहरी आँगन में आ-आकर एकत्र हो गये। स्वागत-कक्ष में रू और उसके हमउम्र दोस्तों ने लाल रेशम की लालटैनें टाँग दी थीं। उन लालटैनों के गुलाबी प्रकाश में मित्र और शुभचिंतक मे और दा-श्वी से, जो चेयरमेन माओ और जनरल चू तेह के चित्रों के नीचे बैठे हुए थे, हँसी-खुशी बातें कर रहे थे। ग्रामोफोन बज रहा था पर उसमें से निकलते हुए आनन्दप्रद गीतों की ध्वनि आनन्दमग्न लोगों के ठहाकों में प्रायः डूब जाती थी।

निउर ने दुल्हन व दूल्हा को कागज के दो बड़े गुलदाउदी के फूल भेंट किये जिन्हें उसने आप ही बनाया था और उन दोनों के कोटों पर पिन से लगा दिया। वह दम्पति को खींचकर कमरे के केन्द्र में लाई और उसने उन दोनों को एक बेंच पर साथ-साथ बिठा दिया। कुदाक मा ने लाकर मेज पर मटर के ढेर लगा दिये और मेहमानों के लिए एक बड़ी भारी केतली में से चाय उँडेली गई।

विवाह-संस्कार बस आरम्भ होने ही वाला था।

पहले तो संस्कार कराने वाले के आदेश पर हरेक खड़ा हो गया और चेयरमैन माओ और जनरल चू तेह के सामने झुका। फिर मे और दा-श्वी आगे आये और उन्होंने भी जनता के इन महान् नेताओं को अभिवादन किया और फिर एकत्रित मेहमानों को झुककर सलाम किया।

"दुल्हन और दूल्हा," संस्कार कराने वाले ने पुकारा, "एक-दूसरे को झुककर सलाम करो!"

लोहे की छड़ी की नाईं सीधा खड़ा होकर दा-श्वी ने अपनी दुल्हन के सामने झुकना चाहा परन्तु जब मे ने उसके गम्भीर चेहरे और रस्मी व्यवहार को देखा तो वह अपने को रोक न सकी, वह खिलखिला उठी और भागी।

"यह नहीं चलेगा!" मेहमानों ने हँस कर कहा। "तुम्हें उसे बहुत झुककर सलाम करना होगा!"

स्त्रियों ने मे को खींचकर फिर उसी स्थान पर ला खड़ा किया। वहाँ उसने जल्दी से झुककर अभिवादन किया और दा-श्वी ने भी बड़े भद्देपन से उसका उत्तर दिया।

प्रत्येक अपनी-अपनी जगह बैठ गया और गवाहों को संक्षिप्त भाषण देने के लिए बुलाया गया। कल्लू गवाह भी था और 'परिचायक' भी। मुस्कराते हुए वह उठा और अपनी चमकदार आँखों से उसने मेहमानों का जायज़ा लिया।

"साथियो, आज जो कामरेड दा-श्वी और कामरेड मे का विवाह हो रहा है उसके लिए ये दोनों साथी हमारी बधाई के पात्र हैं। उन्होंने एक साथ मिल कर क्रान्ति में हिस्सा लिया है और उसके क्रूर संघर्षों में तपकर वे बड़े उम्दा क्रान्तिकारी योद्धा बनकर निकले हैं। मैं उनके इस विवाह पर कितना प्रसन्न हूँ यह कह नहीं सकता! प्राचीन समाज में वे स्वतन्त्रता के साथ विवाह नहीं कर सकते थे और यदि कर भी लेते तो उनको सुख-समृद्धि न मिल पाती। आज जापान-विरोधी जनवादी सरकार के अन्तर्गत युद्ध के ये दो पुराने साथी एक नवीन दम्पति में परिणत हो रहे हैं। इसमें ज़रा शक नहीं कि उनका जीवन अब परिपूर्ण और सफल होगा। किन्तु शत्रु अभी तक पूर्ण रूप से परास्त नहीं हुआ है। अभी बहुत-से दुष्कर संघर्ष आने वाले हैं। मुझे आशा है कि

कम्युनिस्ट पार्टी की सहायता से वे मिलकर परिश्रम करेंगे, एक-दूसरे की नुक्ता-चीनी करेंगे और निरन्तर प्रगति करते रहेंगे। संक्षेप में—," कल्लू ने सीधे दम्पत्ति की ओर मजाक में आँख मारकर कहा, "उम्मीद है कि अगले साल उनके एक मोटा-ताज़ा बच्चा होगा जो क्रान्ति की आने वाली पीढ़ी की पाँतों में आ मिलेगा।"

अतिथियों की करतल-ध्वनि के साथ भाषण समाप्त हुआ और कल्लू बैठ गया।

अगला भाषण बूढ़े चाचा ली का था जो शेंज्या में 'दुर्ग' के स्वामी थे। उन्होंने मुस्कराते हुए दो लाल कागज में लिपटी हुई पुड़ियें मेज पर रख दीं। सिर से अपनी टोपी उतारी तो उनकी गंजी चाँद चमकने लगी और उन्होंने दूल्हा-दुल्हन को पुरानी वजह का सलाम किया।

"दा-श्वी और मे के विवाह से प्रत्येक किसान को हार्दिक प्रसन्नता हुई है!" चाचा ली ने जोर से कहा। "हम सब की इच्छा थी कि हम हस्तक्षेप करें और कुछ बढ़िया चीज खरीदें लेकिन अधिकारियों ने हमारी एक न सुनी। इसलिए हमने ये दो उपहार सिर्फ हमारी सद्भावना के प्रतीकस्वरूप भेज दिये।

चाचा ली ने लाल कागज की एक पर्ची निकाली और स्पष्ट ढंग से उस पर लिखे हुए अक्षर पढ़कर सुनाये: "जापानियों को शीघ्रातिशीघ्र परास्त कर दो ताकि हम जल्दी ही शान्ति प्राप्त कर सकें—यह तो पहली पुड़िया है जिसमें खजूरें हैं! दूसरी में लिखा है मे और दा-श्वी का बड़ा उपयुक्त जोड़ा है और वे एक हृदय से विजय-प्राप्ति के लिए कार्य करते हैं।—हा! हा!—ये नाशपातियाँ हैं!"

मेहमान खिलखिलाये और प्रशंसा-भाव से तालियाँ बजाने लगे।

फिर संस्कार करने वाला सामने आया। "दूल्हा-दुल्हन—अब वर्णन करो कि तुमने किस प्रकार प्रेम किया!"

जोर के ठहाकों, तालियों और पैरों के जमीन पर धड़धड़ाने की ध्वनि के साथ मेहमानों ने जोश व खरोश से इस सुझाव का समर्थन किया। दा-श्वी को खींचकर कमरे के केन्द्र में लाया गया। वह एक नई फौजी कैप और नई सफेद वर्दी पहने हुए था। उसका चेहरा उस समय उसके सीने पर लगे गुल दाउदी के फूल के रंग से भी अधिक लाल था।

"मैं क्या कह सकता हूँ ?" उसने हँसकर पूछा। "प्रेम तो हमने किया ही नहीं।"

"सच-सच बताओ !" भीड़ ने चिल्लाकर कहा। "तुम्हें बताना ही पड़ेगा।"

"वास्तव में हमने प्रेम नहीं किया, मानिये !" दा-श्वी ने ज़ोर देकर कहा।

"सुनाओ, सुनाओ," कोई चिल्लाया। "क्या तुमने कभी चुम्बन लिया ?"

"वाह क्या कहने हैं आपके सवाल के ! हमने तो वर्षों भाई-बहन की तरह काम किया है। चुम्बन की तो बात ही दरकिनार हमने कभी हाथ तक नहीं मिलाया।"

"कभी तुमने इरादा भी किया ?" रू ने कमरे के पीछे से पुकारकर कहा।

दा-श्वी मुस्कराया, फिर धैर्य के साथ बोला, "हाँ, मैंने इरादा तो जरूर किया था। मैं बहुत दिन से उससे प्रेम करता था।" उसने अपनी टोपी उतारी, झुका और भाग गया।

"अब मे की बारी है।" काडरों ने चुटकी ली।

शर्मीली लड़की को उसकी सहेलियों ने घसीटा। वह अपने रोजमर्रा के लबादे पर एक स्वच्छ नीली बण्डी पहने हुए थी और उसके वक्ष पर एक बड़ा लाल फूल लगा हुआ था। बड़े असमंजस में पड़ी थी वह, उसने अपना सिर झुका लिया और अपने बाल उँगलियों से मरोड़ने लगी। कई मिनट तक तो वह बोल ही न पाई।

"वह मुझसे प्रेम करते हैं......" उसने अन्त में मन्द स्वर में कहा। "न जाने मेरे दिल ने कितनी बार ये ही शब्द दोहराए होंगे।" और मे मिस-चेन की बाँहों में जा धँसी। "मैं और कुछ नहीं कह सकती।"

फिर वही खाँसी-खँखार और नाक का छिनकना शुरू हो गया कि इतने में संस्कार करने वाले ने अगली घोषणा की। "दूल्हा और दुल्हन—हाथ मिलाओ।"

दो लहरों की नाईं पुरुष काडरों ने दा-श्वी को और स्त्री काडरों ने मे

को कमरे के केन्द्र की ओर धकेला। जब दर्जनों हाथों ने मे और दा-श्वी के बाजू पकड़ कर दोनों की गरम हथेलियाँ पकड़ कर मिलाई तो मे ने अपना लाल चेहरा एक ओर को कर लिया।

मेहमान इस संस्कार पर खूब ज़ोर-ज़ोर से ठहाके मार-मार कर हँसे और हँसते-हँसते उन्होंने गुलाबी गालों वाले जोड़े को उठाकर शयनकक्ष में ले जा बैठाया। हँसी करते हुए और ठट्ठे मारते हुए काडरों ने दुल्हन का कमरा देखा और छत में लटकी हुई अष्टकोण की लाल लालटैन की सराहना की। धीरे-धीरे सारे मेहमान चले गये। आखिरी आदमी ने जाकर किवाड़ बन्द किये और चला गया।

× × × ×

दूल्हा और दुल्हन कमरे में अकेले थे। मे का सिर झुका हुआ था और लज्जापूर्ण मुस्कान होठों पर खेल रही थी, वह काँग की पट्टी पर बैठी हुई थी। दा-श्वी ने चुपचाप दरवाज़े की साँकल लगादी और लाचारी से उसकी ओर देखता रहा। वह भी अपने उन दो छिद्रनुमा नेत्रों से उसे तक रही थी और लालटैन के लाल प्रकाश में उसका चेहरा दमक रहा था।

"तुम थक गये होंगे," मे ने दबे स्वर में कहा। "कुछ विश्राम करलो।"

दा-श्वी काँग की बगल में रखी छोटी बेंच पर बैठ गया और आकृष्ट स्तुति भरे नेत्रों से उसे निहारने लगा।

"तुम मुझे ऐसे घूर कर क्यों तक रहे हो? क्या पहले मुझे नहीं देखा तुमने?" मे ने पूछा और शर्माकर जो वह बरबस मुस्कराई तो उसके गालों में गड्ढे पड़ गये।

"मैं वे दिन याद कर रहा था जब कई वर्ष पहले तुम अपनी बहन के यहाँ आया करती थीं।" उसने चिन्तन में लीन होकर कहा। "तुम तब भी बालों का जूड़ा ही बाँधा करती थीं। और अजनबी के सामने शर्म के मारे तुम सिर ऊपर को न करती थीं। बाद में जब हम लोग काडर-स्कूल में पढ़ते थे तब मुझे

याद है तुम अपने पहले भाषण के समय कैसी रोई थीं। हम दोनों तो असल में उस समय बुद्धू थे बुद्धू। और आज सोचते भी हैं तो उन बातों पर हँसी आती है।"

"हम उस ज़माने में बड़े उलझे हुए थे—अंगूरों की बेल की भाँति गुँथे गये थे! वह दिन याद है तुम्हें जब तुमने चोरी-छिपे सिगरेट पी थी?"

दोनों हँसने लगे। ज्यों-ज्यों वे अतीत का स्मरण करने लगे आपसी दुराव व अटपटापन लुप्त होता गया। लालटैन की लौ जलते-जलते नीची होती गई और कमरे में अँधेरा होता गया। कांग पर दा-श्वी मे को बगल में लेकर लेट गया। जब मे ने अपने नर्म हाथों से उसके शरीर के दाग़ सहलाये तो उसकी आँखों से गरम-गरम आँसू ढुलक कर दा-श्वी के कंधों पर पड़ने लगे।

"दा-श्वी," वह कोमल स्वर में फुसफुसाई, "जब उन्होंने तुम्हें यातनाएँ दीं और उस रात वे तुम्हें लेकर आये तो मैंने सोचा मैं ग़म में घुलकर मर जाऊँगी!" और यह कहते हुए उसने अपना चेहरा उसकी गर्दन में गड़ा दिया। तुम कितने बलशाली हो, कितने अच्छे हो! ऐसे जैसा विशुद्ध पिघला हुआ सोना!"

"तुमने और हमारे अन्य साथियों ने मुझ से कितना अच्छा व्यवहार किया था!—तुमने तो अपना सारा प्रेम और चिंता मुझ ही पर उँडेल दी थी," दा श्वी ने भावुकता-भरे स्वर में कहा। "यदि तुम मेरी इतनी देख-भाल न करतीं तो शायद मैं अब तक जीवित न रहता!"

"क्रांतिकारियों का तो एक ही बड़ा परिवार होता है—प्रत्येक उसमें एक दूसरे का नाती होता है।"

दा-श्वी को अपने पिता का ख्याल आया और उसकी आँखों से आँसू ढुलक आये। "आह! अगर दियेह आज होते और हमें पति-पत्नी बनते हुए देखते तो कितने खुश होते! काश, हम पहली मरतबा में ही सफल हो जाते जब तुम्हारी बहन हमारी शादी के बारे में बात करने आई थीं!"

"मैं तो तुमसे उस समय भी बहुत चाहती थी कि शादी हो जाय," मे ने मन्द स्वर में कहा, "लेकिन मेरे लिए कोई चारा ही न था!"

"और हमें एक-दूसरे से मिलाया भी तो इन्कलाब ने ही," दा श्वी बोला। और उसने बड़े स्नेह से उसका चुम्बन ले लिया।

लालटैन बुझ गई। एक-दूसरे के बाहुपाश में कसे हुए उस जोड़े के दिल भी एक हो गये। बड़ी देर तक कमरे में निस्तब्धता छाई रही जो यदि टूटी भी तो उनके निद्रापूर्ण, अनुराग-भरी भुनभुनाहट से टूटी और फिर छा गई।

× × × ×

जब मे और दा-श्वी के विवाह की खबर जिनलुंग के कानों तक पहुँची जो परकोटे वाले कस्बे में था तो उसने अपनी सारी घृणा अपने लँगोटिया साथी ग्वो के सामने उलट दी।

"मैं हमेशा से जानता था वह हरामी दा-श्वी कुछ-न कुछ जरूर करेगा!" वह आग बबूला हो गया। "इसकी बहन का—! मैं भी अगर इसकी अंतड़ियाँ निकाल के न रख दूँ तो कहना!"

"उसने तो तुम्हें कबका भड़वा बना दिया था!" ग्वो ने एक रूखी हँसी हँसते हुए कहा।

"अच्छा तो तुम देखना," जिनलुंग ने कुढ़कर कहा। "आज नहीं तो कल मैं उन दोनों को जान से मार डालूँगा!"

एक अनुचर ने आकर सूचना दी कि कमाण्डर ने जिनलुंग को इसी वक्त बुलाया है। कठपुतलियों ने एक कैथोलिक चर्च का कम्पाउण्ड हथिया लिया था और उस पर एक ऊँचा किला बना लिया था। हो किले के पीछे स्थित विदेशी ढंग की बनी हुई सुन्दर इमारत में रहता था; वहीं जाकर जिनलुंग उससे मिला।

कमाण्डर जरा दिल्लगी की मुद्रा में था। उसने कहा कि कुमिंतांग वालों ने उसे सूचना दी है कि 'हरावल दस्ते' संगठित किये जा रहे हैं ताकि वे 'डाकुओं के प्रदेश' में घुस सकें। उन्हें हिदायत की गई है कि वे हत्यारों की टोलियाँ संगठित करें जो 'खोये हुए प्रदेशों' को दुबारा लेने के लिए काडरों

की पहले से हत्या करें। हो के कठपुतली सैनिक यदि उसमें हिस्सा लें तो उन्हें पारिश्रमिक दिया जायगा। इसके अलावा जापानी जनरल कामेसाका ने इस कार्य के लिए लोगों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से बहुत बड़ी रकम पहले ही दे दी थी। हो ने जिनलुंग के सामने नोटों का बड़ा-सा बुक्कट रख दिया जो प्रारंभिक खर्चे के लिए था।

इस प्रकार के काम जिनलुंग को बड़े भाते थे। "अगर आप यह काम मेरे सुपुर्द करदें तो अनुचित न होगा!" उसने अपने नोटों भरे हाथ से सीना ठोकते हुएकहा। उसने हो से उस अभियान की रणनीति पर विचार-विनिमय किया फिर अपने कुछ आदमी लिये, साजो-सामान जमा किया और निकल पड़ा।

कुछ दिन बाद मे ने १०० से भी ऊपर जोड़े कपड़ों के जूतों के जमा किये जो किसान औरतों ने देश-रक्षक सेना के लिए बनाये थे। उसने जूतों के तीन बण्डल बनाये और उन्हें काउण्टी सरकार के दफ्तर में ले जाने लगी जहाँ उसे एक बैठक में शामिल होना था। अन्धकार फैलने लगा था और बण्डल भारी थे। दा-श्वी और एक दूसरे काडर वाँग ने उसकी सहायता करना चाही।

जब वे चले तो रात हो चुकी थी। चाँद का कहीं पता न था सिर्फ कुछ तारे टिमटिमा रहे थे; सड़क भी धुँधली ही दीख रही थी। वे बातें करते-करते चल रहे थे कि कोई पाँच मिनट बाद ही दा-श्वी ने अपना हाथ उठाकर उन्हें सावधान किया।

"शोर करते हुए न चलो! वह देखो उन कब्रों के टीले पर आदमी की परछाईं है या कुछ और?"

"कहाँ?" मे फुसफुसाई पर इसके पहले कि दा-श्वी उसे बताये दो गोलियाँ दनदनाती हुई आईं और उसकी बाँह को निर्जीव करके निकल गईं। मे लड़खड़ाई और चीख पड़ी।

"नीचे झुक जाओ!" दा-श्वी चिल्लाया। इतने में गोलियों की एक और बौछार उनके सिरों पर से गुजर गई और दा-श्वी वांग को खींचकर जमीन पर लेट गया।

"साले दोगले कहीं के!" वाँग ने गालियाँ दीं। "इनकी मा का—!

आओ इन कुतिया के पिल्लों को भुगत लें !"

उसने और दा-श्वी ने उसी ओर गोलियाँ चलाईं। गोलियों की आवाज सुनते ही गाँव से कई देश-रक्षक सैनिक दौड़कर आ गये। कब्रिस्तान के पीछे की आकृतियाँ अदृश्य हो गईं।

मे की आस्तीन खून से लथपथ थी पर उसके दाँत भिंचे हुए थे और वह कह रही थी कि घाव ऐसा खतरनाक नहीं है। दा-श्वी उसे सहारा दिये काडरों के साथ गाँव को लौट आया। वे फौरन ताड़ गये कि हो-न-हो यह छिपकर हमला करने का काम कठपुतली जासूसों का ही है।

मे स्थानीय हस्पताल भेजी गई जहाँ उसके घावों पर पट्टी बाँधी गई। सौभाग्य की बात कि हड्डी पर चोट न आई थी और वह जल्दी ही चंगी हो गई।

× × × ×

अभी अधिक दिन न हुए थे कि एक और घटना घटी। और यह सब हुआ स्योव की बदौलत जो अब जिले की देश-रक्षक सेना का सदस्य था और उसके पास सिगरेट खरीदने को पैसे न थे। उसने किसी किसान की मुर्गी चुराई और उसे बाजार में बेचने के लिए जा ही रहा था कि त्सुर ने उसे पकड़ लिया। वह लम्बा-चौड़ा सैनिक आग बबूला हो गया और उसने स्योव को झंझोड़ा। स्योव ने त्सुर के दबाव से मुर्गी वापस कर दी और उसके स्वामी से माफी माँगी।

स्योव भी उस अपमान पर जहर का घूँट पीकर रह गया। कुछ दिन बाद बीमारी का बहाना बनाकर वह घर चला गया। पैसा उगाने की उम्मीद थी ही सो उसने एक नाव माँगी और मछली मारने के लिए चला। उस दिन बड़ा घना कुहरा पड़ रहा था और जहाँ तक नजर जाती हर चीज सफेद और कुहरे से ढँकी दिखाई देती थी। स्योव ने जाल फैला दिया था और उसे नाव की ओर खींच ही रहा था कि उसे किसी के पुकारने की आवाज आई।

"हे स्योव हे ! यहाँ क्या कर रहे हो तुम ?"

उसने आस-पास देखा। एक छोटी नाव में सवार जिनलुंग नरकटों के

झुण्ड में से आ रहा था, उसके साथ एक और आदमी था जिसे स्योव न पहचानता था। उसकी तो जान निकल गई पर भागने की हिम्मत न हुई और उसने साहस बटोरा।

जिनलुंग की नाव समीपतर आती गई। कुछ देर तक इधर-उधर की गप्पें मारने के बाद कठपुतली ने उससे पूछा कि वह अपनी देश-रक्षक सेना के साथ क्यों नहीं गया, वहाँ बैठा मछलियाँ क्यों पकड़ रहा है? स्योव ने कारण बतला दिया।

"अगर तुम दिन भर भी मछलियाँ पकड़ते रहो तो कितनी पकड़ लोगे?" जिनलुंग ने हँसकर कहा। "अपना समय नष्ट न करो। यह लो कुछ डालर, जेब खर्च के लिए!" स्योव हिचकिचाया लेकिन जिनलुंग ने उसे उदारता से थपथपाया। "अपन भाई-भाई हैं 'अपना' 'पराया' की इसमें क्या बात—ले लो, ले लो!"

स्योव जानता था कि उसे वे किसी-न-किसी तरह अदा करने पड़ेंगे, पर बेचारा कहता ही क्या? उसने पैसे ले लिये। जिनलुग वहाँ से चला गया।

अगले तीन दिन तक स्योव को घर से निकलने की भी हिम्मत न हुई। तीसरे दिन शाम को जिनलुंग अकेला उसके घर आया। स्योव ने अनुभव किया कि यह भी उल्टा मामला है कि नेवला मुर्गी को सलाम करने आया है। वह बड़ा बेचैन हुआ पर क्या करता बिनबुलाये मेहमान की आवभगत तो करना ही पड़ी जिनलुंग ने जल्दी ही असल बात छेड़ दी। उसने कहा कि चा लू तो अब कुछ दिन का और मेहमान है और जापानी व कठपुतलियाँ गाँव को तहस-नहस करने आने वाले हैं और वे तमाम काडरों तथा जिले की देश-रक्षक सेना के एक-एक आदमी को मार डालेंगे और उसी पुरानी जगह पर फिर नया किला निर्माण करेंगे।

स्योव एक-एक शब्द समझ गया। "तो मैं क्या करूँ?" उसने दुखी होकर पूछा।

"तुम्हें घबराने की कोई ज़रूरत नहीं!" जिनलुंग ने मुस्कराकर जवाब दिया। "दूसरों में से तो कोई बचकर नहीं जायगा पर तुम पर कोई हाथ नहीं

उठायगा ! बस ज़रा मुझसे मिलते-जुलते रहो और मैं व्यक्तिगत रूप से गारण्टी करता हूँ कि तुम सुरक्षित रहोगे !"

उसने स्योव को अफीम की कुछ पुड़ियें दीं और चल दिया ।

अगले दिन रात को जिनलुंग फिर आया । "स्योव," उसने सहानुभूति से कहा, "मैं तुम्हारी यह ग़रीबी नहीं देख सकता ! आओ कुछ लोगों को तैयार करो और ज़रा मोटे पेट वालों को लूट लायें । अपने पास जो फालतू समय होगा उसमें हम दो-चार काडरों को मारकर उनकी बन्दूकें लेलेंगे । जापानी फिर हमें इनाम देंगे । क्या कहते हो ?"

"मैं—मैं ज़रा सोच लूँ," स्योव ने उत्तर दिया ।

जिनलुंग जाने के लिए खड़ा हुआ । "अगर मेरे दिल में तुम्हारे लिए जगह न होती तो मैं हरगिज यहाँ न आता, भैया । हमारे साथ काम करोगे तो तुम्हें ढेरों फायदे होंगे । लेकिन यह जताये देता हूँ कि अगर तुमने मुझे पकड़वा दिया तो समझ लो तुम्हारे परिवार का बीज मिटा दूँगा ।"

जिनलुंग के चले जाने के बाद स्योव घण्टों सोचता रहा और दिल में कुढ़ता रहा । वह ग़द्दार की सहायता करना नहीं चाहता था पर साथ ही उसका भाँडा फोड़ने में भी डरता था ।

"हाँ, तो कर लिया तय तुमने ?" जिनलुंग ने अगली मुलाकात पर पूछा ।

अब स्योव को चसका लग गया था; दूसरे उसे कोई हल नहीं मिल रहा था । "तुम अपनी टोली बनाओ मैं लाज़मी उसमें भर्ती होऊँगा ।"

लेकिन जिनलुंग ने भी कच्ची गोलियाँ नहीं खेली थीं । एक बार जिस काम में वह हाथ डाल देता था उसे पूरा करके ही दम लेता था । उसने स्योव को उसी वक्त रंगरूटों को घेरने का काम सौंप दिया । स्योव ने वचन दिया कि वह भरसक प्रयत्न करेगा ।

दो रोज़ बाद जिनलुंग फिर आया । उसने बहुत पी रखी थी और इस-लिए उसकी आँखें ऐसी लाल थीं मानो ज्वाला भड़क रही हो । "कितने आदमी पकड़ लिये ?" उसने पूछा ।

"सही किस्म का मुझे कोई मिला ही नहीं । वैसे लोगों पर मैंने हाथ नहीं

उठाया जो हमें नुक्सान पहुँचा सकते हैं।"

जिनलुंग ने रूक्षता से उसकी ओर ताका। "तुम निकम्मे हो! तुम्हें तो इन्सान भी नहीं कहा जा सकता! खैर कोई बात नहीं। अब कुछ तलाश करना। कल हम हमला कर देंगे!"

"वह हम कैसे करेंगे?" स्योव ने काँपते हुए कहा।

जिनलुंग की भवें चढ़ गईं और आँखों से उसका हत्यारापन टपकने लगा। "सब कुछ तैयार है," उसने भयानक स्वर में कहा। "हम उनके जिला-प्रधान दफ्तर को टुकड़े-टुकड़े करदेंगे, त्वुर को मार डालेंगे, दा-श्वी को पकड़ लेंगे और उन दूसरे हरामियों को भी अपने जाल में कस लेंगे! कल रात अपन साथ-साथ चलेंगे और उनको इस ज़मीन से मिटाकर विजयलाभ करेंगे।"

स्योव का हृदय धड़कने लगा और उसकी चमड़ी में खिंचाव होने लगा पर उसने प्रगट यही किया जैसे उसे किसी से मतलब ही नहीं।

"अरे बापरे! मैं अपनी बन्दूक लाना तो भूल ही गया," उसने पछतावे के स्वर में कहा। "खाली हाथों मैं वहाँ क्या करूँगा?"

"छिः!" जिनलुंग ने थूकते हुए कहा। "तुम ये इस्तेमाल कर लेना!" उसने स्योव को दो जापानी दस्ती बम दे दिये।

"क्या, नक्शा क्या है? हमारे पास कौन-कौन आदमी हैं?"

नशे में होने के कारण जिनलुंग का मस्तिष्क बिल्कुल स्पष्ट था। "उसकी तुम बिल्कुल चिन्ता न करो," उसने धूर्तता से कहा। "कल रात को जब मृगशिरा नक्षत्र दक्षिण में चमकेगा तुम ह्वांग ह्वा गाँव के पूर्व में स्थित तालाब के पास वाले बड़े बेदवृक्ष के नीचे प्रतीक्षा करना। वहाँ तुमसे मिलने एक व्यक्ति आयगा। वह तीन बार ताली बजाकर अपनी पहचान करायगा और तुम्हें हमारे पास ले आयगा।"

जिनलुंग ने अपनी जलती हुई आँखें स्योव के पीले चेहरे पर गड़ा दीं। "तुम मुझे जानते हो," उसने गहरी पर मन्द आवाज़ में कहा। "अगर तुमने अच्छा काम किया और हम अपने मक्सद में कामयाब हो गये तो मैं तुम्हें बड़ा अच्छा इनाम दूँगा। और अगर तुमने मुझे धोखा दिया तो बाद में शिकायत

न करना कि मैं हत्यारा हूँ !" उसने कुछ पैसे काँग पर फेंके और लम्बे डग भरता हुआ बाहर चला गया।

स्योव को रात भर नींद न आई, ऐसा लगा जैसे कोई असहनीय बोझ उसके सीने को दबाये जा रहा है। सुबह उठा तो उसकी भूख मर चुकी थी। उसकी भँवों को ताप आ रहा था और वह काँग पर निर्जीव पड़ा था। दोपहर को त्सुर और दा-श्वी मुर्गी के अण्डे और नूडल लेकर उसके पास आये। स्योव के गर्म मुर्झाये हुए चेहरे को देखकर दा-श्वी का माथा ठनका।

"तुम्हें क्या हो गया है स्योव ?" उसने पूछा। "तुम तो आजकल बड़े कमजोर हो गये हो ?"

त्सुर ने चिंतित हो रोगी की नब्ज़ देखी, "मेरा स्वभाव बड़ा गंदा है। जब मुझे जुनून चढ़ता है तो यह सूझता ही नहीं कि मैं क्या कर रहा हूँ ! मुझे अपने ऊपर बड़ा अफसोस है," उसने क्षमा याचना करते हुए कहा। "दा-श्वी और दूसरों ने मेरी नुक्ताचीनी की और मैंने अपनी गलती कबूल करली। तुम भी मुझे माफ करदो !"

"ऐसी बातें न करो," स्योव ने उत्तर दिया। उसकी आँखें सजल हो गईं। "वह सब मेरा ही दोष था। मैं—मैं वास्तव में तुम्हारे सामने आते हुए मुझे शर्मिन्दगी है।" स्योव हृदय से तो बीमार था ही, वह आगे अपने सिकुड़े हुये गले से शब्द न निकाल सका पर वह ऐसा फूट कर रोया कि काडरों ने तलछू माछू उसे सान्त्वना दी।

"कमज़ोरियाँ हम सब में हैं," उन्होंने तसल्ली देते हुए कहा। "एक बार उन्हें सुधार लो तो सब ठीक हो जाता है। तुम इस समय जरा आराम करो और जब अच्छे हो जाओ तो काम पर चले आना। अगर कोई गड़बड़ हो तो हमें बतला देना। हम निश्चय ही तुम्हारी मदद करेंगे। सारे साथी तुम्हारी ओर से चिंतित हैं। वे तुमसे मिलने आना चाहते हैं।"

स्योव ने यही कहा कि उसे कोई शिकायत नहीं है। जब उसे एक बार फिर यह आश्वासन दे दिया कि वह लौट कर देश-रक्षक सेना में आ जाय तो उन्हें प्रसन्नता होगी, तो काडर चलने के लिए खड़े हुए।

"आज रात हमारी बैठक है पर एक-दो दिन में हम तुमसे मिलने आयेंगे।" त्सुर और दा-श्वी ने जाने की इजाज़त माँगी।

ज्योंही वे धीरे-धीरे कम्पाउण्ड से बाहर गये स्योव के मस्तिष्क में खलबली मच गई। इन्हें किस प्रकार विश्वासघात के साथ मार डालने का षड़यन्त्र रचा जा रहा है इन्हें पता भी नहीं'''और ये कितने भले हैं! पर मैं तो जानता हूँ! मैं क्योंकर चुप बैठूँगा। उसका खून दौड़कर सिर में जमा हो गया। वह अपनी कायरता भूल गया, काँग पर से कूदा और चिल्लाता हुआ नंगे पैर अपने साथियों को पकड़ने दौड़ा। भौंचक्के हो वे दोनों उसके साथ वापस घर आये। हालाँकि वह बुरी तरह आंतकित था पर फिर भी रोते और बिलखते हुए उसने सारा किस्सा उन्हें सुना दिया।

दा-श्वी और त्सुर लौट कर गाँव में आये और उन्होंने जिला-सरकार के प्रधान ज्योव से इस मसले पर सलाह-मशविरा किया। पहले तो उन्होंने सोचा कि स्योव को अपने उस जासूस से मुलाक़ात करने दी जाय और वे कुछ दूर खड़े देखते रहें फिर उन दोनों के पीछे वे भी उस हत्यारों के टोले की मुलाक़ात की जगह तक जायें और सारे अमले को पकड़लें। लेकिन उन्हें अंदेशा था कि कहीं वह गुप्तचर उन्हें देख न लें या यह कि वे हत्यारे देश-रक्षक सेना से घिरने के पहले ही खिसक न जायें। इसलिए उन्होंने निश्चय किया कि वे जासूस को पहले पकड़लें और उससे जगह का पता निकलवालें।

स्योव को चोरी-छिपे जिला-प्रधान दफ्तर ले जाया गया जहाँ उसे अपनी जिम्मेदारी बताई गई। पर वह इतना भयभीत था कि जिम्मेदारी लेने से इन्कार करने लगा। जब देर तक बैठकर दा-श्वी और त्सुर ने उसे समझाया-बुझाया और पहली रणनीति में कुछ परिवर्तन किये तब जाकर कहीं वह राज़ी हुआ पर वह भी अनमने से ही।

मृगशिरा नक्षत्र जब तक दक्षिण की ओर पहुँचा जिले की देश-रक्षक सेना की सारी तैयारियाँ पूरी हो चुकी थीं। स्योव पूर्व-निश्चित वेदवृक्ष के नीचे जाकर ऊँकड़ूँ बैठ गया। जल्दी ही एक चोर की-सी आकृति सामने आई; उसने हल्के हाथ से तीन बार ताली बजाई। स्योव उठा और उसकी ओर चला।

"क्या तुम्हारा ही नाम स्योव है?" आदमी ने उसे पिस्तौल से डराते हुए कहा।

"हाँ। कहाँ चल रहे हैं हम?"

"मेरे साथ आओ।"

त्सुर और दा-श्वी छाया में से उछल आये और उन्होंने अपनी रायफलें स्योव व जासूस पर टिका दीं। अगर तुमने शोर मचाया तो मार डालेंगे हम। बन्दूकें नीचे रख दो!"

"यह लो मेरी बन्दूक!" जासूस ने झट कह दिया। अपनी बाँह घुमाई, गोली चलाई और घूमकर चम्पत हो गया।

काडरों ने उसे जीवित पकड़ने की आशा में उसका पीछा किया। लेकिन जब कठपुतली सैनिक गेहूँ के खेतों की ओर भागा तो उन्हें शक हुआ कि अब तो वह हाथ आ ही नहीं सकता। उन्होंने तीन गोलियाँ चलाईं और वह वहीं ढेर हो गया।

जिले की देश-रक्षक सेना ने आसपास के इलाके को पूरी तरह खूँद मारा पर सब व्यर्थ। जिनलुंग और उसके साथी राजनैतिक डाकुओं न जब गोलियों की आवाज सुनी तो भाग खड़े हुए।

: १७ :

बड़ी मछलियाँ निकल भागीं—बसन्त और ग्रीष्म, १९४५

मे की दा-श्वी से शादी होने के लगभग फौरन बाद ही मे गर्भवती हो गई। १९४५ के आरम्भ होने तक तो मे पूरे दिनों थी। लेकिन उसने उत्पादन बढ़ाने के लिए किसानों को संगठित करने का अपना काम जारी रखा। वह गाँव-गाँव और घर-घर किसानों की वैयक्तिक उत्पादन सम्बन्धी

समस्याएँ हल करती हुई फिरी। आराम करने की उसे काम के आगे सुध ही न रही।

एक दिन जब मे किसी मीटिंग से घर लौटी तो उसे बड़ी सख्त थकान महसूस हुई। ज्योंही वह कमरे में दाखिल हुई कि प्रसव वेदना उसे सताने लगी। ज़च्चगी की इस सहसा पीड़ा और उसकी तीव्रता से वह भयभीत हो गई, और खड़े हुए ही उसने किसान स्त्री को चीख कर पुकारा जिसके घर में वह रह रही थी। स्त्री आवाज सुनते ही दौड़ती हुई आई, मे पर उसने नजर डाली और काम में लग गई।

"उई मा! तुम लेट क्यों नहीं जातीं?" उसने मे को पकड़कर काँग पर लिटाते हुए डाँटा। "बावलो की तरह तो तुम काम करती रहती हो! पिछले महीने भी तुमसे आराम नहीं किया गया!" क्या तुम्हें खबर न थी कि तुम पूरे दिनों से हो?"

"पैदावार········ बहुत ज़रूरी है," मे ने हाँपते हुए कहा, "अगर उसे ठीक न करेंगे तो······जापानियों को नहीं हरा सकते!"

स्त्री ने अपना सिर हिला दिया। "तुम भी अपने जिगर का खून हम किसानों को देती हो!"

कुछ मिनट बाद बच्चा पैदा हो गया। लड़का गुलाबी और मोटा ताज़ा हुआ था, चर्म उसका इतना सफेद था जैसे उसे उम्दा सफेद पावडर लगा दिया गया हो।

खबर आन की आन में फैल गई। पड़ौस की औरतें फौरन लाल कंद, खजूरे, चावल और मुर्गी के अंडे उपहार-स्वरूप लेकर जमा हो गई। वे सब-की-सब बच्चे को गोद में लेना चाहती थीं।

"देखो, देखो कैसा तन्दुरुस्त बच्चा है!" एक फुसफुसाई। "बड़ा सिर है चौड़े-चौड़े कान हैं जरूर बुद्धिमान निकलेगा!—बिल्कुल दा-श्वी पर जायगा, उसी का-सा नाक-नक्शा भी है!"

"और आँखें तो देखो मुन्ने की—कितनी प्यारी हैं!" दूसरी बोली। "बिल्कुल मा जैसी हैं!"

"सही कहा तुमने," मे की मकान मालकिन ने कहा, "अच्छी प्याज की पेंदी खालिस सफेद होती है और अच्छे मा-बाप के बच्चे सुन्दर होते हैं !"

जब दा-श्वी को खबर हुई तो वह फौरन घर की ओर चल पड़ा। उसे देखते ही वह फूला न समाया, उसने बच्चे को झट गोद में उठा लिया और इस विलक्षण कृति को पूरी तरह देख भी न पाया। उन्होंने उसका प्यार का नाम नन्हा गबरू रख दिया। और उसका नामकरण बाद में करने का विचार किया।

अगले दिन सुबह मे ने दा-श्वी से दफ्तर चले जाने का आग्रह किया। उसने कहा यहां तो बच्चे को सम्भालने के लिए दसियों औरतें मौजूद हैं, उसे बिल्कुल चिंता न करनी चाहिए। दा-श्वी का जी न चाहता था पर फिर भी वह कलेजे पर पत्थर रखकर मे और बच्चे से विदा हुआ और काम पर चला गया।

१९४५ के वसंत में चेयरमेन माओ के आह्वान पर कि 'शत्रु द्वारा नियंत्रित प्रदेशों को कम करो और उन्मुक्त क्षेत्रों का विस्तार करो,' प्रादेशिक सेना ने ज़बरदस्त हमले किये और फलस्वरूप कई मुकामों को पुनः जीत लिया।

मई में प्रादेशिक सरकार की एक बैठक में सम्मिलित होने के बाद कल्लू त्से ने काउण्टी और जिले के काडरों की एक कान्फ्रेंस बुलाई। कान्फ्रेंस में उसने घोषणा की कि सोवियत संघ ने जर्मन और इतालवी फासिस्टों को परास्त कर दिया है। और काडरों की खुशी का ठिकाना न रहा।

"तो बस अब जापानी ही बचे हैं !" वे चिल्लाये। "उन्हें भी अब हम जल्दी ही ठिकाने लगा देंगे !"

जब शोर-गुल कम हुआ तो कल्लू ने उन्हें बताया कि अधिकारियों ने यह आदेश दिया है कि जिले और काउण्टी की देश-रक्षक सेनाएँ प्रादेशिक सेना के साथ मिलकर हमले करें। शहरों व परकोटे से घिरे हुए कस्बों में जो शत्रु के गढ़ बाकी बचे हैं उन्हें फौरन नष्ट कर दिया जाना चाहिए !

देर तक करतल-ध्वनि और प्रशंसा की आवाज़ ने उनके शब्दों का स्वागत किया। उसी दम इस चिर-प्रतीक्षित आदेश के पालन की योजना बनाली गई !

जिस काउण्टी के लिए कल्लू जिम्मेदार था उसमें एक शहर था और

एक परकोटे से घिरा हुआ कस्बा था। जापानी पहले ही गाँव से भागकर शहर चले गये थे सिर्फ ५० आदमियों की एक पल्टन बाकी रह गई थी। कठपुतलियो की ५० आदमियों की पल्टन के अलावा गाँव में जापानियों ने दक्षिणी दरवाजे से कुछ गज़ दूर एक फौजी दफ्तर भी बनवा रखा था। उसके अतिरिक्त हो के आधीन १५० आदमियों की एक टोली भी थी जिसका जिनलुंग लेफ्टिनेण्ट था। इस टोली की पहली पल्टन जिसका सरदार ग्वो था हो और जिनलुंग के साथ पुराने कैथोलिक गिरजे के कम्पाउण्ड में रहती थीं जहाँ दो ऊँचे किले बनवा लिये गये थे। दूसरी पल्टन का आधा भाग दुंग नामक व्यक्ति की कमान में कस्बे के पूर्वी भाग में स्थित किले के अन्दर रहता था। गूपी दूसरे आधे हिस्से का सरदार था जो कस्बे के पश्चिम में स्थित किले में रहता था। कस्बे के आस-पास खड़ी दीवारों पर तीसरी पल्टन के सैनिक आठ निशाना लगाने के स्थानों पर रहते थे और उनके बीच में संतरियों को भी तैनात कर दिया था। सब तरफ कठोरतम सैनिक चौकसी बरती जाती थी।

वयाँग झील से मिल जाने के पहले फू नदी ने दो सोतों में बँटकर उसके प्रवाह की बाजू वाली ज़मीन के विशाल टुकड़े के इर्द-गिर्द एक पोला सा स्क्वेयर बना लिया था। गाँव उस टापू पर स्थित था और नदी प्राकृतिक खाई का काम देती थी। स्थल द्वारा गाँव में प्रवेश करने का एक ही मार्ग था—एक पुल था जो किनारे से पूर्वी दरवाजे की ओर जाता था।

यह योजना बनाई गई कि प्रादेशिक सेना इस दरवाजे से दाखिल होगी, पूर्वी व उत्तरी दीवारों वाली कठपुतलियों का सफाया करेगी, कस्बे के पूर्वी भाग वाले किले को फूंक देगी और कस्बे के ऐन केन्द्र में स्थित कैथोलिक गिरजे के कम्पाउण्ड में दुश्मन का नाश कर देगी। कल्लू की काउण्टी-देश-रक्षक सेना उनके पीछे जाने वाली थी और दक्षिणी दरवाजे में सैनिक दफ्तर पर तैनात जापानियों और कठपुतलियों का सफाया करने वाली थी। दा-श्वी और लुर को अपनी जिले की देश-रक्षक सेना कस्बे के पश्चिमी भाग वाले किले पर चढ़ानी थी। बाकी जिलों की सेनाओं को दक्षिणी और पश्चिमी दीवारों वाले कठपुतलियों से निपटना था। साथ ही दो और काउण्टियों की देश-रक्षक सेनाएँ शहर से कस्बे

तक की सड़क पर तैनात कर दी गई थीं ताकि यदि जापानी शहर से कुछ दस्ते मँगाने चाहें तो वे न आ सकें।

जिस रात आक्रमण किया जाने वाला था उसी रात कल्लू ने तमाम काउण्टी और ज़िलों की देश-रक्षक सेनाओं को अपनी कमान में एकत्रित किया। एक बूढ़े लुहार और दा-श्वी तथा त्सुर को लेकर उसने एक गिरोह बनाया।

"पूर्वी दरवाजे वाला जो पुल है बहुत सकरा है," कल्लू बोला। "उस पर आक्रमण करना जरा मँहगा पड़ेगा। प्रादेशिक सेना के प्रधान दफ्तर वालों ने हमें कहा है कि हम पहले किसी आदमी को कस्बे में भेजें जो जाकर दरवाजा अन्दर से खोल दे। यह बूढ़े बाबा उसे अच्छी तरह कर सकते हैं। जब मैं लुहारी का काम करता था तो यही मेरे उस्ताद थे और वैसे मेरे ही गाँव वाले हैं। मैं चाहता हूँ आप किसी वीर और साहसी कामरेड को इनके साथ भेज दें। यह बड़ा महत्वपूर्ण काम है पर साथ ही बड़ा खतरनाक भी। कौन आपके ख्याल में यह काम कर सकता है?"

"मैं कर सकूँगा क्या?" दा-श्वी ने पूछा।

"मैं जाऊँगा," त्सुर ने झट कह दिया।

"नहीं नहीं, तुम न जाओ," कल्लू ने हँसकर कहा। "तुम दोनों को तो अपनी देश-रक्षक सेना का नेतृत्व करना है।"

दा-श्वी ने सुझाव दिया कि उसके भाई रू को भेज दिया जाय। त्सुर ने जोश से अपना पैर जमीन पर ठोका। "ठीक है! छोकरा तेज है और उसमें दम भी है! वह काम कर देगा!"

रू को बुलाया गया और पूछा यदि वह तैयार है।

"हाँ, हाँ निश्चित रूप से!" उसने खुश होकर उत्तर दिया। कब चलोगे बाबा?"

"यह लो घड़ी, उसका डायल चमकता है," कल्लू बोला। "ठीक बारह बजे तुम दरवाजा खोल देना। पुल पर भागते समय सेना तुम्हारी मशीनगन से रक्षा करेगी। तुम निश्चित रूप से इसे कर पाओगे या नहीं?"

लुहार बहुत बूढ़ा हो गया था और उसकी खूँटीदार दाढ़ी सफेद हो

चुकी थी पर वह अब तक लम्बा-चौड़ा और बलवान् था। वह बड़े जोर से हँस पड़ा। "मैं गारण्टी देता हूँ कि उस वक्त दरवाजा खोल दूँगा! ताले से मेरा उम्र भर वास्ता रहा है!" उसने रू की ओर सहिष्णुता से देखा। "क्यों बेटा, तैयार हो चलने के लिए?"

रू ने अपने गाल फुलाये और सिर ऊपर से नीचे की ओर कर दिया। "क्यों नहीं?" उसने क्रोध से कहा। "मैं ही वह हस्ती हूँ जिसने झूठमूठ के विवाह के दिन जापानी कमाण्डर ईनो को मारा था! अगर मैंने इस काम में अपने जौहर न दिखाये तो मेरा सिर उड़ा देना!"

कल्लू हँसने लगा। "अच्छा ठीक है, ठीक है," उसने उसे ठण्डा करते हुए कहा। "काम तुम दोनों का है—बूढ़े और बच्चे दोनों का सामान्य है। अगर हम जीत लेते हैं तो पहला श्रेय तुम्हीं को मिलेगा!" उसने जेब में से एक और घड़ी निकाली। यह प्रादेशिक कमान वालों की है। इसे अपनी घड़ी से मिला लो।"

पूर्व तैयारियाँ पूरी हो गईं। रू के पैर जमीन पर न पड़ते थे वह मुर्गे की भाँति उछलता-कूदता लुहार के साथ कम्पाउण्ड से बाहर हो गया। दा-श्वी उसके साथ गया और उसने अपने भाई के कंधे पर स्नेह-भरा हाथ फेरा।

"रू," उसने धीरे से कहा, "तुम अभी छोटे हो और काम बहुत बड़ा है! यह बहुत महत्त्व का काम है! काम करने के पहले खूब सोच-विचार लेना और बूढ़े बाबा की हर तरह से मदद करना। वीरता से काम लेना पर साथ ही चौकन्ने रहना! गलतियाँ मत करना!"

लड़का सीधा खड़ा रहा उसने अपना सिर उठाकर दा-श्वी की आँखों में आँखें डालकर देखा। "आप न घबरायें," उसने दृढ़ता से कहा। "मैं या तो अपना कर्त्तव्य पूरा करूँगा और या लौटकर न आऊँगा!"

दा-श्वी ने उसकी पीठ ठोकी। "तब तुम जरूर सफल होंगे! मैं तुम्हें बधाई देने के लिए तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगा!"

वह रू और लुहार को तकता रहा और वे रात्रि में लुप्त हो गये। आहिस्ता से वह मुड़ा और अपनी देश-रक्षक सेना की टुकड़ी की ओर लौटा।

रू और लुहार नदीरूपी खाई के किनारे-किनारे चलते हुए शहरपनाह के पश्चिमोत्तरीय कोने पर एक जगह पहुँचे। पानी गहरा और वेगपूर्ण प्रतीत हुआ। रू ने कहा वह लुहार को तैरकर उस पार ले जायगा पर बूढ़ा हँस दिया। उसने कपड़े उतारे और एक हाथ में उन्हें सम्हाले दूसरे हाथ से पानी काटता हुआ वह दूसरे किनारे तक तैरकर गया। दीवार किनारे से सटी हुई थी। रू उसी के पीछे-पीछे गया।

दीवार कोई दस फीट ऊँची थी। जहाँ वे खड़े थे उस जगह कुछ ढलवाँ थी; उसकी सतह वर्षों के बोझ से दबी हुई कहीं खुद गई थी, कहीं गढ़े पड़ गये थे। लुहार फुर्ती से दीवार के ऊपर पहुँच गया और रू भी उसीके पीछे पकड़ता फिसलता चढ़ गया। रू ने सराहना भरे-अंदाज़ में सोचा, यह बूढ़े बाबा बड़े तेज़ हैं!

गाँव में कमल-ताल के पास वे कूद पड़े। उसी का चक्कर लगाते हुए लुहार रू को निर्जन और सुनसान गलियों में होता हुआ अपने घर ले गया जो गाँव के पूर्वी भाग में स्थित था। वहाँ वे करीब एक घण्टे तक रुके।

११ बजे बूढ़े ने अपनी पत्नी को भेजा कि वह पूर्वी दरवाजे पर जाकर स्थिति देख कर आये। वह लौटकर आई तो उसने बताया कि सब ओर सन्नाटा है। लुहार ने एक लोहे का रंभा और कुछ चिथड़े साथ ले लिये।

"यह काहे के लिए ले जा रहे हो? जब वे चलने लगे तो रू ने उससे पूछा।

"इसी से दरवाज़ा खोलेंगे," बूढ़े ने हँसकर जवाब दिया।

जिस गली में वे जा रहे थे जब वह आगे जाकर एक चौड़ी सड़क में मिल गई जो पूर्वी दरवाज़े को जाती थी तो उन्होंने अपने शरीर कोने के मकान की दीवार पर टिका दिये और सतर्कता से अपने मुँह बाहर को निकाल कर झाँका। दरवाज़े के प्रवेश-द्वार की अँधियारी सुरंग से अब वे कोई बीस गज़ ही दूर रहे होंगे। शहर-पनाह बीस फीट मोटी थी। फाटक जिसका भारी दरवाज़ा लोहे के सींखचों का बना हुआ था और दीवार के अन्दर बनी हुई सुरंग के बाहरी किनारे पर था। लेकिन सड़क के उस पार पंसारी की दूकान के कम्पाउण्ड

के सामने तीन कठपुतली सैनिक बंदूकों से लैस बैठे आपस में कुछ काना-फूसी कर रहे थे।

"हाँ, हाँ वे सो गये हैं!" एक ने प्रमुदित हो कहा। दो कठपुतलियों ने कम्पाउण्ड की दीवार फाँदी तीसरा वहीं खड़ा दायें-बायें घूमता रहा जैसे पहरा दे रहा हो।

बूढ़ा लुहार जानता था कि दूकानदार गाँव से बाहर है; उसने अंदाज़ लगाया कि या तो कठपुतलियाँ दूकान में चोरी करने गये होंगे या फिर औरतों के पीछे गये होंगे। वह और रू प्रतीक्षा करते रहे और उनकी बेचैनी बढ़ती गई। घड़ी की सुइयाँ उत्तरोत्तर मिलती जा रही थीं। अब उनके लिए ऐसा कोई रास्ता ही न था जिससे वे सुरंग में जा पहुँचते और सड़क के उस पार बैठी कठपुतलियाँ उन्हें न देख पातीं। बूढ़ा अधीर हो रहा था कि इतने में रू को एक बात सूझी। उन्होंने खुसर-पुसर करके जल्दी-जल्दी उस पर बहस की। लुहार ने बात मान ली और रू को कुछ हिदायतें दीं। रू झटपट गली में लौट गया।

उन तंग गलियों में छिपे-छिपे चलता हुआ रू फिर उसी सड़क के किनारे जा निकला जो फाटक से कई गलियाँ फासले पर थी। उसने एक पत्थर उठाया और एक सिपाही के फेंकमारा और उड़नछू हो गया। कठपुतली सिपाही भौचक्का हो सुनसान सड़क के इधर-उधर देखने लगा। एक मिनट बाद रू ने उसके पीछे से आकर एक पत्थर उसकी पीठ में मारा।

"कौन है?" सिपाही गुस्सा होकर चिल्लाया।

रू उसके सामने आ गया। "तुम लोग भी क्या कमाल का काम कर रहे हो!" उसने व्यंग्य किया। वह घूमा और गली में से अदृश्य हो गया। अस्पष्ट भाषा में उसे गालियाँ देते हुए सिपाही ने उसका पीछा किया।

ज्योंही वह छोर खाली हुआ कि लुहार पूर्वी फाटक की सुरंग में दौड़ा। लेकिन आधी रात बीत चुकी थी और बाहर खड़ी प्रादेशिक सेनाएँ यह समझकर कि फाटक खोलने की योजना विफल हो गई होगी उसकी ओर दौड़ी चली आ रही थीं। पाँच मशीनगनों से उन्होंने फाटक की दीवार के ऊपर बने हुए कठपुतलियों के मीनार उड़ा दिये। दुश्मनों ने ताबड़तोड़ उसका जवाब

दिया और सिपाही अपने-अपने स्थानों को दौड़ने लगे। सारी सड़कों पर भगदड़ मच गई। अब सुरंग के बाहर आने का लुहार को साहस न हुआ। उसका अगर मौका था तो सिर्फ यह कि वह फाटक खोल देता। उसने झटपट अपना रंभा चिथड़ों में लपेटा और उसे उस भारी ताले में फँसा दिया। एक ही भारी घुमाव में ताला खुल गया। उसने सलाखें खींचकर अलग कर दीं और दरवाजा खोल दिया।

"खुला हुआ है, खुला हुआ है!" वह दीवार से भागते हुए चिल्लाया।

उसके पीछे कठपुतली सैनिकों ने बन्दूकों से सीसा उँडेलना शुरू किया और दीवार पर खड़े शत्रुओं ने उसकी दौड़ती हुई आकृति पर दस्ती बम फेंके। वह लपककर जमीन पर लेट गया, कुछ गज लोटा-पलटा और फिर उठकर खड़ा हो गया। स्थल के संकुचित टुकड़े पर शहर-पनाह के बाहरी हिस्से के किनारे दौड़ता हुआ वह नदी में कूदा और तैरता हुआ सुरक्षित स्थान पर पहुँच गया।

प्रादेशिक सेना वालों ने खुशी में उन्मत्त हो अपनी रायफलों, मोरटारों और मशीनगनों से खुले हुए दरवाजे में आग भड़का दी। शत्रु-पक्ष की गर्मी शीघ्रता से कम होती गई।

हाथ में पिस्तौल लिये हुए कम्पनी का एक लीडर कूद पड़ा। "आओ चलें!"

उसके आदमी पुल पर उसके पीछे चले। किले से धड़धड़ाती हुई मशीनगनों ने कई हमलावरों को अपना शिकार बनाया। कम्पनी-लीडर खुद घायल हो गया।

उसने बड़ी पीड़ा से अपने को उठाया। "साथियो, चलाओ गोलियाँ!" वह चिल्लाया और मुँह के बल गिरा।

"चलाओ गोली! मारो!" सैकड़ों कण्ठों से आवाज़ गूँजी और कम्पनी धड़धड़ाती हुई कस्बे पर पिल पड़ी।

दस्ते पर दस्ता शोर करता हुआ खाई के उस पार आ गया; फाटक के ऊपर खड़े कठपुतली सैनिक दीवार के सहारे भागे। अब अन्दर वाले दस्ते सीढ़ियाँ चढ़ते हुए ऊपर पहुँचे और अपनी-अपनी जगहें बनालीं। उस मौके

की जगह से उन्होंने दीवारों के दोनों ओर के शत्रु के गढ़ों पर आक्रमण किया और सड़कों पर खड़े सिपाहियों पर धुआँधार आग बरसाई। पौ फटने तक उत्तर व पश्चिम की दीवारें साफ हो चुकी थीं।

× × × ×

सवेरे आठ बजे प्रादेशिक फौज के दस्तों ने क़स्बे में आम हमले शुरू कर दिये। पूर्वी भाग में स्थित किले की दूसरी कठपुतली पल्टन को घेर लिया गया। वहाँ भी ऐसी धुआँधार गोलियाँ बरसाई गईं कि एक दुश्मन ने भी अपना सिर निकालने का साहस न किया। जरा देर में किले के ऊपर से आवाज़ आई, "हम हथियार डाल रहे हैं!" कठपुतली सैनिक सड़क पर खाली हाथ घूमने लगे, केवल कुछ ही ऐसे थे जो अपने साथ रायफलों के बखूबी बँधे हुए बण्डल लिये हुए थे। अंतिम व्यक्ति दुंग था जो दूसरी पल्टन का सरदार था, वह भी बाहर निहत्था निकल आया। उसने तो बगैर कहे-सुने अपने आप समर्पण कर दिया। तमाम कठपुतली सैनिक पीछे की पंक्तियों में भेज दिये गये।

कस्बे के दक्षिणी दरवाजे के पास ही कल्लू त्से की काउण्टी-देश-रक्षक-सेना ने पोले स्क्वेयर कम्पाउण्ड के, जिसमें जापानियों और कठपुतलियों के प्रधान पहरे थे, आस-पास तमाम मकानों की छतों पर चढ़कर आक्रमण के लिए जगहें बनाली थीं। देश-रक्षक सेना ने सतत गति से कम्पाउण्ड में दस्ती बम गिराये यहाँ तक कि काले धुयें का वातावरण पर साम्राज्य छा गया और धुएँ के बादल आकाश की ओर उठने लगे। दुश्मन ने कई बार उस नरक-कुण्ड से से बच निकलने की कोशिश की लेकिन हर बार जब धमाका होता तो वे चकराते हुए भागते और उनका भारी नुक्सान होता। अन्त में जो बचे-खुचे थे कमरों में छिप गये और फिर कोई मुकाबला न किया। खिड़की के टूटे-फूटे शीशों में से निकालकर उन्होंने अपनी रायफलें बर्बाद कम्पाउण्ड में फेंक दीं।

अपनी काउण्टी की देश-रक्षक सेना के एक दस्ते की अगुआई करता हुआ कल्लू आया, कम्पाउण्ड के दरवाज़े को लात मारकर खोला और लम्बे

डग भरते हुए अन्दर घुस गया। कठपुतली सैनिक मकान के एक कोने में बैठे डर से धूज रहे थे। जब कल्लू ने उन्हें विश्वास दिलाया कि उनके साथ अच्छा व्यवहार किया जायगा तब जाकर कहीं उनकी जान में जान आई।

पर जापानियों का कहीं पता न था। एक देश-रक्षक सैनिक ने अपनी बन्दूक से एक कम्बल को उठाया जो फर्श पर एक लकड़ी की फ्रेम से लगा हुआ घिसट रहा था। बिस्तर के नीचे एक जापानी अपना सिर दीवार से टिकाये ऊँट की नाईं अपनी कमर उठाये गुड़मुड़ी बना बैठा था। वह किसी सूरत से वहाँ से निकलना नहीं चाहता था। आखिरकार दो-चार आदमियों ने मिलकर उसकी टाँगें पकड़ीं और घसीटकर मैदान में ले आये। वह ताबड़तोड़ ऊँकड़ूँ बैठ गया और अपने धुएँ से काले हुए चेहरे से उनकी ओर तकने लगा।

एक और साथी ने एक बड़ा थैला हिलाया जिसे वह समझा अनाज का बोरा होगा; लेकिन उसके छूते ही वह ऐंठा और सिकुड़ गया। उसमें एक जापानी घुस गया था जिसने उसमें बन्द होकर उसके मुँह को हाथ से पकड़ लिया था। दो सैनिकों ने थैला उठाया, उसे उलटा किया और जापानी को निकाल लिया।

कैद किये हुए एक कठपुतली सैनिक ने काँग की ओर इशारा किया। कल्लू ने उस पर बिछी हुई सरकण्डे की चटाई हटा फेंकी। उसने देखा कि दो जापानियों ने काँग के ऊपर से कुछ ईंटें हटा दी थीं और खुद उसमें घुस बैठे थे। जब वे खींचकर निकाले गये तो उनकी हालत बड़ी उपहासास्पद थी। सिर से पैर तक वे राख से लथपथ और सफेद थे।

"तुम्हारी बन्दूकें कहाँ हैं?" कल्लू ने पूछा।

जापानी मूर्खों की नाईं उसकी ओर तकने लगे पर बोले कुछ नहीं। अपनी तलाशी जारी रखते हुए देश-रक्षक सेना ने काँग में से दो अर्ध-आटोमैटिक पिस्तौल और तीन रायफलें बरामद कीं।

× × × ×

कस्बे के पश्चिमी विभाग में दक्षिणी और पश्चिमी दीवारों वाले कठपुतली कैदियों ने समर्पण कर दिया था लेकिन गूपी के अधीन किला अब तक बचा हुआ था। क्योंकि त्सुर और दा-श्वी के मातहत जिले की देश-रक्षक सेना में आदमी कम थे, दूसरे उनके पास मशीनगन भी न थी इसलिए कुल प्रादेशिक सेना कमान ने उन्हें आदेश दिया कि वे कठपुतलियों से बातचीत करके उनसे समर्पण करवालें।

किले को घेरते समय देश-रक्षक सेना वालों को रू मिल गया। जब वे झुके हुए मकानों के पीछे-पीछे चले जा रहे थे और गढ़ से करीब १०० गज़ दूर थे तो वह उनमें जाकर मिल गया। दा-श्वी और त्सुर ने बारी-बारी से कठपुतलियों को चीखकर पुकारा और आत्म-समर्पण के लिए कहा।

"हे कठपुली देशवासियो! हमने क़स्बे को घेर लिया है; अपने हथियार क्यों नहीं डाल देते? अपनी जानें इन जापानी शैतानों के हाथ न बेचो!"

चीख़ते-चीख़ते उनकी आवाज़ें बैठ गईं लेकिन किले में से कोई जवाब न आया।

"यह बेकार है," देश-रक्षक सैनिकों ने कहा। "हमें इन कुतिया के पिल्लों से लड़ना पड़ेगा!"

उन्होंने अपनी रायफलों से धुँआधार गोलियाँ बरसाईं। कठपुतलियों ने जवाबी गोलियाँ चलाईं और युद्ध आरम्भ हो गया।

"गोलियाँ न चलाओ! हम सब चीनी हैं! हम अपने क़ैदियों से अच्छा बर्ताव करते हैं! छोड़ दो अपनी बन्दूकें!"

"तुम्हें हमारी बन्दूकें चाहिएँ?" गूपी किले के ऊपर से चिल्लाया।

"हाँ हाँ! गिरा दो उन्हें!"

"अगर तुम उन्हें लेना चाहते हो—तो ऊपर आकर लेलो!"

इस पर तो देश-रक्षक सैनिकों के बदन में आग लग गई, वे पहले से अधिक शक्ति व उत्साह के साथ जूझ पड़े।

जब प्रादेशिक कमान को इस भयंकर स्थिति की खबर मिली तो उन्होंने तीस आदमियों का एक विनाशकारी दस्ता ५०० पौंड डायनेमाइट आटे के बोरों

में रखकर साथ रवाना कर दिया। जिले की देश-रक्षक सेना के सैनिकों को आदेश दिया गया था कि वे किले के नीचे सुरंग खोदने में इस दस्ते की मदद करें। किले के पास साफ जगह में बने हुए एक मकान के अन्दर से काम फौरन शुरू किया गया। यह जानने के लिए कि सुरंग सीधी खुद रही है या नहीं विनाशकारी दस्ते का सरदार एक दस्ती बम आगे की ओर फेंक देता था। उन धमाकों का अनुकरण करते हुए लोग सुरंग खोदते-खोदते आगे बढ़ते गये और अन्त में किले की दीवारों के ठीक नीचे पहुँच गये।

जहाँ सुरंग समाप्त होती थी उसके मुँह पर ५०० पौंड की डायनेमाइट से भरा हुआ एक लकड़ी का सन्दूक रख दिया गया—और जहाँ से सुरंग शुरू हुई थी वहाँ से लेकर उस सन्दूक तक एक डोरी खींच दी। दा-श्वी ने कठपुतलियों से समर्पण करने के लिए अन्तिम अपील की।

"अब तुम्हारी भलाई इसी में है कि बाहर निकल आओ," उसने उन्हें चेतावनी दी। "किले के नीचे खाई खोद दी गई है। अगर तुम न निकले तो तुम्हें हम नाच नचा देंगे!"

गूपी को देश-रक्षक सेना के ध्वंस करने की क्षमता पर सन्देह था। "जरा-से नाच में क्या रखा है?" उसने लापरवाही से गरजकर कहा। "देखें तुम लोग कैसे हमें उड़ाते हो?"

सूर्य वृक्षों की कोपलों के पीछे अस्त होता जा रहा था। डोरी को माचिस दिखा दी गई थी और किले पर क़ब्ज़ा करने वाले किले से कहीं दूर हट गये थे।

"फुर्ती करो, कठपुतलियों!" दा-श्वी ने आह्वान किया। हमने डोरी सुलगा दी है! एक मिनट में वह फट जायगी!"

गूपी के दो आदमी कूदना चाहते थे, लेकिन उस ग़द्दार ने बन्दूक के कुन्दे से उन्हें रोक लिया।

"यहीं रुक जाओ!" उसने हुक्म दिया। "वे हमें कोई नुक्सान नहीं पहुँचा सकते—बा लू तो कुत्ते के पिल्ले से भी गये-बीते हैं! यह तो महज़ हमें डराने की गीदड़-भभकी है!" उसने देश-रक्षक सेना वालों पर व्यंग्य-बाण छोड़ने शुरू किये और उसकी आवाज नाकहीन मुँह से गरजती हुई निकली। "तुम बेचारे

बालू खतम हो चुके हो, और तुम्हें इसकी खबर ही नहीं! यमदूत तुम्हें तुम्हारे—पकड़ कर नरक में घसीटने के लिए आने वाला है!······"

लेकिन पूर्व इसके कि वह कोई और शब्द उच्चारे एक भयंकर धमाका हुआ जिसने किले को उठाया और हवा में उड़ा दिया। टूटी हुई ईंटें, कबेलू, लकड़ी वगैरह सब दिशाओं में उड़ीं। एक मील के फासले तक के मकानों की कागज की खिड़कियाँ धमाके से चूर-चूर होकर उड़ीं।

ज्योंही धमाके से उड़े कण जमे देश-रक्षक सैनिक हथियार बचाने के लिए दौड़े। गूपी और उनके लोगों की हड्डी-पसलियों तक का कहीं पता न चला। उस गढ़ से काफी दूर तीन-चार विकृत लाशें मिलीं। कठपुतलियों की बन्दूकों के परख़चे उड़ गये थे। उनमें से एक भी ऐसी न बची थी जिसका दुबारा इस्तेमाल किया जा सकता।

अब सिर्फ कैथोलिक गिरजे का कम्पाउण्ड जिसमें दो किले थे दुश्मनों के हाथों में रह गया था। कस्बे से बाहर देशर-क्षक सैनिकों ने जापानी और कठपुतली सैनिकों के जत्थों को जो शहर से किले वालों की सहायतार्थ भेजे जा रहे थे मारकर पीछे को खदेड़ दिया। त्सुर और दा-श्वी के लोगों को आदेश दिया गया कि वे अपने सैनिकों को लेकर पश्चिमी दीवार के सामने स्थल पर आराम करने चले जायें। दा-श्वी ने त्सुर से कमान सम्हालने के लिए कहा और वह खुद अपने देश-रक्षक सैनिकों के एक गिरोह को लेकर कम्पाउण्ड के आसपास एकत्र दस्तों से जा मिला। उसने उल्लसित हो सोचा कि हमने इसे पूरी तरह घेर लिया है। हो और जिनलुंग और बाकी हरामी इस बार बचकर नहीं जा पायेंगे!

कम्पाउण्ड कस्बे के मध्य में एक चौड़ी गली के सामने स्थित था और ८ फीट ऊँची दीवार से घिरा हुआ था। हर मीनार पर एक कठपुतली निशानेबाज तैनात था। जापानी ३८ रायफलों से जो कोई भी गली में निकलने का

साहस करता वे उसे उड़ा देते थे। कुछ किसान युद्ध-क्षेत्र से निकलने के लिए गली में भागे। और उनके दौड़ते ही दो गोलियों ने उनमें से दो को अपना निशाना बना लिया। गैर-सैनिक किसानों की इस पापपूर्ण हत्या से आक्रमण-कारी आग बबूला हो गये। प्रादेशिक कमान ने अपने दक्ष निशानेबाज़ों को आज्ञा दी कि वे मीनारों के बाजू वाली इमारतों की छतों पर चढ़ जायें। रेत के पीछे सरकते हुए पूर्वी मीनार के झाँकने के छेद पर निशाना लगाया। हालाँकि शाम हो रही थी पर फिर भी उनकी पहली गोलियों की वर्षा ने शत्रु के निशाना-बाजों को ढेर कर दिया।

"इनकी मा का—!" पश्चिमी मीनार वाले कठपुतली सैनिकों ने कहा। "बेड़ा ग़र्क हो इन हरामज़ादों का! अगर तुममें से कोई निशानाबाजी का दम भरता हो तो देखें हमारे पुराने आक़ा पर अपना कौशल दिखाओ!"

दा-श्वी जिनलुंग की आवाज पहचान गया; उसका खून खौलने लगा और वह इतना क्रोधित हुआ कि उसके आगे अन्धेरा छा गया। उसने सुना कि फौज का एक निशानेबाज़ बड़े गम्भीर स्वर में उत्तर दे रहा है, "गालियाँ मत दे बे! मैं तेरी गोली का जवाब देता हूँ, तू समझता क्या है?"

"अच्छी बात है!" जिनलुंग चिल्लाया। "देखें कौन वीर है! मैं इस कवेलू को सीधा खड़ा करता हूँ अगर तू इसे मार देगा तो मैं अपनी रायफल फेंक दूँगा!"

"मैं भी ऐसा ही करूँगा। तू पहले गोली चला!" निशानेबाज़ ने भी रेत के थैलों के ऊपर एक कवेलू रख दिया।

जिनलुंग ने एक ही बार में उसके धुर्रे बिखेर दिये।

"बुरा नहीं है ना?" वह बड़बड़ाया। "ले अब तेरी बारी है!" उसने यह कहते हुए किले की मुंडेर पर एक कवेलू रखना ही चाहा था कि एक बन्दूक छुटी और गोली कवेलू और उसके हाथ को छेदती हुई निकल गई।

जिनलुंग के असभ्य उपालम्भ व गालियाँ प्रादेशिक दस्तों के विजयोल्लास और हँसी की आवाज में दब गईं। लेकिन गम्भीर स्थिति सामने आ चुकी थी। रात हो चुकी थी और प्रादेशिक कमान को यह आदेश मिल चुका था कि

कम्पाउण्ड और किले सवेरा होने तक जीत लिये जाने चाहिएँ।

आक्रमणकारियों ने मोरटार, मशीनगन और रायफल की आग दुश्मन के गढ़ पर धुँआधार बरसानी शुरू कर दी। कठपुतलियों ने भी मुकाबला किया और गोलियों की सनसनाहट व बमों के धमाकों ने कानों के पर्दे फाड़ दिये। दुश्मन के किले के झाँकने के छेदों के आसपास चाँदमारी के निशान पड़े हुए थे। गोलियाँ चलती रहीं और एक के बाद दूसरी कठपुतली ढेर होती गई।

हो ने आत्म-समर्पण करने से इन्कार कर दिया पर यह वह भी खूब जानता था कि किला कुछ देर का और है। अपने पिट्ठू ग्वो से खुफिया तौर पर सलाह-मशवरा करने के बाद हो ने अपने सैनिकों को भाषण दिया। उसने घोषणा की कि शहर से अभी-अभी खबर आई है कि हमारी सहायतार्थ सुबह तक फौजी दस्ते भेजे जा रहे हैं और हमें चाहिए कि तब तक दुश्मन को रोके रहें। यह झूठ था लेकिन उसने अपने हुक्म पर जोर देते हुए कहा कि अगर कोई भी डिगा है तो उसे गोली मार दी जायगी। युद्ध उसी जोश व खरोश और गरमी के साथ जारी रहा।

पश्चिमी मीनार के पास एक इमारत में प्रादेशिक सैनिकों ने बड़ा-सा आग का नलका और हाथ का नल लगा दिया। उन्होंने हौज़ को गैसोलिन से भर दिया और मीनार के ऊपर से नीचे तक वह छिड़क दिया। साथ ही उस पर मोरटार गोलों से प्रहार किया। उसमें से ज्वालाएँ भड़क उठीं और जोर की गरज निकली। फिर वही हश्र पूर्वी मीनार का भी हुआ और वहाँ भी ऐसा ही भयावह ध्वंस हो गया।

उत्तरी चीन के पठारों से सरसराती हुई हवा के जबरदस्त झोके आते और काले भारी बादल हटाते हुए जा रहे थे। मूसलाधार पानी बरस रहा था पर प्रादेशिक सेना शत्रु पर पिली हुई थी। लेकिन जब पानी अपने साथ बड़े-बड़े ओले गिराने लगा तो सेना को आज्ञा दी गई कि वह अन्दर चली जाय।

दा-श्वी क्रोध और व्यग्रता से अपने दाँत पीस रहा था। उसे विश्वास हो गया था कि अब अधिक शत्रु नहीं बचे हैं। यदि उसके अफसर उसे इजाज़त दे देते तो वह अपनी देश-रक्षक सेना के आदमियों को लेकर जाता और सारे

कठपुतली सरदारों को पकड़ लाता। प्रादेशिक कमाण्डर ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और कहा कि वे लोग उस पल्टन के साथ चले जायें जिसे उसने कुछ देर पहले वहाँ जाकर जाँच पड़ताल करने की आज्ञा दी थी।

पानी कह रहा था आज बरस कर फिर कभी न बरसूँगा। दा-श्वी का दस्ता रेंगकर कम्पाउण्ड की दीवार के उत्तर-पूर्वी किनारे पर पहुँच गया, एक सीढ़ी जमाई और पीछे के आँगन में जा कूदा। सतर्कता से रेंगते-सरकते सरकण्डों में होते हुए वे गिरजे तक गये। अब यही एक इमारत ऐसी थी जो साबित-सालिम थी। अब उन्हें अगर आवाज आ रही थी तो मीनार के जले हुए अंगारों की सी-सी और पानी की टप-टप की। उन्हें शक था कि कहीं पिछवाड़े के दरवाजे पर दुश्मन घात लगाये न बैठे हों इसलिए उसे छूने की कोशिश किये बिना ही वे घूमकर आगे वाले ऊँचे दरवाजे पर पहुँचे। किवाड़ चौपट खुले हुए थे। ज्योंही दा-श्वी ने उस अँधियारी देहलीज़ पर कदम रखा है कि वह किसी चीज से ठोकर खाकर गिर पड़ा। वह मशीनगन थी।

लोगों ने अपनी बैटरियाँ जलाईं और हर चीज तलाश की। पिस्तौल रखने के खाली बैग, कारतूसों की पट्टी वगैरह गिरजे और पादरियों के कपड़े रखने के कमरों की दीवारों पर लटक रही थीं। फर्श के बीच में जले हुए कागज की राख के ढेर लगे हुए थे। मेज़-कुर्सियाँ उल्टी पड़ी थीं; दराज़ और उनकी चीज़ें अस्त-व्यस्त पड़ी हुई थीं। पर शत्रु वहाँ से फरार हो चुका था।

× × × ×

हो, उसकी रखेल, ग्वो, जिनलुंग और लगभग बीस और आदमियों ने मीनारों में आग लगाई जाने के पहले ही अपने फरार की योजना बना ली थी। जब प्रादेशिक दस्ते मूसलाधार बारिश से बचने के लिए छिप गये थे तो इन गद्दारों ने कम्पाउण्ड की दीवार में एक सूराख कर लिया था और सबके सब पश्चिम की ओर भाग गये थे। कमल-ताल का चक्कर लगाने के पश्चात् वे शहर-पनाह के पास पहुँचे। जिनलुंग नंगे पैर दीवार पर चढ़कर दूसरी ओर

कूद पड़ा और एक मोटे से रस्से से उसने औरों को भी उतार लिया। फिर उसने उस रस्से का एक सिरा बाहर की मुँडेर पर बाँध दिया और कठपुतलियाँ एक-के-बाद दूसरी उस पर से सरक कर खाईनुमा नदी पर पहुँच गईं। उस कुहरेपूर्ण अँधियारी रात में गौर से देखने पर उन्हें पता चला कि नदी के उस छोर पर कुछ देश-रक्षक सैनिक तैनात हैं। त्सुर के आदमियों को पश्चिमी किनारे पर पहरा देने की जिम्मेदारी दी गई थी ताकि कोई शत्रु वहाँ से न फरार हो सके। और ये सैनिक एक दस्ता बनाये वहाँ पहरा दे रहे थे।

हो की चालाकी ने फौरन काम किया। उसने अपनी बन्दूक खोली और उसके पट्टे से अपनी रखेल को पीटने लगा और जोर-जोर से गालियाँ देने लगा।

"तेरी मा का--। साली ग़द्दार की बच्ची। मैंने आखिर तुझे पकड़ ही लिया—चली चल सीधी।"

जब कठपुतली सरदार खाई के उस पार पहुँचे तो देश-रक्षक सेना के दस्ते के नेता कुदाक मा ने अपनी बन्दूक उनके सामने अड़ा दी। "आज्ञापत्र दिखलाओ!" उसने गरजकर कहा।

"सुसरे आज्ञापत्र की कौन परवाह करता है!" हो चिल्लाया। हम प्रादेशिक मुख्यालय से आ रहे हैं और हमने हो की रखेल को पकड़ लिया है! बारिश से हम पूरी तरह भीग गये हैं और ठिठुर रहे हैं। जल्दी दौड़ो और दो-चार नावें हमें ला दो!"

किसी प्रकार का शक न करते हुए कुदाक और उसके आदमियों ने फौरन तीन छोटी नावें लाकर खड़ी कर दीं। हो ने स्त्री को किनारे की ओर धकेला और अपने साथ एक नाव में घसीटकर उसे बैठा लिया।

"छिनाल की बच्ची!" उसने गालियाँ देते हुए कहा। "क्या अब भी भागने का इरादा कर रही है?"

जब कठपुतली भगोड़े नावों पर सवार हो गये तो हो ने देश-रक्षक सेना वालों को आज्ञा दी कि उसे स्थल की ओर ले चलें। ज्योंही नाविकों ने डाँड चलाये हो स्योव की ओर मुड़ा जो उसकी बाजू में ही बैठा था।

"जरा तुम्हारी रायफल तो दिखाओ," उसने मुस्कराते हुए कहा। उसने हथियार लिया, हाथ से जाँचते हुए उसे तोला और कहा। "अरे भई यह बन्दूक तो बेकार है!" और उसने वह रायफल पानी में फेंक दी।

"यह तुमने किसलिए कर डाला?" स्योव ने उत्तेजित होकर पूछा।

हो खिलखिलाकर हँस पड़ा। "ऐसी पुरानी टूटी-फूटी बन्दूक तुम्हें इस्तेमाल नहीं करनी चाहिए। हमने कुछ बड़ी बढ़िया चीज़ें दुश्मन से छीनी हैं। प्रधान दफ्तर पहुँचकर मैं तुम्हें वास्तव में एक बड़ी उम्दा बन्दूक दूँगा।"

नावें प्रधान द्वीप पर पहुँची और कठपुतली भगोड़े झट निकल-निकल कर किनारे से लगे हुए बाँध पर चढ़ गये।

हम छोटे बेरों वाले गाँव को चल रहे हैं। मैं चार आदमियों को अपना शरीर-रक्षक बनाकर लेजाना चाहता हूँ।

वहाँ कुल पाँच आदमी दस्ते में थे। जब कुदाक और स्योव तथा दो और देश-रक्षक सेना के आदमी कठपुतलियों के साथ चले गये तो पहरे पर सिर्फ एक शख्स वाँग रह गया। वाँग ने देखा कि एक गद्दार पीछे रह गया था और बाँध पर किसी किसान की मंढैया में घुस गया था। क्षण-भर बाद ही एक बूढ़ा लपकता हुआ आया। वह वाँग के पास आया और उसने उसकी बाँह पकड़ ली।

"वह जो सिपाही है हमारे अपने आदमियों जैसा नहीं है।" किसान ने झट उससे कान में कहा। "वह मेरे कपड़े और बिस्तर ही उठाकर ले जारहा है! बा लू में से तो किसी ने आज तक ऐसी हरकत नहीं की!"

वाँग लपका हुआ झोंपड़ी में पहुँचा तो क्या देखता है कि गद्दार चीज़ें चुराकर ले जाने को तैयार है। उसने अपनी पिस्तौल गद्दार के सीने पर रख दी!"

"खबरदार जो शोर मचाया?" उसने चेतावनी दी। "कौन हो तुम लोग? जल्दी बताओ!"

"गोली मत मारो! मैं बताता हूँ! हमारे टोली का सरदार हो है!"

वाँग के रोष का ठिकाना न रहा। वह निराश हो गया, उसने सोचा ऐसे में अकेले उन गद्दारों का पीछा करना निरर्थक है। उसने उस कठपुतली की रायफल

छीन ली, अपनी पिस्तौल किसान को दे दी और कहा वह उस पर वहीं पहरा दे और खुद दौड़ा हुआ बाँध पर खबर करने पहुँचा।

तब तक दा-श्वी और गिरोह को यह पता लग गया कि उस रस्से के ज़रिये दुश्मन शहर-पनाह फाँदकर फरार हो गया है। वे उनके पद-चिन्हों के पीछे-पीछे चलते-चलते त्सुर और उसके देश-रक्षक सैनिकों से मिले, अभी दा-श्वी उन्हें यह बता ही रहा था कि कठपुतली सरदार किस तरह भाग गये कि काँग दौड़ता-हाँपता आया और उसने आकर खबर दी कि हो और उसकी टोली बाँध के सहारे चार देश-रक्षक सैनिकों के साथ पश्चिम की ओर जा रही थी!

त्सुर और दा-श्वी ने झटपट सलाह-मशविरा किया। उन्होंने निश्चय किया कि पानी के ज़रिये वे ज्यादा तेज़ी से पीछा कर सकते हैं। तीस आदमी तीन बड़ी नावों पर लद गये। जब किसान सैनिकों को पता चला कि वे हो का पीछा कर रहे हैं तो उन्होंने बड़े ज़बरदस्त हाथों से डाँड पानी में चलाये और गज़ब की फुर्ती से पानी में लपकते चले गये।

× × × ×

जब देश-रक्षक सैनिकों का 'रक्षक दस्ता' कठपुतलियों की टोली से आगे बढ़ गया तो कुदाक मा को महसूस हुआ कि वे छोटे बेर की तरफ नहीं जा रहे हैं। ज्यों-ज्यों वे आगे चलते गये उसका शक बढ़ता गया। उसने पीछे फिर-कर उन गद्दारों की ओर देखा। उनकी बंदूकें देश-रक्षक सैनिकों की ओर सधी हुई थीं!

धत तेरी की! कुदाक ने सोचा ये तो कमबख्त कठपुतलियाँ हैं! हम ऐसे भी गूंगे क्योंकर बन गये! हमने तो उन्हें किनारे पर लाने के लिए नावें भी भेज दीं। उसे अपने ऊपर ताव आ गया और वह अपनी मूर्खता पर पछताने लगा। लेकिन हम इन्हें जाने नहीं देंगे! मैं भी उन्हें पहचान के रहूँगा......

कुदाक रुक गया। "हम इस रास्ते से नहीं जा सकते!" उसने गद्दारों से कहा। "आगे का हिस्सा दुश्मनों से घिरा हुआ है।"

"तो फिर तुम पहले जाकर देख लो," उन्होंने जवाब दिया।

वह घबरा गया था और देर लगाना चाहता था। उसने उन्हें बतलाने के लिए कहा कि हर ओर घेरे पड़े हुए हैं और वह नावें चलाकर एक टेढ़े-मेढ़े रास्ते से बाँध के ऊपर उन्हें ले गया। उसे उम्मीद थी कि उसका पीछा हो रहा होगा और इस प्रकार धीरे-धीरे चलकर वह पीछा करने वालों को मौका दे रहा था।

अँधेरे में स्योव ने कुछ ग़द्दारों को घूरकर देखा। जब उसने ग्वो और जिनलुंग को पहचाना तो उसका दिल बैठ गया। उसने सोचा यह मोटा-सा जो मेरे पीछे बैठा है और जिसने मेरी बंदूक पानी में फेंक दी थी हो ही होगा! उसे अब पश्चाताप हो रहा था। मुझे उसे मार ही डालना है! चाहे उसके बदले मेरी अपनी जान ही क्यों न चली जाय, वह है भी ऐसे ही समय के लिए। भय और दृढ़ता की दुविधा में पड़ा स्योव चल नहीं पा रहा था, उसके कदम डगमगा रहे थे।

"ज़रा जल्दी कर कुतिया के बच्चे!" हो भौंका और उसने उसे बेदर्दी से आगे धक्का दिया।

बस यह धक्का ही स्योव का अंतिम तिनका था। वह क्रोधित हो गया और अपनी कमर में से दस्ती बम खोलने लगा।

"क्या करता है बे?" हो चौंका।

स्योव बिजली की-सी फुर्ती से घूमा। उसने एक हाथ से उसका गला दबाया और दूसरे से दस्ती बम हो के सीने पर मार दिया। लेकिन वह इतनी हड़बडी में था कि बम की पिन खोलना भूल गया और दस्ती बम न फटा। हो ने झटककर अपने को छुड़ाया और पिस्तौल निकाल ली। बड़े करीब से उसने एक गोली स्योव के सिर में पैवस्त कर दी।......

पूर्ण चन्द्र बदली में से निकलकर अपनी पीली चाँदनी से देहाती क्षेत्रों को नहला रहे थे। लगभग पन्द्रह मिनट तक बड़ी मेहनत से पतवार चलाते हुए देश-रक्षक सैनिक किनारे पर पहुँचे और बाँध पर चढ़ गये। दुश्मन का कहीं नाम-निशान न था।

उस वर्ष अधिक वर्षा न हुई थी; नदी भी नीची थी। कुछ आगे जाकर वह बाँध से कहीं दूर हट गई थी और उसके सूखे स्थल पर ऊँचे मुश्कबेतों के घने भुरुड लगे हुए थे।

"हमें बहुत चौकन्ना रहना है," दा-श्वी ने त्सुर से कहा। "ये सरकण्डे शत्रु के छिपने के लिए बेहतरीन जगह हैं। तीन आदमी स्काउट के लिए आगे भेज दो। बाक़ी हम सब बाँध के इस ढलाव के सहारे चलते रहेंगे।"

बड़ी सावधानी के साथ देश-रक्षक सैनिक आगे बढ़े। कुछ मिनट बाद एक स्काउट लौटकर आया।

"वहाँ आगे चलकर एक लाश पड़ी हुई है।"

"तुमने पहचाना, वह किसकी है?"

"नहीं तो।"

त्सुर और दा-श्वी बाँध के ऊपरे चढ़ गये और दौड़े हुए वहाँ पहुँचे जहाँ दूसरे स्काउट खड़े हुए थे। स्योव एक हाथ में दस्ती बम पकड़े हुए बाहरी ढलाव पर औंधे मुँह पड़ा हुआ था।

"हमने गोली की आवाज़ क्यों नहीं सुनी?" त्सुर ने पूछा।

"हमारे डाँड बहुत ज्यादा आवाज कर रहे होंगे," दा-श्वी बोला। वह झुका और उसने अपना हाथ स्योव की गर्दन पर रखा। "लाश अभी गरम है दूर नहीं गया होगा। चलो जल्दी करो!"

त्सुर ने फिर आगे स्काउट भेज दिये। देश-रक्षक सैनिक उनके पीछे बाँध की अन्दर की तरफ चलते रहे। अचानक सरकण्डों में से एक आवाज़ गूँजी।

"पहचान!"

ज्योंही गोलियों की बौछार उनके सिरों पर से गुज़रीं स्काउट बाँध के नीचे को दुबक गये। झुके-झुके बाकी देश-रक्षक सैनिक दौड़े, अपने को स्काउटों के पीछे खड़ा करके बाँध की दूसरी ओर खड़े अपने शत्रु पर गोलियाँ चलाने लगे। वे मिट्टी के ढेर से बीस गज के फासले पर आमने-सामने थे पर दोनों में से किसी भी पक्ष को क्षति न पहुँची।

"बड़ा बुरा हुआ, हम दस्ती बम एक भी नहीं लाये," दा-श्वी ने शोक प्रगट करते हुए कहा। "इस तरह तो हम अगर रात भर भी लड़ते रहे तो कोई फायदा न होगा!"

उसने त्सुर से राय ली। उन्होंने निश्चय किया कि त्सुर आधे देश-रक्षक सैनिकों को लेकर कठपुतलियों से काफी आगे निकल जाय, बाँध का बाहरी हिस्सा पार करले और दुश्मन पर बगल से हमला करे। ढाल से चिपके-चिपके त्सुर और उसके साथी बाँध के सहारे लपकते हुए बढ़ गये। लेकिन त्सुर बहुत हड़बड़ा गया था और उसने फासले का गलत अन्दाज़ा लगा लिया। एक मिनट से भी कम में वह अपनी सेना को दुश्मन से कोई दस गज़ आगे ले गया। ज्योंही कठपुतलियाँ चौंकी और इस अप्रत्याशित आक्रमण का सामना करने के लिये मुड़ीं कि दा-श्वी ने अपनी टोली को संकेत किया कि वे सामने से हमला करें। पूर्व इसके कि ग़द्दार यह जानें कि उनका क्या किया जा रहा है देश-रक्षक सैनिकों ने उनसे हथियार छीने और उन्हीं की पट्टियों से उन्हें बाँध लिया।

कुदाम मा और बाकी दो आदमी जो जबरन शरीर-रक्षक बनाये गये थे, भिड़न्त में घायल हो गये थे। ग़द्दारों ने अपनी बन्दूकें लेकर अपने हाथ कमर पर बाँध लिये थे। कुदाक चीखा और अपने पैर पटकने लगा।

"हाय! हाय! इनकी मा का—!" वह कुपित हो गरजा। "अभी-अभी उन हरामियों को दो-चार नावें मिल गईं। वे इन लोगों को अपना फरार छिपाने के लिए छोड़ गये। हो, उसकी रखेल, जिनलुंग और ग्वो सबके-सब भाग गये!"

: १८ :

पाँसा पलट गया—ग्रीष्म, १९४५

अगले दिन सवेरे तमाम जापानी कैदी कस्बे के दक्षिणी भाग में स्थित एक विशाल मैदान में एकत्र किये गये। नंगे सिर, नंगे पैर, गंदे मुँह लिये, फटे कपड़े पहने जापानी ऊँकड़ू बैठ गये। वे सिर झुकाये बैठे रहे और कुछ न बोले।

एक तरुण बा लू साबुन, तौलिये, पानी के बर्तन और कुछ छोटे आईने ले आया। कैदी फौरन खड़े हो गये। उन्होंने पहले आईने में अपने को सब तरफ से देखा-भाला। उनके लाल मुँह, सफेद आँखों और संतृप्त चेहरों का प्रतिबिम्ब बड़ा हास्यास्पद था लेकिन जापानियों ने अपने शान्त भाव न बदले। पर हाँ वे हाथ-मुँह धोने में झट जुट गये। फिर उन्हें साफ कपड़े और जूते दिये गये।

"बा लू बड़ा अच्छा !" कैदियों ने कपड़े बदलते हुए कहा। "धन्यवाद ! धन्यवाद !"

देश-रक्षक सैनिक जापानियों को मन्दिर के एक कमरे में ले गये जहाँ उनसे पूछ-ताछ होने वाली थी। वहाँ डीन चेंग ने उन्हें मैत्रीपूर्ण ढंग से अन्दर बुलाया। वह अब प्रादेशिक मुख्यालय का राजनैतिक कमिसार (कमिश्नर) था।

कुछ जापानी थोड़ी टूटी-फूटी चीनी बोल लेते थे; कुछ को लिखना भी आता था इसलिए वह पूछ-ताछ बिना किसी कठिनाई के पूरी हो गई। कैदियों ने बताया कि उन्होंने चार वर्ष से अधिक हुए जब अपने घर छोड़े थे। जब वे पहले-पहल चीन में आये तो उनकी अच्छी गुज़री पर अब तो उन्हें बड़ी मुसीबतें सहनी पड़ रही थीं। यहाँ तक कि उनके खाने में चावल की मात्रा घटकर एक प्याला फी कप हो गई थी। उन्होंने बयान दिया कि जापानी सैनिक तो अपने बड़े अफसरों के सेवक हैं। पुरुषों को पानी भरना, भोजन परोसना और सब प्रकार के छोटे काम अपने बड़े अफसरों की खातिर करने पड़ते हैं। अनुशासन बड़ा कठोर और निर्मम है। जापानी सिपाहियों को घर जाने के सिवाय कोई चिन्ता ही न थी।

जब डीनचेंग ने उनसे उनके परिवारों के बारे में पूछा तो उन्होंने अपनी बीवी-बच्चों की तस्वीरें निकालकर उन्हें दिखाईं। एक कैदी ने जिसका नाम यामामोतो था बताया कि उसके दोनों भाई चीन में मारे गये हैं। उसकी आँखें सजल थीं और उसकी यही इच्छा थी कि वह लौटकर घर चला जाय।

सबसे अधिक वाचाल कैदी जिसका नाम योनेदा था पहले ठठेरा था। उसने कहा मैं एक 'ज़िन्दा दिल इन्सान' हूँ।

"जापानी सेना सब जानता," उसने एक काग़ज के टुकड़े पर बड़ा-सा दायरा बनाकर चबड़-चबड़ किया, "तुम चीन बड़ा, बड़ा!" और बड़े दायरे के पास एक छोटा दायरा खींच दिया। "हमको जापान छोटा-छोटा! तुम बड़ा बड़ा चीन हमको छोटा छोटा जापान ·····" उसने अपने सीने पर मुक्का मारा, आँखें बन्द कीं और नाटकीय ढंग से अपनी कुर्सी में गिर गया।

लोग अपनी हँसी न रोक सके। योनेदा ने जोर के साथ अपने हाथ हिलाये।

"कोई फायदा नहीं, कोई फायदा नहीं। हार गया, हार गया।" उसने कहा कि कस्बे की प्रतिरक्षा के युद्ध में अक्सर जापानियों ने तो अपनी बन्दूकें भी नहीं चलाई थीं।

डीन चेंग ने उन्हें समझाया कि चीनी और जापानी जनता को चाहिए कि वे एकजुट हो जायें और जापानी साम्राज्यवाद को नष्ट कर दें। कैदियों ने अपने सिर हिला दिये। योनेदा ने कहा कि वह उन्मुक्त इलाकों में जापानी युद्ध-विरोधी संस्था में शामिल होना चाहता है। दूसरे कैदियों में से भी अधिकांश ने यही इच्छा प्रकट की। केवल यामामोतो ही एक ऐसा था जो ऐसा करने से डरता था इसलिए कि इससे उसके घर पहुँचने में देरी होने का अन्देशा था। उसने तो उनसे निवेदन किया कि उसे शहर के जापानी सैनिक दस्तों में जाने की आज्ञा दे दी जाय।

कैदियों में एक क़द्दावर किसान सारी पूछ-ताछ तक खामोश रहा। जब उससे पूछा कि क्या करना चाहता है तो उसने घबराकर अपने मोटे होंठ मरोड़े और कहा वह योनेदा के साथ जाना चाहता है। सहसा उसने रंग बदला और

वह उठ खड़ा हुआ। वह दा-श्वी को घूरकर देख रहा था जो अभी दाखिल हुआ था। दा-श्वी ने उसे पहचान लिया। वह उसी जापानी दस्ते का सदस्य था जिसने उसे जापानियों के पहले बड़े 'घेरने' के अभियान में पकड़ कर यन्त्रणाएँ दीं थी।

"मुझे पहचाते हो?" दा-श्वी ने हँसकर पूछा।

जापानी ने घूरना जारी रखा पर कुछ पीछे को हट गया।

"डरो नहीं," दा-श्वी मुस्करा दिया। "हम बा लू अपने कैदियों से भी अच्छा बर्ताव करते हैं। तुमने उस समय मुझे बहुत पीटा था पर मैं यहाँ तुम्हारे साथ ऐसा कोई बर्ताव नहीं करूँगा।"

चीन के पुराने किस्म के अभिवादन की सफल नकल करते हुए, जापानी ने अपने हाथ जोड़े और उसके सामने झुक गया। दा-श्वी को भी असमंजस हुआ पर उसने साधारण तौर से जापानी से हाथ मिलाये।

"उस किस्म की चीज़ को कोई जरूरत नहीं। हम अब एक ही पक्ष के लोग हैं—एक ही कुनबे में भाई-भाई के समान हैं। हमारे दुश्मन जापानी युद्धपति हैं।" डीन चेंग की ओर घूमते हुए उसने उसे सूचना दी कि जापानी व कठपुतली मुर्दों के लिए ताबूत तैयार कर लिये गये हैं।

"आप लोगों में से जो घायल हों वे अस्पताल जा सकते हैं।" डीन चेंग ने क़ैदियों से कहा। "मुर्दों की लाशें शहर भिजवादी जायेंगी। आपको और कोई चीज़ तो नहीं चाहिए?"

तमाम जापानी उठ खड़े हुए और उन्होंने सिर झुकाकर डीन को सलामी दी। यांनेदा को एक निवेदन करना था। उसने कहा, "कृपया सतर्क रहिए, कहीं ऐसा न हो कि हम जापानी सिपाहियों के कपड़ों पर लगा नम्बरों का बिल्ला भूल जायें वरना लाशें नहीं पहचानी जा सकेंगी।" डीन चेंग ने उसकी बात मानते हुए कहा कि वह अपने आदमियों को ज़रूरी हिदायतें कर देगा।

क़ैदियों को बड़ा अच्छा भोजन दिया गया। थामामोतो के अतिरिक्त हरेक ने पेट भरकर खाया। वह तो निरन्तर आहें ही भरता रहा, खाने की ओर तो उसका मन नाम को ही था।

नाश्ते के बाद उन क़ैदियों को जिन्होंने अपने नाम स्वयं पेश किये थे जापानी युद्ध-विरोधी संस्था की स्थानीय शाखा को ले जाया गया। जिले की देश-रक्षक सेना का एक दस्ता यामामोतो को दुश्मन द्वारा नियन्त्रित शहर की सीमा तक ले गया और वहाँ जाकर उसे रिहा कर दिया गया। वह बाँध के सहारे कुछ दूर चला और फिर रुक गया। सिसकियाँ भरते हुए वह आगे-पीछे दौड़ने लगा। अकस्मात् पूर्व इसके कि कोई उसे रोके वह नदी में कूद पड़ा और डूब कर मर गया।

× × × ×

जब हो, जिनलुंग और उसका अमला जापानियों द्वारा कब्ज़ाये हुए शहर में पहुँचे तो ग्वो को शहर के प्रवेश-द्वार के पास वाले एक किले का कमाण्डर बना दिया गया। कोई एक महीने बाद मे को पता चला कि ग्वो और उसके दस्ते के सरदार गुलू में आर्चिड नामक एक लड़की पर अदावत हो गई है। किसी समय आर्चिड ग्राम्य स्त्री-संस्था की जिसे मे ने संगठित किया था, मेम्बर थी। मे उस लड़की को खूब अच्छी तरह जानती थी। अब उसने यह जिम्मेदारी ली कि वह जाकर आर्चिड से अपनी दोस्ती का फायदा उठायेगी और किले पर देश-रक्षक सेना के भावी आक्रमण की नींव डाल देगी। उसने सोचा, और अगर साथ-साथ मैंने जिनलुंग का भी निपटारा कर दिया तो बहुत ही अच्छा!

चूँकि मे शत्रुओं के प्रदेश में घुसकर पहले भी बड़े कारनामे दिखा चुकी थी इसलिए साथियों ने उसका सुझाव मान लिया। लेकिन उन्होंने उसे चेतावनी देदी कि यह उसकी बहुत ही खतरनाक जिम्मेदारी है और उसे चाहिए कि वह बहुत ही सतर्क रहे।

मे को अपनी क्षमता पर पूर्ण विश्वास था। उसने तो अपना पाँच वर्षीय बालक भी साथ ले जाने का निश्चय किया। उस नन्हें गबरू का अभी तक दूध नहीं छूटा था और मा की देखभाल उसके लिए ज़रूरी थी। इसके अलावा मे

ने कहा कि बच्चे वाली औरत को देखकर तो दुश्मन यह अन्दाज़ा लगा ही नहीं सकता कि वह औरत कोई जासूस होगी।

दूसरे दिन शाम को अपना बच्चा और एक पिस्तौल छिपाये वह चल पड़ी। वह एक भारी-भरकम फूलदार बंडी और पाजामा पहने थी जिसमें वह ठेठ ग्रामीण लगती थी जो शहर में किसी नाती से मिलने जा रही होगी। एक मार्ग-दर्शक उसे शहर-पनाह के बाहर किसी गाँव के एक मकान में ले गया। वहाँ एक वयोवृद्धा श्रीमती चेन ने जो मिस चेन की मा थीं जिन्होंने मे को काडरों के स्कूल में पढ़ाया था हृदय से स्वागत किया।

मा चेन एक गर्मदिल वृद्ध महिला थीं जिनके हृदय में क्रांति के लिये अपार उत्साह था। फिर इसके अलावा वह आर्चिड की भी नातिन थीं पर उधर कई महीनों से वह लड़की से न मिली थीं।

आने वाले तीन हफ्तों में मे ने तीन बार मा चेन को शहर की सीमा पर आर्चिड से मुलाकात करने के लिए भेजा। हर बार मे के निर्देशानुसार वृद्ध महिला ने उससे योंही आम किस्म की बातें कीं। जब वह घर लौटती तो आर्चिड का एक-एक शब्द विवरण-सहित वह दुहरा देतीं।

इन मुलाकातों का उद्देश्य यह था कि मे उनसे यह अन्दाज़ा लगा सके कि अगर वह आर्चिड से मिली तो वह उसे धोखा तो नहीं देगी। मा की तीसरी मुलाकात के बाद तक मे को पूरा विश्वास न हुआ।

"अगर आप आर्चिड को यहाँ बुलायें और वह मुझे देख ले तो आपके ख्याल में कोई गड़बड़ तो नहीं होगी?" उसने वृद्धा से पूछा।

"नहीं, नहीं गड़बड़ क्या? मैं समझती हूँ बिल्कुल ठीक रहेगा," मा चेन ने उत्तर दिया। "आर्चिड मेरी भानजी है। यह और बात है कि वह हमारी कोई मदद न करे पर हमें नुक्सान पहुँचाने का तो वह सोच ही नहीं सकती।"

मे ने वह खतरा मोल लेने की ठानी। अगले दिन रात को वृद्ध महिला अपनी भानजी को घर ले आईं। जब आर्चिड की नज़र मे पर पड़ी तो वह चकित हो उसे देखती रह गई।

"अरे, यह तो हमारी चेयरमेन थीं! यहाँ आप क्या कर रही हैं?"

मे हँस दी और उसने आर्चिड को खींचकर काँग पर अपने पास बिठा लिया। हालाँकि वह सब कुछ पहले से जानती थी फिर भी मे उससे उसके परिवार के बारे में पूछने लगी। उसने कहा, "मैंने सुना था तुम्हारी शादी हो गई। कैसे चल रहा है तुम्हारा काम-काज ?"

सवालों ने आर्चिड के दिल को ठेस पहुँचाई। उसने अपनी सारी विपदा मे से कह सुनाई। उसने बताया कि 'घेरने' के अभियान के समय जापानियों ने किस प्रकार उसके मा-बाप का घर जला डाला। उसका परिवार बिल्कुल अनाथ व दरिद्र हो गया और भीख माँगने लगा। अन्त में उसके पिता ने विवश होकर उसका विवाह एक आदमी से कर दिया जो उससे उम्र में दस वर्ष बड़ा था। वह आदमी भला निकला पर विवाह के दो महीने बाद ही जापानियों ने अपने निर्माण-कार्य के लिए उसे पकड़ लिया। उसने कोई ज़रा-सी बात या तो कही या की—वह क्या थी इसका आर्चिड को आज तक पता न चला—और उन्होंने उसे मार डाला। घर का फर्नीचर और सामान पेट के लिए ज़रा-ज़रा करके उसने सारा बेच डाला।......अपने दुखदर्द दूसरों को सुनाने का आर्चिड को बहुत कम मौक़ा मिलता था। जब उसने किस्सा पूरा किया तो उसकी आँखें रोते-रोते लाल हो गई थीं।

"यह सब उन जापानियों के कारण ही हुआ, है ना ?" मे बोली। "जब तक वे चीन से निकाल बाहर न किये जायेंगे यहाँ कोई भी सुख-शान्ति से नहीं रह सकेगा।"

"तुम तो प्रतिकार-आंदोलन की बड़ी सक्रिय कार्यकर्ता थीं ?" मे ने पूछा। "चाहे गढ़े खोदना हों, सड़कें चौड़ी करना हों देश-रक्षक सेना के लिए जूते और कपड़े सीना हो—तुम तो किसी काम में भी पीछे नहीं रहीं। तुम्हारा तो इतिहास बड़ा सम्माननीय है, अब उस पर धब्बा न आने दो!" उसने आग्रह किया।

"अजी मैं तो समझती हूँ—अब मैं बिल्कुल बेकार व निकम्मी हो गई हूँ!" आर्चिड ने जवाब दिया। "पर क्या करूँ ? जापानियो की मुहिम के बाद मेरा अपने लोगों से सम्बन्ध ही टूट गया। मैं समझती थी कि कम्युनिस्ट और

बा लू बड़े भले लोग हैं; लेकिन वे कभी जापानियों को नहीं हरा सकेंगे ! हम किसानों को तो योंही सहना पड़ेगा पिटेंगे भी और रोने न पायेंगे ! पर अभी ही मैंने सुना है कि बा लू ने परकोटे वाले क़स्बे पर क़ब्ज़ा कर लिया है और मेरी आशा पुनर्जीवित हो उठी है !"

मे ने सैनिक व राजनैतिक उथल-पुथल का उससे जिक्र किया। फिर उसने आर्चिड से एक बहुत ही व्यक्तिगत प्रश्न किया।

"दो प्रेमी रखने की क्या तुक है—और वह भी दोनों कठपुतलियाँ ?"

आर्चिड ने आह भरी। "वे मुझसे मिलने आते रहते हैं," उसने उलझन में पड़ते हुए कहा। "आमतौर पर वे शराब में धुत्त होते हैं और झगड़ते हैं। मैं तो उनका सामना करने से घबराती हूँ !......" धीरे-धीरे उसने मे को उसके ग्वो और गुलू से क्या सम्बन्ध हैं और उन सबका विवरण बता दिया।

मे ने उसके सामने एक योजना रखी जिससे उसकी सब कठिनाइयाँ दूर हो सकती थीं। उसे राज़ी करने में बड़ी देर लगी पर अंत में आर्चिड ने कोशिश करने पर सहमति प्रकट की। सबेरे जल्दी ही वह घर लौट गई।

× × × ×

जिनलुंग मामूली वस्त्र वाले दस्ते का सरदार था और उस पद पर रह कर जिस क्रूर योग्ता का उसने सबूत दिया था उससे वह अपने जापानी और कठपुतली आक़ाओं की नज़र में बहुत ऊँचा उठ गया था। हालाँकि एक बार किसी औरत ही के पीछे ग्वो ने उसको गोली मारदी थी पर अब हो के बीच बचाव की बदौलत दोनों की गाढ़ी छनने लगी थी। जिस दिन आर्चिड मे से मिलने गई थी उसके दूसरे दिन लिनलुंग ग्वो के साथ ठहरने के लिए उसके किले में आया।

गुलू ने जब देखा कि उसका सथी अपने दोस्त के साथ व्यस्त है तो वह झटपट आर्चिड के यहाँ पहुँच गया। उसने देखा कि वह दीवार की ओर मुँह

किये काँग पर निश्चल पड़ी हुई है जो भी वह उस समय सो नहीं रही थी पर जब उसने उसे हल्की-सी थपथपाहट से जगाया तो वह कुछ बोली नहीं। गुलू ने अपना कान अमेठा और सिर खुजाया।

"भला मैंने तुम्हें नाराज़ करने की क्या बात कही है?" उसने दुखी भाव से पूछा। "तुम मुझसे बात क्यों नहीं करतीं?"

आर्चिड उठकर बैठ गई। "मेरे बारे में ऐसी गलत धारणा तुम न बनाओ," उसने सजल नेत्रों से प्रार्थना की, "पर कमाण्डर ग्वो कहता है कि अगर उसने मुझे तुम्हारे साथ सोते हुए फिर देख लिया तो वह मुझे जान से मार डालेगा! मुझ पर दया करो और फौरन यहाँ से चले जाओ।"

"उसकी तो दादी की—!" गुलू ने दाँत पीस कर कहा। "साला अपने आपको समझता क्या है? हम-तुम क्या करते हैं इससे उसको क्या मतलब?"

"वह तो सही है," आर्चिड ने आँखें पोछते हुए कहा। "मै भली लड़की हूँ, कोई छिनाल या रण्डी नहीं! वह कोई मेरा मालिक नहीं; फिर भला मैं जिससे चाहूँ उससे प्रेम क्यों न करूँ?"

गुलू ने झट उसकी बाँह पकड़ली!" तुम किससे प्रेम करती हो?"

"हुम! वह पाजी!" आर्चिड ने क्रोध से होंठ फुलाते हुए कहा। "मैंने ऐसा कोचरे मुँह वाला तो कभी देखा ही नहीं!"

"मेरे बारे में क्या कहती हो?" गुलू ने भूखी नज़रों से उसे देखकर कहा।

"तुम?" उसने उसे अधखुले नेत्रों के कोने से देखा और सोचा। "मैं समझती हूँ तुम बिना तार वाली छतरी हो—तुम तूफान के समय नहीं टिक सकते। हमें अब विदा हो जाना चाहिए वरना कहीं मैं तुम्हारे पीछे पागल न होजाऊँ!"

"क्या तुम चाहती हो मैं तुम्हारे प्रेम के लिए अपनी जान देदूँ?" गुलू ने उत्तेजित हो उसे अपनी बाहों में दबाते हुए कहा।

आर्चिड खिलखिलाई और उसने अपनी उँगली का पोरुआ उसके माथे पर दबाया। "मुझे तो ज्यादा दुख इस बात का है कि अपने साथ तुम मुझे भी मार डालोगे!

गुलू ने परमानंद प्राप्त कर आँखें मूँद लीं। "जब तक तू मुझसे प्यार करेगी मेरी जान तब तक जो कहेगी वह मैं तेरे लिए कर दूँगा!"

आर्चिड उसके बाहुपाश से अलग हो गई। "अगर तुम वास्तव में मुझे चाहते हो तो बा लू से सम्बन्ध स्थापित करो और ग्वो को मार डालो। जब हम अपने ही लोगों में चले जायेंगे तो फिर ईमानदार चीनियों की-सी जिन्दगी बिता सकेंगे। मैं तुमसे शादी भी कर लूँगी और अगर तुममें यह सब करने का दम-खम नहीं है तो फिर मुझसे आज से हमेशा के लिए अलग हो जाओ! फिर मैं चाहे कुछ ही क्यों न करूँ उससे तुम्हें कोई वास्ता न रहेगा! बस अभी जवाब देदो और हम-तुम हमेशा के लिए अलग!"

"अलगाव की बात न करो," गुलू ने आग्रह किया। "मैं बड़े दिनों से जापानी चावल नहीं हजम कर पाता हूँ। बताओ बा लू से सम्बन्ध कैसे बनायें?"

"तुम जो कह रहे हो बिल्कुल ठीक कह रहे हो," आर्चिड ने रुखाई से उसकी ओर देखकर कहा। "पर मुझे क्या खबर तुम बेवकूफ ही बना रहे हो? कसम खाओ!"

"तुम—तुम—!" गुलू ने झल्लाकर पाँव जमीन पर मारे लेकिन उसने शपथ ले ली। "ऊपर आकाश, नीचे धरती और सच्चा दिल मध्य में है! अगर मैं तुमसे झूठ बोल रहा हूँ तो भगवान करे मेरे गोली लग जाय।"

तब आर्चिड ने उसे बताया कि वह पिछली रात कहाँ गई थी। एक घण्टे के बाद वह गुलू को किले के बाहर मा चेन के घर ले गई। मे को फिर से देखकर गुलू ने शर्म से गर्दन नीची कर ली।

"पिछले कुछ वर्ष तक मैंने बड़ी नीचता का कार्य किया है," उसने मन्द स्वर में कहा। "अगर बा लू इतने उदार हैं कि मुझे क्षमा कर दें तो मैं अब लौटकर सत्पथ पर आना चाहूँगा।"

"शत्रु का साथ देना बड़ा भयंकर अपराध है," मे ने उत्तर दिया। "पर यदि तुम प्रतिकार-आन्दोलन में कठिन परिश्रम करके अपनी सत्शीलता और पश्चाताप सिद्ध कर देते हो तो बा लू तुम्हें ले लेंगे।" उसने उसे अपनी उन विजयों की खबर दी जो वे सैनिक व राजनैतिक मोरचों पर प्राप्त करते आये हैं।

"तब तो बा लू उस ज़माने से जब मैं छापेमारों के साथ था कहीं आगे बढ़ आये हैं," गुलू ने आश्चर्य से कहा। "कठपुतली का काम और क्या दे सकता है। मुझे पेट भर खाने को नहीं मिलता; यहाँ तक कि हमारी ये सस्ती वर्दियाँ भी अब दो साल में बदली गई हैं। इसकी मा का—! वह हरामी ग्वो हमें अपने पैरों तले रोंदता है! मैं कोई शेखी नहीं मारता—पर अगर बा लू मुझे मदद दें तो मैं उस कुतिया के बच्चे को हुक्मी मार दूँगा! तुम देखना मारता हूँ या नहीं!"

मे ने सुझाव दिया कि वह कुछ और कठपुतियों को जो ऐसा ही महसूस करते हैं संगठित करे और किले में बगावत करने की तैयारी करे। जब उसकी पूरी तैयारियाँ हो जायँ तो वह उससे आकर फिर मिल ले। वह कठपुतलियों की बग़ावत और बा लू के आक्रमण का दिन व समय एक ही तय कर देगी।

"हम ग़द्दार जिनलुंग को भी पकड़ना चाहते हैं," मे ने कहा। "इसलिए तुम अपना जाल तैयार रखो और जब भी घात लगे उस सड़ी मछली को फँसा लो!"

× × × ×

गुलू किले को वापस गया और उसने योजना अपने मित्र जान को बताई। जान ने कई बार यह प्रकट किया था कि कठपुतलियों के उस जीवन से असंतुष्ट है। जैसी कि गूलू को आशा थी जान उसकी मदद करने को पूरी तरह तैयार हो गया। वे बातें कर ही रहे थे कि जिनलुंग नशे में चूर और हँसी-दिल्लगी की ग़रज़ से वहाँ आया। उसने बड़ा आग्रह किया कि गुलू उसके और ग्वो के साथ मिलकर पिछवाड़े के आँगन में बैठकर शराब पिये। अनेच्छा से गुलू उनकी पार्टी में जा बैठा।

अभी धीरे-धीरे पीते हुए उन्हें आधा घण्टा हुआ था कि ग्वो को आर्चिड का ख्याल आया। उसने अपने शरीर-रक्षक को उसे लाने के लिए भेजा पर उसने यह कहते हुए कि उसकी तबियत ठीक नहीं है उससे पीछा छुड़ाया।

ग्वो ने बड़ी गन्दी निगाह गुलू पर डाली।

"मैं इधर कुछ दिनों से काम में व्यस्त था," वह रूखी हँसी हँसा। मैं जानता था कि कोई-न-कोई मेरी पीठ पीछे वहाँ चोरी-छिपे पहुँचेगा। क्या खबर साला हरामी क्या कर आया है?"

गुलू ने अपनी नाक शराब के कप में ही रखी और यह प्रकट किया कि उसने कुछ सुना ही नहीं। जिनलुंग को तो जूता उल्टा करने में आनन्द आता था, उसने आग पर घी डाल दिया।

"मेरे ख्याल से ग्वो, यार तुम्हारी शराब कुछ ज्यादा कड़वी होगी!" उसने उपहास करते हुए कहा।

ग्वो का चेहरा लाल हो गया। "कड़वी, मेरी गुदा!" वह मेज़ ठोककर गरजा। "मैं उसे बताऊँगा कड़वाहट किस तरह खाते हैं!"

गुलू के हृदय में भय और घृणा का संग्राम छिड़ गया। माथे से पसीना पोंछते हुए वह ज़रा हँसा। "लड़की का दिल बड़ा पेचीदा होता है। कोई बता ही नहीं सकता वह अब क्या कर बैठे!"

ग्वो ने अपना पैमाना मेज पर दे मारा। "अब भोले बनने की कोशिश मत करो!" उसने गुलू की नाक के सामने उँगली बढ़ाते हुए गरज मचाई। "तुम समझते हो मुझे मालूम नहीं?"

"मैं कुछ बनने की कोशिश नहीं कर रहा," गुलू ने प्रत्युत्तर दिया। "अगर वह यहाँ नहीं आना चाहती तो इसमें मेरा क्या दोष है?"

एक दस्ते के सरदार का कम्पनी के कमाण्डर से इस गुस्ताखी से बातें करना ग्वो के लिए असह्य हो गया। वह कूदकर खड़ा हो गया और उसने गुलू के मुँह पर कसकर तमाँचा मारा और उसकी अठारह पुश्तों तक को गालियाँ दीं। जिनलुंग बात बढ़ाना नहीं चाहता था। उसने शराब में मस्त ग्वो को खींचकर पास वाले कमरे में ले लिया।

गुलू ने भी आज खूब पी थी। ग्वो के तमाँचों और गालियों के दर्द को महसूस करता हुआ वह लड़खड़ाता हुआ चला गया। "अरे साला बड़ा हेकड़बाज़ है!" उसने अपने आपसे कहा।" कोई तुझसे कुछ कहता नहीं है. इसीलिए ना?

खैर बहुत जल्द तू भी देखेगा कि तेरी हेकड़ी निकल जायगी। देखें के दिन और तेरा सिर धड़ पर बाकी रहता है!" वह लड़खड़ाता हुआ आगे के आँगन की ओर गया।

लेकिन वह कुछ ज़ोर-ज़ोर से बड़बड़ाता हुआ जा रहा था और बारीक विभाजन के दूसरी ओर जिनलुंग ने उसकी ये बातें सुन ली थीं। जिनलुंग ने फौरन ताड़ लिया कि ये बातें शराबी झगड़ेबाज़ की नहीं बल्कि बड़ी गंभीर हैं। वह फौरन गुलू के पीछे गया और गुलू के नीचे कमरे की खुली हुई खिड़की के बाहर जाकर खड़ा हो गया।

"अब मैं ज्यादा दिन नहीं ठहर सकता," उसने गुलू को क्रोधित हो जान से कहते हुए सुना। "मैं कल पहला काम समय का निर्धारण करूँगा। जब तक उस कुतिया के बच्चे को न खतम कर दूँगा मुझे चैन न आयगा!"

जान अपने पंखे से मच्छर उड़ा रहा था। "इतने जोर से न कहो!" उसने चेतावनी दी। "अगर यह बात खुल गई तो हँसी-ठट्ठा नहीं होगा!"

जिनलुंग को और कुछ सुनने की जरूरत न थी। वह ग्वो से मिलने के लिए गया।

उसी रात सुबह के एक बजे कठपुतली सिपाही उस कमरे में घुस आये जहाँ गुलू और जान सो रहे थे। दोनों के हाथ पीठ पर बाँध दिये और उन्हें किले के कम्पाउण्ड के पिछवाड़े एक बड़े कमरे में ले जाकर बन्द कर दिया।

उन्होंने पहले जान से पूछा पर उसने किसी बात का इक़बाल न किया। जिनलुंग ने हुक्म दिया कि उसे बल्ली से ठोंक कर सूली पर चढ़ा दिया जाय।

गुलू यह समझ गया कि उसका भेद उन पर खुल गया है उसने चोर की दाढ़ी में तिनका वाली कहावत चरितार्थ करते हुए सिर हिलाकर कहा। "मैं कुछ नहीं जानता!" वह बड़बड़ाया। "मैं—मैं—मैं पिये हुए था! मुझे पता नहीं मैंने क्या कहा!"

ग्वो ने अपनी रायफल उठाई और उसका घोड़ा चढ़ा दिया। "अच्छा यह हरामी भी नहीं बतायगा।........."

कठपुतली क़माण्डर को आँख मारते हुए जिनलुंग ने उसका हाथ रोक

दिया। "डरो नहीं गुलू प्यारे!" उसने मैत्रीपूर्ण स्वर में कहा। "बा लू की नीति बड़ी उदार है पर हमारी भी उससे कुछ कम नहीं है। ईमानदारी से सच-सच बता दो, तुम बच जाओगे। तुम्हें तो मालूम है जापानी मुख्यालय में मेरा काफी असर है। असल में यों कहना चाहिए कि लोगों की मौत और जिन्दगी मेरे ही हाथ में है। मैं तुम्हें जिंदा रहने का मौका दे रहा हूँ, इसलिए बोल दो जल्दी से!"

गुलू का सिर उसकी छाती पर झुका हुआ था। पसीने की बूँदें उसकी भौंवों से टप-टप गिर रही थीं। पूरी तरह निरुत्साह व हताश हो वह गिर पड़ा, उसकी आँखों से आँसुओं की नदी प्रवाहित हो गई।

"बस मेरी जान बख्श दो," गुलू ने बच्चे की भाँति बिलखते हुए कहा, "और मैं सब कुछ बता दूँगा!"

"मैं तुम्हारे प्राणदान की गारण्टी देता हूँ।"

गुलू ने सारा किस्सा उलट दिया। बल्ले से लटका हुआ जान निराश हो रो पड़ा।

जब ग्वो ने सुना कि किस प्रकार आर्चिड और गुलू ने उसकी हत्या करने का षड़यन्त्र रचा था तो उसके चेचक के दाग सुर्ख हो गये। भयंकर प्रकोप से उसकी ओर घूरकर वह झुके हुए और काँपते हुए गुलू की ओर बढ़ा। मौत सामने देखकर गुलू की पुतलियाँ फिरने लगीं। ग्वो की टाँगें पकड़ कर उसने रो कर प्राणों की भिक्षा माँगी। ग्वो ने पाशविकता से उसे लात मारी और वह लुढ़क गया, फिर बड़े ज़ोर-ज़ोर से उसके बन्दूक के कुन्दे मारे और मारता ही रहा.........

× × × ×

पूर्वी आकाश जब सफेद हो रहा था तो कठपुतलियों के एक दस्ते ने आर्चिड को गिरफ्तार कर लिया। साथ ही कुछ आदमियों का गिरोह लेकर जिनलुंग मा चेन के घर पहुँचा और उसे घेर लिया। वृद्ध महिला अभी ही

उठी थी और मे काँग पर बैठी अपने बच्चे को दूध पिला रही थी कि दरवाज़े पर दस्तक हुई।

"मैं जाकर देखती हूँ कौन है," मा चेन ने कहा, उन्हें कोई गुमान तक न था। उन्होंने आँगन के किवाड़ खोले। आदमियों के एक गिरोह ने उसे एक तरफ धकेल दिया और सीधे आँगन में घुस आये।

खिड़की में से झाँक कर मे ने देखा कि जिनलुंग कमरे की ओर बढ़ा चला आ रहा है। उसका दिल धड़कने लगा। उसने बच्चे को काँग पर लिटा दिया और तकिये के नीचे से अपनी पिस्तौल निकाल ली। नंगे पैर भागकर वह दरवाज़े के पीछे जा छिपी। क्षण भर बाद पिस्तौल हाथ में लिये जिनलुंग दाखिल हुआ। दाँत कटकटाते हुए मे फुर्ती से उसके पीछे गई और पिस्तौल का घोड़ा खींच दिया। गोली व्यर्थ गई। जिनलुंग फुर्ती से आवाज़ की तरफ घूमा और पिस्तौल के लिए झपटा लेकिन मे ने उसे कसकर पकड़ रखा था। जिनलुंग ज़ोर के साथ खींचने लगा तो मे ने ज़ोर से उसकी तर्जनी काट ली। उसने फौरन अपना हाथ खींच लिया, काटने की पीड़ा और ऐंठन से उसके शरीर में झरझरी फैल गई। इतने में कई कठपुतलियाँ आन घुसीं; और मे हार गई।

पीड़ा में जिनलुंग ने अपना दाहिना हाथ हिलाया और हत्यारे की नाईं मे की ओर घूरा। सहसा उसने काँग में से एक ढीला कवेलू निकाला और मे के सिर पर दे मारा। वह बेहोश हो फर्श पर गिर पड़ी।

इस सारे शोर-गुल और उत्तेजना ने काँग पर पड़े बालक को डरा दिया। वह रोने लगा।

"मर साले हरामी पिल्ले!" जिनलुंग ने उसे खींचते हुए कहा। उसने बच्चे को ज़ोर से फर्श पर पटक दिया और एक कठपुतली की संगीन माँगी।

"यह ज़रा-सा बच्चा क्या समझता है?" उस आदमी ने रुखाई से कहा। "छोड़ो इसे यहीं।"

अब तो भयभीत बालक ज़ोर-ज़ोर से बिलखने लगा; अब रोते-रोते उसके आँसू भी सूख गये थे। जब मा चेन अपने बँधे पाँवों से चलकर झुकीं और बच्चे को उठाकर झुलाने लगीं तो जिनलुंग ने अपना प्रकोप उन पर उतारा।

"यह बुढ़िया डायन भी इस षड्यन्त्र में होगी ! इसे भी ले चलो !"

जब कठपुतलियाँ बूढ़ी महिला को बाँध रही थीं कि मे को होश आया। "मा चेन का इससे कोई वास्ता नहीं !" वह चीखी। "या तो तुम उन्हें छोड़ दो या मैं यहाँ से न टलूँगी चाहे मैं यहाँ मर ही क्यों न जाऊँ !"

जिनलुंग ने अधीर हो बच्चे को बूढ़ी औरत से छीना और उसे एक कठपुतली पर फेंक मारा। उसने मा चेन को लात मारकर नीचे गिरा दिया और अमानुषिकता से उस पर पैरों से भारी प्रहार किये। फिर टोली शहर को लौटने लगी।

मे के हाथ एक लम्बे रस्से द्वारा उसके कूल्हों से बाँध दिये गये और रस्से का एक सिरा एक कठपुतली के हाथ में था जो उसके पीछे चल रहा था। रायफलें और संगीनें लिये लोग उसके दोनों बाजू चल रहे थे। आधा रास्ता चलने के बाद मे ने एक बूढ़े आदमी को देखा जो सड़क के किनारे कुएँ से पानी भर रहा था। उसने कहा वह प्यासी है और उसे पानी पिलाया जाय। कठपुतली रस्सा पकड़े हुए उसे कुएँ पर ले गया। मे ने उसके हाथों से झटका देकर रस्सा छुड़ाया और कुएँ में कूद पड़ी।

किन्तु उसका आत्मघात विफल हुआ क्योंकि कुएँ में पानी उथला था और वह पैर के बल उसमें कूदी थी। उस कठपुतली को जिसने मे को हाथ से निकलने दिया गालियाँ देते हुए जिनलुंग ने बूढ़े आदमी को हुक्म दिया कि वह कुएँ में उतरकर उसे बाहर निकाल लाये। कुछ मिनट बाद बूढ़े को ऊपर खींच लिया गया।

"वह ऊपर आने से इंकार करती है," वह बोला।

अपने बायें हाथ में पिस्तौल सम्हाले जिनलुंग ने उसे कुएँ की ओर करते हुए कहा। "निकल आ वहाँ से कुलटा, वर्ना मैं तुझे मार डालूँगा।

"कुत्ते, ग़द्दार !" मे चिल्लाई। "मार क्यों नहीं देता ? तेरे हाथों पड़ने की बजाय मैं मरना बेहतर समझती हूँ। मार डाल मुझे, मैं अपने को धन्य समझूँगी !"

जिनलुंग ने निशाना लगाया और दो बार गोली चलाई। पहली गोली

उसके दाहिने कंधे में लगी और उसकी हँसली टूट गई। दूसरी गोली उसके कान के किनारे पर लगी और खून से सारा कुआँ लाल हो गया। लेकिन ठण्डे, निर्मल पानी ने जल्दी ही उसका खून बन्द कर दिया और मे अपनी इच्छा के विरुद्ध जिंदा रह गई।

अन्त में जिनलुंग को दो कठपुतलियाँ कुएँ में उतारनी पड़ीं। वे लातें मारती हुई, नोचती-खसोटती हुई मे को बाहर निकाल लाये और आखिरकार उसे शहर ले गये।

: १६ :

चौतरफा हमला—हेमन्त, १६४५

मे के पकड़े जाने के कुछ दिन बाद, चीन के सर्वश्रेष्ठ मित्र—सोवियतसंघ जापान के विरुद्ध युद्ध घोषित करके बा लू की सेनाओं से मिला और बहुत ही थोड़े समय में जापानियों को चीनी उत्तर-पूर्वी प्रान्तों में परास्त कर दिया। लेकिन समर्पण के बाद भी जापानी और कठपुतलियों ने शहर छोड़ने से इन्कार किया और हथियार देने से भी नाहीं की।

जिस शहर में मे क़ैद थी वह उसी काउण्टी में था जिसकी कम्युनिस्ट पार्टी का सेक्रेटरी कल्लू त्से था। उसने काउण्टी के तमाम मुख्य काडरों की एक बैठक बुलाई और उनसे कहा कि अगर दुश्मन अपने हथियार देने से इन्कार करे तो उसका सफाया कर दो। कल्लू ने उन्हें बताया कि प्रधान सेनापति चू तेह ने अभी-अभी एक आज्ञा जारी की है जिसके अनुसार सारी देश-रक्षक सेना की इकाइयों को स्थायी सेना में मिला दिया गया है। प्रत्येक शहर पर क़ब्जा कर लेना चाहिए और अपनी काउण्टी में उन्हें आक्रमण की फौरन तैयारी करनी चाहिए।

दा-श्वी अपनी देश-रक्षक सेना में रद्दोबदल करने के लिए अपने जिले को लौटा। उसे आशा थी कि वे जल्द ही शहर जीत लेंगे क्योंकि उसने सुना था कि मे पकड़ ली गई है और वह उसकी ओर से बहुत चिंतित व व्यग्र था। साथ ही वह उस शहर को चीन में दुश्मनों का अन्तिम गढ़ समझता था। उसने सोचा एक बार उसे जीत लिया जाय तो फिर सब तरफ शान्ति हो जायगी और लोग चैन की वंशी बजायेंगे।

जब उसने काउण्टी की बैठक में लिया गया निर्णय सुनाया तो काडर खुशी से झूमने लगे। "बहुत अच्छे। अब तो बस खतम के करीब ही हैं। अभी सफाया किये देते हैं उनका!...... हैं! अब तो ये बचे-खुचे जापानी ओस की बूँदों के समान हैं धूप निकलते ही उड़ जायेंगे।......बड़ा शानदार निर्णय है। हम अब स्थायी सेना में आ गये।"

यहाँ तक कि कुदाक मा जो कुछ देर पहले अपनी पत्नी से मिलने घर जा रहा था इस समय कुछ न बोला और अन्य देश-रक्षक सैनिकों की भाँति उसने भी अपना सामान बाँध लिया। "मैं अब एक स्थायी बा लू हूँ," उसने हँसकर रू से कहा। "अब जो किसी ने मुझे 'कुदाक' कहा तो एक दूँगा खोपड़े पर उसके।"

हर आदमी छीनी हुई तीन बन्दूकें पीठ पर लटकाये देश-रक्षक सेना ने काउण्टी मुख्यालय की ओर प्रस्थान किया। त्सुर और दा-श्वी अधिक दस्ते एकत्र करने के लिए वहीं रह गये। वह काम भी बड़ा आसान निकला। लगान और ब्याज-घटती कानून के फलस्वरूप सारे किसान फल-फूल रहे थे और जापान-विरोधी भाव उनके दिल में उबल रहे थे। चौबीस घण्टे के पहले ही नई जिला-देश-रक्षक सेना में १५० स्वयंसेवक भर्ती हो गये। सवेरे से पहले वे दा-श्वी और त्सुर के साथ पूर्वनिश्चित स्थान की ओर चले।

× × × ×

दोपहर होने तक उन्होंने शहर को घेर लिया और शहर से तीन मील

दूर पश्चिम में एक छोटे गाँव में पहुँचे। लोगों ने सुबह से कुछ न खाया था और अब उन्हें भूख लग रही थी। वह प्रदेश बिल्कुल खाली था; त्सुर और दा-श्वी ने देश-रक्षक सैनिकों से कहा कि वे तब तक छिपे रहें जब तक कोई प्रबन्ध न हो जाय।

जब वे खेतों में चलते हुए एक गाँव की ओर गये तो उन्हें एक बूढ़ा किसान और एक लड़का मिला जो बैठे हुए हैंगी की मरम्मत कर रहे थे। सशस्त्र नवागंतुकों को देखते ही किसानों ने अपने औजार जमा किये और ताबड़तोड़ गाँव की दिशा में बढ़ने लगे।

"जाओ नहीं, बूढ़े बाबा," त्सुर ने उन्हें पुकारा। "हम तुमसे बात करना चाहते हैं।"

किसान ने सुनी-अनसुनी की और अपनी रफ्तार तेज कर दी। त्सुर ने दौड़कर उसका पीछा किया।

"डरो नहीं," त्सुर ने कहा। "हम बा लू हैं। हम तो तुमसे सिर्फ यह पूछना चाहते हैं कि तुम्हारा ग्राम्य शासन का दफ्तर कहाँ है।"

'बा लू' के शब्द सुनते ही किसान और लड़का रुक गये। "हमारे यहाँ ऐसा कोई दफ्तर नहीं है," बूढ़े ने उन पर शक करते हुए कहा।

"कोई और ऐसा है जो तुम्हारे गाँव की देखभाल करता है?" त्सुर ने धैर्य के साथ पूछा।

"हाँ है तो पर अभी वह घर नहीं है। वह खेत पर काम करने गया है।" कहते हुए लड़का और किसान आगे जाने लगे।

"तुम दोनों को ऐसी जल्दी काहे की है? भागते क्यों हो?" त्सुर उलझन में पड़ गया।

बूढ़े ने बड़बड़ाकर कहा कि उसे दोपहर को जाकर सोना है। दा-श्वी को याद आया कि इस गाँव में लिन नाम का एक प्रगतिशील व्यक्ति है जो एक बार भूमिगत काम-काज के सिलसिले में उससे मिलने आया था। उसने लिन के घर का पता पूछा। जब दा-श्वी ने बहुत कुछ समझाया और कहा वह क्यों उससे मिलना चाहता है और वह कैसे उससे मिला था तब जाकर कहीं लड़के

की भँवें सीधी हुईं। वह दा-श्वी और त्सुर को लिन के मकान पर ले गया।

जब वे पहुँचे तो लिन खाना खा रहा था पर उनके स्वागतार्थ उसने सब छोड़ दिया। "आपने खाना भी खाया या नहीं?" उसने गर्मजोशी से पूछा। "यहाँ क्या कर रहे हैं?"

"हम जानना चाहते हैं कि इस गाँव में क्या स्थिति है," दा-श्वी ने कहा।

"बड़े मज़े में कट रही है यहाँ तो। दुशमन कभी छटे-छमासे आ जाता है वर्ना सब ठीक है," लिन ने उत्तर दिया।

लड़का खुशी से खिलखिला पड़ा! "आप तो बा लू ही हैं! मैं समझा हमसे झूठ बोल रहे थे!" वह तीव्र गति से कम्पाउण्ड के बाहर दौड़ा हुआ चला गया।

"क्या आपके ख्याल में यह गाँव १५० आदमियों के खाने का प्रबंध कर सकता है?" दा-श्वी ने पूछा।

"निश्चित रूप से!" लिन ने हँसकर कहा। "इसका पूछना ही बेकार है।"

त्सुर और दा-श्वी देश-रक्षक सेना को गाँव में ले गये। उस लड़के ने पहले ही गाँव भर में खबर फूँक दी थी कि बा लू आ गये है और किसान मुस्कराते हुए उन लोगो के इर्द-गिर्द इकट्ठे हो गये। अब तो वह बूढ़ा किसान जो पहले सशंक था, फूला न समाया और उसने दा-श्वी से आग्रह किया कि वह उसी के घर भोजन करे।

"क्या हमसे तुम्हें डर नहीं लगता, चाचा?" त्सुर ने मजाक किया।

"अरे भाई, हमें बा लू से कोई डर नहीं हम तो जापानी और कठपुतलियों से डरते हैं उन्होने कई बार यहाँ आकर कहा, वे बा लू हैं और हमें बेवकूफ बना कर चले गये। अब हमें किसी पर भी विश्वास करने से डरते हैं। वे सड़े-पड़े खटमल साले बड़े नीच हैं।"

गाँव के आस-पास संतरी तैनात कर दिये गये और लिन ने देश-रक्षक सेना वालों को अनेक किसानों के घर बता दिये। हरके परिवार वालों ने अपने

यहाँ का सबसे बढ़िया खाना पकाया और गेहूँ का आटा जो छिपा रखा था वह भी निकाल लिया। लोग उन योद्धाओं की अच्छी तरह आव-भगत न कर सके।

"हम तो उसी दिन की बाट जोह रहे हैं जब आप लोग विजयी होकर यहाँ काफी दिनो के लिए आयेंगे।" किसानो ने कहा।

"आप सब लोग कितने भले हैं," देश-रक्षक सेना वालों ने मुस्कराकर कहा। "हम आपके आशीर्वाद के पात्र बनने की कोशिश करेंगे।"

अभी वे लोग भोजन कर ही रहे थे कि एक मुखबिर ने काउण्टी मुख्यालय से आकर खबर दी। देश-रक्षक सेना अब पहली कम्पनी थी और त्सुर उसका कप्तान बना दिया गया था। दा-श्वी पहला लैफ्टिनेण्ट और राजनैतिक कमिसार नियुक्त हो गया था। रात पड़ने तक प्रत्येक कम्पनी को शहर का मुहासरा करके शत्रु के गढ़ पर आक्रमण करना था। पहली कम्पनी का लक्ष्य सफेद घोड़ा गाँव था जो कठपुतलियो से भरे हुए किले से सुरक्षित था। किले पर अधिकार करने के अलावा कम्पनी को आदेश था कि सारे यातायात के साधन काट दें ताकि सफेद घोड़े से होकर कोई शत्रु शहर से भागने का प्रयत्न न कर पाये। मित्रों का चिन्ह था—'एक भी दुश्मन नहीं भाग पायगा!'

शाम होने तक पहली कम्पनी शहर से दो मील दूर पश्चिम में स्थित सफेद घोड़े में पहुँची। गाँव के आसपास कोई परकोटा तो नहीं था पर वह नदी के जो बयाँग झील को पानी देती थी एक द्वीप पर स्थित था। बाँध से पत्थर का एक बड़ा-सा पुल ही एक मात्र स्थल-मार्ग था। पुल के कोने के सामने ही किला बना हुआ था। बाँध और नदी दोनों सीधी पाओतिंग की ओर जाती थीं जो केन्द्रीय होपी प्रान्त में सबसे बड़ा नगर था। जिस किसी के भी हाथ में सफेद घोड़ा होता वह पाओतिंग और आक्रमणाधीन शहर के मध्य के जल व स्थल के मार्गों पर नियन्त्रण रख सकते थे।

कम्पनी को ५०-५० आदमियों की तीन पल्टनों में विभाजित कर दिया गया। पहली पल्टन जो सफेद घोड़े के सामने बाँध पर बने मकानों में तैनात हुई थी, उसे पुल और किले के दरवाज़े का नियन्त्रण करना था। दूसरी पल्टन बाँध के सहारे पूर्व की ओर सफेद घोड़े और शहर के मध्य में एक स्थान

पर पहुँची जहाँ उसे शहर से भागने की कोशिश करने वाले शत्रुओं के विरुद्ध सामना करना था। तीसरी पल्टन और कम्पनी की कमान पश्चिम में कुछ और दूर जाकर नदी के किनारे स्थित एक छोटे-से गाँवड़े में रुकी और किसी भी विपत्ति का सामना करने के लिए उसने पन्द्रह नावें तैयार कीं।

कम्पनी के प्रत्येक सदस्य ने पहचान के लिए अपनी बाजू पर एक सफेद रूमाल बाँध लिया। आज्ञा-पत्र था 'हमला करो!' जब सब स्थानों पर आदमी नियुक्त कर दिये गये तो कुछ हल्की-हल्की फुहार पड़ने लगीं।

× × × ×

घण्टों दौड़-धूप करने के बाद त्चुर और दा-श्वी को अब कुछ सुस्ताने का मौका मिला था, थकावट से चूर वे एक छोटी-सी झोंपड़ी में विश्राम करने लगे। त्चुर कुहनी पर सिर रखकर काँग पर लेट गया, पिस्तौल की थैली उसकी गर्दन से लटकती रही। जरा-सी देर में उसे नींद आ गई और खुले हुए मुँह से तालमय खुर्राटे आने लगे। दा-श्वी काँग की दूसरी ओर दीवार से पीठ टिकाये बैठ गया। वह भी बुरी तरह थक गया था और उसकी आँखें दर्द कर रही थीं।

फुहार ने अब वर्षा का रूप धारण कर लिया था। काग़ज़ की खिड़कियों में से हवा के झोंके अन्दर आकर लैम्प की लौ को झकझोर रहे थे और वह नाच रही थी। नींद ही में दा-श्वी को मे और बच्चे के बारे में चिन्ता हुई। जब वे सब फिर आ मिलेंगे तो कितना सुखी जीवन होगा हमारा!

फिर उसे ख्याल आया कि हो जैसा निर्दयी हत्यारा शहर के मुहासरे के पहले ही अपने क़ैदियों को मार न डाले! दा-श्वी उठकर सीधा बैठ गया और उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा। और अगर वह उससे फिर कभी न मिल पाया तो! उसकी नींद उच्चाट हो चुकी थी, वह परेशान बैठा वर्षा की टप-टप और उसकी उत्तरोत्तर बढ़ती हुई गर्जन सुनने लगा। खिड़कियों में लगा हुआ काग़ज़ पूरी तरह भीग गया था। उसने लैम्प की बत्ती बड़ी करदी और

उस छोटी-सी कोठरी में आगे-पीछे टहलने लगा। उसका विचलित मस्तिष्क उन आदमियों की ओर गया जो बाहर खुले मैदान में पड़ाव किये हुए थे। दा-श्वी ने त्सुर को गहरी नींद में जगा दिया।

"बड़े ज़ोर की बारिश हो रही है," उसने कहा, "और वे सब नये रंगरूट हैं। चलो ज़रा चलकर उन्हें देख आयें।"

"कैसे चलें ?" त्सुर बुदबुदाया, नींद उसकी आँखों में भरी हुई थी।

दा-श्वी हँस दिया। "क्या अब तुम्हें मैं कोई मोटर लाकर दूँ ? पैदल चलेंगे और क्या! यही वक़्त तो उनके उत्साह देखने का है!"

"अच्छा!" त्सुर ने क़ाँग से हड़बड़ाकर उठते हुए कहा। "आओ चलें!"

उनमें से हरेक अपने साथ एक मुख़बिर लिये पल्टनों की जाँच के लिए निकले। त्सुर उन लोगों को देखने गया जो पुल की तरफ़ घेरा डाले हुए थे। और दा-श्वी बाँध के सहारे चल दिया।

रात साँय-साँय कर रही थी, वातावरण घने अंधकार में विलीन था और पानी इस भयंकर गति से गिर रहा था कि आँखें खुली रखना मुहाल हो रहा था। दा-श्वी और उसका मुखबिर बाँध पर चलते-चलते निरन्तर वहाँ की फिसलवाँ कीचड़ में गिरते जाते थे। अन्त में उन्होंने अपने जूते उतार लिये और नंगे पैर चलने लगे लेकिन काँटों और गोखरूओं ने उन्हें वैसे भी न चलने दिया।

"कमिसार साहब, क्या यह बेहतर न होगा कि हम बारिश से बच जायें ?" मुखबिर ने आशा के साथ सुझाव दिया। वह अभी चौदह साल का ही था।

"अब तो हम करीब-करीब वहाँ पहुँच ही गये हैं," दा-श्वी ने उत्तर दिया। "मैं देखना चाहता हूँ, वे चौकन्ने भी हैं या नहीं।"

कुछ दूर और इसी तरह गिरते-पड़ते चलने के बाद सहसा अँधेरे में एक आवाज़ गूँजी।

"पहचान!"

"हम हैं!" तरुण मुखबिर ने चीख मारकर कहा।

सन्तरी की बन्दूक का घोड़ा बजा। "वहीं खड़े रहो! अगर हिले तो गोली मार दूँगा!"

दा-श्वी ने फौरन पहचान बताई; सन्तरी ने कहा आगे बढ़ जाओ। उन्होंने देखा कि वह पानी में बुरी तरह भीग गया था पर खजूर के एक दरख्त के नीचे उँकड़ूँ बैठा था। वह एक चौड़ा-सा हैट ओढ़े हुए था और उसकी बन्दूक उसके शरीर से चिपकी हुई थी ताकि पानी से बच सके।

"कमिसार साहब! आप यहाँ क्या कर रहे हैं?" ज्योंही उसने दा-श्वी को पहचाना वह हड़बड़ाकर खड़ा हो गया।

"मैं तुम्हीं लोगों को देखने आया हूँ," दा-श्वी ने मुस्कराकर कहा। "क्या बारिश बहुत सता रही है?"

"हाँ!" सन्तरी बोला। जब आप ही को इसका डर नहीं है तो हमें भला क्या तकलीफ हो सकती है?"

उनकी आवाज़ों की गूँज सुनते ही पल्टन का सरदार दू कीचड़ में पैर मारता हुआ चला आया। "कमिसार!" उसने चकित होकर कहा। "इस तूफान में आप क्यों निकल आये?"

"मुझे लोगों की तरफ से परेशानी हुई," दा-श्वी ने कहा। "ऐसी मूसलाधार बारिश हो रही है और वे अभी-अभी देश-रक्षक सेना में भर्ती हुए हैं।"

"वे तो बड़े मज़े में हैं," दू ने हँसकर कहा। "उनकी नैतिक अवस्था ग़ज़ब की है!"

"मैं उनसे मिलना चाहता हूँ," दा-श्वी ने कहा।

दू उसे बाँध के उस ढलाव पर ले गया जहाँ हवा की ओर पीठ किये वे सब उँकड़ूँ बैठे हुए थे। वहाँ से कुछ दूर आगे की ओर जापानियों द्वारा नियंत्रित नगर की दिशा में मुँह किये दो संतरी तैनात थे।

जब दा-श्वी वहाँ पहुँचा तो तमाम देश-रक्षक खड़े हो गये और उन्होंने बड़ी विनम्रता से विरोध करते हुए कहा कि ऐसे खराब मौसम में वह वहाँ क्यों गया था। उनमें अधिकतर पार्टी-मेम्बर थे; उन्हें इतना चौकन्ना देखकर दा-श्वी को बड़ा गर्व हुआ।

"तुम लोग तो वास्तव में बिल्कुल ठीक हो!" उसने उनकी सराहना करते हुए कहा। "तुम्हें बारिश से तकलीफ या उलझन नहीं होती?"

"हम लोग किसान हैं," उन्होंने एक साथ कहा। "बारिश तो हमें पसंद है!"

"यह तो हमारे लिए अच्छी चीज है। हमें फलने-फूलने में मदद देती है!" दू ने हँसी से कहा। अन्य लोग भी हँस दिये।

"बारिश की सबसे बड़ी खूबी यह है," एक देश-रक्षक सैनिक ने मज़ाक किया, "कि जब कभी भी प्यास लगे और बारिश हो रही हो तो मुँह खोल दो और पानी मिल गया।"

"और अगर उसकी आप चाय बनायें तो उसका 'अलौकिक' स्वाद व सुगन्ध मन मोह लेता है!" दू ने कहा।

जब दा-श्वी ने दू को देखा तो हृदय मसोस कर रह गया, श्वाँग से कितना मिलता-जुलता था। वह ज़रूरी बातों पर आ गया। "देखना कहीं बीमार न पड़ जाना," उसने किसान सिपाहियों से आग्रह किया। "अगर बीमार पड़ गये तो यह काम तुम लोग न कर पाओगे।"

"नहीं, नहीं बारिश के हम आदी हैं," उन्होंने उसे आश्वासन दिया। "हमारी हड्डियाँ इतनी नर्म व नाजुक नहीं हैं कि यह ज़रा-सी बौछार हमें कष्ट देने लगे!"

"यह बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है," उसने उन्हें याद दिलाया। "अगर दुश्मन के दस्ते शहर से पाओतिंग भागना चाहेंगे तो वे यहीं से गुज़रेंगे। पौ फटते समय खास तौर पर ख्याल रखना कि आँख न लग जाय। पहले तो यह कि तुम्हें जुकाम हो जायगा और तुम बीमार पड़ जाओगे और दूसरे वही ऐसा समय है जब उनके जाने की सबसे ज्यादा सम्भावना है। अब बारिश कुछ थम रही है, तुम उठ जाओ और आस-पास कुछ घूम लो!"

"हमारी चिंता न करें आप," एक देश-रक्षक सैनिक ने कहा। "हम जानते हैं, क्या करें और क्या न करें; हम ठीक रहेंगे ऐसे ही!"

जब दा-श्वी और मुखबिर लौटने लगे तो उन लोगों ने एक रक्षक

उनके साथ भेजना चाहा ।

"उसकी कोई ज़रूरत नहीं है," दाश्वी ने हँसकर कहा । "हम बिना किसी दिक्कत के चले जायेंगे ।"

× × × ×

जब वह अपनी कोठरी पर पहुँचा तो त्सुर बैठा हुआ बड़ी बेचैनी से उसकी प्रतीक्षा कर रहा था ।

"मैं तो समझा अब तुम लौटोगे ही नहीं !" त्सुर ने गुस्से से कहा । "सारा मामला गड़बड़ हो गया ! मेंग अपनी पल्टन लेकर, जिसे पुल पर पहरा देना था, सफेद घोड़े चला गया है।"

दा-श्वी कुपित हो उठा । "लेकिन अगर दुश्मन अब पुल का पीछेवाला सिरा रोक देता है तो हमारे लोग निकल भी न पायेंगे !"

"पहले तो वह अपनी पल्टन अंदर ले गया और अब अकेला वहाँ से चला आ रहा है !" त्सुर ने गरम होकर कहा ।

"यह तुमने पहले ही क्यों न बता दिया ! उसे यहाँ बुलाओ !"

एक देश-रक्षक सैनिक भेजा गया जो कुछ मिनट बाद मेंग को लेकर वापस आया । पल्टन के सरदार के गीले कपड़े उसके शरीर से चिपके हुए थे ।

"तुम्हें क्या काम दिया गया था ?" दा-श्वी ने गरजकर पूछा ।

"पुल की रखवाली करने का," मेंग ने दीठता से कहा ।

"फिर तुम अपने लोगों को गाँव क्यों ले गये ? और जब तुमने वही कर लिया था तो अब उनके बगैर तुम क्यों आ गये ?"

मेंग घबड़ाहट में तुतलाने लगा । "मैं-रिपोर्ट देने के लिए !......क्या तुमने नहीं कहा था कि दुश्मन के सिर काट डालना ? लोगों ने कहा, हम गाँव में चलकर उन जोकों को कस कर क्यों न घेर लें ? उनका खाना और पानी रोक दें और फिर वे बिल्कुल असमर्थ हो जायेंगे ! मैंने—मैंने—स्थल का ख्याल ही न किया !"

"क्या कहने हैं !" त्सुर ने जाँघ पर हाथ मारते हुए आहिस्ता से कहा

"जब दुश्मन अपनी तरफ का पुल का सिरा बन्द कर देगा तो फिर कौन जोंक होगा ?"

"माके—! यह तो ठीक कहते हो!" मेंग ने निराश हो कहा।

"तो अब करना क्या चाहते हो ?" त्सुर ने मालूम किया।

मेंग सिर खुजाने लगा। फिर उसका चेहरा दमक उठा। "उन्हें तैराकर क्यों न ले आया जाय ?"

"इतना फासला वे कैसे तैरकर पार करेंगे ?" त्सुर गरजा। "फिर उनकी बंदूकों का नाश हो जायगा। और जो लोग तैरना नहीं जानते उनका क्या होगा ? तुमने तो वास्तव में बड़ी खूबी से सारी गड़बड़ की है!"

मेंग ने अवाक् हो अपनी रायफल का कुंदा जमीन पर मारा। और सिर लटकाये हुए वह उदास हो उँकड़ूँ बैठ गया। कई मिनट तक भारी निस्तब्धता रही। अंत में दा-श्वी ने कहा।

"मेंग, सुबह होने के पहले-पहले फिर गाँव में जाओ और अपनी पल्टन वालों को जाकर देख लो। अगर कोई भी नुक्सान हुआ तो उसकी जिम्मेदारी तुम पर होगी।"

त्सुर ने अपना हाथ हिलाया। "जल्दी चले जाओ और उन्हें लौटा लाओ! और अगर तुमसे यह न बन सके तो वापस मत आना!"

"अगर तुम्हारे पहुँचने तक सवेरा हो जाय तो," दा-श्वी झट बोल उठा, "उन्हें लाने की कोशिश मत करना!"

मेंग उठ खड़ा हुआ और उसने सिर हिला दिया। बिना कुछ कहे वह चला गया।

"हमें चाहिए कि परस्पर विरोधी आज्ञाएँ नहीं देनी चाहिएँ," जब पल्टन का सरदार चला गया तो दा-श्वी ने कहा। "मैंने उससे कहा कि वह अपने आदमियों के साथ रह जाय फिर तुमने कह दिया, उन्हें वापस ले आय। और अगर दुश्मनों को उनका पता लग गया तो ?"

"ठीक कहते हो," त्सुर ने पछताकर कहा। "अब तो करीब-करीब सवेरा होने ही वाला है। क्या करें हम ?"

"कुछ देर इन्तेज़ार करें। मुमकिन है वह वहाँ जा ही न सके।"

जब वे बातें कर रहे थे तो खिड़की का कागज सफेद होता जा रहा था। फिर उषाकाल की नीरवता रायफलों की गोलियों की गूँज से विचलित हो गई। त्सुर लपककर बाहर आया और उसने एक आदमी पता लगाने के लिए भेजा। ज़रा देर में वह आदमी लिये मेंग को ठीक अपने पीछे लिये दौड़ा हुआ वापस आ गया।

"अगर तुम मुझे मर जाने का हुक्म दो, तो मैं चला जाऊँगा!" मेंग ने पीड़ा अनुभव करते हुए कहा। उसके बड़े स्ट्रा हैट में गोली से छेद हो गया था। क्रोध में उसने अपना हैट उतारा और उसे काँग पर फेंक दिया।

"क्या हुआ? बताओ!" दा-श्वी ने हुक्म दिया।

"मैं पुल की तरफ जा रहा था कि किसी ने अपनी टार्च इस ओर घुमाई। उसमें शायद मेरी रायफल चमकी होगी इसलिए उन्होंने गोलियाँ बरसाईं। फिर मैं बाँध के पीछे छिप गया, इतने में तुम्हारा भेजा हुआ आदमी मुझे बुलाने पहुँच गया।......अब मैं अपनी पल्टन के पास नहीं जा सकता और वह लौट नहीं सकती। अब मैं क्या करूँ?" मेंग ने कराहते हुए कहा।

"खैर तुमने कोशिश तो की। घबराओ नहीं हम इसका तोड़ सोचेंगे। "दा-श्वी ने उसे तसल्ली दी। वह भागते त्सुर की ओर मुड़ा। "हमारे पास पन्द्रह नावें हैं, इनमें से कुछ में उन्हें क्यों न ले आयें?"

त्सुर हँस पड़ा और उसने अपने ही माथे पर तमाचा मारा। "अरे हाँ! वही क्यों न करें?"

"मुझे नावें ले जाने दो, "मेंग ने प्रार्थना की।

"हम सब साथ चलेंगे," त्सुर ने हँसकर कहा।

देश-रक्षक सेना के एक दस्ते को पुल के प्रवेश पर क़ब्जा करने की जिम्मेदारी दी गई। अगर कोई गोलीबार की आवाज सुनें तो दस्ते को चाहिए कि वे फौरन किले की मीनार पर जवाबी गोलियाँ चलायें। त्सुर, दा-श्वी, मेंग और पाँच आदमी दूसरे सब एक-एक नाव पर सवार हो गये। वे चुपचाप नाव खेहते हुए द्वीप के पीछे पहुँचे और उतर गये।

उस छोटे-से गाँव में सेना को ढूँढने में कुछ देर न लगी। पल्टन किले के सामने बने किसानों के मकानों में पड़ाव डाले हुए थी। उन मकानों की दीवारों में गोलियाँ चलाने के लिए छेद कर लिये गये थे।

देश-रक्षक सैनिकों ने बड़े हर्ष व उल्लास से अपने नेताओं को सलामी दी। "हम सब तैयार हैं," किसान सिपाहियों ने कहा। "कब शुरू करें?"

"घबराओ नहीं," त्वुर ने मुस्कराकर कहा। "पहले हम उनसे समर्पण करने के लिए कहेंगे!"

दा-श्वी और मेंग को लेकर वह एक मकान पर गया जो किले से सिर्फ खाई द्वारा अलग था।

"मुझे कोशिश करने दो," मेंग बोला। वह एक सन्दूक पर चढ़ गया और खिड़की में से चिल्लाया। "ओ! कठपुतली देशवासियो······"

एक गोली गूँजी और मेंग वहीं ढेर होकर गिर पड़ा। "मेंग, मेंग!" त्वुर चिल्लाया। वह और दा-श्वी पल्टन के सरदार की ओर दौड़े।

किले में से रायफल की गोलियों की बौछार उस छोटी खिड़की में आई। गालियाँ देते हुए देश-रक्षक सेना की पल्टन ने भी सीसे का सोता किले की ओर बहा दिया। अपने आदेशानुसार, गोलियों की आवाज सुनते ही पुल के स्थलीय भाग पर तैनात जत्थे ने भी गोलियाँ छोड़ दीं।

गोलियाँ चारों ओर दनदना रही थीं कि इतने में मेंग ने आँखें खोलीं और उठ बैठा। "क्या हुआ?"

दा-श्वी ने तड़के के सूर्य के प्रकाश में उसे देखा और चैन की साँस ली। "तुम्हें गोली दीवार की किसी दरार में से मारी गई होगी। तुम्हारे माथे पर बहुत बड़ी खरोंच है!"

"मा के—!" मेंग मुस्कराया। बस यही है ना!"

कुछ देर के लिए गोलीबार थम गया। त्वुर उसी सन्दूक पर चढ़ा, पर उसने खिड़की से अपना सिर ज़रा एक ओर को बचा लिया।

"चलाओ गोली!" वह चिल्लाया। "बा लू तुम्हारे मुकाबले के लिए तैयार है!"

"साथियो," मीनार में से किसी ने पुकारा, "मैं अभी ही नींद से जागा हूँ। मेरे दस्ते के एक सरदार ने मुझ से पूछे बगैर ही गोलियाँ चलाने का हुक्म दे दिया। माफ कीजियेगा इस गलती के लिए!"

आवाज़ दा-श्वी को जानी-पहचानी प्रतीत हुई। पहले तो वह समझ न सका, किसकी है पर जल्दी ही उसने नतीजा निकाल लिया कि वह ग्वो है। ग्वो अभी परसों ही शहर की कठपुतली दुर्ग-रक्षक सेना के कमाण्डर हो की विशेष आज्ञा पर इस किले में आया था। उसके काम में आशा के विपरीत कुछ अधिक समय लग गया। रात को वापस जाने का उसे साहस न हुआ इसलिए उसने रात वहीं बिताने की ठानी। और अब वा लू के घेरे में वह फँस गया।

विगत कुछ वर्षों में ग्वो वा लू के हाथों बार-बार परास्त हुआ था; इसी लिए वह जन-सैनिकों से डरने और उनका आदर करने लगा था। पर था वह बड़ा धूर्त; जब उसने यह पूछा तो उसका स्वर स्पष्ट बता रहा था कि वह क्या चाहता था: "आप किस इकाई में हैं साथियो?"

"हम चौबीसवीं रेजिमेण्ट की कम्पनी में हैं," त्सुर ने उत्तर दिया।

"आप बताइए तो सही क्या कहना चाहते हैं?"

"क्या तुमने सुना नहीं कि जापानियों ने हथियार डाल दिये हैं?" त्सुर ने पूछा। "हम जानते हैं कि तुम कठपुतलियों ने अपनी जानें दुश्मनों के हाथों स्वेच्छा से नहीं बेची हैं। तुममें से कुछ के पास तो जीविका कमाने का कोई और साधन न था; कुछ को जबरदस्ती इस काम पर लगाया गया है। पर अब जापानियों ने हथियार डाल दिये हैं। तुम्हारा अब कौन पुरसानेहाल होगा? हम सब चीनी हैं—डाल दो अपने हथियार!"

"हमें मालूम है कि जापानियों ने समर्पण कर दिया है," ग्वो ने किले की मुँडेर के पीछे से जवाब दिया, "और हम भी अपने हथियार देने को तैयार हैं। लेकिन कमाण्डर हो ने हमें आज्ञा दी है कि हमें अपने हथियार च्यांग काई-शेक को देने चाहिएँ! सैनिक का पहला कर्त्तव्य है आज्ञा पालन; मेरे लिए कोई चारा नहीं है!"

"क्या मतलब है उसका—च्यांग काई-शेक को अपनी बन्दूकें लौटायेंगे!"

क्रोधित पल्टन ने गुर्राकर कहा। "इस हरामी को गोली क्यों न मार दी जाय?"

"गोली मत चलाना!" त्सुर चिल्लाया। वह फिर मीनार वालों से सम्बोधित हुआ। "अपनी बन्दूकें च्यांग काई-शेक को क्यों लौटाते हो? जापानियों के विरुद्ध दस वर्ष से लड़ रहे हो और तुमने कुछ भी न देखा? कौन-से चीनियों ने स्वाधीनता के लिए रक्त बहाया है? 'शांकर जैक' शेन्चवाँ में मठ के पीछे जा छिपा था! और जो उसने आज्ञा दी सो यह कि कम्युनिस्टों को मारो, बा लू से मुकाबला करो और वह खुद दूसरी तरफ जापानियों से साँठ-गाँठ कर रहा था! क्या तुम उस जैसे कुतिया के प्रतिक्रियावादी पिल्ले को अपनी बन्दूकें लौटाना चाहते?"

किले से कोई उत्तर न आया।

"अब बोलो ना, क्या कहते हो?" त्सुर गरजा।

"जरा खुले में आकर बात करो कामरेड," ग्वो ने निवेदन किया।

देश-रक्षक सेना के सेनापतियों ने सलाह-मशविरा किया। वे कठपुतलियों को यह समझने का मौका नहीं देना चाहते थे कि वे डरते हैं लेकिन साथ ही गोली खाकर मर जाने की भी उन्हें इच्छा न थी।

"मैं आपको गारण्टी देता हूँ कि आप पर गोली नहीं चलाई जायगी," ग्वो ने चिल्लाकर कहा।

"और अगर तुमने वायदा-खिलाफी की तो?" दा-श्वी ने पूछा।

ग्वो ने शपथ ली। "तो फिर मैं हरामी दादे का पोता हूँगा!"

कम्पाउण्ड का दरवाजा चौपट खोलकर त्सुर, दा-श्वी और मेंग दीवार और किले की खाई के बीच में सकरे स्थलीय टुकड़े पर आ गये।

× × × ×

उन्होंने ऊपर किले पर जो देखा तो ग्वो का चेचक-भरा चेहरा उन्हें साफ दिखाई दिया; वह मीनार की छत की मुँडेर पर अपनी बाहें रखे खड़ा था। जब उन्होंने देखा कि वह खाली हाथ है तो काडरों ने भी अपनी पिस्तौलें

वापस रख लीं। ग्वो ने त्सुर और दा-श्वी को उस दिन से, जब आठ वर्ष पहले वह केक माँगने अपने डाकुओं के साथ शैंज्या आया था, फिर कभी न देखा था। वे दोनों बा लू उस समय ऐसे ही तरुण नादान छोकरे थे। और इस अर्से में वे इतने बदल गये थे कि ग्वो उन्हें पहचान न सका।

"कामरेड, आपका क्या ओहदा है?" उनकी सफेद वर्दियों को झाँक कर ग्वो ने पूछा।

"यह हमारे राजनीतिक कमिसार हैं," त्सुर ने दा-श्वी की ओर संकेत करते हुए कहा। "और मैं एक कप्तान हूँ।"

"आपका शुभ नाम?"

"मुझे त्सुर कहते हैं।"

"मुझे तो आप लोगों के आने का गुमान भी न था कप्तान साहब। लीजिए इस वक्त तो मेरे पास ये ही हैं," ग्वो ने कहा और महँगे सिगरेटों का एक पैकेट उनके क़दमों पर गिरा दिया।

मेंग ने सिगरेट उठा लिये। एक दक्ष घुमाव के साथ उसने उन्हें ऊपर छत पर फेंक दिया। "बहुत-बहुत धन्यावाद," उसने कहा, "लेकिन हम बा लू उतनी बढ़िया सिगरेट नहीं पीते हैं।"

दा-श्वी ने पूरे विवरण के साथ बताया कि कठपुतली सेनाएँ क्यों साफ करदी गईं, और बा लू की कैदियों के प्रति किस प्रकार की उदार नीति है। जब वह यह समझा रहा था तो कठपुतली सिपाही छत पर सुनने के लिए एकत्र हो गये।

जब दा-श्वी ने अपना भाषण समाप्त किया तो त्सुर अधीर हो बोल उठा, "हाँ तो, तुम नीचे उतर रहे हो या नहीं?"

ग्वो फिर अपने अफसराना अंदाज पर उतर आया। "जरा इस पर मुझे सोच-विचार कर लेने दीजिए," उसने बड़ी शान-शौकत के साथ कहा। "मैं आज शाम तक आपको जवाब दे दूँगा।"

"अगर आना है तो इसी वक्त उतर आओ," दा-श्वी ने कहा। "हमारे पास इन्तजार के लिए समय नहीं है।"

कल्लू त्से ने पहले से ही निउर को उस गाँव की स्त्रियों के संगठन के लिए भेज दिया था। अब निउर के पीछे-पीछे सफेद घोड़े के कठपुतलियों की एक-एक पत्नी और माँयें जत्थों में आकर किले के पास जमा हो गईं। किले के नीचे से औरतों ने अपने मर्दों को पुकारा।

"नीचे क्यों नहीं आ जाते बेटा?" एक दस्ते के सरदार की मा ने पुकारकर कहा। "बा लू ने तुम्हें घेर लिया है पर वे बड़ी नरमदिली का बर्ताव कर रहे हैं! वहाँ मरने के लिये क्यों रुकते हो? आओ घर चलो!"

"ऐसे बेवकूफ क्यों बने जाते हो!" एक पत्नी ने अपने पति से कहा। "तुम्हारी नौकरी की खातिर वर्षों से हमें गद्दार का लक़ब मिला हुआ है। अब जाकर हमें उससे छुटकारा पाने का मौका मिला है और तुम अब भी हिचकिचा रहे हो। जब भी यहाँ गोली चली तुम्हारे सारे परिवार वालों ने कलेजा थाम लिया, यही डर हुआ कि तुम मर गये होगे। क्या तुम जिन्दगी भर कठपुतली ही बने रहना चाहते हो; अगर तुम न आये तो मैं यहीं तुम्हारे सामने अपनी जान दे दूँगी।"

रोते-बिलखते-स्त्रियों ने अपने सम्बधियों को पुकारा और कठपुतलियों का दिल भर आया। निउर अपनी व्यक्तिगत प्रार्थना लेकर आगे बढ़ी।

"हम सब चीनी हैं," उसने साफ आवाज में कहा, "और बा लू नहीं चाहते कि तुम अपनी जानें व्यर्थ गँवा दो। अब सिर्फ दो ही रास्ते तुम्हारे लिए खुले हुए हैं—अपने हथियार लौटा दो और अपने सम्बंधियों के पास लौट आओ या अपनी मौत को बुला लो और अपने बेटों व पोतों के लिए गद्दारी का धब्बा बन जाओ! कौन-सा रास्ता पसन्द करते हो?"

कठपुतलियों ने अपने मस्तक नवाये और आह भरी। कुछ तो रो पड़े। बहुत सों ने, जिनमें वह दस्ते का सरदार भी था जिसकी मा ने सबसे पहले उसे बुलाया था, ग्वो की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा।

"कमाण्डर साहब, हम क्या करें?"

ग्वो हिचकिचाया। उसके सिपाही आपस में काना-फूसी करने लगे। नीचे बा लू और स्त्रियों की चिल्ल-पों एक क्षण के लिए भी न रुकती थी। उसे

भय लगा कि यदि सभी ने समर्पण कर दिया और केवल वही बचा रहा तो न जाने क्या हो जाय, इसलिए उसने समर्पण की ठानी।

"हम अपनी चीजें इकट्ठी किये लेते हैं!" वह चिल्लाया।

सहसा शहर और सफेद घोड़े के बीच गोलियों की आवाजें सुनाई पड़ीं। ग्वो के आदमी जो उसे किले से सुरक्षित ले जाने के लिए आ रहे थे दू के अन्तर्गत देश-रक्षक पल्टन से भिड़ गये। ग्वो ने ताबड़तोड़ अपना निर्णय बदल दिया।

"माफ करना साथियो!" उसने मीनार के ऊपर से गरजकर कहा। "सहायक दस्ते आ रहे हैं। अब हम समर्पण नहीं कर सकते!"

"क्यों नहीं कर सकते?" स्त्रियाँ और वा लू चीखे। "फौरन नीचे आ जाओ!"

ग्वो ने मुण्डेर से अपना सिर पीछे हटा लिया। नहीं, नहीं वह चिलाया। "मैं इसकी जिम्मेदारी नहीं ले सकता कि······"

लेकिन वाक्य पूरा करने का उसे मौका ही न मिला कि उसी के आदमी उस पर टूट पड़े। उन्होंने उसकी बन्दूक छीन ली और अपने हथियार ले लेकर वे किले से नीचे उतरने लगे।

उधर दू की पल्टन ने शत्रु के सहायक दस्तों को सफलतापूर्वक शहर की ओर मार भगाया। ग्वो और कठपुतलियों ने गर्दन झुकाकर समर्पण कर दिया।

उस दिन १००० देश-रक्षक सैनिकों ने शहर के आस-पास के सभी गढ़ों को जीत लिया। शाम को काउण्टी कमान ने कम्पनी को बड़े पत्थर वाले गाँव की ओर जो अभी-अभी उन्मुक्त किया गया था, बढ़ जाने दिया। यह गाँव भी बाँध पर ही था और लक्ष्य के और भी समीप था। यहीं से कम्पनी को उस आक्रमण में शामिल होना था जो उस रात किया जाने वाला था।

× × × ×

बड़े पत्थर में एहसानमन्द किसानों ने देश-रक्षक सेना वालों को धूम-

धाम से भोज्य दिया। लोगों ने गाँव वालों से शहर की स्थिति के बारे में पूछा। उन्हें एक बूढ़ा मिला जो अभी-अभी वहाँ से लौटकर आया था। दा-श्वी और त्सुर ने उससे प्रश्न किये।

बूढ़े ने उन्हें बताया कि कठपुतलियों ने अपनी मामूली बन्दूकों से ३८ जापानी रायफलें बदल लीं थीं। खुद बादशाहों की तरह जीवन बिता रहे थे और जापानियों को गन्दे-से-गन्दे काम पर लगा रखा था। अब कठपुतले पावलिंग को भाग जाने की तैयारी कर रहे थे।

"तुम्हें यह कैसे मालूम हुआ?" दा-श्वी ने पूछा।

बूढ़े किसान ने बताया "फू नदी में जो शहर की उत्तरी दीवार से कुछ फासले पर थी, कठपुतलियों ने चार बड़े तिजारती जहाज़ बाँध रखे थे। इसके अलावा वे अपना अनाज, अपने फ़र यहाँ तक कि अपने कपड़े भी बेच रहे हैं। अगर इसका मतलब यह नहीं है कि वे जा रहे हैं तो फिर और क्या है?" बूढ़े ने विजयभाव से पूछा।

विस्तृत पूछ-ताछ से पता चला कि उत्तरी दरवाजे पर एक पल्टन तैनात है जिसके पास कोई मशीनगन नहीं है। रात के समय वहाँ सिर्फ एक ही सन्तरी पहरा देता है।

"क्या तुमने कभी एक बा लू स्त्री के बारे में सुना है जो कुछ दिन पहले पकड़ी गई थी?"

"वही ना जिसके साथ एक मोटा-ताज़ा बच्चा था?"

"हाँ, हाँ, वही, वही! क्या हुआ उसका?" दा-श्वी का दिल धड़कने लगा।

"मैंने सुना था कि अभी उस दिन उससे जिरह की गई थी," बूढ़े ने कहा, "लेकिन उसके बाद क्या हुआ यह मुझे नहीं मालूम।"

जो भी दा-श्वी को फिक्र थी और वह परेशान था पर उस समय उसने अपने दिमाग़ को मे और बालक की ओर जाने से रोक लिया। वह तो फिर अपने काम में लग गया और भावी आक्रमण की तैयारी के लिए त्सुर का हाथ काटने लगा।

: २० :

विजय—हेमन्त, १९४५

रात बड़ी अँधियारी थी। चाँद अभी तक न निकला था। पहली कम्पनी अपने अन्तिम आदेश लेने के लिए एक खुले एक मैदान में एकत्र हुई। सिपाही अधिकतर तरुण किसान थे जो हाल ही में भर्ती हुए थे। वे अपने मामूली कपड़े पहने हुए थे। हालाँकि प्रत्येक के सीने पर कारतूसों की एक पट्टी थी और कमर में एक रायफल लटक रही थी, पर उनमें साम्य एक और कारण से भी था और वह था उनका दृढ़ विश्वास जो प्रत्येक के साथ था। उन्होंने युद्धों में अपनी योग्यता बतलाई थी और वे पहले से ही सैनिक दिखाई देते थे।

छड़ी की नाईं निश्चल हो त्सुर उनके सामने खड़ा हो गया। "अपनी कर्त्तव्य-परायणता के निमित्त आप साथी दो रात तक सोये नहीं," उसने अपनी मुट्ठी हिलाते हुये कहा। "अब हम जापानियों और गद्दारों का सफाया करने जा रहे हैं और आपको फिर लड़ाई लड़ना है। आप थक तो नहीं गये?"

"नही!" डेढ़ सौ कण्ठों से आवाज गूँजी।

"बहुत अच्छे! कुछ मिनटों में हम शहर के उत्तरी दरवाजे की नाकेबन्दी के लिए चल पड़ेंगे।"

फिर दा-श्वी लोगों से सम्बोधित हुआ। "साथियो, आज रात किसी को न तो सिगरेट पीना चाहिए और न खाँसना-खँखारना चाहिए। आपको तो बोलना भी नहीं है अगर बहुत जरूरी ही हो तभी बोलियेगा। जो लोग स्काउट हैं उन्हें चाहिए कि हर चीज को गौर से देखें और हर चीज की सतर्कता से खोज-बीन करें। जब कोई चारा न रहे तभी गोली चलाइए। हम अपनी कम्पनी का आन्दोलन नहीं त्यागना चाहते। साथियो, अन्तिम विजय सामने है। प्रधान सेनापति चू तेह का क़ौल याद रखिये—'साहस, साहस और अधिक साहस!' हमें उनके इस आह्वान का समर्थन करना चाहिए, और मृत्यु से डरे बिना दृढ़ता से अपनी जिम्मेदारी पूरी करनी चाहिए!"

"हम अपना कर्त्तव्य पूरा करेंगे," देश-रक्षक सैनिक चिल्लाये। और आज्ञा मिलते ही वे चल पड़े।

पहली कम्पनी अँधेरे में रास्ता टटोलती हुई बाँध पर चढ़ गई और धीरे-धीरे उसकी पूर्वी दिशा में शहर की ओर बढ़ी। इतनी गहन निस्तब्धता छाई हुई थी कि नदी के बाँध से टकराने और मछली के पानी के ऊपर उछलने की आवाज़ें भी साफ सुनाई दे रही थीं।

जब वे इतने करीब आ गये कि दुश्मन के उत्तरी दरवाजे के ऊपर झाँकने के छेद से दिखाई देने लगे तो देश-रक्षक सैनिक झट वृक्षों के एक झुरमुट में छिप गये। काना-फूसी से कुछ हिदायतें लेकर आठ आदमियों का एक दस्ता उत्तरी दीवार के बाहर नदी के किनारे की ओर खिसक गया। वहाँ एक बंदर के किनारे चार जहाज, जिनका उस बूढ़े ने जिक्र किया था, बँधे हुए थे। झटपट और चुपचाप ताकि नाव पर सोया हुआ नाविक जाग न जाय दस्ते वालों ने जंजीरें खोल लीं और नदी का प्रवाह उन्हें खींचकर बहा ले गया।

फिर पहली कम्पनी स्काउटों से मिलने के लिए आगे चली गई। अपने लोगों को दरवाजे के बाहर बने किसानों के प्रच्छन्न मकानों में तितर-बितर करके देश-रक्षक सेना ने नाकेबंदी शुरु कर दी।

उस रात पंद्रह कम्पनियों ने शहर को घेर लिया था। पास-पड़ौस के किसान भी बा लू की मदद के लिए आ गये। कोई स्ट्रेचर लाया था। किसी के पास सीढ़ियाँ थीं, कुछ अपने फावड़े-कुदालियाँ ही ले आये थे, गरज यह कि खाली हाथ कोई न आया था। हजारों व्यक्ति आक्रमण के लिए तैयार खड़े थे—वह चौमुखी आक्रमण जो जापानियों और गद्दारों को धूल चटाने वाला था। लोगों की उत्तेजना का पारावार न था क्योंकि लोग बरसों से इस दिन की प्रतीक्षा कर रहे थे!

× × × ×

जापानियों के आत्म समर्पण के बाद से हो बड़ी आज्ञाकारिता के साथ

च्यांग काई-शेक की आज्ञाओं का पालन कर रहा था। उसने अपने शस्त्र बा लू से बचा रखे थे और जापानियों की रक्षा कर रहा था। वैसे जनता पर रौब डालने के लिए उसने शत्रुओं के कैदियों की रक्षा करने का स्वांग रचा था पर असल में बा लू के विरुद्ध युद्ध में वह अब भी जापानियों का इस्तेमाल कर रहा था।

स्थिति उसकी आशा से भी अधिक तेजी से बदल गई थी। अब वह अपने ही शहर में घिर गया था। ज्योंही उन्हें सूचना मिली कि वे घिर गये हैं, वह फौरन जापानी जनरल कामासेका से मिलने गया।

बुद्ध की एक छोटी-सी काँसे की प्रतिमा के आगे कामासेका ने अन्न, शोरबा मेवे और पेस्टरीज भेंट कर रखी थीं। सीधा खड़ा हुआ,सिर झुकाये वह जापानी जल्दी-जल्दी कुछ मंत्र उच्चार रहा था। वह यह प्रार्थना कर रहा था कि हे ईश्वर तू मुझे बचाले, जापान वापस जाने की आज्ञा दे दे। हस्तक्षेप करने का हो को साहस न हुआ और वह एक ओर खड़ा हो गया। अंत में जापानी ने बड़ी श्रद्धालुता से तीन बार बुद्ध के आगे मस्तक नवाया और उसकी प्रार्थना समाप्त हुई। उसने हो को बैठने के लिए कहा।

कामासेका का वजन घट गया था, उसकी कनपटी की हड्डियाँ उसके पतले चेहरे पर उभर आईं थीं। कुछ दिनों से उसने मूँछें कतरना भी बन्द कर दिया था और वह बड़ा उजड़ दिखाई देता था। उसने बेतहाशा मात्रा में बियर पी रखी थी और इसलिए उसकी आँखें सुर्ख थीं।

जब हो ने उसे सूचना दी कि कम्युनिस्टों ने शहर का मुहासरा कर लिया है तो उसे लगा मानो किसी ने उसके सिर पर हथौड़ा मार दिया हो उसकी 'जापानी आत्मा' के गैस के थैले में छेद तो हो गया था और उसमें से उसकी "बुशिदो आत्मा" इस प्रकार सर्र से निकल गई जैसे गुदा से वायु निकल गई हो। उसकी आँखें फट गईं, मुँह खुला-का-खुला रह गया और कामासेका बिल्कुल अवाक् हो नीचे बैठ गया।

जब उसे कुछ चेत हुआ तो उसने हो से कठपुतली दुर्ग-रक्षक सेना की शक्ति के बारे में पूछा। हो ने कहा कि सुरक्षा-सेना काफी मजबूत है उसने अन्दाजा बताया कि शहर कम-से-कम तीन दिन तक रोका जा सकता है। बा लू

के पास भारी शस्त्र तो हैं नहीं इसलिए वे एकदम आक्रमण नहीं करेंगे। अगर पाओतिंग से कुछ सेना सहायतार्थ आ जाय तब तो कोई शक है ही नहीं, वे घेरे को तोड़कर भाग जायेंगे।

जापानी उछलकर खड़ा हो गया। "ईश्वर हमारी सहायता करे!" उसने अपनी पतली आवाज में कहा। कामासेका ने उसी दम एक तार पाओतिंग रवाना किया।

हो ने अपने कठपुतली सैनिकों को आज्ञा दी कि वे किले की रक्षा करें—सहायक सेनायें आने ही वाली हैं। अपने क्वार्टर पर आकर उसने अपनी रखैल से कहा कि सोना और जवाहिरात वगैरा बाँध ले ज्योंही पाओतिंग से जापानी घेरे को तोड़कर आयें कि उन्हें वहाँ से चल देना होगा।

फिर उसने जिनलुंग को बुलाया। सिगरेट पर सिगरेट पीते हुए उसने उससे मे के सवाल पर बातचीत की।

× × × ×

मे से पहले ही दो बार जिरह की जा चुकी थी। पहली बार तो उसी दिन जब वह गिरफ्तार हुई थी। हो ने आज्ञा दी थी कि उसके घावों पर पट्टी बाँधी जाय और उसे अच्छा खाना दिया जाय। फिर उसे उसकी बैठक में ले जाया गया जहाँ वह बड़ी विनम्रता से बैठाई गई।

"बहुत दिन हुए मैंने सुना था कि तुम बहुत बुद्धिमान लड़की हो मे," हो ने बड़ी विजयपूर्ण मुस्कान के साथ कहा था।" बड़ी दया की बात है कि तुम जैसी लड़की उन डाकुओं के पल्ले पड़ गई हो। तुम तो जानती हो वे अब कुछ ही दिन के मेहमान हैं।"

मे अपने बच्चे को गोद में लिये सामने एक कुर्सी पर बैठी हुई थी, उसका आधा शरीर हो की तरफ मुड़ा हुआ था; वह घूमी और उसके ठीक सामने हो गई, उसकी बड़ी आँखों में क्रोध की ज्वालाएँ धधकने लगीं।

"तुम बातें नहीं कर रहे—हो बकवास कर रहे हो।" वह चीखी। "ला तू

जापानियों से लड़ रहे हैं और देश की रक्षा कर रहे हैं! सारे लोग वा लू से प्रेम करते हैं; कौन कहता है कि वे कुछ दिन के मेहमान हैं! तुम जैसा सड़ा-पड़ा ग़द्दार ही कहता है ना! तुम किसानों को लूटते हो, उनकी हत्या करते करते हो! पर वह बालक जो बोल सकता है तुम्हारे नाम को धिक्कारता है! तुम कै दिन टिकोगे? जब वे तुम्हें पकड़ लेंगे तो जनता तुम्हारी खाल खींच लेगी, वह तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर देगी!"

हो को तनिक क्रोध न आया बल्कि वह तो खिलखिला कर हँस दिया।

"तुम्हें और ज्यादा दूरअंदेश होना चाहिए मे। क्यों कम्युनिस्टों के फंदे में फँसती हो? वे बड़े दुष्ट लोग हैं जो तुम जैसी लड़की पर दबाव डाल कर तुमसे ऐसा खतरनाक काम करवाते हैं। यह काम बड़े भयानक परिणाम दिखा सकता है। अगर तुम मेरे साथ काम करने लगो तो बड़े मजे में रहोगी। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि भविष्य में तुम बड़ी अच्छी रहोगी।"

मे ने तिरस्कृत दृष्टि से देखा। "बकवास न करो," वह बोली। "मैंने तो खुद यह काम अपने लिए लिया था। मेरे लिए तो असल में खुशी की वही घड़ी होगी जब तुम सब गद्दार इस धरती से नेस्त-नाबूद हो जाओगे। अब चूँकि मैं तुम्हारे हाथों पड़ गई हूँ तो मेरे लिए एक ही भविष्य है और वह है शानदार मौत! जब कभी भी तुम मुझे मारने के लिए निर्णय हो तो मैं तैयार हूँ।"

"लेकिन तुम्हारे इस जरा-से बच्चे बेचारे का क्या होगा? तुम्हारे मरने के बाद इसका क्या हाल होगा?"

दाँत पीसते हुए एक ही जुंबिश से मे ने बालक को मेज पर रख दिया। "नहीं! मुझे उस पर कोई तरस न आयेगा मुझे इसी दम मार डालो और झगड़ा खतम करो!"

बच्चा रोने लगा। हो ने उसे अपनी बाहों में उठा लिया और बड़ी नर्मी से उसे थपथपाने लगा। "इतनी संगदिल न बनो, मे? अगर मुझे तुम्हें मारना ही होता तो सिर्फ उंगली के इशारे की देर थी। लेकिन मैं नहीं चाहता, तुम व्यर्थ का बलिदान दो। जिंदगी कितना ही सोना हो फिर भी नहीं खरीदी जा सकती। मैं जानता हूँ, तुम्हारे लिए अभी एक दम बदलना मुश्किल है। मैं तुम्हें सोचने के

लिए कुछ और मुहलत देता हूँ। शायद तुमको इस चीज का एहसास होगा कि मैं और किसी के साथ इतना धैर्य कभी नहीं बरतता !"

उसने हुक्म दिया कि मे और उसके बच्चे को वापस ले जाया जाय।

जो कठपुतली सैनिक बाहर खड़े यह वार्तालाप सुन रहे थे उन्होंने सहानुभूति में अपने सिर हिलाये। "यह तो वाक़ई बड़ी पक्की है !" उन्होंने कहा। उसके बाद उन्होंने मे को ज्यादा-से-ज्यादा सुविधाएँ अपनी ओर से दीं और उसके साथ साथ सहानुभूति दर्शायी।

कुछ दिन बाद हो ने मे को फिर बुलाया। उसने फिर वही बात दुहराई कि अगर वह मर गई तो उस बेचारे बच्चे का क्या होगा। उसने ऐसा स्वांग रचा मानो उसे बच्चे से बड़ा भारी स्नेह हो। इस बार जब उसने देखा कि मे की आँखें सजल हैं तो वह अपनी सफलता पर प्रसन्न हुआ लेकिन मे ने क्रोधित हो अपने आँसू पोंछ लिये।

"मैं इसलिए रो रही हूँ कि मैं अपने कर्त्तव्य-पालन में असफल रही और तुम्हारे गन्दे हाथों में पड़ गई।" वह गुर्राई। "मेरी मृत्यु के बाद बच्चा अधिक दिन नहीं जियेगा। बेहतर तो यह होगा कि तुम हम दोनों को एक साथ मार डालो !"

हो का चेहरा फ़क़ हो गया। रूखी हँसी हँसते हुए वह कमरे से बाहर चला गया। लगभग उसके जाते ही उसके तीन खुफ़िया गुर्गे अन्दर आये उन्होंने बच्चे को एक तरफ कर दिया और मे को उठाकर फ़र्श पर फेंक दिया। इस निर्मम यन्त्रणा से उसका घाव खुल गया और वह अचेत हो गई।

कुछ मिनट बाद उसे होश आया। सिसकियाँ भरते हुए उसने ग़द्दारों को बुरी तरह कोसा। उन्होंने एक मोटा-सा तख्ता लिया; उसकी जाँघों पर उसे रखा और ज़ोर से दबा दिया। मे पीड़ा से बिलबिलाने लगी। लेकिन उन्होंने कितनी ही यन्त्रणाएँ दीं पर वह हो की माँगें मंजूर करने पर राज़ी न हुई। अन्त में वे उसे उसकी कोठरी में ले गये, उसे अन्दर ढकेला और दरवाजे पर ताला लगा दिया।

× × × ×

अब जबकि ग्रा लू ने शहर घेर लिया था तो हो और जिनलु'ग ने मे को मार डालने का निश्चय किया। लेकिन उन्होंने सोचा कि उसे एक बार फिर समझा-बुझा कर राजी करने की कोशिश की जानी चाहिये। उनका विचार था कि यदि वह घुटने टेक देगी तो वे उसे पाग्रोतिंग ले जायेंगे और वहाँ बा लू से साँठ-गाँठ करने के लिए उसका इस्तेमाल करेंगे।

जब मे कुछ कठपुतलियों के दस्ते द्वारा हो के सामने लाई गई तो उसने पूछा, "खूब सोच लिया तुमने उस बात पर? यह तुम्हारा आखिरी मौका है? अब तुम अपने लिए स्वयं सोच लो कि जीना चाहती हो या मर जाना।"

मे का खून सूख गया पर उसने शांति से कहा, "सिर्फ मर कर ही मैं क्रान्ति से वफादारी कर सकती हूँ!"

हो ने अपने अनुचरों को आज्ञा दी कि बच्चे को अलग करलें लेकिन मे ने बच्चे को कसकर अपने सीने से चिपटा लिया। "हम एक साथ मरेंगे!" उसने दृढ़ता से कहा।

शहर के दक्षिणी द्वार पर तुरही बजने लगी और गद्दार टुकड़ियाँ अपनी-अपनी जगहों को भागने लगीं। जिनलु'ग हाँपता हुआ आया और उसने हो को सूचना दी।

"वे चारों ओर से आक्रमण कर रहे हैं! स्थिति बड़ी विकट है! मुझे अन्देशा है, न हम दक्षिणी द्वार की रक्षा कर सकते हैं न पूर्वी द्वार को बचा सकते हैं! बताओ अब क्या करें?"

हो के मु'जमिद चेहरे पर कोई भाव न आया। "ठीक है," उसने बिना स्वर के कहा। कठपुतलियों के दस्ते की ओर घूमकर और हाथ से इशारा करके उसने कहा कि मे को बाहर ले जाओ और गोली से उड़ा दो।

जब वे उसे दरवाजे में से निकाल कर बाहर ले गये तो मे हँसने लगी। "बहुत बढ़िया हुआ यह!" उसने कहा। "अब तुम विश्वासघाती कुत्तों का सफाया हो जायगा! अब मैं सुख व शांति से मर सकती हूँ!"

जब कठपुतलियों का दस्ता मे को उन निर्जन गलियों में होता हुआ लेकर चला तो उसे अपने साथियों की शहर के इर्द-गिर्द गोलियों की आवाजें साफ सुनाई

देने लगीं। उसका सारा शरीर काँपने लगा। भावुकतापूर्ण जोर की आवाज़ में उसने चिल्ला कर कहा, "जापानी साम्राज्यवाद मुर्दाबाद! देश के व्यापारी ग़द्दार मुर्दाबाद! कम्युनिस्ट पार्टी जिंदाबाद!......"

दक्षिणी दरवाजे के बाहर बिगुल बज रहे थे और देश-रक्षक सैनिक अपनी भरपूर आग बरसा रहे थे। दस्ती बमों की बारिश ने प्रतिरक्षकों को दीवार के पीछे उड़ाकर फेंक दिया था। कठपुतलियाँ पहले तो डगमगाये पर कुछ मिनटों तक.........से लड़ती रहीं। फिर दक्षिणी द्वार उनके हाथों से निकल गया। पूर्वी द्वार का भी कुछ देर में यही हाल हुआ। देश-रक्षक सैनिक शहर में बाढ़ की तरह घुस आये।

अधिकाँश जापानी एक स्कूल में घिर गये। बहुत-से जापानी साथी जिनमें योनेदा भी था और जो जापानी युद्ध-विरोधी संस्था में भर्ती हो गये थे अब देश-रक्षक सेना में काम करने लगे थे। उन्होंने अपनी भाषा में अपने देशवासियों से समर्पण के लिए अपील की। पन्द्रह मिनट के अंदर ही जापानियों ने सफेद झण्डा लहरा दिया।

ज्योंही उसकी किलेबन्दी टूटी हो, जिनलुंग और कामासेका एक जगह आन मिले। कठपुतलियों के एक दस्ते को अपना रक्षक बनाकर जिनमें से दो के पास टॉमी बन्दूकें थीं वे पश्चिमी दीवार की ओर लपके। लेकिन पश्चिमी द्वार से उठती हुई ज्वालाएँ रात्रि के अर्ध आकाश को लाल कर रही थीं। उन्होंने अपना रुख पलटा और उत्तरी द्वार की ओर भागे। उत्तरी द्वार पर भी देश-रक्षक सेना का क़ब्ज़ा हो गया था पर हो ने वह खतरा मोल लेने का ही निश्चय किया। टॉमी बन्दूकों से आग उगलते हुए वह टोला खुले हुये दरवाजों में से भागा। देश-रक्षक सेना पहले तो सीसे की बौछार के सामने न टिक सकी और पीछे हट गई पर बाद में उन्होंने जो दस्ती बमों की वर्षा की तो उनके धमाकों से कठपुतलियों के शरीरों के धुर्रे वायु में उड़ गये। पहले टॉमी बन्दूकची का आधा सिर उड़ गया और वह नीचे गिर पड़ा। कठपुतलियाँ चारों तरफ दौड़ीं।

हो ने बचे हुए टॉमी बन्दूकची को अपने पिस्तौल की नली से आगे धकेल दिया। "गोलियाँ चलाये जा वरना मैं तुझे मार डालूँगा।" वह चिल्लाला।

जिनलुंग और कामासेका को साथ लिये वह पश्चिम की ओर दौड़ा और वे बाँध के ऊपर चढ़ गये। त्सुर और दा-श्वी की अगुआई में देश-रक्षक सेना ने उनका जमकर पीछा किया।

अभी वे बहुत आगे तक न गये थे कि उनके सामने बाँध से उन्हें एक चुनौती मिली और हो तथा उसके गुर्गे वहीं रुक गये। जब उन्होंने कोई जवाब न दिया तो गोलियों की एक बौछार ने टॉमी बन्दूकची को टुकड़े-टुकड़े कर दिया। एक गोली कामासेका के दाहिने कंधे पर लगी और उसने बन्दूक छोड़ दी। हो और कामासेका बाँध से लुढ़ककर खुले मैदान में गिर पड़े। जिनलुंग की टाँग में घाव लगा पर उसने भी अपने दाँत कटकटाये और वह भी उनके पीछे ही लुढ़क पड़ा।

उज्ज्वल चाँद की चाँदनी में देश-रक्षक सेना वालों का एक भी शिकार छिपा न रह सका। धीरे-धीरे लँगड़ाता हुआ जिनलुंग भी उनके हत्थे पड़ा। एक दर्जन आदमियों ने फौरन गोलियाँ दाग दीं। ग़द्दार की मोटी लाश लड़खड़ा कर जमीन पर गिर पड़ी।

हो का हैट और एक जूता कहीं गिर गया था; कामासेका अपनी लम्बी तलवार को बराबर सम्हाले रहा था, पर जब वह गिरा तो उसे खोलने की भी मुहलत न मिली। वे ऊँचे काओलियाँग के खेतों में भाग जाने की उम्मीद लगा रहे थे। लेकिन वे इतने थक गये थे कि खेतों तक पहुँचना दुर्गम हो गया। और वे जहाँ थे वहीं सेम के बड़े खेत में गिर पड़े और पीड़ा से बिलबिलाने लगे। एक मिनट में ही देश-रक्षक सेना आ पहुँची। दा-श्वी ने लोगों को हुक्म दिया कि सब तरफ फैल कर ढूँढें।

जब हो ने दा-श्वी को अपनी ओर आते हुए देखा तो उसने फ़ुर्ती से पिस्तौल उठाई और गोली चलादी। गोली दा-श्वी के पास से सनसनाती हुई त्सुर के पेट में लगी। त्सुर लड़खड़ाया और दा-श्वी ने दौड़कर उसे सम्हाला। उसकी अँतड़ियों में से छल-छल खून बह रहा था और उसने तपती हुई आँखों से अपने साथी की ओर देखा।

"तुम मेरी क्या चिन्ता कर रहे हो?" उसने गुस्से में कहा। "दुश्मन

का सफाया करो।"

दूसरी गोली दा-श्वी के सिर के पार हो गई और उसने ज्वाला के छूटते ही गोली चलाई। उसकी गोली ने हो की पिस्तौल का चूरा कर दिया। यह देख कर कि गद्दार अब निहत्था है दा-श्वी उसे जीवित पकड़ने के लिए दौड़ा। पर कामासेका अपने पैरों के बल सरकते हुए आया और उसने अचानक दा-श्वी पर प्रहार किया। अपना बायाँ हाथ इस्तेमाल करके जापानी ने अपनी बड़ी तलवार निकाली और दा-श्वी की टाँग पर जोर से मारी। दा-श्वी की बन्दूक हाथ से छूटी और वह खुद भी गिरा कि कामासेका ने अपनी तलवार घुमाकर बा लू के सिर पर प्रहार किया। दा-श्वी ने उछलकर जापानी से तलवार छीन ली। उसी अर्धचेत अवस्था में उसने कामासेका को अन्तधाम पहुँचा दिया।

दूसरे देश-रक्षक सैनिकों को हो दापड़ गया और उन्होंने सीसे की वर्षा से उसे वहीं खतम कर दिया। वे दा-श्वी को सम्हालने के लिए दौड़े। दा-श्वी कमज़ोरी से तड़प रहा था और उसका चेहरा लहू-लुहान था।

चारों तरफ से किसान इस वधस्थान की ओर दौड़े। हो और कामासेका की लाशें देखकर उनकी वर्षों से पकती आई घृणा और क्रोध और भड़क उठा। रायफल के कुन्दों, छुरों, फावड़ों और कुदालियों से कोस-कोस कर और धिक्कारते हुए किसानों ने उन लाशों के टुकड़े-टुकड़े करके खूनी कीचड़ का मुरब्बा बना डाला।.........

जब दा-श्वी को होश आया तो वह शहर के एक कमरे में ले जाया जा चुका था। देश-रक्षक सैनिक और किसानों का एक खामोश गिरोह डाक्टर को दा-श्वी के माथे के तीन इंच गहरे घाव को भरते हुए देख रहा था। ज्योंही डाक्टर ने घावों पर पट्टी रखी कि निउर मे और बच्चे को लेकर आगे आई।

जो कठपुली सैनिक उसे गोली मारने वाले थे वे उसे एक बड़े मन्दिर के आँगन में ले गये। उन्होंने तीन गोलियाँ हवा में चलाईं और फिर उन्होंने उसे

तब तक छिपाये रखा जब तक वे बा लू से न मिल गये।

मे का चेहरा सफेद था। वह दाहिने हाथ में बेंत का सहारा लेकर चल रही थी उसका बायाँ हाथ निउर की गर्दन में था। उसे जो यन्त्रणाएँ दी गई थीं उनके कारण चलने में कठिनाई हो रही थी। उसे आगे जाने देने की ग़रज़ से दूसरे साथी हट गये।

जब उसने दा-श्वी को देखा तो खुशी से उसका चेहरा चमक उठा और आँखों में आँसू ढुलक आये। "दा-श्वी" मे ने सिसकी लेते हुए कहा। "मैंने कभी न सोचा था कि......कि मैं इसी जिंदगी में तुम्हें फिर देख सकूँगी।"

दा-श्वी ने उठकर बैठने की कोशिश की। उसका आधा चेहरा पट्टियों में लिपटा हुआ था; उसने एक ही आँख से मे को देखा। उसका कण्ठ इतनी बुरी तरह टँस गया कि एक क्षण के लिए वह बोल न सका। लेकिन उसका दिल खुशी से बल्लियों उछल रहा था और एक विजयपूर्ण मुस्कान उसके सारे चेहरे पर नाच रही थी।

"मे।" वह उसका हाथ पकड़ते हुए हँसा। "आखिरकार हमने अपना कर्त्तव्य पूरा कर ही लिया। हम जीत गये।"

मे ने आँसू पोंछे। "कल्लू ने ठीक ही कहा था कि हमने यह विजय अपना खून बहाकर प्राप्त की है। मैंने अभी-अभी खुर को देखा......हाय हाय! हमने कितने बहुत-से आदमियों की बलि दी।"

"खुर वीर गति को प्राप्त हुआ है।" दा-श्वी ने रुँधे हुए कण्ठ से कहा। "मरने के क्षण भर पहले ही उसने हमसे कहा दुश्मन का सफाया करदो। हमें उसके शब्द अच्छी तरह याद रखने चाहिएँ। हमने मुकाबले के आन्दोलन में तो विजय प्राप्त करली है पर अभी प्रतिक्रियावादियों का तख्ता नहीं उल्टा है। जब तक उनका नाश न हो जाय हमारा काम पूरा न होगा।"

"और हम उनका भी खात्मा कर देंगे।" मे ने विश्वास के साथ कहा। "जब हम इतने वर्ष तक संघर्ष करते रहे और विपदाएँ झेलते रहे तो अब हमें किस चीज़ का डर हो सकता है!"

"चेयरमेन माओ की अगुआई में हमने जापानियों को परास्त किया,"

निडर ने चिल्लाकर कहा, "और अब उन्हीं के साथ हम हर विजय प्राप्त करेंगे!"

दा-श्वी ने अपने काँपते हुए हाथ बढ़ाये और अपने बच्चे को बाँहों में ले लिया। कोमलता से उसने बच्चे के गाल चूमे। "अगर हम ज़रा-सा दुख सहलें तो क्या हुआ?" वह मुस्करा दिया। "जब इन्कलाब सफल हो जायगा तो हमारे बच्चे सुख से जीवन बिता सकेंगे!"

कल्लू हर्ष से उल्लसित व गद्गद् वहाँ आन पहुँचा। उसने भार्र अन्दाज़ से अपनी बाँह हिलाई। "मैं एक खुशखबरी लाया हूँ!" वह चिल्लाया। "हम हर मोर्चे पर विजयी रहे! प्रान्त के कुल तेरहों शहर बा लू के हाथ में आ गये हैं!"

उसकी सूचना सुनते ही तालियाँ बज उठीं और लोग आनन्द से झूमने लगे। बाहर गलियों में पटाखे छूटे और मँजीरे गूँजने लगे। अनेकों की प्रफुल्लित ध्वनियों का शोर समीप से समीपतर आता गया।

"ये किसान विजयोत्सव मना रहे हैं!" निडर चिल्लाई। "आओ चल कर उनमें शामिल हो जायें।" वह कमरे में से निकलकर भागी और उछलते-कूदते, हँसते-गाते नवजवान उसके पीछे दौड़े······

और सूर्योदय के समय शहर के किले पर चमकता हुआ एक लाल झंडा गर्व के साथ फहरा रहा था।